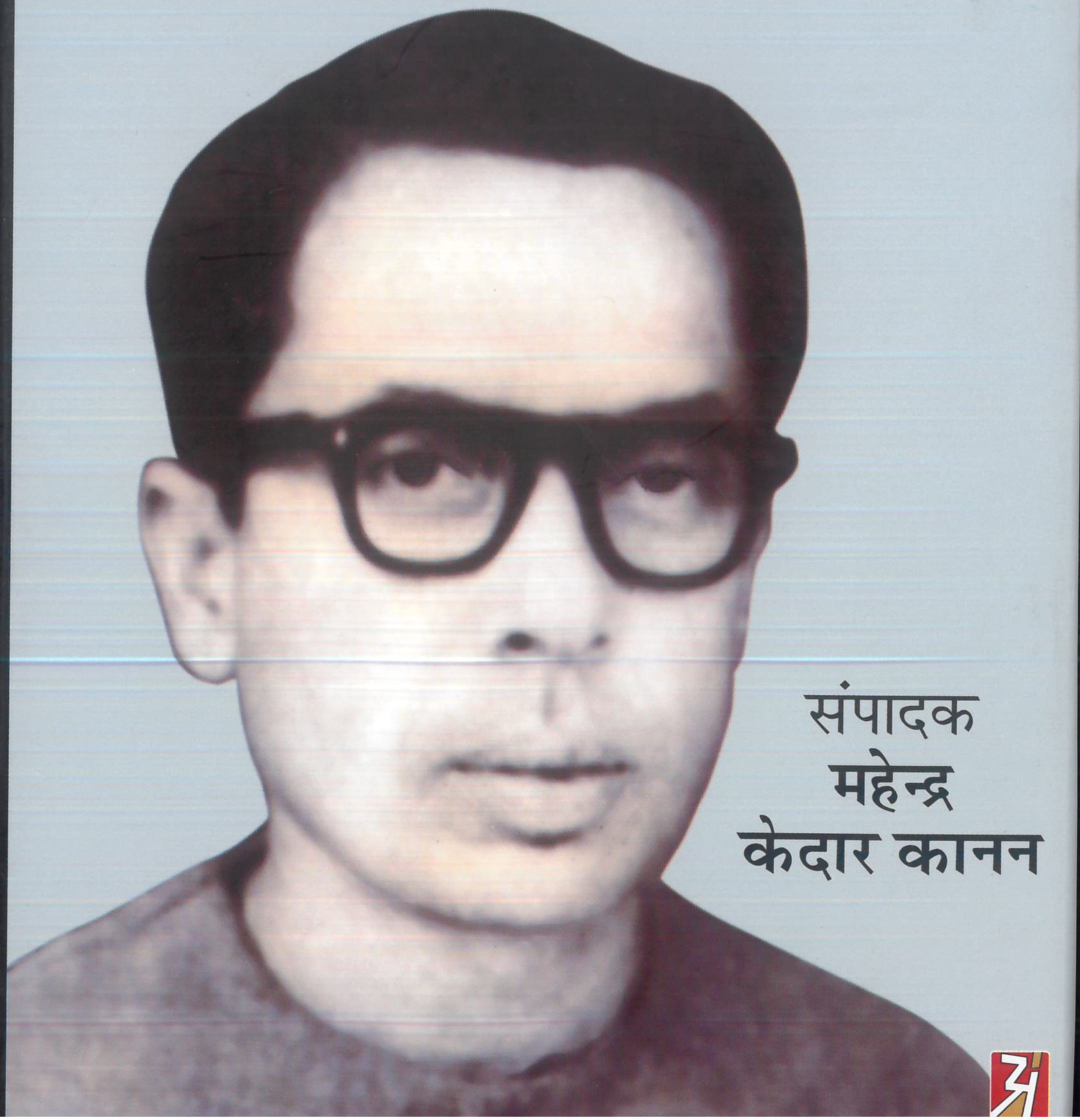
बहुआयामी किसुनजी



संपादक
महेन्द्र
केदार कानन

प्रतिगामी सोच आ पतनशील परम्पराक दलदल मे फँसल मैथिल समाज आ ओकर प्राचीन मूल्य-मान्यता वला तथाकथित शाश्वत साहित्य केँ नव दिशा देबाक संगहि एक टा नव जमीन तलाशक जे काज साठि-सत्तरक दशक मे किसुनजी कयलनि, से साइत पछिला सत्तर साल मे केओ नइँ क' सकलाह। निश्चित रूप सँ एहि बीच यात्री, राजकमल आ ललित सन तीन टा कालजयी रचनाकार भेलाह आ हुनका लोकनिक लेखनक कैनवास किसुनजीक लिखित साहित्य सँ पैघ अछि, मुदा नव लेखनक समस्त अनुयायी केँ व्यापक मंच पर आ समाज मे स्वीकृति भेटै; ताहि लेल जमीन पर काज करयवला जाहि नेता आकि अगुआ केर जरूरति छल—से किसुनेजी छलाह। हुनका मे ने पैघ-छोट आ ने हिंदी-मैथिलीक भेद-भाव छलनि। कट्टरता सँ दूर सही अर्थ मे ऋषि-तुल्य। अल्प उम्र भेटलाक बादो नव कविता केँ मंच देबाक बहाने, सुमन-मधुप-अमर केर व्यामोह मे फँसल मैथिलीक पुरातनपंथी लेखन-धारा केँ चुनौती देबाक पहिल सार्थक प्रयास किसुनजी कयलनि। बहुत सूझबूझ संग नव कविताक समर्थक साहित्यकारक ने मात्र एक टा पैघ पीढ़ी ठाढ़ कयलनि, बल्कि ओकरा भीतर उठैत समस्त असंतोषक निदान करैत आ ओकर दर्शन-सिद्धांत गढ़ैत, एक टा सफल नेतृत्व सेहो प्रदान कयलनि।

एक्कैसम शताब्दी मे आइ किसुनजीक नव कविताक सोच भने नव नइँ लागय, मुदा ई वैह जमीन थिक जकरा तोड़ि क' एक समय अग्निजीवी पीढ़ी अपना ढंगे लेखनक दिशा तय कर'क यथासंभव प्रयास कयलक आ आगाँ चलि क' 'अंतिका'क दौर मे हमरा सभ व्यापक अर्थ मे प्रगतिशीलताक संग बहुत साहस सँ अस्मितावादी विमर्श—दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, यौनिकता-विमर्श—केर सेहो बात करैत छी।

आइ जखन कि फेर सँ यथास्थितिवादी, वैदिक कर्मकांडी मूल्य-मान्यतावला सोचक आग्रही प्रबल भ' उठल अछि; बहुत रास कवि-कथाकार अपना लेखन मे लोक-परम्परा आ 'खाँटी मैथिलपन'क नाम पर पुनरुत्थानवादी मूल्य-मान्यता, बिम्ब आ प्रतीक लादने जा रहल अछि। सायास स्त्री केँ अनुगामिनी आ पारंपरिक, कर्मकांड केँ उपयोगी, मुस्लिम केँ सन्देहास्पद, दलित केँ निठल्ला आ कृषि-विरोधी देखेबाक प्रचलन मैथिली मे एम्हर खूबे बढ़ल अछि। एकर प्रतिकार लेल किसुनजीक प्रयास हमरा सभक सोझाँ प्रेरक जकाँ अछि—हम सब नव तरहें, मुदा सामूहिक प्रयास करी। भविष्यक बाट पर सँ काँट-कूस हटेबा लेल जखन फेर सँ संघर्षक बेगरता भ' गेल अछि; किसुनजी पर लिखित अनेक लेखकक संस्मरण आ मूल्यांकनपरक लेख सँ भरल ई संपादित किताब पढ़ब साइत बहुत उपयोगी सिद्ध हैत।

प्रतिगामी सोच आ प
मैथिल समाज आ
तथाकथित शाश्वत स
टा नव जमीन तलाश
किसुनजी कयलनि, से
क' सकलाह। निश्चि
आ ललित सन तीन
हुनका लोकनिक ले
साहित्य सँ पैघ अछि,
व्यापक मंच पर आ
जमीन पर काज कर
जरूरति छल—से कि
आ ने हिंदी-मैथिलीक
अर्थ मे ऋषि-तुल्य।
केँ मंच देबाक बहाने
फँसल मैथिलीक पुरा
पहिल सार्थक प्रयास
नव कविताक समर्थ
पीढ़ी ठाढ़ कयलनि,
असंतोषक निदान क
एक टा सफल नेतृत्व
एक्कैसम शताब
सोच भने नव नइँ ल
तोड़ि क' एक समय
दिशा तय कर'क यथा
क' 'अंतिका'क दौ
प्रगतिशीलताक संग
विमर्श—दलित-वि
विमर्श—केर सेहो बा
आइ जखन
कर्मकांडी मूल्य-मान
उठल अछि; बहुत
लोक-परम्परा आ
पुनरुत्थानवादी मूल्य-
रहल अछि। सायास
कर्मकांड केँ उपयोगी
निठल्ला आ कृषि-
एम्हर खूबे बढ़ल अ
प्रयास हमरा सभक
तरहें, मुदा सामूहिक
काँट-कूस हटेबा लेल
अछि; किसुनजी पर
मूल्यांकनपरक लेख

बहुआयामी किसुनजी

बहुआयामी किसुनजी

(मूल्यांकन-संस्मरण)

संपादक

महेन्द्र

केदार कानन

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-81-951827-9-4
बहुआयामी किसुनजी

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 790.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी–56/यूजीएफ–IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन–II
गाजियाबाद–201005 (उ.प्र.)
फोन : 0120–2648212, 0–9871856053
ई–मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल–852131 (बिहार)
फोन : +91–7004917511

आवरण सज्जा : अंतिका आर्ट्स

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32

BAHUAAYAMI KISUNJI (Critical Essays and Memoir on Ramkrishna Jha Kisun) Edited by Dr. Mahendra and Kedar Kanan
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 790.00

भूमिका

एहि पोथीक विषय मे लिखैत रोमांचित भ' रहल छी। कारण, आइ हमर एक टा पैघ मनोरथ पूर्ण भ' रहल अछि। पछिला चालीस बर्ख सँ बहुत रास लेख सभ केँ जोगौने छलहुँ, ओ सभ आइ पुस्तक रूप मे पाठकक सोझाँ आबि रहल अछि। हमरा लेल एहि सँ पैघ प्रसन्नताक विषय आओर की भ' सकैत अछि!

मोन पड़ैए चारि–पाँच बरख पहिने पंडितजी (गोविन्द झा) अपन पटना आवास पर हमरा कहने रहथि जे अहाँक पिता बहुत रास काज कयने छथि, बहुत रास साहित्यकारक जन्म देने छथि मुदा लोक हुनका बिसरि गेल छनि। हम कनेक काल हुनका मुँह दिस तकैत रहलियनि। तखन किछु बजलहुँ नहि। मुदा मोन मे तँ संकल्प छलहे, ओ कने आओर दृढ़ भेल।

तहिना मोन पड़ैए जे अपन लेखनक आरंभिक बर्ख मे जीवकान्तजी लग प्रस्ताव देने छलियनि जे किसुन जीक रचना आ हुनका पर केन्द्रित लेख सभ केँ पुस्तक रूप मे आनय चाहैत छी। ओ कहलनि जे पहिने अपन संग्रह छपाउ। मुदा बाद मे मायानन्द भाइजीक संग–संपादन मे किसुन रचनावलीक तीन खंड मैथिली अकादमी, पटना सँ प्रकाशित भेल। ओहू क्रम मे जीवकान्त जी किसुनजीक कविता आ कथा पर लिखने रहथि।

किसुन जीक असामयिक निधनक पश्चात 'मिथिला मिहिर' मे किछु लेख आ संस्मरण प्रकाशित भेल। हुनका जीवन–काल मे सेहो किछु लेख हुनका पर केन्द्रित छपल। सुपौल सँ 'संकल्प' नामक एक लघु पोथी प्रकाशित भेल, जकर संपादन महेन्द्रजी, धीर जी, रामानुग्रह भाइ आ सुशील कुमार दास कयने रहथि। फेर 'वैदेही' क एक अंक 1971 मे प्रकाशित भेल। ताहि मे अधिकांश लेख किसुन जी पर केन्द्रित रहनि। कालान्तर मे 'चांगुर' (संपादक : जटायु) प्रकाशित भेल, जकर एक अंक किसुन जी आ राजकमल पर केन्द्रित छल। मैथिली अकादमी 'स्मृति संध्या' नाम सँ एक टा पोथी प्रकाशित कयलक, जाहि मे किसुन जी पर चन्द्रनाथ मिश्र अमर, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म, मायानन्द मिश्र आ गोपालजी झा गोपेश जीक लेख प्रकाशित भेल।

राज मोहन जी 'आरंभ'क विशेषांक शृंखला मे किसुन जी पर एक टा अंक

केन्द्रित कयलनि, जाहि मे अनेक संस्मरणक संग पहिल बेर किसुन जीक कविता, कथा आ निबंधादि पर सार्थक चर्चा भेल। स्मरणीय थिक जे कथाकार अशोकक पहिल लेख किसुन जीक कविता पर केन्द्रित आरंभहि मे प्रकाशित भेलनि।

जाहि समय मे सुपौल सन जगह मे फोटोस्टेटक व्यवस्था नहि छलैक, किसुन जी पर केन्द्रित लेख आ संस्मरण सभ केँ हम अपन हस्तलिपि मे उतारि-उतारि रखने जाइत छलहुँ। एखन रमानाथ मिश्र मिहिर जी मोन पड़ैत छथि जे 'वैदेही' (1971) क अंक बहुत अनुरागपूर्वक दरभंगा डेरा मे अपन हस्ताक्षर सहित देने रहथि। भरिसक ई 1978-79क बर्ख छल। भाइजी! बिसरि नहि पबैत छी अहाँक स्नेह, आतुरता आ सौजन्य।

किसुन जी पर केन्द्रित लेख सभ केँ संकलित करैत काल दू टा लेख केर अनुपलब्धता पर अफसोच अछि। पहिल लेख थिक मणिकांत मिश्र (एम. मणिकांत)क, जे किसुन जीक निधनक पश्चात दैनिक आर्यावर्त मे प्रकाशित भेल छल। अपन लेख मे राज मोहन जी मणिकांत जीक ओहि लेख केर चर्चा करैत छथि। ई हमरा नहि भेटि सकल, जखन कि बादक समय मे मणिकांत जी हमर सभक समधि भेलाह आ हमर भतीजी अनुप्रिया हुनक पुतोहु।

दोसर लेख उदयचन्द्र झा विनोदजीक छलनि। ओ राँची सँ प्रकाशित एक स्मारिका मे छपल छल। ओहि समय मे राँची मे शारदानन्द झा, बोधनाथ झा, नरेश झा, काशीनाथ झा आ सुबोध चौधरी आदि अत्यन्त सक्रिय रहथि आ राँचीक एकमात्र संस्था रहैक—विद्यापति स्मारक समिति। एकर स्थापना 1980 मे भेल रहैक। ओहि स्मारिकाक एक प्रति हमरा शारदानंद जी देने रहथि। बहुत दिन धरि हम ओकरा जोगौने रही मुदा दीमकक भयानक प्रकोपक कारण अनेक महत्त्वपूर्ण पोथी-पत्रिकाक संग ओहि दुब्बर-पातर स्मारिका केँ हम बचा नहि सकलहुँ।

मोहन भारद्वाज जी जखन किसुन जी पर मोनोग्राफ लिखि रहल छलाह, तखन हुनका बहुत रास सामग्रीक प्रयोजन पड़लनि आ हम उदार हृदयें हुनका दू कार्टन मे सामग्री उपलब्ध करौलियनि। आइ ई लिखैत दुख भ' रहल अछि जे ओहि सामग्रीक अल्पांश मात्र जेना-तेना हमरा भेटि सकल। बहुत रास सामग्री ओ घुरा नहि सकलाह जे व्यक्तिगत रूपें हमर पैघ क्षति भेल।

हम तँ अत्यन्त उत्साहित रही, आवेशित रही जे किसुन जी पर एक टा पोथी आबि रहल अछि। ओहि उत्साह-उछाह मे किसुन जी सँ सम्बन्धित प्रभूत विरल सामग्री सभ हुनका देलियनि। अनेक लेखकक पत्र सभ सेहो, जाहि मे हिंदीक प्रसिद्ध कथाकार आ व्यंग्यकार राधाकृष्णक (जे घोष-बोस-चटर्जी-बनर्जीक नामे सेहो लिखैत रहथि) लगभग पचास-साठि टा पत्र छलनि, मुदा ओ सभ हम हुनका सँ नहि उपरा सकलहुँ। ई लिखैत हम एखनो मर्मान्तक पीड़ा भोगि रहल छी।

प्रिय पप्पू जी (मधुकर भारद्वाज) आ बबलू (हिमकर भारद्वाज)क अतिरिक्त कथाकार अशोक जी आ तारानंद वियोगी हमर एहि व्यथा सँ परिचित छथि। मुदा आब की? ने ओ नगरी ने ओ ठाम...।

एहि पोथी मे किसुन जी सँ लेल गेल एकमात्र साक्षात्कार प्रकाशित भ' रहल अछि। साक्षात्कारकर्त्ता छथि प्रो. ललितेश मिश्र। एहि साक्षात्कारक अन्तर्कथा बेस रोचक अछि, जे दूरभाष पर ललितेश जी हमरा सुनौने छथि। हम हुनका आग्रह कयल अनेक बेर जे ओ एहि कथा केँ लिखि पठाबथि, मुदा से एखनधरि संभव नहि भ' सकल अछि। ओहि अन्तर्कथाक संग ई साक्षात्कार छपैत तँ निश्चित रूप सँ बेसी महत्त्वपूर्ण होइत। एहि अन्तर्कथा मे किसुनजीक संग-संग कमल आनन्द, सुभाष चन्द्र यादव, महाप्रकाश, तारानंद झा 'तरुण' आ ललितेश मिश्रक अतिरिक्त किछु आरो लेखक—बंधुक तार एक-दोसरा सँ जुड़ल अछि।

एहि पोथी लेल हमर अनुरोध पर डा. वरुण कुमार तिवारी, गंगानाथ गंगेश, डा. सुभाषचंद्र यादव, डा. शिवशंकर श्रीनिवास आ रमण कुमार सिंह अपन-अपन टटका लेख उपलब्ध करौलनि, से हमरा लेल प्रीतिकर रहल अछि।

जखन एहि पोथीक रूपरेखा तैयार भेल तँ हमरा लागल जे किसुनजी पर एक आधार लेख, जाहि मे हुनक जीवन आ साहित्यक विवेचन-विश्लेषण हो, से प्रथम अनुक्रम पर रहबाक चाही आ ताहि लेल मित्रवर डा. देवशंकर नवीन सँ अनुरोध कयल। ओ स्वीकार कयलनि आ पढ़ब-लिखब शुरू कयलनि। मुदा हुनका ततेक व्यस्तता-विवशता रहैत छनि जे ओ अपन लेख केँ ससमय पूरा नहि क' सकलाह। तखन हम हुनका अनुरोध कयल जे ओ किसुनजी पर एक स्वतंत्र पोथी-ए लिखथि, जाहि मे विस्तार सँ हुनक जीवन, संघर्ष आ साहित्य पर विचार हो। अनेक विभागीय आ साहित्यिक व्यस्तताक अछैत नवीनजी एहि पर गंभीरतापूर्वक काज क' रहल छथि आ हमरा विश्वास अछि जे ई पोथी एहि वर्षक अंत धरि आबि जायत। बहुत आतुरताक संग ओहि पोथीक प्रतीक्षा क' रहल छी।

आइ ई सभ लिखैत हम ओहि सभ लेखक आ संपादकक प्रति आभार व्यक्त क' रहल छी, जे कोनो ने कोनो रूपें एहि पोथी मे उपस्थित छथि। आभार हुनको प्रति जे बलधकेल किसुनजीक रचना सभ मे सैद्धांतिक मत-भिन्नताक नोछाड़ लगयबाक असफल प्रयत्न कयलनि अछि। बहुत रास परंपरावादी लेखक केँ हुनक नवतावादी होयब नहि सोहाइत रहलनि अछि। जीवन भरि पढ़लनि संस्कृत, पंडिताइ करैत रहलाह आ से आधुनिकताक पोषक आ समर्थक भ' गेलाह, नवताक खोज मे लागल रहलाह, नवतुरिया केँ प्रोत्साहित-प्रेरित करैत रहलाह, सिंह तोड़ि पड़रू मे...से ई उनटा बसात बहुत रास लेखक केँ नहि सोहयलनि।

एहि पोथीक अयला पर प्रसन्न होयबाक एक टा आओर कारण अछि। ओ थिक

जे हमरा लोकनि पाँच भाइ आ एक बहिन—बाबूजी केँ जतबा बूझि-जानि सकलियनि, से तँ ठीक मुदा हुनक पौत्र-पौत्री, नाति-नातिन सभ हुनका कतेक जनैत छथि, से कहब एहि लेल मोसकिल अछि जे सभ क्यो यत्र-तत्र रहैत छथि। कोनो एहने पारिवारिक उत्सव-समारोह मे जखन सभ क्यो एकट्ठा होइत छथि तँ पुरना समयक थोड़ेक चर्चा होइत रहैत अछि मुदा से भरिसक पर्याप्त नहि।

तेँ किसुन जीक सभ सँ पैघ पौत्र विशाल आनंद, तकरा बाद आशीष आनंद (सुपुत्र विश्वनाथ झा) जे एखन दिल्ली मे अपन-अपन काज मे व्यस्त छथि आ तकरा बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियर राहुल वत्स (सुपुत्र बदरीनाथ झा) जे एखन ऑस्ट्रेलियाक मेलबोर्न मे कार्यरत छथि आ हमर पुत्र मीडियाकर्मी अनिमेष नचिकेता (राँची), देवाशीष वत्स (सुपुत्र वैद्यनाथ झा) जे निजी व्यवसाय करैत राँची मे छथि, मेजर रोहित वत्स (सुपुत्र बदरीनाथ झा) जे एखन एनडीए, पूणे मे पदस्थापित छथि, अमेरिकाक सियाटेल मे पदस्थापित सॉफ्टवेयर इंजीनियर आयुष वत्स आ इंजीनियर सुयश वत्स (सुपुत्र पशुपतिनाथ झा) आ तहिना सभ सँ पैघ पौत्री कनुप्रिया (धनबाद), अनुप्रिया (फरीदाबाद), अपाला (पूणे), शाश्वती सौम्या (मुंबई) आ ऋजिश्वा (राँची)—से सभ अपन बाबाक रूप-छवि एहि पोथी मे देखि सकैत छथि। हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ परिचित भ' सकैत छथि। ठीक तहिना हमर सभक भागिन मणीन्द्र श्वेतकमल (राँची), रमेन्द्र राजकमल (चेन्नै) आ नृपेन्द्र नीलकमल (दिल्ली) (सुपुत्र सुनीता झा—महीनारायण झा) अपन नानाक व्यक्तित्वक विषय मे बूझि सकताह। एहि लाथें अपन परिवार आ तकर उत्स केँ बूझब एक अनिवर्चनीय सुख जकाँ थिक।

एहि पोथीक प्रकाशन हमरा लेल एक उत्सव जकाँ अछि। बाबूजीक स्मृति आ हुनक छवि प्रत्येक पारिवारिक आ साहित्यिक अनुष्ठान सभ मे जीवन्त रहिते अछि, संकटक घड़ी मे तँ जेना ओ संगहि रहैत छथि।

बाबूजीक समस्त रचनावलीक प्रकाशन सेहो भ' रहल अछि, जाहि मे हुनक मैथिली आ हिंदीक रचना सभ एकठाम कयल अछि आ संगहि हनका नामे लिखल अनेक साहित्यकारक पत्र सभ केँ हम यथासंभव सुरक्षित रखने छी। चाहैत छी जे हुनका नामे लिखल ओहि पत्र सभ केँ एक टा पोथीक रूप मे संकलित क' दी, जाहि सँ मैथिलीक पाठक वर्ग केँ तत्कालीन साहित्यिक इतिहासक थोड़ेक झलक आ जनतब भेटि सकनि।

किसुनजीक विषय मे पाठक लोकनि केँ ई पोथी थोड़बो परिचित क' सकनि तँ एहि मे सम्मिलित लेखक लोकनिक संगहि हमर सभक श्रम सार्थक होयत।

—**केदार कानन**

अनुक्रम

मूल्यांकन

स्मृति-आख्यान

रामकृष्ण झा किसुन

ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

कटहरी चम्पा सन पिरौन गहुमा रंग। खूब सुचिक्कन गाल। कजरायल केश सँ मैच करैत पैघ-पैघ आँखि। हुनक अगुआयल नाक हुनक ललौन मुख-मण्डल केँ अनेरो-अनेरो गम्भीर बना दैत छलनि। हुनक ठोर जनानी शैली मे बिना पान खयनहुँ ललछौंह बनल रहैत छलनि आ ताहितर सँ हुनक मन्द मुस्की हुनक एक टा चिरन्तन उदासी केँ अढ़ क' दैत छलनि।

तिलयुगा नदी (आब कोसी)क पुबारि पार (सहरसा जिला)क भूमि बड़ सुकोमल आ बड़ सरस। डेगे-डेग पर गोपाल भोग, जलमरै आ करिया बम्बइक कलमबाग। प्रत्येक ड्योढ़ी पर कूपक कात मे अनार, गुलाब आ लाल गैंड़ा वा काला गैंड़ा ऊखि। प्रत्येक नारी बंगला छत पर सुकेशी आ सुवेशी। प्रत्येक पुरुष मधुर, भावुक, गप्पी आ संगे अपना केश, वेश आ पत्नीक प्रति बेसी आवेशी। ओहि ठामक मैथिलीयो तहिना नवनीत सन। ओ लोकनि 'कनिये टा पानि दिय' आ कनियेक टा घुसुकि आउ' बाजैत छथि, चानन 'पहिरै' छथि आ कोनो काज कर' 'पारै' छथि। हुनकालोकनि केँ हम्मे-तोहें सेहो चलैत छनि।

से ओहि भूमिक किसुनजी जखन बाजथि तँ हमरा लागय जेना धेमुड़ा नदीक हिलोर कलकल क' रहल हो। पहिले-पहिल हमरा हुनका सँ भेंट भेल छल लहेरियासरायक सरस्वती स्कूलक एक टा कक्ष मे। मने मैथिली साहित्य परिषदक बैसक चलि रहल छलैक। सहरसा जिलाक प्रतिनिधि एक टा बिन खुजल होलडाल पर सवार। ता कि युगचक्रवला श्री अमरजी चाह चक्र चला देलनि। ओ भाइ (किसुनजी) दिस स्नेह सिक्त मुद्रा मे तकैत।

मैथिली साहित्यकार लोकनि मे पान संहार प्रवृत्ति बड़ जोरगर। जेनरल पान मने किसुनजी केँ खूब नहि सोहयलनि। ता कि एक टा अदनार तरुण अयलाह। हुनक मुँहठान किसुनेजी सन। ओ दू खिल्ली पान बढ़बैत कहलथिन, 'ई पान लिय' ने।'

'भाँगक लोटा'क कवि, विद्यार्थी मायानन्द छलाह ओ। नरानां मातुल: क्रम:

लगले बुझबा जोकर भेल जे आगन्तुक प्रतिभा, किसुनजीक भागिन छथि।

ओहि भीड़ मे हमर परिचय मधुपजी सँ आगू नहि बढ़ल छल। बियालिसी क्रान्तिक जहल सँ बहरयना थोड़बे दिन भेल छल, आ अपन प्रथम मैथिली रचना ओही अधिवेशन मे पढ़ने छलहुँ। मधुपजी परिचय करौलनि किसुनजी सँ, 'सुपौल, सहरसा।'

चलि पड़ल नमस्कार पात। कुशल क्षेम। विलीन भेल गजना धार। सुपौल स्कूलक अदौ हेडमास्टर गांगुली। घनहन बजारक तारनीक दोकान लगक सहस बगुलावला पीपरक गाछ (जकरा तर द' क' चल' काल लोक वक चटकक दुआरे छाता तानि लेअय) भीमकाय साधु धत्ताल दास आ हुनक छत्ताल मूर्ति, सोनक वनक ताहि दिनुका मेला, हाट लगक ठाकुरबाड़ीक झूलन-उत्सव आ अस्पतालक प्रांगण मे अवस्थित ओहिठामक सांस्कृतिक केन्द्र क्लब-लाइब्रेरी आदि कतोक विषय पर चर्चा भसिआइत रहल।

'हम बजायब, अहाँ अवश्य आयब, अवश्ये आयब।' ... ओ कहलनि।

से हमर एहन स्थिति रहल जे हम अद्यावधि सुपौल नहि जा सकलहुँ कोनो आयोजन मे।

किसुनजी बड़ कोमल आ मर्मस्पर्शी कथाकार। 'मिहिर'क कोनो कथा अंक हुनक श्रेष्ठ कोटिक कथा सँ छूटल नहि। एक्के परिसर केँ किसुनजी, मायानन्द आ राजकमल, अपना-अपना रंग आ ढंग मे बड़ मनोहारी रूप उपस्थित करैत। किसुनजी जाहि वस्तु माधुर्य सँ सराबोर भ' ओकरा एक टा मार्मिक वातावरण मे उपस्थित करैत छलाह ओहने परिस्थिति केँ मायानन्द, भागलपुरी रेशम पर मनोवैज्ञानिक बेलबूटा काढ़ि क' उपस्थित करैत छथि आ तकरा राजकमल अपना उद्दाम वासनाक वेग पर भास' ले' छोड़ि देथिन।

एके नदीक कात मे सुपौल आ महिषी दुनू। हमरा किसुनजीक कविताक फेज सतत बदलैत बूझि पड़य। हुनक कविता पाठक ढंग बड़ हृदयग्राही छलनि। ने ओ गाबि क' पढ़थि आ ने अखरा पाठ करथि। शुद्धक' अंग्रेजी मे जकरा 'रिसाइटेसन' कहब सैह ढर्रा छलनि हुनक कविता पाठक।

'रोमांटिक' स्थिति सँ अयलाह ओ आदर्शवादी फेज मे आ ताहि ठाम सँ फानि गेलाह ओ—

चल कबड्डी बाग मे, बाग मे एक टक्कर
मोंछवला केँ आइ सँ, बिन मोछवला सँ पक्कड़

खेल' लगलाह ओ नव कविताक कबड्डी अगिया बेताल निमोछिया सभक पच्छ सँ। नव पक्ष केँ ओ गछारि केँ धयलनि। एम्हर हम मखरलहुँ... जोत्तोरी केँ, किसुनजी सिंह तोड़िक' पड़डू मे की मिझराइ ले' गेलाह।

बात ततबे दूर धरि नहि रहल। भूखल, खिसिआयल जिजीविषा, कुंठा आ

संत्रासवला सभक एक टा तिक्खर हेंज बनैत चल गेल। एक सँ एक प्रखर व्यक्तित्व सभ जुटि अयलाह एहि अग्नि-अर्चा मे—किसुनजी, राजकमल, सोमदेव, हंसराज, जीवकान्त, धीरेन्द्र, धूमकेतु, रमानन्द रेणु, गुंजन, योगिराज, ताराकान्त प्रकाश, वीरेन्द्र मल्लिक, कीर्त्तिनारायण, रविन्द्र आ नचिकेता आदि लोकनि रमक' आ झमक' लगलाह। नव प्रयोगक प्रमुख प्रांगण भेल सुपौल आ सहरसा आ प्रबल पक्षधर भेलाह किसुनजी।

रौक एण्ड रौल
पीबी पीबी पीबी, एक दिन जीबी, कि हजार दिन जीबी
ट्वीस्ट मी एगेन
हमर ने कोनो माटि-पानि,
पीबी हम सभ ठामक पानि।
दी ने परम्परा केँ मानि हिप्पी या या या।

सुपौलक नव लेखन मंच सँ राजकमलक जे ग्रैण्डगाला शो भेल तकर निर्देशक छलाह किसुनजी। किन्तु ताहि पात्र-शुद्धिक उपरान्ते धेमुड़ाक कात मे राजकमलक चिता धधकि उठल समस्त मिथिलाक 'कलम' बाग केँ शोकाच्छन्न करैत।

आ एक दिन सुकान्त भट्टाचार्य आ फैज अहमद फैजक हुलकी लेने हुनक आत्मनेपद भेटल तँ हुनक सूक्ष्म अनुभूति सँ मोन एक दिस झंकृत भ' उठल तँ दोसर दिस हुनक नव 'पैटर्न'क विम्ब सँ चकित भ' उठलहुँ। इतिहास, गणित, रेखागणित, राजनीति आ टेकनोलोजीक रूपकक धू सँ नव साहित्यिक परिभाषा क्षुधित पीढ़ीक हाहाकार आ एक टा खिसिआयल जुलूसक टहंकार लेने, परम्पराक कूल केँ ढाहैत, तोड़ैत प्रवाहित भ' रहल छल जेना धेमुड़ाक धार मे नव कोसीक प्रचण्ड नगदा उधिया रहल हो।

किसुनजीक काव्य साधना समस्त प्राण केँ प्रज्वलित क' उठल छलनि एहि दिन मे आ हम हुनका जीवनक प्रति सशंकित भ' उठल छलहुँ। जार्ज सैन्ड, विश्वविख्यात साहित्यकार फ्लाउवर्ट केँ हुनक प्राण हरण कर'वला, संन्यास-रोगक आक्रमण सँ थोड़बे पहिने हुनका लिखने छलथिन— *यू हैव लिटरेचर टू मच एण्ड इट विल डिस्ट्रोय यू।* अर्थात्, अहा केँ साहित्य बेसी भ' गेल अछि आ ई अहाँ केँ खा जायत।

हुनकर संगठनात्मक क्षमता अपूर्व छलनि। बड़ सहजता, ऐश्वर्य आ कोमलताक संग ओ पैघ-पैघ साहित्य समारोह केँ सम्हारि लैत छलाह आ ई तँ कहियो ने परिलक्षित भेल जे केहनो कोनो अवसर पर, हुनका मे अपना केँ आगू रखबाक, अनका केहुनियाक' आगू अयबाक कनेको प्रवृत्ति होइन।

हमरा नीक लागल छल हुनक एक टा कलकतिया कथा जाहि मे एक टा पायलेटक छिहुलैत चरित्रवाली पत्नी (जनिका सँ हुनक भाड़ेदारक पत्नी घृणा करैत

छलथिन) अपना भाड़ेदारिनक आपत्तिकाल मे हुनका प्रति उदात्त भ' क' सामाजिक नैतिकताक एक टा नव मान स्थापित कयने छलीह। हमरा नीक लागल छल, नव वर्ष सम्बन्धी हुनक एक टा कैलण्डरी कविता आ सभ सँ नीक लगैत छल रहि-रहि क' हुनका कलम द्वारा नव-नव क्षितिजक सृजन।

कतोक सशक्त कलम सभ केँ झीकि-झीकि अनलनि किसुनजी मैथिलीक क्षेत्र मे। एक दिन 'मिहिर' मे एक टा सुचिन्तित निबंध देखलहुँ। सुअदगर लागल तँ लेखकक पता उनटाब' लगलहुँ—श्री रामानुग्रह झा, सुपौल, सहरसा। एक टा मित्र बिहुँसि उठलाह— 'किसुनजीक साहित्यिक पारिवारिक ई जोरगर समाँग बेस कनहा उठौलनि अछि।'

से, एहि मेघौन साँझ मे, मोन बड्ड उदास, बड्ड उदास भ' आयल अछि। विश्वास नहि होइत अछि जे किसुनजी आब नहि छथि। मोन पड़ैत अछि एक टा प्रचण्ड वर्षाक ओ प्रात जखन कठरा-गाम सँ भिजैत-तितैत मनीगाछी टीसन दिस पयरे बढ़ि रहल छलहुँ। कतोक साहित्यकारलोकनि दू-दू, तीन-तीन मे चलि रहल छलाह। हमरा संगे छलाह तरुण तुरक (यंग टर्क) श्री जीवकान्तजी। ओ कह' लगलाह सुपौल नव-लेखन कानफ्रेन्सक सौरभ आ सुआद आ राजकमलक औघड़पनी ओ अक्खड़पनीक संग किसुनजीक अति सहिष्णु मधुसिक्त आतिथ्यक कस्सल आ रस्सल कथा। से सात मीलक पनिआयल बाट सधि गेलैक, मनीगाछी टीसनक चाह खाना मे आबिक' किन्तु किसुनजीक माधुर्यक सुगन्धि-क्रम नहि सधलैक। आगुक पाण्डुर-नील क्षितिज पर, उठैत घटाक तर मे एक टा भव्य 'कलम' बागक झुरमुट देखि रहल छिऐक। सैह हमरालोकनिक झुरमुट मे सँ ओहन झमटगर गाछ, अमृतफलवला किसुनजी सन अडिग गाछ जे केहनो रौद, बसात आ वर्षा मे आकाश मे मूड़ी तनने, अपना छाहरि मे कतोक केँ जुड़बैत, अपना ठारि पर कतोक कोइली आ पपीहा केँ कुहकबैत ठाढ़ छलैक से कत' चल गेलैक। कतेक एकसर लागि रहल छी हम सभ। एहि फाँक केँ आब के भरि सकत। ओह, ओह, कतेक जोर सँ आकाश हाहाकार क' उठलैक आ मेघक वक्ष पर बिजुरीक अक्षर मे ओ की छिटकि उठलैक—*फाइनली ही फेल्ड, किल्ड वाइहर-वाइ लिटरेचर, किल्ड ऐज आल ग्रेट सोल्स आर वाइ दी पैसन दैट फायर्स देम।*

अर्थात्... अन्त मे ओ चल गेलाह, हुनके द्वारा मारल गेलाह, साहित्ये द्वारा मारल गेलाह, ओहिना मारल गेलाह जेना सभ महान आत्मा मारल जाइत छथि, ओही वासना सँ जे हुनका ज्योतित रखने रहैत छनि।

मिथिला-मिहिर, 2 अगस्त 1970

अटैचा उड़ा ला गया

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

घटना 1952-53क थिक। हमर अन्तरंग मित्र स्व. रामकृष्ण झा 'किसुन' बहुमुखी प्रतिभाक लोक छलाह। जन्म एक साधारण परिवार मे भेल छलनि। शिक्षा सेहो संस्कृतक माध्यम सँ सामान्ये प्राप्त क' सकलाह। जीविका सेहो साधारणे छलनि, एक उच्च विद्यालय मे सहायक शिक्षकक पद पर कार्यरत रहथि। जें हेतु शास्त्री परीक्षाक बाद आचार्य परीक्षा देबाक स्थिति नहि आबि सकलनि, रुग्न वृद्ध पिता परिवारक भार उठयबा सँ असमर्थ भ' गेल छलथिन तें नौकरी पकड़ि लेब' पड़लनि। शास्त्री मात्र रहलाक कारणें विद्यालयक प्रबन्ध समिति स्नातकक वेतनमान देब स्वीकार नहि करैत रहनि तें अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा द्वारा संचालित मैथिलीक उत्तमा परीक्षा देब' अयलाह तँ हमरा परिचय भेल। ओहि परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाक बाद प्रशिक्षित स्नातकक वेतनमान भेट' लगलनि।

किन्तु ई सब साधारण रहितो व्यक्तित्व, प्रतिभा आ प्रभावक दृष्टिएँ ई असाधारण लोक छलाह। मैथिली साहित्य परिषद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पुस्तकालय संघ, शिक्षक संघ सब सँ अपना केँ सम्बद्ध रखने छलाह। पौरोहित्य अपन वंशानुगत व्यवसाय छलनि। नगरक व्यवसायी वर्ग अतिशय सम्मान दैत छलनि। छोट सन कसबा सुपौल हिनका जीवन काल मे अनुमण्डलक दर्जा पाबि गेल छल। प्रशासको वर्ग मे ई अपन धाख जमौने छलाह। सुपौलक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक एतेक धरि जे व्यावसायिक गतिविधि पर्यन्त हिनक संकेत पर चलैत छलनि।

बिहार प्रान्तीय माध्यमिक शिक्षक संघक अधिवेशन ओहि वर्ष आरा मे आयोजित छलैक। शिक्षक संघ सँ हमहूँ सम्बद्ध छलहुँ। भाइक चिट्ठी आयल जे आरा अधिवेशन मे भाग लेबाक हेतु भाइ दरभंगा मे हमरा संग करैत जयताह। ताहि समय मे पटना जयबाक हेतु ट्रेन सँ पहलेजाघाट जा लोक केँ जहाज सँ गंगा पार कर' पड़ैत

छलैक। सुविधापूर्वक जयबाक हेतु पहलेजा घाटक गाड़ी मे लोक शय्या आरक्षित करा लैत छल। भाइ लिखने छलाह जे दू टा शय्या आरक्षित करा क' रखने रही।

ट्रेन राति मे साढ़े नौ बजे छलैक जे भिनसर पहुँचा दैक। आठ साढ़े आठ बजे लोक पटना पहुँचि जाइत छल। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार भाइ अर्थात् किसुनजी लहेरियासराय स्थित हमरा डेरा पर पहुँचि गेलाह। भोजनादि सँ निवृत्त भ' चलबाक हेतु कपड़ा पहिर' लगलहुँ तँ भाइ कहलनि—भाइ हौ! हम तोरा हाफशर्ट पहिरने कहिओ नहि देखलियह अछि। ट्रेन मे हाफेशर्ट पहिरह। हम आचार्य परीक्षा द' जहिया अयलहुँ तकरा प्राते राजस्कूल मे स्थानापन्न हेतु पण्डितक पद पर काज करबाक हेतु बाध्य भ' गेल रही। स्कूल मे हाफशर्ट पहिरने अपने झुझुआन लागल। स्मर्तव्य जे तहिया हम केवल बीस वर्षक रही तें विद्यार्थी मे फेंटा जाइ। तें शिक्षकक पद पर अबिते जे परिधान अपना लेल निर्धारित कयल तकर निर्वाह करैत आबि रहल छी। भाइ केँ कहलिऐनि जे आब हाफशर्ट कहाँ पहिरैत छी। ओ अपन हाफशर्ट अटैची सँ बाहर क' हमरा दैत कहलनि मुदा आइ पहिरहि पड़तह। हम अपना कुर्त्ता सँ टिकट मात्र बाहर क' टाका पैसा सहित कुर्ता अटैची मे राखि लेल।

ट्रेन मे स्थान पकड़लाक बाद भाइ कहलनि—बेराबेरी दून गोटे केँ जगबाक आ सुतबाक अछि। एत' सँ मुजफ्फरपुर धरि एक गोटे सूतब। हमरा रतिको जगरणा अछि तें तों जागह आ हम सुतैत छी। मुजफ्फरपुर धरि हम जागल रहलहुँ। मुजफ्फरपुर पहुँचैत देरी भाइ अपने उठि गेलाह। ऊपरका बर्थ सँ उतरि हमरा ऊपर चल जाय कहलनि आ दुनू अटैची केँ गेंटि ओहि पर ओठंगि क' एक टा पोथी पढ़' लगलाह। सुतबाक काल हमरा की फुरल, घड़ी फोलि क' अटैची मे राखि देलिऐक।

हम भेर निद्रा मे रही। हाजीपुर सँ गाड़ी फुजलैक। दू टा छौंड़हर लोक गेट लग आबि ठाढ़ भ' गेल। सोनपुर पुल पार कयला पर गाड़ीक गति कने मद्धिम भ' जाइक। ओ छौंड़ा दुनू भाइक माथ तर सँ एक टा अटैची सराक द' खीचि गाड़ी सँ कूदि गेल। भाइ चिचिया उठलाह—'घीचि लेलक'। धड़फड़ा क' नीचाँ उतरलहुँ। भाइ ग्लानि सँ भरि गेलाह। हुनका हमरा द' होइनि जे हिनका होइत होयतनि जे सूति रहल होयताह तें बारंबार कहथि जे पढ़बा मे तल्लीन छलहुँ, अचांचक मे चलैत गाड़ी सँ अटैची ल' छौंड़ा कूदि गेल।

हम तँ किंकर्तव्यविमूढ़ रही। ने संग मे टाका पैसा बाँचल ने लत्ता कपड़ा, संगहि घड़ी सेहो। हमरा तँ फुरबो ने करितय, मुदा भाइ सोनपुर पहुँचला पर रेलवे पुलिस मे शिकायत लिखा अयलाह, किन्तु ताहि सब सँ की भेनिहार? ताहि समय एम. एल. एकेडमीक प्रधानाचार्य झिंगुर कुमरजीक बालक उपेन्द्र कुमर पटना साइंस कालेजक छात्र रहथि, रामानुजम छात्रावास मे डेरा छलनि। हम ओत' चल गेलहुँ आ भाइ

आर्यावर्त कार्यालय गेलाह। ओ ओकर संवाददाता सेहो रहथि। उपेन्द्र कुमर सँ 100 टाका लेल। ओ हमरा हाफशर्ट पहिरने देखलनि तँ छगुनता मे पड़ि गेलाह। ताहि समय एहन महगी नहि रहैक। पटना मे एक खंड धोती, एक टा रेडीमेड कुर्ता, एक टा घड़ी कीनि आर्यावर्त कार्यालय गेलहुँ। आर्यावर्त मे हमर हिन्दीक कथा छपैत छल, किछु पाइ बाँकी छल। भाइ ताबत ओहि सभक बिल पास करबाक' रखने छलाह। साँझ धरि आरा पहुँचैत गेलहुँ।

दोसर दिन भाइ सबेर सकाल एक टा आर्यावर्त कीनि क' अनलनि जाहि मे अटैचीक चोरीक समाचार छपल छलैक जे हमरा पहिने नहि कहने रहथि। ओहि समाचारक शीर्षक रहैक—'अटैची उड़ा ली गयी' मुदा विलक्षणता ई छलैक जे ची, ली, यी तीन अक्षरक दीर्घ ईकार टूटि गेल रहैक तें ओ भ' गेल रहैक 'अटैचा उड़ा ला गया।' यद्यपि ताहि सब सँ किछु भेनिहार तँ नहि छल, किन्तु बहुत दिनुक बाद हमरा समाचारक कटिंग एक मोकदमा मे बहुत सहायक भेल।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

अश्रुतर्पण

चन्द्रनाथमिश्र अमर

'स्वस्ति श्री बड़का भाइ केँ गोड़ लगैत छियनि' दुनू गोटेक पत्र एही ठाम सँ आरम्भ होइत छल। आइ ई वाक्य करुणाक गंगोत्री सन प्रतिभासित होइत अछि। आइ सँ तैस वर्ष पूर्व किसुन जी अर्थात् स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किसुन' (एहि नामक संग स्वर्गीय विशेषण लगबैत जाहि मर्मान्तक वेदनाक अनुभव भ' रहल अछि तकरा शब्द द्वारा हम की, क्यो व्यक्त करबा मे समर्थ नहि भ' सकैत अछि) हमरा भाइक रूप मे प्राप्त भेलाह। पहिल भेंट 1947 ई. मे मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित मैथिली परीक्षा मे (रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा केन्द्र सँ) सम्मिलित होयबाक हेतु जखन दरभंगा आयल छलाह, परिषदक उपमन्त्री होयबाक कारणें हम उक्त केन्द्रक केन्द्राधीक्षक छलहुँ, तखन एकदम नाटकीय ढंगें भेल छल जकर उल्लेख ओ स्वयं कतहु क' चुकल छथि। मिथिला मिहिरक माध्यम सँ नाम्ना हम एक दोसर सँ पूर्व परिचित छलहुँ। किन्तु जाहि क्षण मे हमरा दुनू गोटे केँ पहिल पहिल भेंट भेल से आश्चर्यजनक रूपें शुभ क्षण छलैक। पहिल भेंटक बाद प्राय: डेढ़ वर्षधरि मात्र पत्राचार होइत रहल किन्तु ओ पत्राचार हमरा दुनू व्यक्तिक सम्बन्ध केँ क्रमे तेना दृढ़ सँ दृढ़तर बनबैत गेल जे पाछाँ दू शरीर एक प्राण भ' गेलहुँ।

हितोपदेशक ई वचन—'न मातरि न दारेषु न सोदर्ये नचात्मजे। निश्वास: तादृश: पुंसां यादृङ्मिने स्वभावजे' सर्वथा सत्य प्रतिभासित होब' लागल। एक दिशा, एक उद्देश्य, एक विचारधारा, एक लेखनशैली एवं एक कर्मक्षेत्र रहबाक कारणें एक दोसरक पूरक रहलहुँ। जे कोनो आयोजन हो, भाइक पत्र अयबे करत आ भाइक पत्र आओत तँ हमरो जाइये पड़त। एहने कोनो अवसर आयल होयत जे भाइ द्वारा आयोजित आयोजन मे हम सम्मिलित नहि भेल होयब।

सहर्षा जिलाक सम्पूर्ण साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतनाक मूर्तिमान एक प्रकाशस्तम्भ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो अथवा मैथिली साहित्य परिषद, पुस्तकालय

आन्दोलन हो अथवा शिक्षक संघक संघटन, पत्रकार संघ हो अथवा संस्कृत भाषाक रक्षा ओ विकासक प्रसंग कोनो विचार, विद्यापति स्मृति पर्व हो अथवा तुलसी जयन्ती, कवि-सम्मेलन हो अथवा गायक-सम्मेलन, बिहार प्रान्तीय शिक्षक सम्मेलन हो अथवा अखिल भारतीय मैथिली लेखक-सम्मेलन, सभ ठाम भाइ अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्वक संग अपना प्रभाव क्षेत्र मे अनेक केँ समेटने विद्यमान भेटताह। एहि तैस वर्षक अन्तराल मे कम सँ कम गोटेक सय मंच पर दुनू भाइ संग भेल होयब। शिक्षक संघक अधिवेशन मे तँ दरभंगा जिलाक शिक्षक हमरा पर ई दोषारोपण करैत रहलाह जे अहाँ तँ सहर्षा जिलाक प्रतिनिधित्व करैत छी। शिक्षक संघक अधिवेशन मे प्रत्येक जिलाक प्रतिनिधिलोकनिक हेतु पृथक-पृथक खण्ड मे आवासक व्यवस्था रहैत छनि आ हम जाहि कोनो अधिवेशन मे गेलहुँ आरा, छपरा, पटना, नवादा, कटिहार सभ ठाम हमर आवास भाइक संग रहत। संघक राजनीति मे भाइ हमर नेता। जे भाइ कहथि से हमरा कर्त्तव्य।

नीति छैक—'विद्या ददाति विनयम्' से वस्तुत: विद्याक प्रसादें विनम्रताक प्रतिमूर्ति छलाह किसुनजी। एहन कर्मठ, एहन कार्य दक्ष, एहन लौकिकता मे कुशल आ एहि रूपें संयत जीवन व्यतीत कयनिहार कठिनते सँ तकला उत्तर दोसर व्यक्ति भेटि सकताह। भाइक पत्र आयल—अमुक तिथि केँ, अमुक उपलक्ष मे, अमुक आयोजन कर' जा रहल छी, दरभंगा सँ अमुक गाड़ी सँ चलला उत्तर एतेक नम्बर गाड़ी समस्तीपुर मे एतेक बजे, मानसी मे एतेक समय भेटतह, एतेक बजे सुपौल वा सहर्षा वा मधेपुरा पहुँचा देतह अर्थात अबिती-जइतीह सम्पूर्ण टाइम टेबुलक उल्लेख करैत कोना कम सँ कम समय मे आबि क' पुन: अपन कार्य पर घूरि क' जा सकैत छी तकर पूर्व व्यवस्था। साधारणत: संस्कृतक विद्वान थोड़ेक व्यावहारिकता मे अपटु बूझल जाइत छथि, हमर भाइ कतए सँ एतेक व्यावहारिकताक ज्ञान पाबि सकल छलाह भगवान जानथि।

रहन-सहन खान-पान मे एकदम रईसी। लत्ता-कपड़ा एकदम स्फीत, समयक बन्धन मे एकदम जकड़ल। कतहु रहताह, बाट टा केँ छोड़ि केहनो असुविधाजनक स्थान मे नियत समय पर नित्य कृत्य क' निर्धारित समय पर उपस्थित। सतत एक टा मौलिक चिन्तन मे निरत। यात्राक हेतु पृथक एक टा सेट, जाहि मे तोसक पर्यन्त। गंजी चारि टा सँ कम संग मे नहि। तेल, साबुन, मंजन, इत्र। एम्हर आबि खद्धड़ पहिर' लागल छलाह, ताहि सँ पहिने मटकाक कुर्त्ता मे भाइक गोर रतरत देह एक आभाक संग जे चमकि उठैत छलनि से कतेको पैघ लोक केँ देखने छी, ओ चमक कहाँ। जाबत पान खाइत छलाह ताबत संग मे जे पानक विन्यास रहैत छलनि से जे हुनका सम्पर्क मे रहल होयताह सैह कहि सकैत छथि। अपन समस्त गतिविधि सँ

अपन समस्त मित्र मण्डल केँ अवगत राखब। एतनीयोटा बात मे कोनो संशय भेल तँ ताहि संशयक निवारणार्थ तुरन्त पत्र ठोकि देबा मे कनेको आलस्कर नहि। ककरो पत्र पहुँचल, पढ़ि क' तुरन्त ओ उत्तर लिखि देब हुनक स्वाभाविक प्रवृत्ति छलनि।

किसुन जीक सम्पर्क मे जतेक साहित्यिक अनुष्ठान, आन्दोलन ओ गतिविधि मे रहि चुकल छी सभ टाक संस्मरण तँ एक विशाल ग्रन्थ भ' जायत ततेकक प्रकाशनक अवकाश कहाँ। पहिले भेट जे अछि से अपना मे पूर्ण रोचक एक आख्यान।

एक बेरुक घटना स्मरण होइत अछि। प्रायः 1954 ई. छलैक। आरा मे बिहार प्रान्तीय शिक्षक संघक अधिवेशन छलैक। भाइक पत्र पहँचल—'आरा जयबाक मार्ग मे हम दरभंगा होइत जयबाक निश्चय कयलहुँ अछि। अमुक गाड़ी सँ दरभंगा पहुँचब, फल्लाँ फल्लाँ काज करब आ रातुक गाड़ी सँ दुनू भाइ पटनाक हेतु चलि पड़ब। तैयार रहिह'।' भाइ नियत समय पर आबि गेलाह। काजो सभ भ' गेलनि। दिन मे भरि पोख हमरा डेरा पर सुतलाह। हमरा अर्द्धवार्षिक परीक्षाक परीक्षाफल प्रकाशित करबाक छल। तें दिन भरि अत्यन्त व्यस्त रहलहुँ। पूर्वाह्न के कहय अपराह्नो स्कूले मे बीतल। राति मे जल्दी-जल्दी मोटरी-चोटरी बान्हि पहलेजावाली गाड़ी पकड़बाक हेतु उद्यत भेलहुँ। चलैत काल भाइ केँ की मोन भेलनि, कहलनि—आइ सात वर्ष सँ तोरा सँ परिचय अछि मुदा आइ धरि हाफ सर्ट पहिरने तोरा नहि देखलियह अछि। आइ ई हमरवला हाफ सर्ट पहिरि क' चलह।

भला भाइक इच्छाक पूर्त्ति कोना नहि कयल जाय। एक बेर कहलियनि जे शिक्षकक जीवन अंगीकार कयलाक बाद हम हाफ सर्ट केँ त्यागि देल। हाफसर्ट मे व्यक्तित्व छुछुन्न सन लगैत छैक। हमरा जत' धरि स्मरण अछि, तकर बाद सँ ओ हाफ सर्ट बनबौलनि नहि आ हाफ सर्ट पहिरि क' स्कूलो कहियो नहि गेलाह। किन्तु हमराधरि तत्काल ओ सर्ट पहिर' पड़बे कयल। फलतः हम अपन कुर्ता ओ तौनी मोटरी फोलि राख' लगलहुँ तँ कहलनि—लाबह, हम अपने अटैची मे ध' दैत छिऐक। दुनू भाइ चललहुँ। जाहि ठाम ठाढ़ होइ ताहिठाम ठिकिया क' देखथि आ अन्त मे कहलनि—भाइ वस्तुतः तोहर अनुमान ठीक छह। हाफ सर्ट मे व्यक्तित्व बचकाना सन भ' जाइत छैक। समस्तीपुर मे संयोग सँ ऊपरका एक टा बर्थ खाली भेलैक। भाइ कहलनि—हम भरि दिन खूब सुतलहुँ अछि आ तों दिनो मे विश्राम नहि क' सकलह। हमरा संग एक टा उपन्यास अछि से पढ़बोक अछि। तों ऊपर जाक' सूति रहह। हम बैसि क' पढ़ैत छी। कात मे बैसल छलाह। तर मे हमर पेटी, ताहि पर सँ अपन अटैची आ ताहि पर सँ गेड़ुआ द' ओठंगि क' पढ़' लगलाह। हम निर्भर भ' सूति रहलहुँ। संयोगवश हाजीपुर जाइत जाइत मेघ झिसिआय लगलैक। हँ, सूतय काल हम अपन घड़ी जे 15 दिन पहिने किननै छलहुँ सेहो भाइक अटैची मे धरबा

देलिऐक। एक भद्र सन पुरुष जे लग मे बैसल छलनि से ओहि भिनसरवा राति मे हिनका पढ़बा मे तन्मय देखि उठि क' पाछाँ चल गेलनि। हाजीपुर सँ गाड़ी फुजलैक तँ ओ फाटक खोलि देलकैक आ सोनपुर पुल सँ कनेक पहिने एक झटकाक संग अटैची खीचि चलैत गाड़ी सँ कूदि गेल। भाइ चिचिया उठलाह—भाइ हौ! अनर्थ भेल, अटैची खीचि लेलक। आब की कयल जाय। मुदा भाइ, सोनपुर मे उतरि तुरन्त पुलिस मे मामिला दर्ज करौलनि। पटना उतरि आर्यावर्त कार्यालय जा क' किछु पारिश्रमिक दुनू भाइक बाकी छल से लेल। भाइ पुनः कुर्त्ता बनबौलनि आ तखन आरा पहुँचैत गेलहुँ।

सभ सँ अन्तिम भेंट भेल 5 अप्रैल केँ गोड्डा मे। भरि राति कतेक गप्प कयल, कतेक योजना बनाओल तकर की चर्चा करू। भाइ कहलनि—गर्मी छुट्टी मे दरभंगा आबि दू दिन तोरा डेरा पर रहि एहि योजनाक कार्यरूप देबाक संग पूर्ण रूपें विचार करब।

बाबूसाहेब चौधरी कहलनि—किछु विद्वान केँ सम्मानित करबाक अछि तें एक टा अभिनन्दन पत्र लिखि दिय' जाहि मे सभक समावेश भ' जाइनि। समय बड़ थोड़ छलैक हमरा नित्य कृत्य करबाक छल तें हम कहलियनि—भाइ केँ माने किसुन जी केँ कहियौन ओ तुरन्त लिखि देताह। चौधरी जी कहलनि—अपने सन दोसरा बुतें नहि होयतैक तें अपने कष्ट करियौक। हम कहलियनि—किसुन जी हमर भाइ थिकाह आ सेहो जेठ, एक बेर अजमा क' तँ देखि लिय'। हम जाबत वाह्य भूमि सँ अयलहुँ, तावत अभिनन्दन पत्र तैयार। चौधरी जी गदगद होइत बजलाह—जहिना अपने कहल तहिना सिद्ध भेल, अपनेक भाइ अपने सँ जेठ। भाइ हँसैत कहलथिन—एतेक दिन तँ मोजर नहि दैत छलियनि, मुदा डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' एहि बेर पोल खोलि देलनि तें आब जेठक पद स्वीकार कर' पड़ैत अछि। नहि तँ ई आन दृष्टियें जेठ छथि जकर प्रमाण मे हमर 'आओ गायें' नामक छोट सन हिन्दी कविता संग्रहक भूमिका लिखने छथि।

ई अनुमान नहि छल जे आजुक भेंट अन्तिम भेंट थिक। आह! भरि मुँह भाइ सम्बोधित कर'वला ई व्यक्तित्व अपन परिवारे नहि अपन सम्पूर्ण मित्रमण्डल केँ अपार शोक सागर मे डुबैत छोड़ि अपन नश्वर शरीर केँ त्यागि चल गेलाह। समाचार पढ़ैत जेना बुझि पड़ल—भादवक अन्हरिया राति मे बाट चलैत जेना सम्पूर्ण नगरक बिजली लाइन गुम्म भ' गेल हो। प्राण अहुछिया काटि रहल अछि, कण्ठ अवरुद्ध अछि, वाणी कुण्ठित, कलम भोथ। हम अकिंचन की क' सकैत छी। हे दिवंगत जन्म जन्मक बन्धु! स्वीकार करू ई अश्रुतर्पण।

मिथिला मिहिर : 19 जुलाइ 1970

सहज-सरल-स्नेहिल किसुनजी

हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ'

मधेपुरा पहिने भागलपुर जिलाक एक अनुमंडल छल। प्रशासनिक दृष्टि सँ ई 1845 सँ. भागलपुर सँ जुड़ल छल। मुदा एकर साहित्य-संस्कृतिक सम्वर्द्धन मे भागलपुरक कोनो योगदान नहि रहल। एहि मामिला मे ई क्षेत्र मिथिला सँ बेसी निकट छल। 1951 ई.क पूर्व सहरसा मे अनेक साहित्यिक समारोह होइत रहल जाहि मे दरभंगा सँ पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पं. राघवाचार्य शास्त्री, सुकवि सोमदेव सन कविलोकनि सम्मिलित भ' गीत कविताक गंगा प्रवाहित क' देलनि। डा. कुंवर किशोर मंडल (पूर्व कुलपति बिहार आ मगध विश्वविद्यालय) ताहि समय पटना मे दर्शनशास्त्रक स्नातकोत्तरक छात्र रहथि। हुनक अनुरोध पर हुनक आदरणीय गुरुदेव कथा-सम्राट प्रो. हरिमोहन झाक सहरसा आगमन भेल रहनि आ दुर्गास्थान मे हुनक हास-परिहासक कार्यक्रम राति भरि चलैत रहल। एहि सभ कार्यक्रम मे सक्रिय भागीदारी छलनि पं. रामकृष्ण झा 'किसुन'क। सभ टा कार्यक्रम मैथिली आ हिन्दी मे सम्पन्न भेल छल।

1951 ई.क ग्रीष्म मे श्रीकृष्ण खंडेलवाल गढ़बरुआरी (सुपौल) मे सहरसा जिला पुस्तकालय संघक एक अधिवेशन आयोजित कयने छलाह। एहि अधिवेशन मे पं. रामदयाल पांडेय उपस्थित भेल रहथि। मधेपुराक शिवनेश्वरी प्रसाद संघक अध्यक्ष चुनल गेल रहथि आ कार्य समितिक अन्य सदस्य मे पं. रामकृष्ण झा 'किसुन'क चुनाव भेल रहनि।

तकरे बाद सहरसा मे एक साहित्यिक समारोहक आयोजन भेल। ई समारोह किसुनजी सहरसाक दुर्गास्थान मे आयोजित कयने छलाह। पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्यक्षता मे एक भव्य कवि-सम्मेलनक आयोजन भेल, जाहि मे दरभंगाक अनेक गणमान्य कवि उपस्थित छलाह। एही गोष्ठी मे सहरसा जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलनक गठन भेल। वैद्यनाथ झा एकर पहिल अध्यक्षक रूप मे पं. रामकृष्ण झा

'किसुन'क नाम प्रस्तावित कयलनि, जकर अनुमोदन पाण्डेय विश्वनाथ शरण 'ललन' कयने रहथि। किसुन जी एहि पंक्तिक लेखक कें एकर सचिव मनोनीत कयलनि। ई तय कयल गेल जे एकर अस्थायी कार्यालय मधेपुरा रहत। तहिया सँ एक वर्ष धरि अर्थात साहित्य सम्मेलनक द्वितीय अधिवेशन मार्च 1952 जे मुरलीगंज (मधेपुरा) मे भेल छल, तहिया धरि किसुनजी एकर अध्यक्ष रहलाह।

अपन अध्यक्षताक अवधि मे ओ नियमित मधेपुरा अबैत रहलाह। कोसीक बाढ़िक समय मे हमर पूज्य पिता सुपौल मे पोस्टमास्टर रहथि। माँ अपन परिजनक संग सुपौल मे कोसीक विभीषिका भोगने छलीह। अतः सुपौलक कोनो व्यक्ति जँ हमरा ओतय अबैत रहथि तँ माँ प्रफुल्लित भ' उठैत छली आ अड़ोसिया-पड़ोसिया सबहक कुशल-मंगल पुछैत रहैत छली। किसुन जी सुपौल मे हमर अग्रजक संगी रहथि, अतः हुनका देखिते हमर माँक प्रसन्न होयब स्वाभाविक रहनि। माँ हुनका स्नेह सँ 'सुपौल बला पंडितजी' अथवा 'किसनजी' कहि संबोधित करैत रहथि।

किसुनजी हमरा ओतय अबैत छलाह कि माँ हमरा संबोधित करैत बाजि उठैत छली—'हौ बौआ, सुपौल बला पंडित किसनजी आयल छथुन्ह।' हमर प्रणाम स्वीकारैत ओ सम्मेलनक प्रगतिक सम्बन्ध मे प्रश्नादि पुछैत छलाह—पुस्तकालयक सदस्य संख्या मे कतेक वृद्धि भेल, कोन-कोन नव पोथी मँगाओल गेल अछि, कार्यसमितिक बैसार नियमित होइत अछि वा नहि, वाचनालय मे प्रत्येक दिन कतेक उपस्थिति रहैत अछि आदि-आदि।

ज्ञातव्य थिक जे ओहि समय मधेपुरा मे हिन्दी आन्दोलनक केन्द्र समदर्शी पुस्तकालये छल। किसुनजी जिला पुस्तकालय संघक सक्रिय सदस्य रहथि आ पुस्तकालय आन्दोलनक अग्रणी-पुरुष। समदर्शी पुस्तकालयक मुख्य संचालक छलाह बदरी नारायण झा 'विप्र'। ओतय निरन्तर साहित्यिक कार्यक्रम होइत रहैत छल। कहियो काव्य-गोष्ठी, कथा-गोष्ठी अथवा कोनो ने कोनो साहित्यकारक जयन्ती। तुलसी जयन्तीक कार्यक्रम तँ अनेक दिन धरि चलैत रहैत छल। कवि-सम्मेलन मे तँ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री धरि आबि चुकल रहथि।

हिन्दीक प्रगतिक लेल किसुनजी एक रूपरेखा तैयार कयने छलाह। तकरा अनुसार शहरक बुद्धिजीवी कें ई प्रेरित करब छल जे ओ अपन दैनिक कार्य आ पत्र-व्यवहार हिन्दी-ए मे करथि। सम्पन्न लोक बेसी सँ बेसी संख्या मे हिन्दीक पोथी कीनथि। पुस्तकालय मे सघन विचार-गोष्ठी आयोजित कयल जाइ। किसुन जी गाम सब मे पुस्तकालयक स्थापना पर बेसी जोर दैत छलाह। हुनका विचारें हिन्दी आन्दोलन पुस्तकालयक स्थापने सँ सफल भ' सकैत अछि।

किसुनजी मधेपुरा आबथि तँ पं. हितनारायण झा सँ भेंट करथि। ओ ओहि समय

मधेपुरा मे मुख्तार छलाह। ओ हिन्दी मे कविता लिखैत छलाह—मुदा ओ पूर्ण समर्पित रहथि मैथिलीक प्रति। अपितु ओ मैथिलीक प्रश्न पर अतिवादी रहथि—कोनो समझौता करबाक लेल तैयार नहि रहथि। ओतहि किसुनजी हिन्दीक यशस्वी कविक रूप मे चर्चित भ' चुकल रहथि आ मैथिली मे हिन्दी सँ बेसी हुनक पहिचान बनि गेल रहनि। किन्तु ओ कोनो भाषा-विशेषक प्रति अतिवादी नहि रहथि अपितु पूर्ण समन्वयवादी रहथि।

दुनू गोटय मे गपशप होइत रहनि। हम सुधी श्रोता जकाँ दुनू गोटय कें सुनैत छलहुँ। हमरा लेल दुनू अग्रजतुल्य रहथि, दुनू वन्दनीय। ओतय सँ छूटिते ओ हमरा संग मधेपुराक पूब कोसीक कात अवश्य अबैत रहथि। किछु काल धरि कोसीक कात मे बैसि कोसी छाड़निक प्राकृतिक सौन्दर्य, माछक टोह मे बैसल उज्जर बगुलाक पांति आ शैवाल-जाल पर छनि-छनिक' आगाँ बढ़ैत नदीक पातर धारक अवलोकन करथि आ अपन 'आत्मनेपद'क सस्वर पाठो करथि। संगहि हमरो सँ किछु कविता सुनथि। फेर साँझ होयबा सँ पहिने हमसब घर घुरैत रही। माँ हुनक भोजन मे खीर अवश्ये परसैत छली। खीर हुनक प्रिय भोजन रहनि।

किसुनजीक हृदय माखन सन कोमल रहनि। हुनका मे क्रोध नहि छलनि। किन्तु एकबेर हुनक आक्रोश हमरा सहय पड़ल। तकरा हम बहुत दिन धरि मोन रखलहुँ। भेल ई छलैक जे सम्मेलन लेल किछु पंजीक संधारण करबाक आज्ञा ओ हमरा देने रहथि। ओहि मे सदस्यक नामावलीक संग हुनक अन्य विवरणी, आत्मपरिचय आ नामक सोझाँ चंदा रसीद संख्या कें अंकित करबाक छल। अनेक एहन सदस्य रहथि जे चंदाक रसीद प्राप्त कइयो क' राशि नहि देने रहथि। एहि इतस्ततः मे ओहि पंजी कें हम अद्यतन नहि कयने रही संगहि कार्यवाही पुस्तिको अपूर्ण छल।

भैया किसुनजी आक्रोशित भ' उठलाह। हुनक कहब रहनि जे चंदाक हिसाब अद्यतन नहि लिखल जायब सदस्यक प्रति असम्माने नहि अपितु विश्वासघात थिक। किछु काल ओ आक्रोशित रहलाह आ हम मौन। फेर हमरा सँ ओ सब टा पंजी लए लालटेनक इजोत मे स्वयं लिखि क' अद्यतन कयलनि। हमर किशोर-मन कें ई बुझबा मे भाँगठ नहि रहल जे भैया साफ-सुथरा काज चाहैत छथि—अदहा-छीधा काज हुनका पसिन्न नहि छनि। तहिया सँ यथासंभव पंजीक संधारण वैह करैत छलाह।

पुस्तकालय आन्दोलनक माध्यमे हिन्दी प्रचार-प्रसारक कार्य हिनक सफल नेतृत्व मे एक वर्ष धरि चलल। जाहि निर्मल आ निश्छल भाव सँ ओ एहि मे क्रियाशील रहलाह, से अविस्मरणीय थिक। ओ एही नवजात सम्मेलन कें प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन सँ सेहो सम्बद्ध करौलनि।

मुरलीगंज मे सम्मेलनक द्वितीय अधिवेशन मार्च 1952 मे भेल। एहि मे राजनीति

केर प्रवेश भ' गेल। लगैत छल जेना ई सम्मेलनक द्वितीय अधिवेशन नहि अपितु नव ढंगें सम्मेलनक गठन भ' रहल हो। ई सम्मेलन पं. रामकृष्ण झा 'किसुन'क अध्यक्षता मे सम्पन्न होयबाक चाही छल। एहि सम्मेलन मे पछिला वर्षक उपलब्धि, लेखा-जोखा, अध्यक्ष आ सचिवक प्रतिवेदन प्रस्तुत कयल जयबाक चाही छल।

आयोजक लोकनि अपन अलग कार्यावली तैयार कयने रहथि। किसुनजीक संक्षिप्त भाषणक संगहि खुला अधिवेशनक अध्यक्षताक लेल प्रो. प्रबोधनारायण सिंहक नाम प्रस्तावित क' देल गेल। किसुनजी अपन प्रतिवेदन धरि नहि सुना सकलाह। अगिला वर्ष लेल विद्याकर कवि अध्यक्ष चुनि लेल गेलाह। वैद्यनाथ झा, हम आ किसुनजी मौन भ' बैसल छलहुँ। किसुनजी एहि कार्यवाही सँ क्षुब्ध छलाह। विद्याकर कविक प्रति हुनका सम्मान छलनि, किन्तु आयोजक लोकनिक धृष्टता आ अनर्गल कार्य-संस्कृतिक प्रति मौन विरोध। ओ हमरा एतबे कहलनि— 'शलभ, जँ यैह दशा रहल तँ ई सम्मेलन बेसी दिन धरि जीवित नहि रहत...।'

सैह भेल। कविजी नाम मात्र लेल सचिवक रूप मे हमरा मनोनीत कयलनि। वर्ष भरि कोनो काज नहि भेल। आब ई सम्मेलन मात्र मधेपुराक बनिक' रहि गेल। सुपौल आ सहरसाक साहित्यकार एहि सँ काटि देल गेल छलाह। 1953 मे विद्याकर कविक गाम शाह आलमनगर मे एकर तृतीय सम्मेलन भेल। एकर तुरत बाद कविजी सक्रिय राजनीति मे चलि गेलाह आ हम सरकारी सेवा मे। किसुन जी अपन अथक परिश्रम सँ जाहि गाछ कें सींचि क' पल्लवित-पुष्पित कयने छलाह ओ अकस्मात सूखि गेल छल।

बादो मे किसुनजी सँ सहरसा मे अनेक खेप भेंट भेल। घरक सदस्यलोकनिक कुशल-क्षेम पुछैत रहैत छलाह किन्तु सम्मेलन सम्बन्ध मे ओ कोनो बात नहि दोहरौलनि। ओ नीलकंठ जकाँ अपमानक एहि विष कें पीबि गेल रहथि।

भारती मंडन : 14

पंडितजी : साहित्य आ सुपौल

रामानुग्रह झा

सहरसा जिलाक सम्पूर्ण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतनाक मूर्तिमान प्रकाश-स्तम्भ—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन हो अथवा मैथिली साहित्य परिषदक आयोजन, पुस्तकालय आन्दोलन हो कि शिक्षक संघक अधिवेशन, पत्रकार-संघक वार्षिक आयोजन हो आ कि बिहार राज्य माध्यमिक शिक्षक सम्मेलन, संस्कृत भाषाक विकासक प्रश्न हो आ कि कोनो यज्ञ-प्रयोजन मे कर्मकांडीय कट्टरताक निवारण, विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन हो अथवा तुलसी जयन्तीक, कवि-सम्मेलन हो अथवा संगीत-सम्मेलन पंडितजी सर्वत्र अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व मे सम्पूर्ण गतिविधि केँ समेटने आ समग्र प्रभाव क्षेत्र केँ प्रभावित करैत रहलाह।

सहरसा जिलाक मैथिली आन्दोलनक अग्रचेता लोकनि मे पंडितजीक स्थान अन्यतम। हिनकहि सेवाक फलें सुपौलक महत्त्व केँ मौथिली साहित्यक इतिहास मे नकारल नहि जा सकैछ एवं अद्यावधिक मैथिली-आन्दोलन मे जे भूमिका कलकत्ता, दरभंगा वा पटना आदिक रहलैक अछि, ताहि सँ कनेको कम महत्त्व सुपौलक नहि रहल। पंडितजीक सेवा-सलिल सँ चिर-सिंचित सुपौलक आ संगहि सहरसा जिलाक माटि-पानि एखनो धरि साहित्यिक उत्स केँ अक्षुण्ण रखने अछि। आन ठाम ओ किसुनजी छलाह, किन्तु सुपौलक मूर्ख, पंडित ज्ञानी-अज्ञानी, नेना-बूढ़-पुरान—सभक पंडित जी। हिनक संक्षिप्त जीवन वृत्त एहि प्रकारें अछि—

पंडितजीक शुभ जन्म आश्विन शुक्ल नवमी, सम्वत् 1978 सन् 1329 साल, तदनुसार पहिल जनवरी 1923 ई. केँ सुपौल मे भेल छलनि। टिप्पणीक नाम खुलीलाल झा ओ दुलारक नाम रामकृष्ण झा छलनि। हिनक पिता स्व. नागेश्वर झा एहि ठामक एक बूढ़-प्रतिष्ठित लोक आ भगवद्भक्त ब्राह्मण। दुलार सँ हिनका 'बौआ' ज्येष्ठ बालकक नामधारणक परम्परा नहि रहने सम्बोधित करैत छलथिन।

गामेक मारवाड़ी बोर्ड उच्च प्राथमिक विद्यालय सँ अपर पास कयलाक बाद

संस्कृत टोल पाठशाला मे भर्ती कराओल गेलाह। ओना गाम मे हाई स्कूल छल, किन्तु ताहि समयक लोक मे रुचि अंग्रेजी-शिक्षा दिस अधिक प्रवृत्त नहि भेल छल। अस्तु पंडितजी केँ संस्कृतहिक शिक्षा दियाओल गेलनि। सखबाड़क पं. तेजनारायण झा एवं पं. महावीर झा सँ संस्कृत व्याकरणक अध्ययन कयलनि आ द्वितीय श्रेणी मे प्रथमा पास कयलनि। हिनक एक शिक्षक पं. उमाकान्त झा जे हालहि मे दिवंगत भेलाह, हुनका सँ ज्ञात भेल जे पढ़बा-लिखबा मे पंडितजी बेश कुशाग्र बुद्धिक छात्र छलाह। हिनक सहपाठी लोकनि मे सर्व श्री लक्ष्मण चौधरी, राधाकृष्ण मिश्र, रामनारायण झा, रामजी झा, स्व. मदन अग्रवाल (सुपौल) पं. श्रीधर झा (रामनगर) स्व. पं. झिंगुर झा (मलाढ़-पंडितजीक समधि) आदि मुख्य। तावत् सुपौल मे कोसीक नग्न नर्त्तन आरम्भ भ' गेल छल। घर-घर मे पानिक हिलकोर उठ' लागल आ लोकक जीवन विपन्न भ' गेल छल। मलेरिया, हैजा आदि महामारी समय-समय पर गामक-गाम उजाड़ि दैत छल। गामक संस्कृत टोल पाठशाला टूटि गेल। अतएव 1935 ई. मे प्रथमा पास कयलाक बाद पं.जीक अध्ययन भंग भ' गेलनि। तखन किछु दिनक बाद धनखोरि निवासी पं. जागेश्वर झा, (जे हिनक सम्बन्धी छलथिन) हिनका अपना संगे नेने गेलथिन आ ओतहि ई फुलपरासक संस्कृत विद्यालय मे नामांकित भेलाह। ओतय सँ 1936 ई. मे मुजफ्फरपुर केन्द्र सँ प्रथम श्रेणी मे मध्यमा परीक्षा मे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि। एहि समय धरि पंडितजीक प्रतिभा निखरि उठल छल। मध्यमाक बादो पंडितजी अध्ययन जारी रखितथि, किन्तु घरक आर्थिक स्थिति कोसीक विभीषिकाक कारणें चिंतनीय भ' उठलनि आ वृद्ध पिता शय्याग्रस्त भ' गेल छलथिन अन्ततः गाम आबहि पड़लनि। गामे मे रहि स्वतन्त्र रूप सँ 1941 मे शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि। 1942 मे स्व. रामटहल चौधरीक (कल्लर चौधरी—ग्राम खजुरा, पो. मधेपुर, जि. दरभंगा, आब मधुबनी) ज्येष्ठ कन्या (श्रीमती निर्माया झा) सँ हिनक विवाह भेलनि। तत्पश्चात् गामे मे रहि घर-गृहस्थीक काज देख' लगलाह।

छात्र जीवने सँ पंडितजी निरन्तर जिज्ञासु, अध्ययनशील आ मनस्वी रहथि। अपूर्व संघटनात्मक क्षमता आ ताहि सँ सम्पन्न हिनक व्यक्तित्व सम्पूर्ण गाम केँ प्रभावित कयने छल। 1943 ई. मे गामक शिक्षित समुदाय केँ संघटित क' श्री मिथिला पुस्तकालयक स्थापना कयलनि। एहि पुस्तकालय मे ग्रामीण जन सहयोग सँ विभिन्न विषयक कैक हजार पुस्तकक संग्रह कयलनि। स्वयं दत्तचित्त भ' ओकर संचालन मे अहर्निश लागल रहलाह। एत' हिनका स्वाध्यायक अपूर्व अवसर प्राप्त भेलनि आ एहि अवसरक सदुपयोग सँ हिनक योग्यता दिनो दिन भास्वर होमय लागल।

किन्तु आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहि रहलाक कारणें पंडितजी केँ बड़ बाधा भेलनि। ज्येष्ठ बहिन विधवा भ' क' संगहि रहैत छलथिन। छोट भाय रामशरण झाजी केँ

सेहो लिखयबा पढ़यबाक छलनि आ पिताश्री अकार्यक भ' गेल छलथिन। कोसीक बाढ़ि मे जेहो किछु जमीन छलनि तकर कोनो उपयोग नहि भ' सकैत छल। अस्तु 1945 मे स्थानीय उच्च प्राथमिक पाठशाला मे शिक्षकक व्यावसायिक जीवन आरम्भ कयलनि। एहि समय मे हिन्दीक काव्यतीर्थ आ मैथिली साहित्य परिषद्क परीक्षा सेहो उत्तीर्ण कयलनि। पश्चात् वृत्ति शिक्षकक रूप मे मैथिलीक अध्यापनक हेतु विलियम्स बहुद्देशीय विद्यालय, सुपौल मे हिनक नियुक्ति भेल, जत' ओ यावज्जीवन प्रतिष्ठित रहलाह।

शिक्षकक रूप मे पंडितजी अत्यन्त कुशल ओ सफल छलाह। हिनक अनुशासनप्रियता, पांडित्य आ मृदु व्यवहार सकल छात्र समुदाय मे अतुलनीय सम्मान आ श्रद्धा छलनि। अपन व्यवहार-कुशलता, चातुर्य आ कार्य-पटुताक कारण सम्पूर्ण शिक्षक समाज आ जिला भरिक बुद्धिजीवी मे हिनक महत्त्वपूर्ण सम्मान छलनि। आजीवन ओ विभिन्न संस्था सँ सम्बद्ध छलाह आ एहि रूपें ओ अपना मे व्यक्ति नहि, संस्था छलाह।

साहित्यक प्रति हिनक अभिरुचि सन् 1936 सँ आरम्भ भेल, जखन हिनक रचना हिन्दी मे आओ गायें एवं इन्द्रधनुष कविता संग्रह प्रकाशित भेल। पश्चात् मधुपजी सँ प्रेरणा भेटलनि तँ मैथिली मे काव्य रचना कर' लगलाह। मैथिली मे हिनक 'आत्मनेपद' कविता-संग्रह 1963 मे बहरायल। जीवन पर्यन्त साहित्य आ साहित्यकारक निर्माण करबा मे लागल रहलाह। हिनकहि सँ प्रेरणा ग्रहण क' मायानन्द जी आ रामानुग्रह झा साहित्य-रचना मे आगाँ बढ़लाह। विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित हिनक कविता, कथा, निबंध मैथिली मे—हिनक विचार आ भावनाक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

पंडितजी पेप्टिक अलसर सँ दारुण रूपें पीड़ित छलाह। प्राय: 24 वर्ष धरि भयंकर यंत्रणा दैत-दैत एहि रोगक कारणें अन्त मे पाँच पुत्र, एक कन्या तथा असंख्य स्नेहिल-शुभेच्छु केँ छोड़ि 15 जून 1970 केँ स्वर्गीय भ' गेलाह। संघर्षपूर्वक उपार्जित हिनक व्यक्तित्व, हिनक सार्वभौमिक दृष्टि, एखनो लोक केँ प्रेरणा प्रदान करैत अछि।

भाषा, धर्म, जातीयता आदिक विभेद हुनका लेल महत्त्वपूर्ण नहि रहलनि आ ने ककरो सँ एहि सभ आधार पर ओ प्रभावितो होइत छलाह। अनुभूतिक क्षेत्र मे हुनक आग्रह यथार्थ पर बेसी केन्द्रित छलनि आ अभिव्यक्तिक क्षेत्र मे निर्जीव आ रुढ़िग्रस्त शैली-शिल्पक परित्याग क' आ अनुभूत वस्तु आ अभिव्यक्त रूपक बीच अन्तरिक संवेदना सूत्र केँ सहजता सँ गुम्फित करैत छलाह। जीवनक अन्तिम समय मे मानवीय सम्वेदना आ भाव शून्यक प्रति हुनक प्रवृत्ति वेश जागरूक भ' गेल छलनि। कोनो दार्शनिक विचार-पद्धति मे अपना केँ नहि बान्हि कोनो राजनीतिक पूर्वाग्रह सँ जीवन

केँ नहि देखि अपन वैचारिक स्वतंत्रताक यथासम्भव रक्षा करब हुनका श्रेयस्कर बूझि पड़ैत छलनि।

लोक केँ जखन-जखन पंडितजीक चिरस्मरणीय स्मृति सजग होइत छैक तखन-तखन एहेन अव्यक्त व्यथा आ कातरताक अनुभूति होइत छैक, जे नितान्त अनिर्वचनीय अछि। विगत 15-16 वर्ष धरि हुनक निकट सम्पर्कक सुख पाबि मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ हम अपना केँ जतेक सम्पन्न समृद्ध बुझलहुँ ताहि सँ सहस्रगुण अधिक अकिंचन हुनक आकस्मिक आ अप्रत्याशित निधनक पश्चात् बुझैत छी। हमरा सन असंख्य स्नेही आ श्रद्धालु व्यक्तिक अन्तरतमक जे निधि सत्वर विलुप्त भ' गेल तकर पूर्ति कदापि संभव नहि :

स्मृत्वा-स्मृत्वा याति दु:खं नवत्वम्।

संकल्प : 1975

कविता केँ जन-जीवन मे सनबाक रसायनशास्त्र

जीवकांत

सुपौल मे मैथिली नव कविता पर सेमिनार भेल छल। ओहि सेमिनार मे ई निर्णय भेल छल जे एहन सेमिनार फेर-फेर होअय, प्रतिवर्ष होअय, मुदा फेर दोसर खेप नव कविता की, कोनो कविता पर गप नहि भेल। तें उन्नैस सय सरसठिक शिशिर मे सुपौल मे आयोजित ई सेमिनार अत्यंत महत्त्वपूर्ण आयोजन छल।

एहि आयोजन पर अनेक ठाम चर्चा भेल अछि। 'आखर' क 'राजकमल स्मृति अंक' मे एकर थोड़ेक चर्चा भेल अछि। आइ उन्नैस सय बेरासी ईस्वीक एहि वसंत मे एक बेर फेर मोन पाड़ब हमरा लेल एक सुखद स्मृति केँ दोसर बेर जीयब जकाँ आनंददायक अछि। पंद्रह बर्ख पहिने घटित घटना-संकुल एक सप्ताह केँ फेर सँ मोन पाड़ब कठिन अछि। हमरा लग ओहि समयक कोनो कागत अथवा डाइरी-सन वस्तु नहि अछि। तें स्मरणेक आधार पर हम लिखि रहल छी। तें कोनो प्रकारक विसंगति हमर मानसिक क्रियाक खेल होयत, जे मानव-मनक संगहि, हमरो मोनक क्रियाक एक गोट नीक अध्ययन-योग्य सामग्री होयत।

एहि आयोजन सँ पूर्व हम सुपौल नहि गेल रही। स्वर्गीय रामकृष्ण झा किसुन, जनिका हमरा लोकनि आदरपूर्वक किसुनजी कहैत रहियनि, हुनका सँ हमरा एहि आयोजन सँ पहिने दू बेर भेंट भेल छल।

पहिल भेंट प्राय: पैंसठि ईस्वीक शरद् मे भेल छल। पुरना फुलपरास थानाक बाढ़ि-जर्जर गाम मे हुनका हुनक एक प्रिय शिष्य कपिलेश्वर यादव घीचि क' अनने छलनि।

बगरहा-बसुआरी गाम आइयो यातायातक सुविधा सँ वंचित अछि, ओना आब घोघरडीहा आ निर्मली स्टेशनक बीच परसा-नवटोली नामक 'हाल्ट' बनि गेल छैक, जत' सँ ई गाम सटल छैक। एखन सुपौल सँ घोघरडीहा धरि आब' मे सोलह-सत्रह घंटा समय जानकी एक्सप्रेस केँ लगैत छैक, मुदा जहिया किसुनजी बगरहा-

बसुआरी गाम मे विद्यापति-पर्व कर' आयल छलाह, तहिया जानकी एक्सप्रेसक कोनो कल्पनो ने कयल गेल छलैक। एहि विद्यापति-पर्व मे दूए गोट वक्ता, कवि छलहुँ—किसुनजी आ हम। श्रोतो बड़ थोड़ छलाह। हमरा मोन पड़ैत अछि, हमरा जीवनक ई पहिल विद्यापति-पर्व छल आ किसुनजी सँ प्रथम परिचयक अवसर। एहि ठाम ई कहि देब आवश्यक जे हम कोनो प्रसिद्धिक कारणें एहि आयोजन मे नहि बजाओल गेल रही। बगरहा-बसुआरी गाम हमरा गाम (ड्यौढ़) सँ पूब-दच्छिन मे एक-सवा कोस पर स्थित अछि आ पैंसठिक शरद् ऋतु धरि हमर दस-पाँच गोट कविता 'मिथिला मिहिर' पत्र मे प्राय: प्रकाशित भेल छल। हमर केहन 'परफौर्मेंस' भेल छल, से मोन पड़ैत अछि, तँ हम बड़ संकुचित भ' जाइत छी। पहिले बेर श्रोता केँ संबोधित कयने रही, पहिले बेर श्रोता सभक मध्य कविता-पाठ कयने रही, से डरें आ लाजें कठौत भेल रही। किसुनजीक तारीफ करक चाही जे ओ बड़ आवेश आ स्नेह सँ हमर ओत' परिचय देने छलाह, हमर उत्साह बहुत अधिक आवश्यकता सँ अधिक बढ़ौने छलाह।

एहि आयोजन सँ दू गोट बात तँ बड़ स्पष्ट भ' फड़िछाइत अछि जे किसुनजी अपन अध्यापनक क्रम मे मैथिली आंदोलनकारी आ मैथिली लेल समर्पित छात्र लोकनि केँ तैयार कयलनि। सुपौलक विलियम्स बहुद्देशीय विद्यालयक एकमात्र छात्र कपिलेश्वर यादव एहि प्रकारक आयोजन अपन सर्वथा उपेक्षित गाम मे कयलनि आ किसुनजी केँ सादर बजा क' ओकरा सफल करौलनि से सिद्ध करैत अछि जे किसुनजी विद्यालयक कक्ष मे ओ कोन अद्भुत रासायनिक क्रिया (अलकेमी) करैत छलाह जे छात्र लोकनि हजार बाधाक उपस्थिति मे मैथिली-प्रेम सँ ऊर्जस्वित भेल रहैत छलाह आ अपन समर्पण आ अनुराग केँ व्यक्त क' ओकरा संगठित जन-चेतनाक स्वरूप दैत छलाह।

बगरहा-बसुआरीक एहि विद्यापति-पर्व मे दोसर उल्लेखनीय बात ई कहल जाय सकैत अछि जे एहनो दुर्गम स्थान पर किसुनजी आबि सकैत छलाह जत' पाइ आ प्रतिष्ठाक कोनो प्रलोभन नहि छलैक। ओ दूए कारणें एत' आयल होयताह—पहिल ई जे ओ मैथिलीक आयोजन छल आ किसुनजी मैथिलीमय भ' गेल छलाह आ दोसर ई जे ओ अपन एक गोट शिष्यक आग्रह केँ मानबाक हेतु ओत' आयल छलाह। नीक शिक्षक शिष्यक संग तदाकार भ' जाइत अछि। दुनू केँ एक्के प्रकारक दृष्टि भ' जाइत छैक आ दुनूक एक्के प्रकारक चित्तवृत्तिक भ' जाइत अछि। तें एहि सँ किसुनजीक अध्यापकत्वक सेहो एक गोट नीक उदाहरण भेटि जाइत अछि। अध्यापक बहुत रास होइत छथि, मुदा शिष्य केँ अपन आत्मीय

बना लेब आ शिष्योक आत्मीय भ' पायब बड़ पैघ तपस्याक अपेक्षा रखैत अछि। किसुनजी एहने साधक, तपस्वी अध्यापक छलाह।

हमरा किसुनजीक संग बड़ बेसी पत्राचार होइत छल। कोनो सप्ताह एहेन नहि बितैत छलैक जाहि मे एक-दू पत्रक आदान-प्रदान नहि होइत हो।

दोसर भेंट एना मोन पड़ैत अछि। ई भेंट भ' सकैत अछि सुपौल सेमिनारक बाद भेल हो अथवा पहिने, से एखन फड़िछा क' मोन नहि पड़ैत अछि।

दशमीक छुट्टी सँ पूर्व किसुनजी एक गोट पत्र लिखि हमरा सूचित कयलनि जे दशमीक छुट्टी मे ओ हमरा सँ भेंटघाँट आ गप कर' चाहैत छलाह।

हमरा लेखकक जीवनक ओ आरंभिके बर्ख छल। हम ओहू समय मे ओहिना पिंडश्लोकी रही, झुट्ठे बड़ भरिअबैत रही। हम बिना विचारनहि खजौली सँ किसुनजी केँ पत्रोत्तर देलियनि जे हम दशमी मे गाम रहब आ अहाँ केँ जँ भेंट बड़ आवश्यक बुझाय, तँ अहाँ हमरा सँ भेंट करबा लेल हमरा गाम चल आबी, ओत्तहि भेंट होयत।

हमरा मोन मे ई बात रहल होयत जे हम गाम सँ कोनो प्रकारें विद्यालय बन्न रहले पर जुड़ैत छी, ओना गाम छोड़ि क' अनस्थरि ओगड़ने रहैत छी। तें दशमीक दस-पाँच दिनक अवकाश गामे मे बिताबी आ ओकरा सुपौल जा क' जिआन नहि करी। हमरा मोन मे दोसर बात ई भेल होयत जे किसुनजी फरमान बहार कयलनि आ हम हुनका दरबज्जा पर जा क' उपस्थित भ' जाइ, तँ हम बड़ छोट आ असम्मानित भ' जायब। तेसर बात ई भेल होयत जे कदाचित् किसुनजी जँ हमरे गाम पर आबि क' भेंट क' जयताह, तँ हम कनेक पैघ आ महनीय भ' जायब।

किसुनजी पत्रोत्तर देलनि जे ओ दशमी मे पूजा-पाठ करैत छथि, तें दशमीक प्रात आ कोजागराक पूर्व ओ हमरा गाम आबि रहल छथि।

से जहिना ओ लिखलनि, ओ अयलाह। स्वाभाविक छैक जे हुनका अयला सँ हम आर संकुचित भेलहुँ आ ओ आर महान् आ सरल सिद्ध भेलाह।

सुपौलक नव कविता सेमिनार बहुत सफल भेल छल। बहुत रास लोक आबिक' सुनने छल, बहुत रास लोक एहि कार्यक्रम केँ सफल बनयबा मे सहयोग कयने छल।

मैथिली मे एहि प्रकारक सेमिनार करब आइयो संभव नहि छैक। पटना मे विद्यापति पूर्वक अवसर पर जे सेमिनार होइत छैक, से हमरा बुझने कोनो बात केँ ने तँ फड़िछबैत छैक आ ने आगाँ बढ़बैत छैक। ओ गप केँ ठामहि तमाशा बना दैत छैक।

सुपौल ओहि दिन मे बड़ छोट स्थान छल, आइयो प्राय: ओ छोटे स्थान अछि, मुदा बुझाइत छल जे ई स्थान मात्र मैथिलीये सँ नहि, ई स्थान नव कविताक चेतना

सँ सेहो आप्लावित अछि। स्टेशन पर जाहि प्रकारक स्वागतक ओरिआओन रहय वा बाद मे जाहि प्रकारक ऑटोग्राफ मँगबा लेल भीड़ लागल रहय, से मोन अछि। ई बात स्पष्ट अछि जे साहित्य केँ जीवनक एक पैघ उद्देश्य आ सिद्धि बनायब, एक सौंस देशकोसक आत्मा केँ साहित्यमय क' देब बड़ सोझ नहि छैक। ताहू मे शहरी आ कस्बाई माहौल साहित्यक हेतु मात्र ऊपरके भाग सँ सटल रहैत छैक। सुपौल मे बुझायल जे साहित्य ओत' शेषनागक फण धरि पहुँचल छैक।

किसुनजी छलाह ओत' एक गोट हाइस्कूल मे शिक्षक। संगहि ओ पटनाक एक गोट दैनिकक संवाददाता सेहो। हाइस्कूलक शिक्षक आ अध-गमैया आ अध-शहरी स्थानक अखबारी संवाददाताक जैह कीमति भ' सकैत छैक, सैह कीमतिक अधिकारी ओ छलाह। मुदा बुझाइत छल जे सुपौलक प्रशासन, व्यापार आ शिक्षित वर्ग किसुनजीक पाछाँ छल। किसुनजीक आदेश पालन करबा मे सभ केँ हर्ष होइत छलैक, कष्ट अथवा परेशानी नहि।

ओहि सेमिनार मे निर्णय लेल गेलैक जे एक गोट नव कविता-संकलन छापल जाय। एकर सम्पादनक भार किसुनजी आ राजकमल पर देल गेल। संयोग ऐहन जे ई दुनू गोटे मरि गेलाह, दुनू गोटेक मृत्यु असामयिक छल आ मैथिली कविता आ साहित्यक हेतु छल अपूरणीय क्षति। तथापि ई संकलन बहरायल आ नीक जकाँ बहरायल। हमरा कहबा मे प्रसन्नता होइत अछि जे किसुनजी ओहि ठाम जाहि प्रकारक साहित्यिक परिवेश बना गेल छलाह तत' ई काज छलैक।

ओहि कार्यक्रम मे निर्णय लेल गेल जे एहि लेल एक पत्रिको बहार कयल जायत। 'आखर' कलकत्ता सँ बहार कयल गेल छल, से सुपौलेक निर्णय छल।

किसुनजीक संगठनात्मक प्रतिभा अद्‌भुत छल। ओहि आदमी केँ मिथ्या अभिमान नहि छलैक। सरलता आ नम्रताक ओ प्रतिमूर्ति छलाह। कोनो काज मे भिड़ि जायब आ ओकरा सिद्धि आ सफलता धरि पहुँचा देब हुनका लेल आसान छल। ओ स्वयंसेवक जकाँ निष्ठापूर्वक खट' वला लोक छलाह।

हुनका 'अल्सर'क रोग छलनि। चूड़ाक भूजा रूमाल मे बान्हि ओ अबेर धरि खटैत रहैत छलाह। सुपौल मे बेसी काल ओ खयबा-पीबाक समयक उपेक्षा क' दैत छलाह।

मैथिलीक नव कविता आइयो मंच पर जयबा मे सकुचाइत अछि। मैथिलीक पुरनो ढंगक कविता आइ मंच पर निष्प्रभ भेल जाइत अछि, एकर प्रमाण अछि जे लोकगीत-सनक पारिवारिक संदर्भ वला गीत सभ आइ मंच पर बेस जमैत अछि। पता नहि, ई गीत सभ जनता मे मैथिलीक बेस प्रचार कयलक अछि। आजुक विद्यापति-पर्व एही प्रकारक लोकगीत सभक पर्व भ' क' रहि गेल अछि।

सुपौल मे मेला लागल छल। मेला मे कविताक मंच लागल छल। मंचो पर अगबे नव कविताक पाठ भेल छल। तथापि अर्द्धरात्रि धरि चलैत ओ आयोजन जतेक आदर आ रस सँ ओहि समयक नव कविता केँ सुनलक, से नव कविताक भाग्ये टा नहि कहल जयबाक चाही, ओ किसुनजी सन साहित्यकारक साहित्य केँ जन-जन धरि पहुँचयबाक क्षेत्रीय सफलताक प्रमाणो सिद्ध भेल।

किसुनजी आब नहि छथि। सुपौल अछिये। ओत' मेलो अबस्स लगैत होयत, मुदा मेला मे नव कविताक माँग आब जनता नहि करैत अछि आ जँ ओ माँग होइतो होयतैक, तँ ओकर पूर्ति आब नहि होइत अछि। प्राय: किसुनजीक अभावे ओकर प्रधान कारण रहल होयतैक।

नायक

जीवकांत

प्रियवर, किसुनजीक स्मृतिये एक टा संस्मरण, रिपोर्ताज, कथा, यात्रा-वर्णन... अनेक गल्प विधा मे एक गोट श्रद्धांजलि... किसुनजी कतेक उदार, कतेक क्षमाशील, कतेक महान छलाह, से एहि टिप्पणी सँ कनेक झलकत। हुनका मे नायकत्वक केहेन जन्मजात गुण छलनि, सेहो प्रकट होयत।

एहि रचना मे जतेक नाम आ जतेक घटना आयल अछि, से प्राय: एहिना घटित भेल अछि। जानि-बुझि क' कोनो जोड़-तोड़ सँ बँचल गेल अछि।

एहि रचनाक प्रकाशन सँ जे कोनो कुआठ ककरो होइनि, तकर समस्त क्षार-भार जीवकान्त पर।

तीस मार्च उन्नैस सय सत्तरि। जीवकान्त आ सोमदेव पटनाक रिजर्व बैंक सँ बहरयलाह। टटके आकाशवाणी बला चेक भजल छैक।

मार्चक अन्तिम सप्ताह अनेरे धीप' लगैत अछि। ताहू मे पटनाक अलकतरा सभ सँ आगू। टका सेहो फुकैत छैक।

—अहाँ केँ कतेक भेटल? सोमदेव कनेक उदास लगैत पुछलनि।

—अट्ठासी टका एक्कैस पाई। आ अहाँ केँ ? जीवकान्तो नहि पछुअयलाह। बात अनेक खेप ज्ञात-अभिज्ञात भ' गेल रहनि दुनू गोटे केँ ।

—उन्नासी टका पचासी पाइ।

एहि वार्तालापक कोनो दूरगामी प्रयोजन छल। जीवकान्तक कुरता-गंजी तर दोसर जीवकान्त छलाह। ओ ओहि प्रयोजन केँ छूलनि। ओ विषयान्तर करबा लेल नेना भ' गेलाह।

—अहाँ केँ गांधीजी बला कतेक बीसपैसाही अछि?

—अहुँ केँ तँ देलक अछि।

—हमरा एकके टा देलक।

—जाउ, एक सय टकाक बीसपैसाही बना लिय' आ कोंढा लगबा क' घरवाली केँ पहिरा देब।

—के ल' जायत सत्रह किलो पित्तरि? हमरा चारि टा मे सँ दू टा द' दिय'। दुनू बड़दक गरदामी मे द' देबैक।

सोमदेव तरहत्थी मे चारू टा बीसपैसाही देख' लगलाह। जीवकान्त ओहि मे सँ एक टा लपकि लेलनि।

—हँ-हँ...

ओहि दिन एक बजे मे सोमदेव आ जीवकान्त न्यूजपेपर्स एंड पब्लिकेशंस लिमिटेडक हत्ता मे ढुकैत। आगाँ-आगाँ बूढ़ा चनैल, पाछाँ-पाछाँ छोटका चनैल। पहलेजा सँ महेन्द्रू अयबा काल जहाज पर एक टा तेसर चनैल केँ दुनू गोटे प्रशंसासूचक दृष्टि सँ देखने छलाह! आँखिक चमकक आदान प्रदान सँ अपन-अपन सौंदर्य-बोध देखा रहल छलाह। सोझाँ मे किरणजी, सुमनजी, अमरजी या प्रदीप केँ शंका भेल रहनि जे ई दुनू अघोड़ी कोनो बलात्कारक योजना बना रहल अछि।

सोमदेव आगाँ। काँख तर छोटका चमड़ा बला फाइल बैग।

डेग तेना पड़नि जे धरती दलमलित भेल जा रहल अछि। कतहु जोर सँ डेग पड़ि जयतनि, तँ धरतीक धुरी ने घसकि जाय।

जीवकान्त पाछाँ। बामा हाथें चमड़ा बला फोलियो बैग केँ उघने। हरदम सात किलो अखोर-बखोर लदने।

डेग तेना पड़नि जेना घिसिआयल जाइत छथि।

मुँह तेना कुस्वाद रहनि जे चोरि क' क' अबैत होथि।

दू-तीन मास पूर्व एक गोट कविता-संकलन छपल रहैक : असमाहि हमर हाथ। तकर टीपनिक आम्लिक स्पर्श द्वारें हुनका पर किरणजीक पीढ़ीक संगे सोमदेवोक पीढ़ीक कवि सभ अग्निश्च-वायुश्च भेल रहनि। उनतीस मार्च केँ महेन्द्रू-पहलेजा घाटक बीच किरणजी जीवकान्तक टीक उखाड़' पर वृत्त रहथिन। एहि पहलमानी केँ जतेक सन्तोषक संग सुमनजी आ अमरजी देखि रहल रहथि, ओहि सँ बेसी तृप्तिक संग सोमदेव देखि रहल रहथि। हुनका आश्वास पड़ैत रहनि।

जीवकान्त पाछाँ। सात किलो भारी बैग बामा हाथ मे।

मुँह तेना कुस्वाद रहनि जे कतहु सँ चोरि क' आयल होथि।

सीढ़ी पर 'कॉर्क-स्क्रू' जकाँ एक बेर चक्कर देलाक बाद दुनू गोटे 'मिथिला मिहिर' कार्यालय मे।

—आउ! आउ!! कहैत तँ छलौं जे एको टा महारथी एखन धरि नहि अभरलाह। कान्हि एहेन दंगल कवि-गोष्ठी भेल।

—एक्के टा नहि, दू टा हें हें...। सोमदेव तिरछिया गेलाह।

—जीवकान्त सेहो छथि।

—कखन अबैत गेलहुँ?

जीवकान्त चुप-चाप बैसि गेलाह।

—काल्हि हमरा सभ सतबज्जी जहाज सँ नगर-स्पर्श कयलहुँ। सोमदेव शेखरजी केँ उत्तर देलनि।

हंसराज कोनो 'प्रूफ' मे ओझड़ायल रहलाह, सूतलो छी आ नगरक चरो-चूर लैत छी।

मोहनजीक दृष्टि केँ जीवकान्त एक बेर कछलनि, दू बेर कछलनि। जीवकान्त पुस्तकालयक अलमारीक छीप ताक' लगलाह।

—सभ क्यो जहाज पर संग भ' गेलहुँ। जीवकान्त केँ किरणजी बड़ खिसिऔलथिन।

—ओ हमरा की खिसिऔताह? अहाँ खिसिऔलहुँ। सभ क्यो षड्यंत्र मे सम्मिलित रही।

—कथी लेल खिसिऔलथिन? शेखर जी पुछलथिन।

—असमाहि हमर हाथ।

—भनें तँ मोन पाड़लहुँ...मोहनजी बजलाह...अनलहुँ हें पेस्तौल? हमरा खून क' दिय'।

जीवकान्तक देह पर आम्लिक टीपनिक बदला क्षारीय शब्द ढारि देल गेल।

हंसराज कनेक नजरि उठाक' तकलनि आ बिहुँसि देलनि। सूतलो छी आ नगरक चरो-चूर लैत छी।

शेखरजी आ सोमदेव अपलक जीवकान्त दिस ताक' लगलाह।

—से की? जीवकान्त बड़े असुविधा मे पड़ल रहलाह।

—हम सभ तँ बूढ़ छी। अहाँ कहैत छी ने जे गोली मारि देब। मारू। की तकै

छी? हम यैह बैसल छी, चलाउ पेस्तौल।

जीवकान्त केँ भेलनि जे पंखा नाचि नहि रहल अछि।

—से अर्थ नहि छैक।

—सोझ अर्थ सैह छैक। ओना, 'असमाहि' शब्दक की अर्थ छैक, सैह कहू। मोहनजी घइरा करब नहि छोड़लनि।

जीवकान्त सोमदेव दिस तकलनि—उछेहि ले मरदे!

शेखरजी बजलाह—ओकर अर्थ सोझ छैक।

सोमदेव हवाक रुखि देखि बजलाह—अहाँ सभ केँ अस्वीकार करैत छी, अहाँ कहू जे अपना केँ कोन पीढ़ी मे गनैत छी?

जीवकान्तक गंजी कुरताक तर मे जे पशु नुकायल रहैत अछि, से जागि गेल। ओ अपन दुनू मुट्ठी केँ कसलक। दस टा नह। नोंक।

—मतलब? जीवकान्त अपन रणनीति निर्धारित कयलनि।

—मतलब जे अहाँ अपना केँ कोन पीढ़ी मे गनैत छी?

—हम? ... ... जीवकान्त कोनो पीढ़ी मे नहि छथि।

—वाह! सोमदेव कहलनि।

—हम कोनो 'सेशंस जज' क सोझाँ मे नहि छी। हम कोनो उत्तर देबा लेल बाध्य नहि छी। हम अहाँ केँ 'कोर्ट' नहि मानैत छी। लिखितक उत्तर लिखित। अहाँ प्रतिवाद करबा लेल स्वतंत्र छी। हम प्रत्येक प्रतिवादक उत्तर देब। मुदा, ई चीफ...

जीवकान्त केँ जीवकान्तक गंजी-कुरता तर वला नांगट पशु सहायता क' रहल छलनि।

शान्ति। पंखाक सहसहायब बड़ स्पष्ट, बड़ मुखर भ' गेल।

हंसराज प्रूफक ओढ़ना तर सँ मूड़ी बहार कयलनि—यैह लिअ', किसुनोजी आबि गेलाह।

किसुनजीक अयला सँ कार्यालय मे एक गोट हलचल भ' गेल।

जीवकान्त ततेक उत्तेजित छलाह जे हुनका आयब केँ सहजता सँ ग्रहण नहि क' सकलाह।

जीवकान्त केँ मोन पड़लनि किसुनजीक तमसायल पत्र। ओही पोथी, ओही टीपनि पर किसुनजीक असहमति। मोन पड़लनि रामानुग्रह बाबूक पत्र।

भेलनि जे किसुनजी सेहो ओही गोल मे चल जयताह।

जीवकान्त केँ भेलनि जे हुनका एकसरे कटाउझ मे शस्त्र-संचालन कर' पड़तनि

आ ओकरा कोनो परिणति धरि ठेलि क' ल' जाय पड़तनि।

—अहाँ सभ कथी मे बाझल छी? किसुनजीक सौंसे मुँह पर मुस्कान, जे हुनक स्थायी परिचय छलनि, पसरल छलनि।

—हम जीवकान्त केँ पुछैत छियनि जे कविताक प्रत्येक पीढ़ी केँ ओ अस्वीकार करैत छथि, ओ अपने कोन पीढ़ीक छथि?

—ओहहो? असमाहि?... अहाँ दुनू गोटे नेना छी। जीवकान्त अहू सँ नेना छथि।

किसुनजी हँसलाह।

पंखाक सहसहायब जे जगजगार छल, कत' दनि मरि गेल।

जीवकान्त अनुभव कयलनि जे उत्तेजनाक बाढ़िक पानि घट' लागल अछि।

शेखरजी पुछलथिन—अहूँ छलहुँ कल्हुका कविगोष्ठी मे?

—ओह। हम आबिये रहल छी। शिक्षक संघक धरना मे आयल रही। एखन एसेम्बलीक गेटे सँ आबि रहल छी।

चांगुर-5

संक्रमणक इतिहास पुरुष किसुनजी

जीवकांत

सन् उन्नैस सय तिरसठि मे किसुनजीक पहिल कविता-संकलन बहार भेलनि : 'आत्मनेपद'। ई संकलन मात्र एहि द्वारें मोन राखल जायत जे किसुनजी कोना आ कहिया परम्परा सँ आधुनिकता दिस संक्रमण कयलनि।

किसुनजीक ई संक्रमण आ पुनः संक्रमण सँ टपिक' प्रत्येक नवीनतम यथार्थ केँ लपकि क' आत्मीकृत करब, एक टा ऐतिहासिक यथार्थ थिक। किसुनजी मात्र नव कविताक धुरी कवि टा नहि छलाह, एहि संक्रमण आ संक्रमणोत्तर इतिहास केँ अपन कान्ह पर ऊघनिहार आ ओकर समस्त तीत-मीठ सोआद केँ भोगनिहार कुलपुरुषो छलाह।

एक अर्थ मे ओ व्यक्ति छलाह, तँ दोसर अर्थ मे ओ एक विशेष समुदायक प्रतीको छलाह। जे स्वातन्त्र्योत्तर अपन परम्पराक आग्रह केँ नहुएँ-नहुएँ मन्द करैत एक दिन परम्परामोक्ष पौलक आ वैचारिक दुराग्रह-त्यागक संग वैचारिक उदारता केँ वरणो कयलक।

मिथिला एक अर्थ मे बहुत दिन धरि द्वीप रहल : चारू कात पानि। अर्थात् चारू कात सँ कटल, अनोन-बिसनोन। अपना ढंग सँ अपन पोथी-पतड़ाक रक्षा करैत, अपन पाबनि तिहारक रखबारि करैत रहल। चारूकात इतिहास नित्य नव-नव मुखड़ा बदलैत रहल, कतेक अन्हड़-बिहाड़ि पोसैत रहल।

मिथिलाक लोकक खाल काछुक खपलोइया-सन होइत छैक। हाथ-पयर मोड़ि लेलहुँ आ उदासीनताक खोल मे जा क' दीर्घनिद्रा मे पड़ि रहलहुँ। ई दीर्घनिद्रा एक दिस अतिजीवन दैत छैक, मुदा दोसर दिस रुग्णो करैत छैक।

मिथिलावासी लोकनिक यैह काछुक खपलोइया हुनका सभ केँ जँ अस्तित्वो देने छनि, तँ दोसर दिस हिनकासभ केँ राजनैतिक रुग्णतो प्रदान कयने छनि। मिथिलाक लोक यावत धरि अपन दीर्घनिद्राक खपलोइया मे डूबल रहत, तावत्

ओसभ पछुआयल रहबे करत, से ध्रुव-सत्य।

किसुनजी परम्परा सँ दाबल पियरायल दूभिक फुनगी जकाँ मैथिली मे आविर्भूत भेलाह। नीचाँ-ऊपर संस्कृत सँ तोपल। तर्क आ औचित्यक छूति नहि। जड़ता आ 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' वला लोक।

मुदा, संस्कृतक अध्ययन-अध्यापन प्रत्येक प्रतिभाशाली केँ कोल्हुआ-बड़दे नहि बनबैत छैक, किसुनजी तकर प्रमाण छलाह। बहुत आयासपूर्वक ओ अपना देहक चाम-सन परम्परा केँ नोछड़लनि आ ओकरा 'वासांसि जीर्णानि'क समान उतारि क' कात क' सकलाह, ओकरा छोड़िक' आगाँ बढ़ि गेलाह।

जीवित रहबाक लेल पुरान वस्त्रक त्याग आवश्यके छैक। ओहू त्याग सँ बेसी आवश्यक छैक ओकर मोहक त्याग। एहि मोहक त्याग मिथिला मे बहुत कम लोक क' सकलनि अछि। किसुनजी एहिसभ केँ त्यागैत मनुक्ख भ' सकलाह। सभ टा क्षयग्रस्ति, छन्दग्रस्ति आ मिथ्या अहंता केँ त्यागि ओ यथार्थक कठोर असुविधाजनक, मुदा, सहज माटि पर ठाढ़ भेलाह।

किसुनजी 'आत्मनेपद' मे संकलित अपन कवितासभक बल पर मैथिलीक नव कविताक धुरी कवि नहि मानल जाइत छथि। ओ से बूझल जाइत छथि 'आत्मनेपद'क उपरान्त लिखल कवितासभक बल पर।

'आत्मनेपद'क कवितासभ मोह आ मोह-भंगक कविता थिक। मुदा, मोह-भंगक कविता बड़ बलगर आ ओजस्वी भेल अछि।

किसुनजी सन संस्कार-ग्रस्त कवि केँ नव कविताक नेतृत्व करबाक सौभाग्य भेटलनि, से सिद्ध कयलक जे नव कविता आरंभो मे अपन प्राणशक्ति सँ प्रबल छल। किसुनजी अपन कोआ (कोकून) सँ बहरयलाह, अपन मृत्युरति सँ (अर्थात् अतीत-रति सँ) बहरयलाह आ अलंगचित्ते नव कविताक धरातल पर दुनू तरबा रोपि ठाढ़ भ' गेलाह, एको क्षण लेल असन्तुलन मे देह नहि डगमगयलनि, से सिद्ध करैत अछि जे किसुनजी अत्यन्त जिजीविषा-सम्पन्न आ प्राणशक्ति-उच्छल लोक छलाह।

किसुनजी इतिहास-पुरुष भ' गेलाह। ओ मैथिली साहित्य, मैथिल जीवन-प्रणाली, मैथिल वैचारिकताक इतिहास मे अलगट्टे एक फराक अध्याय छथि, ओ एक टा सौंस पीढ़ीक इच्छा-आकांक्षा, जीवनी-शक्ति, लचीलापनक प्रतीक थिकाह। ओ प्रतीक थिकाह जे मनुक्ख मरण मे सँ बहार भ' क' आबि सकैत अछि, ओ पुनरुज्जीवित भ' सकैत अछि। ओ प्रतीक थिकाह जे मरण केँ चीरिक' बहार भ' अयबा मे प्रयास लगैत छैक, मुदा ओ असंभव नहि छैक।

वैदेही : जून 1971

सुपौलक नव कविता सेमिनार

जीवकांत

(ई रपट 18 फरवरी, 1967क लिखल अछि—संपादक)

किसुनजीक परिचय मे एक टा साहित्यिक कतहु लिखने छथि जे 'ओ (किसुन जी) कोसीक ढाब मे मैथिलीक गद्दर ठाढ़ कयलनि!' हुनक ई वक्तव्य सोलह आना सत्य थिक। देखल सुपौल केँ—कोसीक बाढ़ि सँ रक्षा-बान्ह द्वारा घेरल। कोसीक ढाब। ओहिठाम साहित्यिक चेतनाक ऊर्जस्वल प्रकाश।

गत 5 आ 6 फरवरी (1967) केँ सुपौल (सहरसा) मे मैथिलीक नव कविताक विश्लेषण आ मूल्यांकन लेल साहित्यिक आयोजन भेल। एहि ऐतिहासिक अनुष्ठानक श्रेय भेटल ओहिठामक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक आयोजक लोकनि केँ आ ओहि मे सब सँ बेसी रामकृष्ण झा 'किसुन' केँ, जे सहरसा जिलाक समस्त राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक जागरणक प्रतीक आ ओकर मशाल छथि। ओहि सम्मेलन मे धीरेन्द्र एक बेर बजलाह जे, जे आयोजन दरभंगा, मधुबनी, पटना अथवा कलकत्ता मे नहि भ' सकल, से आइ सुपौल मे भ' रहल अछि।

एहि सेमिनार मे मैथिलीक नव कविता लिखनिहार कवि समान रूपें सहयोग देलनि। एहि मे भाग लेलनि राजकमल चौधरी, प्रो. धीरेन्द्र, जीवकान्त, रमानन्द रेणु, कीर्त्तिनारायण मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वैद्यनाथ झा आ रामकृष्ण झा 'किसुन'।' कवि लोकनि नव कविताक स्थापना करैत अपन-अपन भिन्न-भिन्न आलेख पढ़लनि। नव पीढ़ीक सशक्त आलोचक रामानुग्रह झा अपन विशिष्ट निबंधक पाठ कयलनि। जे लोकनि नहि आबि सकलाह, हुनको मे सँ प्रो. इलारानी सिंहक शोधपूर्ण निबंध पढ़ल गेल। आ जे कवि नहियो आबि क' समस्त आयोजन केँ अपन उपस्थितिक बोध करबैत रहलाह, से छलाह कवि धूमकेतु। हिनक कविता 'ई नहि, हे प्राणबंधु!' प्रो. धीरेन्द्रक मुहें सुनि समस्त श्रोता दू-दू बेर कानल।

आरो जे सभ नहि आबि सकलाह, से छलाह सोमदेव, जे स्पष्ट रूपें बहिनिक विवाहक कारणें घेरा गेलाह आ दोसर छलाह प्रो. मायानन्द मिश्र जनिका लेल हुनक समस्त शुभचिन्तक अनेक प्रकारक अटकर लगबैत रहलाह।

एहि सेमिनार सँ दू गोट वस्तु बहुत स्पष्ट भेल। एक तँ मैथिलीक नव कविता विश्लेषित, मूल्यांकित आ स्थापित भेल आ दोसर ई भ्रम दूर भेल जे नव कविता केँ पाठक-वर्ग नहि छैक। एहेन बौद्धिक आयोजन केँ विलियम्स बहुउद्देशीय विद्यालयक भरल हॉलक बौद्धिक आ चेतन श्रोता-समुदाय बहुत रस आ अभिरुचिक संगे सुनलक आ एक टा ऐतिहासिक आयोजनक साक्षी होयबाक लाभ पौलक।

एहि सेमिनार सँ ई व्यक्त भेल जे मैथिलीक सभ टा नव कविता लिखनिहार कवि लोकनि बड़े सद्भावनापूर्वक एक मंच पर अपन विचार व्यक्त क' सकैत छथि। ने काहर-किच्चा, ने कटाउझ, ने रूसा-फुल्ली। पीढ़ीक देवासुर-संग्रामक चर्चो नहि।

सम्पूर्ण सेमिनारक नेपथ्य मे एक कक्ष मे उठैत-बैसेत कवि लोकनि चाहक भाफक तर मे, सिकरेटक धुआँक अढ़ मे, पान-जर्दाक प्लेटक समक्ष मे अनौपचारिक आ सहज जीवन बिता सकलाह। एक नवीन संभावनाक जन्म भेल जे समस्त साहित्यिक लोकनि एक्के कुटुम्बक अंग छथि, तें ने कोनो औपचारिकता छल आ ने आरोपण। हाथी-दाँतक कोनो मीनार नहि। साधारण लोक, साधारण व्यवहार। स्वाभाविकता, सहजता।

अपन निबंध मे किसुन 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' सँ ल'क' जीवकान्तक नवीन सँ नवीन कविता धरिक सहज विकासक व्याख्या कयलनि। प्रो. धीरेन्द्र ऐतिहासिक आ राजनैतिक परिवेशक समानान्तर साहित्यिक यात्राक चर्चा कयलनि। रामानुग्रह झा साहित्यिक यथार्थक सर्वेक्षण कयलनि। जीवकान्त नव कविताक घोषणापत्रक रूप मे नव कविता केँ आस्थावान आ वर्त्तमानक प्रत्येक हास-शोक सँ प्रतिश्रुत सिद्ध कयलनि। कीर्त्तिनारायण मिश्र अपन महानगरीय जीवनक आक्रोशक संग नव कविता केँ अकविता धरिक विकासक उत्तराधिकारी जनौलनि। प्रो. इलारानी सिंह नव कविताक शरीरक शोधपूर्ण परीक्षा कयलनि। राजकमल चौधरी नव कविता मे बदलि क' आबि गेल नवीन शब्दावली आ ओकर टटका अर्थक चर्चा कयलनि। रमानन्द रेणु नव कविताक रचना-प्रक्रियाक एक टा आधिकारिक उद्घाटन कयलनि।

एहि सेमिनारक उपलब्धि तखन सर्वसाधारण लेल सुलभ भ' जायत, जखन ओ ग्रंथाकार प्रकाशित रूप मे आबि जायत। एकर प्रकाशनक योजना बनल, ताहू लेल किसुन जी सम्पूर्ण धन्यवादक अधिकारी छथि।

भोरू पहर केँ दुनू दिन सेमिनार मे निबंध-पाठ भेल। बेरू पहर केँ कवि गोष्ठी भेल। ई भ्रम फेर दूर भेल जे नव कविताक भावक वर्ग नहि अछि। कवि-गोष्ठी

मे अभिभूत कयलक राजकमलक—'अपने आंगन मे ठाढ़ भ' चिकरैत छी अपने नाम चिकरैत छी। अपने गाछीक फूल-पात चीन्हल नहि अछि।' धूमकेतुक 'ई नहि, हे प्राण बन्धु', किसुनक 'मनुक्खक खोज', जीवकान्तक 'सूर्यक मृत्युक प्रक्रिया' आ चाहक बिम्ब पर लिखल प्रो. धीरेन्द्र आ रमानन्द रेणुक कविता।

ई सेमिनार मैथिलीक नव कविताक जतेक विश्लेषण क' सकल, ओहि सँ बेसी मैथिली साहित्यक प्रचार कयलक। मैथिलीक लेल एक टा आह्लाद आ आकर्षण उत्पन्न क' सकल। संगहि, मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी मैथिली आन्दोलनक एक अविभाज्य अंग छल। ओतुक्का जनता मैथिलीक नव कविता पर निबंधे नहि सुनलक, वरन मैथिलीक अनेकानेक प्रकाशन उदारतया कीनिक' एहि प्रकारक सभ आयोजन मे भाग लेनिहार लोकक मार्ग प्रदर्शन कयलक।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजी आ आजुक बुद्धिजीवी

जीवकांत

किसुनजी पछिला पीढ़ीक लोक छलाह। तें हमरा सभक पीढ़ी सँ किछु विशिष्ट लोक छलाह।

हमरा गामक एकबद्धू (दुनू गामक बाध अर्थात् खेत एक ठाम अछि जकर) अछि बसुआरी गाम। ओकरा बगरहा-वसुआरी सेहो कहल जाइत छैक। आब ओहि गाम मे एम. एल. ए., एम. एल. सी. आ हाइ कोर्टक ओकील सेहो अछि। पैंसठि-छियासठि मे ओ गाम एक अविकसित गाम छल। (ओना गाम अविकसित रहि जाइत अछि, अधिकांश लोक लेल।) ओहि ठाम पैंसठि-छियासठि मे एक गोट विद्यापति-पर्व आ कवि-सम्मेलन राखल गेल। किसुनजीक एक छात्र जे विलियम्स स्कूल, सुपौल मे पढ़ैत छल, ओही गामक वासी छल आ हुनके सँ प्रेरित भए गाम मे मैथिली-चेतना-जागरण लेल ई आयोजन रखने छल।

क्रिसमसक छुट्टी रहल होयतैक। हम ओहि बीच खजौली मे नोकरी करैत रही ओ छुट्टी मे डेयोढ़ आयल रही।

बसुआरी मे गामक बाहर एक पोखरिक मोहार पर ई आयोजन भेल छल। मोहारक नीचाँ धनखेती मे सद्यः काटल गेल धानक बुट्टी सभ चक-चक देखाइत छल।

हमर दस-पाँच गोट कविता ता धरि छपल छल। किसुनजीक संग भाषण आ कविता-पाठ कए पार पुरल। ओहि गामक दस-बीस श्रोता एहि बात केँ आश्चर्य सँ देखने होयताह जे हमरा लोकनि किएक एहेन देहात मे एहेन बैसार कयने रही।

ओहि समय मे सुपौल सँ घोघरडीहा-निर्मली धरि अयबा लेल जानकी एक्सप्रेस (कोसी एक्सप्रेस) गाड़ी नहि रहैक। किसुनजी बहुत कष्टपूर्वक पैदल आबि कए एहि कार्यक्रम केँ सफल बनओने होयताह। हमरा बुझने ओ एक व्यक्तिक कार्यक्रम छल, किसुनजीक कार्यक्रम छल।

हम अपन पीढ़ी दिस तकैत एहि कार्यक्रम केँ मोन पाड़ैत छी, तँ निष्कर्ष यैह बहार होइत अछि जे किसुनजी केँ हमरा सभक पीढ़ीक लोकक अपेक्षा बेसी जीवट आ प्राणशक्ति छलनि। ओ प्राणशक्ति मैथिली केँ जिआ कए रखबा मे कतेक सहायक भेल अछि, से विचारणीय थिक।

किसुनजी उनैस सय सड़सठि मे नव कविता सेमिनार सुपौल मे रखने छलाह आ जे मैथिली कविताक क्षेत्र मे एक श्रेष्ठ आ सृजनात्मक काज भेल छल। एहेन कार्यक्रम मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुरक कोन कथा जे पटनो मे कए पायब संभव नहि अछि। ई काज सुपौल मे भए सकैत छल आ किसुनजी सन लोके राष्ट्रीय मेलाक मंच सँ साहित्य आ जनसाधारण केँ आमने-सामने करबाक कार्य कए सकैत छलाह।

किसुनजीक स्वास्थ्य खराब छलनि। पेटक अल्सर रहनि। जाहि मे समय पर खायब आवश्यक छैक। किसुनजी एक गोट रूमाल मे धानक लाबा बान्हि कए घुमैत छलाह आ सभ कार्यक्रम केँ अपन योजनाक अनुसार पूरा करैत छलाह। कार्यकर्ता सभ पूड़ी-तरकारी खाइत छल, किसुनजी धानक लाबा फाँकि कए कार्यक्रम केँ सार्थकता प्रदान करैत छलाह।

हमर उपन्यास 'दू कुहेसक बाट' पटना मे छपैत रहय। भाइ सोमदेवक संग रही। ओहि बीच भाइ सोमदेव पटना मे कोनो ठीकेदारक मैनेजर रहथि। मैट्रिकक कौपी देखए किसुनजी पटना आयल रहथि। हमरा ओ सोमदेवक संग रहबाक बात छोड़बा लेल कहलनि। सोमदेवक अघोरी जीवन-चर्या मे हमर भठब (निम्नगामी होयब) हुनका पसिन्न नहि रहनि।

ओही बीच पटना मे एक फिल्म आयल रहैक, 'बूँद जो बन गयी मोती'। भी. शान्ताराम शिक्षकक भारतीय रूप केँ ओहि मे रेखांकित कयने छथि। एक दिन किसुनजी पटना मे हमरा ई फिल्म देखाबए लए गेलाह। टिकट ब्लैक सँ बिकाइत रहैक, तें हमरा सभ फिल्म नहि देखल। बाद मे ओ सोमदेव केँ हमरा ई फिल्म देखयबाक भार देलथिन। लहेरियासराय मे जखन ई फिल्म लगलैक, सोमदेवजी खजौली आबि हमरा लहेरियासराय लए जा कए फिल्म देखओलनि। किसुनजीक अभीच्छाक रक्षा एहि प्रकारें भेल।

सुपौल सँ अयबाक रहय अभुआढ़। राजा बाबू (राजेन्द्र मिश्र, तत्कालीन प्रान्तीय कांग्रेस अध्यक्ष) ओहि बेर किसनपुर विधानसभा सँ ठाढ़ छलाह। हुनका सँ कहि ओ जीप सँ हमर यात्राक प्रबन्ध करओलनि।

ओ 'आर्यावर्त'क संवाददाता छलाह। ओ एहू रूप मे समाज मे प्रतिष्ठित छलाह। हुनक मित्र मे जिला आ अनुमण्डलक प्रशासनिक अधिकारी, राजनैतिक दलक

पदाधिकारी, विधायक आ सांसद इत्यादि सभ छल। हुनक छवि एक सक्रिय, विश्वसनीय आ निर्भरता योग्य मनुक्खक छल। की एहेन मनुक्ख अहाँ आब ताकि सकैत छी?

हमरा सभ नोकरी करैत छी, की कविता लिखैत छी, मुदा हमरा सभ केँ समाजक अधिकांश 'क्रौस-सेक्सन' नहि चिन्हैत अछि। तकर कारण अछि जे हमरा सभक हृदय विशाल नहि अछि आ सामाजिक सक्रियता लेल हमरा सभक हृदय मे कोनो जगह नहि अछि। हमरा सभ समाज मे प्रभावशाली नहि छी। मुदा, किसुन जी प्रभावशाली छलाह, राजनीति मे लोकसभक मित्र छलाह। ओ छोट-छोट काज एहि मित्रताक बदौलति कए लैत छलाह।

हमरा सभ लेखकक संग पत्रकार होइ, सांसद आ विधायकक मित्र होइ, राजनैतिक दल सभक पदाधिकारीक संगे मिझरयबा मे आनन्दित होइ। राजनीति मे प्रवेश कए ओहूठाम अपन विचारधाराक प्रसार करी। आइ राजनीति मे जेना अपराधकर्मी सभक वर्चस्व भेल छैक, आ बुद्धिजीवी सभ केँ बहिष्कृत कए देल गेल छैक, ताहि स्थिति केँ उनटाबए पड़तैक। लेखक सभ केँ सामाजिक उत्तरदायित्वक तमसगीर नहि, सहभागी बनए पड़तैक। किसुनजी केँ स्मरण करैत अनुभव होइत अछि जे हुनका समय मे बुद्धिजीवी सर्वत्र पूज्य होइत छलाह, आ आजुक बुद्धिजीवी एक कात मे बैसल उपेक्षा आ वनवास भोगि रहल छथि।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

अन्हार मे बिलायल दू टा ज्योति-पुंज

रमानन्द रेणु

If you are still living, never say never.
What is certain is not certain.
Things will not stay as they are... ...
Never becomes Before The Day Is Out.
—*Bertolt Brecht.*

एखन धरि यैह मान्यता रहल अछि जे मैथिली साहित्य मे नव कविताक सूत्रपात यात्री जीक 'चित्रा' सँ भेल। किन्तु, सत्यत: जँ देखल जाय, तँ यात्री जी कविताक दिशा मे कोनो नव्यता नहि देलनि। ओ हिन्दीक प्रचलित पद्धति पर पुरान धारणा केँ प्रवाह शैली मे प्रस्तुत क' क' मैथिलीक पाठक केँ चौंका देलनि। आ यैह चौंकयबाक प्रवृत्ति राजकमल चौधरीक 'स्वरगंधा' मे भेटल। एक दिस विद्यापतिक गीत पद्धति आ शैलीक अनुकरण भ' रहल छल आ दोसर दिस कविताक धारा मे छायावादी दृष्टिकोणक प्रसार बढ़ैत जा रहल छल। एहना स्थितिक अवैध संस्कार सँ लाभ उठयबाक प्रयत्न स्वरूप यात्रीजी आ राजकमल चौधरी दस वर्षक अन्तराल केँ मात्र झाँपबाक प्रयत्न कयलनि। एहि प्रयत्न सँ कविताक धारा केँ नव मोड़ देलनि, नहि कि नव कविताक बिम्ब, कुण्ठा, संत्रास आकि जिजीविषाक प्रस्तुतीकरण कयलनि। ई दुनू गोटे मात्र आभासित कयलनि जे कविताक धारा मे एक टा आन्दोलनक अपेक्षा अछि।

आइ ई स्पष्ट भ' गेल अछि जे सन '60क पश्चात जे रचना संसार आधुनिक बोध, परिवेश आ व्याप्तिक उन्नयन कयलक ओ पूर्व मे ओहि तरहें नहि भ' सकल, अन्यथा 'चित्रा' सँ 'स्वरगंधा' क आवर्तन काल धरि एक टा पैघ आन्दोलन समग्र कविता क्षेत्र केँ हुमचि क' अपन शीर्ष स्पष्ट कयने रहैत। राजकमल चौधरीक कविता

मे वर्तमानक प्रति जागरूकता छलनि अवस्स, किन्तु युगक संघर्षशील स्थिति मे उत्तेजनाक अभाव लक्षित कयलनि। ओ शक्ति ओ सामर्थ्य आ ओ साहसिकता नहि छल आ तें एतेक किछु होइतो ई प्रवृत्ति अपन उग्र रूप सँ परम्पराक भंजन नहि क' सकल।

एही मध्य रामकृष्ण झा 'किसुन'क कतेको कविता यत्र-तत्र प्रकाशित भेल। ओहो अपना केँ पूर्णत: तथाकथित प्रचलित परम्परा मे जोड़ि देलनि। स्थितिक यथार्थता केँ चीन्हि नहि सकलाह, आन्तरिक व्याघात केँ सहैत रहला आ समस्त कथ्य केँ परम्परा सँ जकड़ल भावभूमि पर पटकि देलनि जे कठोर शिलाखण्ड पर छटपटाइत रहल। ओहो अपना मे ओ साहस नहि जुटा सकलाह जे सर्व-मान्य सँ लड़ि सकथि आ स्वच्छन्द भाव बोधक झण्डोत्तोलन क' सकथि। हुनका मे आवेश छलनि, किन्तु परम्परा सँ पीड़ित, बन्हायल आ दाबल। हुनका मे वर्तमानक प्रति आक्रोश छलनि, किन्तु प्रस्फुटन नहि! ओ अपना केँ देखार नहि कर' चाहैत छलाह। अपना क्षमता केँ आभ्यन्तर मे सड़बैत रहलाह आ परम्पराक हँ मे हँ मिलबैत रहलाह।

सन् साठिक पश्चात् किछु तरुण वर्ग जखन अपन प्रवृत्ति क्रान्तिक स्वरें व्यक्त कयलक, सम्पूर्ण आस्तिकता सँ लोहा लेबाक हेतु उद्यत भ' गेल आं अपन रचना शैली, कथ्य, बोधक व्याख्या सँ नव्यताक दिशा निर्देश कयलक तँ उपर्युक्त सभ गोटा कान्ह भिड़ा देलनि। एहि तरुण वर्ग मे अदम्य साहस आ निर्भीकता जहिना किसुनजीक आन्तरिक दाबल आक्रोश केँ बल देलक ओहिना राजकमल चौधरी केँ कविता प्रवृत्तिक प्रति आस्था। जँ ई तरुण वर्ग अपन शब्दघोष नहि कयने रहैत, अपन साहसिकताक परिचय नहि देने रहैत आ विद्यापतिक गीत शैली—समदाउन, नचारी, स्तुतिक परम्परा केँ तोड़बाक हेतु कटिबद्ध नहि भेल रहैत तँ ई कथमपि सम्भव नहि छल जे किसुनजी अनायास एहि आगि मे कूदि जैतथि, राजकमल चौधरी क युवाक्रोश प्रच्छन्न भ' सकैत आ कविताक विकासक ई नवीन दिशा-बोध स्थिर भ' सकैत।

नव कविता छन्दक सम्पूर्ण आवेष्टन केर परिहार कयलक। मुक्त छन्द सँ गेयता केँ काछि क' बाहर फेकलक आ नव बिम्ब आ प्रतीकक आयोजना कयलक। जहिना कविताक कलापक्ष मे विस्फोटक परिवर्तन भेल, ओहिना भाव पक्ष मे समग्र रूप सँ नवीन स्थापना प्रस्तुत कयल गेल। नव कविता अनास्थाक कविता बनल—परम्पराक प्रति अनास्था, युग-वैषम्यक प्रति अनास्था, वर्गगत आभिजात्य कुलीनताक प्रति अनास्था, राजनीतिक प्रति आ भाव चेतनाक प्रति। राजकमल चौधरीक कविता अनास्थाक स्पष्ट द्योतक सिद्ध भेल, कुंठाक उदाहरण प्रस्तुत कयलक आ वर्त्तमानक उपेक्षा दृष्टिक आवर्त्तन कयलक। किसुनजीक कविता मे आक्रोश छल, वर्त्तमान

जीवन पद्धतिक व्यामोह केँ तोड़बाक निर्घोष छल आ राजनीतिक चाटुकारिताक प्रति भर्त्सना स्वर छल। किन्तु स्मरण रखबाक अछि जे ई सभ किछु '60क पश्चात भेल।

राजकमल चौधरी पुराने धारणा आ गति केँ तोड़' चाहैत रहलाह आ अपन एहि विचार पर अडिग रहलाह जे 'जखन हमरा कोनो पुरान गीत मोन पड़ि जायत। हम शतरंजक खोड़हा ओछा क' सायंकालीन मित्रक प्रतीक्षा करब। बिसरि जायब चाहक गिलास मे चिन्नी देब। अन्हार सँ पहिने आँगन सँ विदा भ'। कतेक राति धरि कोसी बान्ह पर एकस्वर टहलैत रहब चिन्तित ... एहि बातक कोनो संभावना नहि रहल जे पुनः ओ सर्पलता। तँ की करब हम। तँ भोरक लालटेन जकाँ जरब हम ...आजुक स्थिति हमरा स्वंय केँ चिन्ह' नहि दैत अछि। आजुक व्यवस्था हमरा मुर्दा बना देने अछि आ आजुक परिस्थिति हमरा बाध्य कयलक अछि जे जहिना हम सम्पूर्ण दृश्य लोक केँ बिसरि जाइ ओहिना सम्पूर्ण जगत् हमरो बिसरि जाय। किन्तु की एहन जीवन जीयल जा सकैत छैक? हमर व्यक्तित्व, हमर मोन औना रहल अछि आ हम अपन अस्तित्वक रक्षा कोना करब, असंभव जकाँ लगैत अछि एतेक दिन एहि गाम मे अयना भ' गेल। मुदा, चिन्हार नहि अछि विकालक। एहि अन्हार मे। अपने घर आँगन। अपने घर आँगन मे चिकरइ छी। हम अपने टा नाम। चारूकात देखबा मे आबि रहल अछि जे अपन क्यो नहि। एक टा विचित्र वातावरण पसारल अछि जत' वर्ग संघर्ष एखनो चलि रहल अछि। 'सभ पुरुष शिखण्डी। सभ स्त्री रासक राधा। सभक मोन मे धनुष तानि क' बैसल। रक्त पियासल व्याधा। कत' जाउ? की करब? ...अर्थतंत्रक ई चक्रव्यूह हमरा घूर्णित क' रहल अछि आ हम अपन समग्र आस्था तोड़ि देबाक हेतु विवश छी। हमर चेतन व्यक्तित्व मुर्दा भेल पड़ल अछि।'

किसुनजीक आक्रोश ओहिना बनल अछि जखन राजकमल कहैत छथि जे मनुक्ख मरि गेल। ओ गर्जन करैत छथि 'जिनगीक आगि मे। मृत्यु जरि गेल। के कहलक अछि जे मनुक्ख मरि गेल?' दोसर दिस ओ आरोपित आकि ओढ़ल जिनगी जीबय नहि चाहैत छथि। आइ हमरा लोकनि जीविते मूइल छी। हमर स्पष्टतः उपेक्षा कयल जा रहल अछि आ हम विषाह दाँत अपने धरि सीमित कट कटा रहल छी। हमर शक्ति अपव्यय करा देल गेल अछि आ हम 'विविध अभावक चक्रव्यूह मे पड़ि क'। आवश्यकताक अनेक महारथीक प्रहार सहि-सहि क' जीवन—अभिमन्यु भेल पराभूत। इच्छाक उत्तरा विधवा भ' गेलि आ भविष्यक परीक्षित गर्भस्थ औना रहल दुःशासन-जीविकाक हाथें। सखि, द्रौपदीक चीर जकाँ विरहक दिन बढ़ले अछि जा रहल।' आजुक राजनीतिज्ञ अपढ़, गमार आ विवेकहीन होइत अछि। ओकरा स्वयं सँ अवकाश नहि भेटैत छैक, तखन समये कहाँ छैक जे ओ हमरा सभ दिस देखत।

किसुनजी केँ ई सभ कहबा मे कहियो संकोच नहि भेलनि। ओ चिकरि-चिकरि क' कहैत रहलाह जे औ राजनीति वेत्ता लोकनि सुनू 'अहाँ केँ भीड़ चाही। देश-सेवा लेल पार्टी चाही। हम छी स्वतंत्र। अहाँ केँ कोनो तंत्र चाही। अपन कोनो झंडा चाही। नारा चाही, मंत्र चाही। अहाँ केँ चाही अप्पन कोनो वाद। कोनो परिवेश। हे भगवान! हमर तखन थिक कोन देश?'

एहि तरहक रचना सृष्टि आब प्रसार पबैत जा रहल अछि। आब प्रात भ' गेल छैक; दिनक प्रकाश मे सभकिछु स्पष्ट देखबा मे आबि रहल अछि। किन्तु, आब ने राजकमल छथि आ ने किसुनजी। काल अपन लप-लपाइत जिह्वा सँ समेटि चुकल छनि। ओ सभ जतेक जे किछु स्पष्ट करय चाहैत छलाह; नहि क' सकलाह।

वैदेही : जून 1971

एक किरिन सूतल सन

रमानन्द रेणु

दिन अछैते हमरा लोकनि ओतय पहुँचि गेल रही। निर्मली सँ लगाति वीरपुर धरि जीप मे जाय पड़ल छल आ जीपो तेहने! जेहन मँगनीवला होइत छैक। ऊपर चनबा नहि आ नीचाँ बैसबाक स्थान सेहो उजड़ल-पुजड़ल। समाँगो कम नहि। सभ मिला क' दस-एगारह गोटे। आन कें जे भेल होनि, किन्तु सोमदेव आ प्रवासी कें पछिले दुनू कातक जगह हाथ लागल रहनि। तें ओ लोकनि फलक भोक्ता प्रथम पुरुष मे छलाह।

हँ-तँ, जीप सँ उतरिते कपड़ा-वस्त्र झाड़ैत गेलहुँ। मोन तँ होअय जे ठामहि पड़ि रही, किन्तु व्यवस्थापक लोकनि नहिए मानलनि आ एक-एक कप चाह पीबहि पड़ल। बाटक झमाड़ हमरा लोकनि कें बेसुध कयने छल। तें हम आ सोमदेव ओछाओन पर बैसिते ओलरि गेलहुँ। दिन लुकझुक करैत छलैक आ सम्मेलन मे एखन पूरा विलम्ब छलैक। सूचना भेटल जे कार्यक्रम सात बजेक पश्चाते आरम्भ होयतैक। तें थकनी उतारबाक हेतु एक निन्न ल' लेब अनर्गल नहि बुझना गेल।

तखन हम कोनो स्वप्न देखैत रही। लागल जेना हवाई जहाज सँ कतहु यात्रा करैत रही। ओहिना घड़घड़ाहटि आ सुदूर आकाश मे बसातक झोंक खाइत। किन्तु सोमदेव ततेक जोर सँ ने डोलौलनि जे हम अकचका गेलहुँ। हमरा तँ एहन सन अनुभव भेल जेना हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त भ' गेल आ हम खसि रहल छी, कतेको हजार फीट ऊपर सँ। आँखि तँ खुजिते नहि छल।

सोमदेव कें एहना मे ककरो झिकझोड़ब बड़ आनन्द प्रिय होइत छनि आ तें हमरा जोर सँ ठेलैत बजलाह—हौ, कनि आँखि खोलि क' देखह। बेस जरद्गव जकाँ सूतै छह!

भक् सन हमर आँखि खुजि गेल। बिजलीक प्रकाश सँ सौंसे कोठली नहा रहल छल आ सभ आगन्तुक लोकनि गप-सप मे भूरि-भूरि तल्लीन। हम तँ एकाएक चौंकि

गेलहुँ जखन नजरि पड़ल जे लगीच मे किसुनजी बैसल हमर समग्र कार्य-व्यवहारक अध्ययन क' रहल छथि।

हम सकपका गेलहुँ।

नमस्कार पाती होइते ओ आश्वस्त करैत बजलाह—बड़ भेर भेल, सूतल छलहुँ अहाँ ने? अहाँ लोकनिक बाटे तेहन विकट अछि जे देह कें चकना-चूर क' दैत छैक। हम तँ सोमदेवजी कें मना कयलियनि, किन्तु ई मानलनि नहि आ अहाँ कें जगा देलनि।

—जी नहि, कोनो तेहन बात नहि। नहि उठबितथि, तँ सैह अनर्गल होइतनि। अपने कखन अयलिऐक?

हम आब स्थिर भ' गेल छलहुँ।

ओ ओहिना कें कचोटैत उत्तर देलनि—यैह कनिये काल भेल होयत। ...किन्तु अहाँ कें आरामक आवश्यकता अछि, तावत हम सोमदेवजी सँ गप करैत छी।

—जी नहि, आब आरामक आवश्यकता नहि रहि गेलैक अछि। जावत प्रबन्धक लोकनिक तैयारी होयतनि, हमरा लोकनि गप-सप करैत जायब। कतेक दिन पर ने भेंट भेल अछि?

एहि बीच सोमदेव उठि क' बाहर चल गेल छलाह, अन्यथा ओ टोकारा देनहि रहितथि। ओ बैसैत टोकलनि—की हौ, निन्न पूरि गेलह?

—धुत, निन्न एतबे मे पूरि जयतैक? तेहन ने बाट चूर कयलक जे कहल नहि जा सकैत अछि, तखन आब स्थिर भ' चुकल छी।

हम पण्डितजी (किसुनजी) दिस, घुमैत पूछलियनि—अपने हाथ-पयर धोअल गेलै, आकि नहि? अपनो कें तेहने यात्रा भेल होयत?

—हँ-हँ, हम ठीक-ठाक छी। यद्यपि बस मे आइ किछु बेसी भीड़ छलैक, तथापि हम ठीक छी।

हुनक ई सुस्थिरता हमर बाँचल-खुचल हरारति कें अतल मे गोंति निपत्ता क' देलक। आब हमरो किछु बल आ स्फूर्तिक अनुभव भेल।

ओ कुशल क्षेम पुछलनि—नीकें छलहुँ ने?

—जी, अपनेक आशीर्वाद!

—उँह, अहूँ परम्परावादी भेल जाइत छी। एहन शब्द सभ मे ओहने गंध रहैत छैक।

—जी नहि, सहज लगैत अछि एहि तरहें बतियायब।

—यैह ने परम्पराक दासता छैक। अहाँ तँ हमर बड़प्पनक कोसी बान्ह ठाढ़ क' रहल छी, जेना इम्हरुका पानि ओम्हर जयबे नहि करय।

हम कनी संकोच मे पड़ि गेलहुँ, तथापि अपना केँ झाड़ैत बजलहुँ—कोनो बात चाहियो क' अनायास बाजल नहि जा सकैत छैक।

—किए नहि बाजब, औ ? हमरा लोकनि मे कोनो दुराव नहि होयबाक चाही। जे दस-पाँच गोटे नव कविता लिखनिहार छी, से तँ एके मंच पर रहब ने ? वयस बाधक किएक होयतैक ? हमरा लोकनि केँ खुजि क' अपन विचार प्रस्तुत करबाक अछि। समान रूपें जेठ-छोट क्यो नहि। एक मंच, एक विचार आ एक धर्म। की औ सोमदेवजी ?

सोमदेव स्पष्ट करैत बजलाह—ई तँ ठीके, जँ हमरा सभ अपने मे संकोच करैत रहि गेलहुँ तँ परम्परा केँ तोड़ब असाध्य भ' जायत। एक स्वर, एक बोध आ एकजुट भ' क' विचारक प्रस्तुतीकरण अपेक्षित अछि। हमरा सभ केँ निश्चित रूपें पहिने एकरूपता ग्रहण कर' पड़त आ तहिना विचारक आदान-प्रदान।

आब हमहूँ खुजलहुँ—किन्तु सुनह, आब 'आखर' केँ बन्न भेने पुन: मंचक अभाव आबि गेलह। तकरो विषय मे किछु सोचैत छह ?

—यैह, हम सैह कह' चाहैत छलहुँ। हम निश्चय कयलहुँ अछि जे सुपौल सँ एक टा नीक ढंगक कथा मासिक चलाबी। ओना तँ हम अपने मोने नामकरण क' देलिऐक अछि—संकल्प। तथापि एतए अहूँ दुनू गोटे छी, जेना-जे विचार करी। यद्यपि आर्थिक दिक्कति संगे अछि, तें सहयोग समान रूपें देम' पड़ैत जायत।

ई कहैत किसुन जी ओछाओनक गट्ठर सँ रसीद सभ बहार कयलनि। 'संकल्प' क पूरा जिल्द। पचास-पचासक। क्रमांक भरब आरम्भ कयलनि आ हमरा सभक विचारक प्रतीक्षा कर' लगलाह।

हम दुनू गोटे एके स्वर मे बाजि उठलहुँ—जखन नामकरण अपने क' देलिऐक तखन फेर सँ विचार करब उचित नहि। नाम बड़ उपयुक्त छैक। ठीके छैक।

आ एक-एक रसीदक जिल्द हम दुनू गोटा ल' लेल। सोमदेव हमरा सँ आग्रह कयलनि—सुनह, एक टा सूची बनावह जे कतबा सँ कतबा क्रम धरि रसीद किनका जिम्मा रहल आ ओहि पर सभ गोटा हस्ताक्षर करैत जाह।

हम एखन सूची बनायब आरम्भ कयनहि छलहुँ, आकि प्रबन्धक लोकनि कार्यक्रम स्थल पर चलबाक प्रस्ताव कयलनि। झट-पट करैत हम ओ सूची हस्ताक्षर क'क' भाइ केँ देलियनि आ सभ क्यो तैयार भ'क' विदा भेलहुँ।

वीरपुर चौक सँ उत्तर बढ़ैत हमरा लोकनि फाटक मे प्रवेश कयलहुँ। रंग-बिरंगक आधुनिक ढंगक मकान सभ आ ओकर जंगला सँ छानल अबैत बिजलीक दुधिया प्रकाश। किछु अंग्रेजी गाछ बड़ दिव्य रूपें ठाढ़ छल। वीरपुर—कोसी धार केँ काबू मे करबाक निमित्त कर्मचारी सभक टोल सरकारी स्तर पर बसाओल गेल छैक। आ

आब स्थायी रूपें जहिना कोसीक धार बन्हा गेल छैक, तहिना एतुका वातावरण स्थायी भ' गेल छैक। हमरा मोन पड़ि गेल—भीमनगर बराज। छल-छल छहलैत बराजक नीचा कौशिकीक अजस्र धार।

वैह कौशिकी जे अपन उत्फाल धारक आतंक आ भीषण बाढ़िक सर्वनाशी भय सँ लोक केँ त्रस्त कयने रहैत छल, आइ एक टा सीमारेखा मे बन्हायल सुस्ता-सुस्ता बहि रहल अछि।

सम्मेलन वीरपुर उच्च विद्यालयक प्रांगण मे पण्डालक आभ्यन्तर करबाक तैयारी छलैक। बेस लोकक आबाजाही लागल छल। भीतर पहुँचि पण्डाल पूरा-पूरी भरल देखबा मे आयल।

सम्मेलनक मुख्य कार्यक्रम कविता पाठ छलैक। तकर प्रारम्भिक प्रारूप प्रस्तुत करैत बदरीनारायण झा विप्रजी स्थानीय परिषदक दिस सँ महाकवि विद्यापति केँ दोहाइ देलनि, सम्मेलनक अध्यक्षता करबाक हेतु रामदेव जीक नाम प्रस्तावित कयलनि। समर्थनो भेल आ रामदेव जी व्यास पीठ पर बैसलाह, जेना पूर्व नियोजित होनि।

किछु गोटे केँ एहि हेतुएँ बड़ क्षोभ भेलनि ई सभ कोना भ' गेलैक। अध्यक्ष तँ श्रेष्ठ व्यक्ति केँ बनयबाक चाहिऐन। वा नव्यताक हेतु सभ सँ छोट अर्थात एकदम नव रमानाथ मिश्र मिहिर जी वा आने क्यो। विप्रजी भरिसक ई तारतम्य गमि गेल छलाह। सोमदेव आ हमरा संकेत सँ बजौलनि आ सूचित कयलनि जे ओ जे किछु कयलनि से हुनक विवशता छलनि। यथा जँ सोमदेवजी विवश करथिन जे फल्लें व्यक्ति केँ अध्यक्ष बनाओल जाय तँ केहन स्थिति होयतनि से सहज कल्पना कयल जा सकैछ।

यद्यपि सोमदेव प्रतिकार करैत कहलथिन—ई उचित नहि। जँ प्रबन्धक एना आगन्तुक केँ 'खुश' करबाक पद्धति अपनाबथि तँ सभ केँ 'खुश' करब कदापि सम्भव नहि छैक। आ ने कार्यक्रम सुचारू रूप सँ चलि सकैत छैक। एहि मे विप्रजी, अहाँ केँ ठोस विचारें अपना मोन सँ काज करबाक चाही।

रवीन्द्रजी तँ आर बेसी उग्र भ' गेल रहथि। ओ तँ एतबा धरि बजलाह जे एहन मंच पर किछु पढ़ब अनर्गल होयत हमरा।

हमरा भाइ विन्देश्वरक धारणा मोन पड़ि गेल। हम स्पष्ट करैत विप्रजी केँ कहलियनि—भाइ, ई सभ पूर्वहि विचार क' लेबाक चाही। जँ स्थिति काबू मे नहि रहय तँ विन्देश्वर भाइक फर्मूला लागू क' दी अर्थात कवि सम्मेलन मे अध्यक्षता की ? सभ कवि, सभ अध्यक्ष। सभ समान।

हमरा लोकनिक गपक भनक भरिसक किसुनजी केँ भेटि गेलनि। आ

हड़बड़ायल अयलाह आ आग्रह कयलनि—अहाँ लोकनि एत' की करैत जाइत छी ? चलू-चलू मंच आ पण्डाल दुनू खाली भ' रहल अछि; जे अछियो से गप मे बाझि गेल अछि। चलैत चलू, छोड़ू ई गप। अध्यक्ष सँ कथीक लेनी-देनी। एकाध घण्टाक प्रश्न। देखबो तँ करू आजुक गोष्ठी। स्मरणो तँ रहत। हे सोमदेवजी, अहाँ केँ आब महराइ ठोकब अनिवार्य अछि। पण्डालक गर्दमगोल तखने शान्त होयत। ...औ सभ क्यो एके छी। ऊँच-नीचक प्रश्ने निरर्थक। ई सभ परम्परावादी मार्का छैक। चलू, ओम्हर देखियौक।

आ दुनू-तीनू गोटे केँ हाथ पकड़ने मंच पर ल' गेलाह। ध्वनि विस्तारक यन्त्र केँ घिचैत उद्घोषणा कयलनि—आब अपने लोकनि सोमदेवजी सँ हुनक प्रशस्त महराइ सुनल जाओ।

आ वातावरण मे सोमदेवक स्वर पसरि गेल—आगे दुर्गा, होही ने सहाय माता दुर्गा...

किसुनजी हमरा सँ आग्रह कयलनि जे अहाँ एक टा नव रचना सुनाबी। किन्तु आब वातावरण नीक नहि बुझवा मे आयल। राति बहुत बीति गेल छलैक। हम कहलियनि... ई सुपौलक गोष्ठी नहि छिएक जे श्रोता धैर्य धारण कयने बैसल रहताह आ नव कविताक आनन्द लैत रहताह। सुपौल गोष्ठी मे वातावरणक चाभी अपनेक हाथ मे छल आ तेँ नव कविताक गोष्ठी होइतहुँ श्रोता अडिग रहलाह आ कवि सभ हारि माननलनि। एतए आब ने सोमदेवक प्रयोजन छनि आ ने रमानन्द रेणुक प्रयोजन...छैक तँ रवीन्द्रजीक, जे अपन गीत सँ श्रोता केँ भजा सकथि।

अन्त-अन्त धरि स्थिति स्पष्ट भ' गेल। सभ क्यो मोन खसौने निवासक दिस घूरि अयलहुँ। आब तँ लगैत छल जे जैह किछु हो भोजन करी आ ओछाओन धए ली। आबैत कालक थकनी जेना समग्र रूप सँ सभ क्योक पल भारी क' रहल छल। डेग पर डेग उठैत नहि छल। दूरे सँ देखल जे निवासक बत्ती हमरा लोकनिक प्रतीक्षा करैत-करैत चिर शान्त भ' चुकल छल। जेना ओकरो मोन भारी भ' गेल होइक आकि निन्न पछाड़ि देने छलैक।

चांगुर-5

किसुन जी सत्त केँ सत्त कहैत रहथि

कीर्त्तिनारायण मिश्र

राजकमल जीक प्रति किसुन जी मे अपरिमित स्नेह छलनि। हुनक दुर्बलतो केँ ओ दुलार करैत छलाह। हुनक रोग, पीड़ा, अभाव, यायावरी, परिवार, बाल-बच्चा, मित्र-वर्ग सभ हुनका प्रिय छलनि। एकर कारण आओर जे किछु हो, हमरा जनैत ओ छल दुनू मे अद्भुत समानता। दुनू निस्सारताक उपासक छलाह। स्वास्थ्यक संग निरन्तर अत्याचार कर' वला राजकमल केँ लोक आत्महंता मानैत छलनि आ किसुन जी आत्महत्याक प्रयास मे पकड़ल गेलाह (हमरा नाम हुनक 06.02.'70क पत्र), नवता अथवा न'वक स्थापनक लेल आवांछित पुरातनक ध्वंस केँ दुनू आवश्यक मानैत छलाह आ दुनूक साहित्य आ समाजक प्रति दृष्टि एवं विचार अत्युग्र छलनि।

राजकमल जीक मृत्युक बाद बहुतरास हिन्दीक पत्र-पत्रिका हुनका पर केन्द्रित अंक आ विशेषांक बहार कैलक। हुनक मित्र आ शत्रु दुनूक भावोद्रेक मे स्नेह आ द्वेषक आत्यन्तिक प्रवाह छलैक जाहि मे हुनक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं साहित्यिक स्वरूप केँ तथ्याधार पर कम, अतिरंजना तथा राजकमल द्वारा प्रचारित भ्रमोत्पादक सूचनाक अनुसार विवरण प्रस्तुत कैल गेल छलैक।

कुमार प्रिन्टर्सक मालिक आ हमरालोकनिक घनिष्ठ मित्र जयन्त कुमार 'युयुत्सा'क राजकमल विशेषांक बहार कैलनि। हुनकहि प्रेस आ सहयोग सँ 'आखर' सेहो बहराइत छल। हमरालोकनिक लेल 'राजकमल-स्मृति अंक' बहार कर' काल ई आवश्यक छल जे वस्तुस्थितिक पूर्वाग्रहरहित आकलन प्रस्तुत कैल जाय, जाहि सँ भ्रान्तिपूर्ण चर्चाक खण्डन हो।

किसुन जी ई भार अपना ऊपर लेलनि। किन्तु, अनवरत अस्वस्थ रहलाक कारण लिखब कठिन भ' गेलनि। रोग-शय्यो पर स्मृति अंकक लेल लिखब एवं लिखयबाक चिन्ता लागल रहैत छलनि।

ओ किछु अंश लिखि कए पठौलनि किन्तु पाठकक भ्रम-परिहारक लेल जे

लिखब आवश्यक छलनि ताहि हेतु आवश्यक छलनि, राजकमल जीक परिवार सँ सम्पर्क कए स्पष्टीकरण करब। राँची सँ सुपौल अबितहिं अपन शोचनीय शारीरिक अवस्थाक बिनु परबाहि कैने सम्पर्क साधलनि आ अपेक्षित अंश लिखि कए पठा देलनि। राजकमल पर ओहन प्रामाणिक लेख ने हिन्दी मे बहार भेल, ने बांग्ला मे, ने मैथिली मे दोसर।

गद्य लेखन मे किसुन जी पारंगत छलाह। खाहे आलोचनात्मक, समीक्षात्मक आ सामयिक विषय पर लेख हो अथवा कथा, संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक, सम्पादकीय आ पत्र-लेखन, सभ मे हुनक गद्य-शैली विलक्षणता लेने रहैत छल। एहि सँ बड़का लाभ नव लेखन तथा 'आखर' केँ भेटलैक। हुनक जीवनक अन्तिम दशक नव कविताक प्रतिष्ठापन, व्याख्या आ समालोचना मे व्यतीत भेलनि। एही मध्य सुपौल मे नव कविता पर द्विदिवसीय सेमिनार आयोजित भेल छल आ 'आखर' बहरायल। हुनक योगदान आइ सर्वविदित अछि। यात्री, किसुन, सोमदेव, मायानन्द आ राजकमल नव कविताक लेल वातावरण तैयार कर' वला छथि। रूढ़िवादिता आ कविता-सम्बन्धी पारम्परिक मान्यता पर प्रहार करैत ई लोकनि परवर्ती पीढ़ी केँ परिवेशक प्रति जाग्रत आ वायवीय आदर्श सँ बहार कए जीवनक कठोर वास्तविकताक प्रति सावधान कैलनि।

कविक रण-क्षेत्र ओकर भाव, विचार आ अनुभूति होइत छैक। समस्त वाद-संवाद, जय-पराजय ओही पर निर्भर करैत छैक। युद्ध क्षेत्र, शिविर आ सेना तीनू वैह होइत अछि। सिपाही आ कमाण्डर दुनूक काज एसकरे कर' पड़ैत छैक। किसुन जी सेहो मोर्चा पर संघर्षरत एहने सिपाही, कमाण्डर अथवा सेनानायक छलाह।

हुनक अवदान विशेष उल्लेखनीय अछि। हुनका द्वारा तैयार कैल गेल मंच अथवा मोर्चा सँ जे भावनात्मक, वैचारिक एवं साहित्यिक परिवर्तन आयल ओ निर्णायक सिद्ध भेल। सामान्यत: आधुनिकता आ आधुनिक बोध शहर सँ गाम मे पहुँचैत अछि, किसुन जी ओकरा गाम मे परीक्षित-प्रतिष्ठित कए मिथिलाक शहर धरि पहुँचौलनि। ओ साहित्यक क्षेत्र मे आधुनिकताक सामाजीकरण अथवा व्यावहारिक आधुनिकता विकसित कैलनि। ई अवदान हुनक रचनात्मक उपलब्धि सँ बेसी महत्त्व रखैत अछि। उद्देश्यक प्रति हुनका मे जे सजगता आ समर्पण-भाव छलनि, ओकरे आन्तरिक शक्ति एक टा सामान्य सेमिनार केँ नवता बोधक ऊर्जा-स्रोत सिद्ध क' देलक, ओकरा साहित्यिक अनुष्ठानक मर्यादा दिया देलक।

हुनक सौम्य-शान्त-सुदर्शन व्यक्तित्व मे दुर्धर्ष इच्छा-शक्ति छलनि। ग्रामीण वातावरण, रोग, अभाव-तीनू सँ संघर्ष करैत ओ भावात्मक एवं क्रियात्मक प्रयोग करैत रहैत छलाह। प्रयोगे हुनक प्रतिरोधक एवं प्रेरक शक्ति छलनि।

सुपौलक सेमिनार मे किसुन जी हमरा मैथिलीक नव कविता पर आलेख तैयार कर'क आदेश देने छलाह। हम हुनका लिखलियनि—'कविता पर नहि, अकविता पर लिख' आ पढ़' चाहैत छी।' ताधरि बहुतरास अकविता मैथिलीक पत्र-पत्रिका मे छपि चुकल छल। राजकमल, किसुन, वीरेन्द्र मल्लिक, जीवकान्त समेत अनेक कविक अकविता पाठक धरि पहुँचि चुकल छल। अत: किसुन जी हमर प्रस्ताव केँ सहर्ष स्वीकार कैलनि आ हमरा मंच सँ अपन बात राख' आ ओहि पर चर्चा करयबाक अवसर देलनि। ओ स्वयं नव लेखन, नव कविता, अकविता, नवतावाद आदिक अवधारणा केँ स्पष्ट कर'क लेल अनेक लेख लिखने रहथि। हुनका द्वारा तैयार कैल गेल वातावरण मे कोनो तरहक प्रयोगक लेल प्रचुर संभावना रहैक।

नवका पीढ़ीक लेल प्रमुख छलैक 'एक्शन'। तदुपरान्त रुक्ष यथार्थक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति। रचनात्मक संवेग मे अभिव्यक्ति प्रमुख रहलैक आ कला, भाषा तथा सम्प्रेषण गौण पड़ि गेलैक। एहि अभावक अनुभव करैत ओ सम्प्रेषणक समस्या पर बेर-बेर लेखनी चलौलनि। 'आत्मनेपद'क भूमिका मे सम्प्रेषणक नवीन विम्ब योजनाक चर्चा करैत ओ लिखने छलाह—'ई स्पष्ट वा दुरूह नहि होइत अछि; मुदा बुझल जाइत अछि, एहि कारणें जे एहि कविता सभ मे अपूर्व-अपरिचित, नवीन आ सघन विम्ब सभक अधिकता रहैत अछि, जकरा लेल अधिक सुसंस्कृत आ सहृदय पाठकक अपेक्षा अछि। हर्षक विषय जे नव कविताक साधारणीकरण भ' रहल अछि आ ओकर रसानुभूति कयनिहार पाठक समुदाय खूब बढ़ि रहल अछि।'

एहि समस्या पर पुन: विचार करैत ओ 'नव लेखन : किछु विचार' मे लिखैत छथि—'ई निर्भ्रान्त अछि, जे कोनो क्षण-विशेष मे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाव-वहन करबाक क्षमता शब्द मे नहि होइत छैक, जे ओ कथ्यक सम्पूर्ण संवेग केँ अक्षुण्ण रूपें अभिव्यक्त क' सकत। तें नव लेखन भाषाक उक्त अक्षमता केँ तथा ओकरा सँ पूर्वक असहज व्यक्ति केँ बुझि, मानि क' एकदम अनिवार्य युगानुरूप, आपातत: यथार्थ आ नव बोधानुकूल नवीन विम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदि केँ स्वीकृत क' नवीन संकेत-अंक आ नव रेखा केँ प्रयुक्त कयलक अछि, जे जन सामान्य द्वारा पूर्ण परिचित तथा अभिज्ञात नहि रहबाक कारणें दुर्बोध आ दुरूह कहि क' बदनाम कयल जाइत अछि।'

'ई मानबा मे हमरा कनेको दुविधा वा आपत्ति नहि अछि, जे नव लेखनक नाम पर एहनो लिखल जाइत अछि, जे केवल शब्द-जाल मात्र थिक, जाहि मे अनेको रेखा मात्र अछि, नवीन होयबाक उपक्रम-आकांक्षा अछि आ अनेक अंश मे फालतू वा निरर्थको अछि।'

नव लेखन आ नव कविताक नाम पर अनुत्तरदायित्वपूर्ण लेखन हुनका पसिन्न

नहि रहनि। अपन लेख, कविता, वक्तव्य आ पत्रक माध्यम सँ एहि दिस सभक ध्यान ओ आकृष्ट करैत रहैत छलाह। नवतावाद अथवा आधुनिकता मूल्यबोध आ नव मूल्यक सृष्टि थिकैक किन्तु, जखन ओकरा 'फैशन'क रूप मे लेल जाइत छैक तँ ओ रचनात्मकता केँ रुग्ण (इनफेक्टेड) कए सर्जनाक संभावना केँ 'अबसर्डिटी' धरि सीमित करैत रचनाकारक भावावेश, अन्त: संगति तथा अन्तर्दृष्टि केँ दिशा-भ्रष्ट क' दैत छैक। ओ एहि दिशा-भ्रष्टताक विरोधी छलाह। संगहि, सत्त केँ सत्त कहबाक दुस्साहस सेहो हुनका मे छलनि। हुनका शब्दावली मे, गदहा केँ गदहा कहब थिक—'सरिपहुँ आइ-काल्हि/गदहा केँ बाप कहबाक एहि युग मे/ओ थिक दुस्साहसी/अथवा थिक गदहा जे गदहा केँ बाप कहबाक गर्ते मे/बाप नहि कहिक'/ गदहा कहि दैत अछि।'

कोनो क्षेत्र मे ने गदहाक कमी होइत छैक, ने गदहा केँ बाप कह' वला केर। किसुन जी एहि अवसरवादिताक प्रति नवका पीढ़ी केँ सावधान कैलनि आ गदहा केँ गदहा कहबाक साहसिकता सँ युक्त कैलनि।

हुनक कविता तँ अकविता भइए गेल छल, विरोधो 'अ-विरोध' भ' गेल छल—'कोनो फूल/कोनो निर्झर कोनो वन्याक गीत जे गबै छथि तनिका सँ कोनो विरोध हमरा कहाँ अछि?/मुदा, पुरनका प्रतीक आ सन्दर्भ/जनिक कल्पनाक विषय थिक/अज्ञान वा आज्ञान/दोहरबैत रहब जनिक रचना थिक/ओहि मे कोनो शोध कहाँ अछि?...गतिमान इतिहास, धन्न रहू पुरना उच्चै: श्रवा पर चढ़ब अहाँ केँ पसिन्न अछि/हमरा अहाँ सँ कोनो प्रतिशोध कहाँ अछि? विरोध कहाँ अछि किन्तु कनरसियाक साधुवाद सँ गर्वित/मंचाधीशी काव्यक पराजित स्वर छोड़ि/दोसर की संज्ञा छैक आ जँ केओ परम्पराक जंगल तोड़ि/नवका फसिल केँ पटबैत अछि/त' अहाँक माथ मे दर्द कियैक होइत अछि?/आजुक युगसत्य सँ परिचय करू हे गीत-बन्धु कनेक जीवनक यथार्थ केँ बुझू चीन्हू/ई कुण्ठित/ओझरायल/संत्रस्त श्वास अहाँक थिक आ कि नहि?'

(अ-विरोध, 1969)
प्रकाशित-आरंभ : जून 1995

प्रतीक्षा : 31 मइ 1970

महेन्द्र

आकाशवाणी पटना सँ तहिया सभ मासक अंतिम रवि केँ एक घंटाक कविगोष्ठी आयोजित होइत छलैक भारती (मैथिली) कार्यक्रम मे। पछाति ई योजना कतोक कारणें निरस्त क' देल गेलैक।

एहि कार्यक्रम मे मैथिलीक स्थापित कवि लोकनि आमंत्रित कयल जाइत रहथि। कवि-गोष्ठी मे प्रस्तुत सभ रसक, सभ भावक, सभ रंगक काव्यपाठ सँ श्रोताक हृदय प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप सँ आनन्दित भ' उठैत छलैक। श्रोताक पसिनक कवि केँ एहि कार्यक्रम मे कोना सम्मिलित कएल जाय, तद्जन्य गुंजनजीक चिन्ता केँ कतोक बेर हमहूँ अनुभव केने रहियनि। सुमनजी, मधुपजी, किरणजी, हरिमोहन बाबू, किसुनजी, अमरजी, चन्द्रभानु जी, विद्याकर कवि, जयनारायण मल्लिक, शेखरजी, मायानन्द जी, गोपेश जी, सोमदेव जी, रेणु जी, जीवकान्त जी, प्रवासी जी आदि कविवृन्द केँ क्रमश: रुचिक अनुकूल कार्यक्रम मे कोना आनल जाय, तकर चिन्तन मे डूबल गुंजनजीक चिन्ता केँ देखने रहियै आ तखन देखने रहियै भारतीक ओहि काव्य गोष्ठीक गंभीरता केँ जे मासक अंतिम रवि केँ अनुष्ठित होइत छलैक। भारतीक एहि विशेष कवि सम्मेलनक निरंतर लोक केँ प्रतीक्षा छलैक।

प्रतीक्षा ओहि दिन हमरो छल। गंभीर प्रतीक्षा। 31 मइ 1970क ओहि कवि गोष्ठीक। ओहि गोष्ठी मे आमंत्रित-किसुनजीक। सुपौलक साहित्यिक साम्राज्यक एकांत साधक। साहित्यिक, सामाजिक जीवनक स्वयंमेव संस्था। संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिलीक आधिकारिक विद्वान ओ मुखर प्रवक्ता। दुर्लभ पुस्तक सभक संग्रहकर्ता। कुशल शिक्षक। प्राचीन पत्रकार। गद्य ओ पद्यक सधल अक्षरपुरुष। गंभीर शोधकर्ता। सारगर्भित वक्ता ओ विलक्षण उद्घोषक, संचालक।

गौर वर्ण, प्रशस्त ललाट, कारी फ्रेमक चश्माक पाछाँ पैघ-पैघ आँखि मे झलकैत गंभीरता ओ शालीनताक शीर्ष व्यवस्था। सहज ओ सौम्य उपस्थितिक अतिरेक

धारणा। द्वेष ओ कटुताविहीन व्यक्तित्व, नव लेखन ओ लेखकक प्रति पूर्ण उदार। नव-पुरान दुनू पीढ़ीक स्नेहिल व्यक्ति। निरर्थक शब्दजाल सँ दूर।

अर्थात् 'तोहर सरिस एक तोहें माधव'।

ई कोनो अनुमान नहि, एक टा व्यक्तिक यथार्थ थिक। यथार्थ कथमपि अतिरंजित नहि भ' सकैछ। अतिरंजना किसुन जी कें कहियो पसिन्न नहि भेलनि।

किसुनजी गुरुक रूप मे भेटलाह 1957 ई. मे जहिया हम विलियम्स स्कूल, सुपौल मे अपन नामांकन करबाओल। साहित्य ओ साहित्य शिक्षा, समाज ओ सामाजिक जीवन तथा सांस्कृतिक परिदृश्यक सूक्ष्म अवलोकन बहुत किछु किसुने जीक साहचर्य मे रहि सीखल। हुनका सँ ग्रहण करबाक लेल अनेक वस्तु भेटल जे स्कूली छात्रक मानसिकता मे रहि अपन ऊहियें प्राप्त करबाक प्रयास छल। हुनक कविरूप, कथाकारक रूप, निबंधकार रूपक मात्र दर्शन करबाक समय छल तहिया। डेग मे डेग मिलाक' चलबाक नहि। मुदा एहि सभ परिधि मे ओ कतेक उदार छलाह, कतेक बहुमुखी छलाह, कतेक मुखर छलाह तकर अनुमान हमरा कोनो चमत्कारिक किरणक सदृश अवश्य दृष्टिगत भेल, जकर फलाफल कें हम पछाति चिन्हलहुँ। मातृभाषाक महत्त्व ओ अनुराग की थिकै से हुनकहि सँ अनुभवल। कविता, कथा, नाटक, आलोचना सभ साहित्यक अंग थिकै से हुनकहि सँ जानल। काव्यक लक्षण, प्रयोजनक हेतु, रस-अलंकारक काव्य मे उपादेयता आदिक पहिल पाठ हुनकहि वर्ग मे सीखल। छोट-छोट शब्द सँ बनल वाक्य द्वारा साहित्यक अर्थ स्पष्ट करबाक रीति एखनहुँ हमरा मानस सँ नहि उड़ल अछि। भरिसक कोनो छात्र कें नहि बिसरायल हेतैक आइ धरि।

हुनक कविता पाठ करबाक ढंग, रघु झाक गीत पर झुमि जेबाक क्षण, समाचार लेखनक त्वरितता आ माँझ आँगन मे बैसि घंटो प्राणायाम करबाक धैर्य आदि हुनक गति-यतिक विलक्षण यात्रा वस्तुतः अनुपम, अद्‌भुत व्यंजनाक साक्ष्य लगैत छल।

मिथिला मिहिरक प्रकाशन मैथिली भाषा ओ साहित्यक लेल एक सुखद सार्थक अनुभूति छलैक, पूर्वांचल मिथिलाक साहित्यकार ओ साहित्य प्रेमीक लेल। किसुनजी पहिनहि एकर सूचना द' उत्साहित क' देने रहथिन सभ छात्र लोकनि कें। सुपौल बाजार मे खूब बिकाइत छलैक ई पत्रिका। मैथिली-छात्रक अतिरिक्त आनो-आन छात्र मिहिर कें कीनि पढ़बाक लेल पूर्ण प्रतिबद्ध देखल जाइत छलैक, तकर एकमात्र कारण किसुनजी होइत छलाह। एहि उत्साहजन्य क्रिया मे हुनकहि प्रेरणाक श्रेय हम मानैत रहलहुँ। फलतः जहिया-जहिया जाहि अंक मे हुनक रचना आबनि तहिया बधाइ देबाक धर्रोहि लागि जाइक। सड़क पर जाइत किसुनजी कें लोक चकित नेत्र सँ देखैत रहि जाइन। दूर-दूर धरि अनेको आँखि पछोड़ धयने चलैत रहैक। पता

नहि हम एहन स्थिति कें देखि किएक आत्मविभोर भ' जाइत रही। लोक हुनका पर अनेरो प्रसन्न। कहि नहि, कोन आकर्षण छलनि हुनका व्यक्तित्व मे। कहि नहि, कोन एहन सेहन्ता शान्त होइत छलैक हुनका साहचर्य सँ। कहि नहि...।

हाइयर सेकेण्ड्रीक बाद सहरसा कॉलेज मे नामांकन करौलहुँ तँ विलियम्स स्कूल छूटि गेल। छूटि गेलाह आदरणीय किसुनजी। मुदा ओ हृदय सँ नहि छूटि सकलाह।

एक बेर, जेना मोन पड़ैत अछि—किसुनजी विद्यार्थी सभक एक टा बैसार क' दुइ गोट पुस्तकक प्रकाशनक ओरिआन सँ सभ कें अवगत करौने रहथि। दुनू पुस्तकक प्रस्तावित शीर्षक छलैक-आत्मनेपद तथा युगान्तर (युगान्तर पछाति दिशान्तर भ' छपलैक)। एहि प्रकाशन यज्ञ मे स्कूलक सभ छात्र आर्थिको मदति कएने छलैक। छपला पर पोथी सभ कें भेटलैक। पोथी भेटब कतेक महत्त्वपूर्ण छलैक। किसुन जीक तत्परता, संकल्प शक्ति आ साहित्य समृद्धिक ललक। हुनक आदरणीय होयबाक एक टा इहो कारण रहल होएत।

'आत्मनेपद' तहिया मैथिली कविताक क्षेत्र मे अपन योग्यताक दुआरे बेस चर्चित भेल। कालखण्डक आन्तरिक स्वरक सही आकलन, समाज आ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रक सूक्ष्म निदर्शन, मानवीय चेतनाक क्रमशः होइत अवमूल्यनक साक्ष्य यथार्थक सार्थक स्वीकारोक्ति आदि एहि काव्य संकलनक स्पष्ट स्वभाव छलैक।

ई सभ बात तहिया कम बाद मे बेसी बुझलियैक। आब तँ आओर स्पष्ट आ फरिछा क' बुझबा मे अबैत अछि। आब आत्मनेपद अन्तश्चेतनाक प्रयोगात्मक रेखांकन जकाँ झलकि उठैत अछि।

सन् 64 मे सहरसाक दुर्गास्थान मे आयोजित कवि सम्मेलनक मंच सँ आत्मनेपदक अनेक कविताक पाठ कएने रहथि किसुनजी, जे खूब सराहल गेल छलैक से ओहिना स्मरण अछि। ओहिना स्मरण अछि हुनक विभिन्न कार्यक्रमक उद्घोषणा, गोष्ठीक संचालनक सक्रियता आ समारोह सफल हो ताहि लेल मायानन्द जी कें बेर-बेर दैत स्वस्थ मंत्रणा। ओहिना मोन छथि कुमार तारानन्द सिंह, हरिमोहन बाबू, मधुपजी, किरणजी, अमरजी, रवीन्द्र आदि पाहुन लोकनिक भव्य भावक अद्‌भुत आस्वादन जे सहरसा कें जेना मैथिलीमय क' अपना मे बान्हि नेने छलैक... भरि-भरि दिन ...भरि-भरि राति, सभ टा ओहिना मोन अछि...

एक बेर माया बाबू प्रसंगवश कहने छलाह जे सौंसे मिथिलांचल मे ममे टा एक एहन साहित्यकार रहथि जे टिकट पर मैथिली कवि सम्मेलनक सफल आयोजन कएने रहथि।

अहिना एक व्यक्ति किसुन जीक किछु संस्मरण सुनबैत बाजल छलाह जे कोना राजकमलक हल्ला कएला पर सभक नजरि बचाक' हुनका लेल दारूक व्यवस्था

कएने रहथिन आ कोना राजकमल लजा गेल छलाह।

मायाबाबू कहलनि जे 'मामा' पूर्व मे अपनो पानक खूब सौखीन रहथि। नाना प्रकारक मशालाक संग पान खायब आ खुआयब हुनका लेल एक टा विशिष्ट आनन्दक क्षण होइत छलनि...। मुदा पछाति पान एना क' छोड़लनि जेना ओ पान कहियो खेनहि नहि छथि।

एक बेर हंसराज जी सेहो यैह कहने रहथि—किसुन जीक लेल जतबे हरिमोहन बाबू आदरणीय, ततबे हंसराज। जतबे छन्दबद्ध कविता प्रिय, ताहि सँ कनियों कम प्रिय नव कविता नहि। मैथिली साहित्य मे पुरान-नवक झंझटि किसुन जीक नजरि मे एकदम व्यर्थ छलैक। सार्थक छलैक हुनका दृष्टि मे मैथिली भाषा ओ साहित्यक समुचित समृद्धि। सार्थक मान्यता। मैथिल होयबाक गर्व।

मुदा अपन लेखनक अधिकांश प्रतिशत नव लेखन केँ निहुँछलनि से हुनक 'आत्मनेपद' आ 'मैथिली नव कविता' सँ स्पष्ट होइत अछि—

आबि रहल नव शिशुक करैत जाइ स्वागत
नव्य वर्ष, भव्य वर्ष
हे निरंतर क्षयधर्मा, युग-युग सँ शाश्वत।

हम तोड़ि देमय चाहैत छी अहाँक समस्त अधिष्ठित बिम्ब
जे हमरा लोकनिक चारूकात
एक-एक टा ऊँचका सिंहासन गाड़ि देने अछि।
समवेत अछि ओ बल आइ हमरा बाँहि मे
जे माथ परक आकाश मे
अनका भरोसें चमकैत चन्द्रमा केँ अपन मुक्का सँ
तोड़िक' थकचुन्ना-थकचुन्ना क' दी।

वर्तमानक क्रियाकलाप सँ खिन्न एकठाम ओ लिखलनि—

एहि पीढ़ीक समस्त आकांक्षा आकाशक सूर्य शिथिल भ'
करिया समुद्र मे डूबि गेलैक अछि
आ तखन बहरयलैक अछि एक टा दर्शन
देहक राजनीति, ब्लैकमेलक यंत्र
आत्माक शवयात्रा, आ खोल बदलबाक पद्धति
बदलि देलकैक अछि कैलेंडर जकाँ, पछिला सिद्धान्त
बना देलकैक अछि, बुद्धक पितरिया प्रतिमा
चिनियाँ माटिक गांधी, मोमक इसामसीह केँ

सजावटिक उपादान
गीता, कुरान, बाइबिल सभ 'फ्यूज्ड बल्ब' जकाँ
एक टा मकड़ाक जाल लागल कोन मे
पड़ल-पड़ल हिचकैत छैक...

ओ लहरिदार हँसी (एहि हँसीक छाप प्रायः केदार सहित सभ भाइ मे एकदम ओहिना छनि), प्रफुल्लित, प्रभवमान मुखमंडल, उज्जर दप-दप धोती-कुरता, चमकैत उजरा चाम पर घड़ीक करिया बेल्ट, करिया रंगक चप्पल आ करिये रंगक छोटका बैग। एकदम फ्रेश, एकदम आकर्षक।

31 मई 1970। पटना आकाशवाणी मे काव्यपाठक बाद किसुनजी ओहि दिन खुलि क' गप्प करबाक मूड मे देखल गेलाह। काव्य-चेतनाक बहुरंगी आयाम केँ विनोदक शैली मे हुनक प्रस्तुति, असंतुलित जीवन ओ जगतक यथार्थक व्याख्याक क्रम मे हास्यक सौम्य अभिव्यक्ति।

आ कि एकाएक गंभीर भ' गेल छलाह।

आ एहि गंभीरता मे ओ बजलाह—'आइ हम कुर्जी गेल रही। 7-8 जून धरि अयबाक लेल कहने अछि। ऑपरेशन होयत। अहाँ सभक मंगलकामना चाही। पता नहि, पटनाक एहि खेपक रंग बदलल लगैत अछि...।'

हंसराज जी केँ नहि रहल गेलनि—'अहाँ निरर्थक गंभीर छी। कुर्जीक लेल एहि टाइपक ऑपरेशन सामान्य थिकै।'

—'नहि, नहि, एहि मामिला मे हम भीरू नहि छी जे गंभीर रहब। हम तँ अपनहि समय मँगलियैक। भीतरक भय हमरा कहियो नहि सतौलक हंसराज जी... हम खाली गाम सँ आयब, अहाँ लोकनि केँ मात्र पहुँचयबाक व्यवस्था गछ' पड़त।'

होस्टल दिस जाइत हुनक यैह टा वाक्य कान मे गूंजैत रहल—'अहाँ लोकनि केँ मात्र पहुँचयबाक व्यवस्था गछ' पड़त... अहाँ लोकनि केँ ...।'

एहि वाक्यक की अर्थ?

पछाति एकदम स्पष्ट भ' गेल... किछुए दिन मे...।

दिक्‌पाल : 2019

किसुनजी, नव लेखनक नेता किएक ?

उपेन्द्र दोषी

16-17 फरवरी' 70 मेला समिति, सुपौलक कवि-सम्मेलन सम्पन्न भ' गेल रहैक। सहरसा मने मायानन्द, मस्ताना, महाप्रकाश, शालिग्राम आ सुकान्त चलि गेल रहथि। अमर जीक पार्टी (प्रवासी प्रदीप) सेहो प्रस्थान कएलक। बाकी रहलाह सोमदेव, प्रशान्त, उपेन्द्र दोषी, रामानुग्रह, धीर आ विप्रजी।

निर्णय भेलैक एक उखराहा बैसल जाय। बैसकी होमक चाही किसुनजीक ओहिठाम। पंडितजी (किसुनजी) एकरा सहर्ष स्वीकारलनि।

18 फरवरीक भोर। प्रायः चारिए बजे पंडितजी हाजिर भ' गेलाह व्यापार संघक दुमंजिला पर। आगत-अतिथिक जिज्ञासार्थ। पानि-दतमनि साबुन-पानि। हँसी-चौल। गप्प-सप्प।

पंडितजी हमरा दिस घुरलाह—'औ जी काल्हि धरि तँ अहाँ मेला समितिक अतिथि रहिऐक। आइ सँ अहाँ हमर पाहुन भेलहुँ।'

हमरा बड़ आश्चर्य भेल। पंडितजी केँ हमरा प्रतिएँ ई व्यवहार किएक ?— हमरा से किएक कहैत छी। हम तँ... ... ...

अरे नहि नहि, से नहि कहलहुँ। राँची सँ अयलिऐ किने! से बिशोक माय 'सोन'क कुशल मंगल पुछतीह। आ गामो तँ एतए सँ दूरे अछि।'

हमरा हँसी लागल। सोमदेव आ प्रशान्त चुटकी लेलनि।

सोमदेव आ प्रशान्त विप्रजीक ओहिठाम जयबाक विचार कर' लगलाह। हम कतराइत रहलहुँ।

अन्ततोगत्वा बैसकी आरम्भ भ' गेलैक। तीन बजे सँ। सभ गोटे जुमि गेल रहथि। हमरे कने देरी भेल। हम आ सुशील, इन्दु कुमारी सपनाक ओहिठाम गेल रही। सभ गोटे अएलाह। धीर नहि अएलाह।

अनौपचारिक ढंगक चर्चा आरम्भ भ' गेलैक।

चर्चा उठलैक कमल आनन्दक लेख सँ जे ओहि समय मिथिला मिहिर मे छपल रहैक। पंडितजी कमल आनन्दक पत्र पढ़िक' सुना देलनि। सोमदेव कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त नहि कएलनि। प्रशान्त कने मुस्कुरएलाह। चुप भ' गेलाह। मने ई की भेलैक ? रामानुग्रह जे बरोबरि चुप्पे रहैत छथि, बजलाह—'पंडितजी एहि प्रक्रिया केँ प्रोत्साहित कएल जाय।'

हम मात्र पंडितजी दिस तकैत रहलहुँ। एहि लोभेँ जे पंडित जी कोनो स्वस्थ प्रतिक्रिया व्यक्त करताह।

मुदा पत्रक भाषा, भाव ततेक ने विनम्र रहैक जे पंडितजी किछु नहि बजलाह। कहलनि—अहुना तँ किछु होउक। नव लेखन सँ सम्बद्ध किछु तँ होइत छैक। देखू एहि सभ सँ निवृत्त होएब तँ विचार अछि जे धारावाही रूप मे किछु लिखी—मिथिला मिहिर मे। नवलेखनक प्रति जतेक गलत आ भ्रामक धारणा जनमल अछि तकरा हम खण्डन क' क' एक टा स्वस्थ आ अनुकूल वातावरण बनाब' चाहैत छी।

सोमदेव जे चुप छलाह हमरा दिस तकैत बजलाह—बुझलहुँ, हम राजकमल आ सम सामयिक लेखक एक टा नेता तकैत रहलहुँ। नेता, एहन नेता जे बाहर भीतर नेता हो। आ संयोग जे किसुनजी भेटि गेलाह नव लेखनक नेता।

पाँच बाजि गेल रहैक आ बैसकी उसरि गेलैक। तकरा बाद हमरा मोन मे ई बात औनाए लागल। किसुनजी नव लेखनक नेता किएक ?

अन्ततः हम निर्णय लेलहुँ। मोन केँ तोषलहुँ ललितेशक पत्र जकाँ, कमल आनन्दक लेख जकाँ। नव लेखनक नेता (?) ओ जकरा मे एहि तरहक समावेश होइक—

1. सम-सामायिक लेखक मे सभ सँ बेसी उम्रक हो (मुदा ई कोनो खास बात नहि) विचार मे एक दम नव प्रवृत्तिक हो। युवक हो।
2. विशुद्ध रुढ़िवादी प्राचीन परम्परा मे जन्म ग्रहण कएने हो।
3. रुढ़िवादिता आ प्राचीन परम्पराक प्रति विद्रोह अपना लेखन मे करैत हो।
4. सम-सामयिक साहित्यकार जकाँ यथार्थक कल्पना भावावेशक ठोस धरातल पर ठाढ़ भ' सृजन प्रक्रिया मे लागल हो। युग-सत्य केँ साहसपूर्वक व्यक्त करबाक क्षमता रखैत हो।
5. सम सामायिक आर्थिक, राजनैतिक आ सामाजिक विषम प्रवृत्ति केँ सामान्य स्थिति मे अनुवाद हेतु अपन स्वस्थ प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक क्षमता रखैत हो।
6. देशक, विश्वक अन्य भाषा-साहित्यक साहित्यकार जकाँ तत्कालीन परिस्थिति सँ प्रभावित हो। ओकर लेखन प्रभावित होइक।

7. घसल आ चुकि गेल शब्दक प्रति, जाहि मे वर्तमान अर्थ-अभिव्यक्तिक शक्ति नहि हो, मोह नहि होइक।
8. व्यक्ति आ वातावरणक विशेष अथवा सामान्य परिस्थितिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सही अर्थ मे करबाक क्षमता रखैत हो आदि।

पं. रामकृष्ण झा 'किसुन'क लेखन मे हम एक्कहि संग ई सभ गुण पौलहुँ। तें किसुन जी केँ नव लेखनक नेता मानि लेबा मे हमरा कोनो असौकर्य बोध नहि भेल। सत्य तँ ई थिक जे किसुन जी स्वयं ततेक ईमानदारी सँ अभिव्यक्ति देलनि जे ओ हमरा लोकनिक पूज्य भ' गेलाह। मार्ग प्रदर्शक भ' गेलाह। किसुनजी लेखन आ विचार मे कहियो बूढ़ नहि भ' सकैत छलाह।

युग सत्य, संत्रास, कुण्ठा, जिजीविषा केँ किसुन जी निष्पक्ष भावें व्यक्त करैत रहलाह। लोकक ऊपर ओढ़ल नकली नकाब केँ खखोरिक' फेकैत रहलाह। मुइल, स्पन्दनहीन, लकवा मारल सामाजिक कुत्सित भावनाक चाम केँ अभिव्यक्तिक न'ह सँ खखोरिक' लहुलहुआन करैत रहलाह। आँखि मे आँगुर गोबि-गोबिक' अपन लेखन द्वारा लोकक अपन 'टेटर' सुझबैत रहलाह। किसुनजी जखन अपन तमाम पैतृक समृद्धि (गन्हाइत परम्परा) केँ अपन आत्मनेपद मे रद्दीक छिट्टा मे फेकिक' समक्ष अएलाह तँ इएह गुण हुनका नेता बना देलकनि। हमरा लोकनि नहि।

करीब एक दशक सँ बेसीक साहचर्य जे किसुन जीक प्रतिएँ हमर धारणा बनौलक, से इएह जे सम्मानक लोभ सँ ई कटल रहलाह। हैण्डलूम वा खद्धरक पीरौन कुर्त्ताक जेबी मे सम्मान लोभ केँ नुका क' नहि रखलनि। ओ जेठ-छोट सभक संग तादात्म्य भाव रखलनि मुदा समूह रूप मे नहि। एक्के टा छोटो सन बात केँ सभक समक्ष कहब अभीष्ट नहि छलनि, वैह बात हमरो एकान्ते मे कहितथि—रामानुग्रहो केँ एकान्ते मे आ सुकान्तो केँ एकान्ते मे। ने जानि किएक?

किसुनजी आवश्यकता सँ अधिक संवेदनशील छलाह। हम हुनका हंसराजक कनिष्ठा दबैत देखने रहियनि। हम हुनका सोमदेव सँ कनफुसकी करैत देखने रहियनि। हम गंगेश गुंजनक पक्ष लड़ैत देखने रहियनि। हम देखने रहियनि जे अमर जीक संग ओ घुट्ठी-सोहार भैयारी निमाहि रहल छथि। हम हुनका नवतुरियाक पीठ ठोकैत देखने रहियनि।

किसुनजी केँ अप्रचारित केँ प्रचारित करबा मे बड़ मोन लगैत रहनि। एहि कारणें कतेको अप्रचारित आ अन्हार मे औनाइत व्यक्ति केँ, ओकर लेखन केँ, इजोत भेटैत छलैक। किसुनजी आवश्यकता सँ अधिक विनम्र छलाह। एकरा हम हुनक संस्कृत-जन्य आत्मकमजोरी कहि सकैत छियनि। अथवा पंडिताइ-पीढ़ीक प्रवृत्ति कहि सकैत छी। इएह विनम्रता कहियो क' हुनक आत्म-सम्मान केँ भसिया दैत रहनि। तखन

ओ मात्र विलियम्स बहुद्देशीय विद्यालयक निरीह पंडितजी रहि जाइत छलाह, नवलेखनक अग्रदूत नहि—किसुनजी नहि। एतबा तँ हम दृढ़ताक संग कहब जे किसुनजी विशुद्ध साहित्यकार-पत्रकार छलाह, संस्कृतक पाखण्डी पंडित नहि।

किसुनजी केँ हम अगुताइत नहि देखने रहियनि। खिसिआइत नहि देखने रहियनि। पछताइत आ औनाइत देखने रहियनि मुदा अपना हेतुएँ नहि—समस्त नवलेखनक लेल, भावी पीढ़ीक लेल।

किन्तु हमरा दुख अछि जे किसुनजी अपना हेतुएँ किछु नहि क' सकलाह। धीयापुता हेतु, परिवार हेतु किछु नहि कएलनि। जीवन-काल मे कोनो ठोस रचनात्मक काज नहि क' सकलाह। 'मैथिलीक नव कविता' बहराएल—प्रकाशित भेल, मुदा दू-दू बलिदानक बाद।

चांगुर : 5

राँची अस्पताल साक्षी अछि किसुनजीक

उपेन्द्र दोषी

राँचीक साहित्यकार-बन्धु किसुनजी केँ राजेन्द्र मेडिकल कॉलेज-अस्पताल मे भर्ती करबा देलकनि। पंडितजी भर्ती भ' गेलाह छद्म नामे। नीचा मे (अस्पतालक दूमंजिला मे) हंसराज आ ऊपर मे किसुन जी। अपूर्व संयोग। साहित्यकारद्वयक अपूर्व संयोग। निमित्त रूप मे ओतय रहथि राँचीक साहित्यकार खास क' नवतुरिया मात्र।

बहिन दाइ आ ओझाक इच्छा जे पंडित जीक आपरेशन जल्दी भ' जाइन। पंडित जी जल्दी रोग, आ अस्पताल मुक्त भ' जाथि। आपरेशन। पेप्टिक-अल्सरक आपरेशन। डॉ. के. के. सिन्हा द्वारा आपरेशन। नवतुरिया दलक इच्छा, पंडित जी पहिने 'प्रचोदयात्' (कथा संग्रह) क भूमिका लिखि देथि। रोग-शय्या पर रहनहुँ कहाँ छोड़लकनि नवतुरिया... ?

चिकित्साक क्रम मे डॉ. अमरनाथ मिश्रजीक सहयोग प्रशंसनीय। हंसराजक चिकित्साक क्रम मे किसुन जी नजरि सँ छुटि ने जाथि, से ख्याल रहैत छलनि। ओ उचिते। मुदा हंसराज जीक रोग पड़ा गेलनि। हंसराज जी पड़ा गेलाह। मामाक ओतए। किसुनजी पड़ले रहलाह—राँचीक बड़का अस्पताल मे। बूटक सातु आ दूध घोरिक' एक-दू चम्मच क' पिबैत रहलाह। दवाइ गिरैत रहलाह। के. के. सिन्हाक आप्त वाक्य आर्षवचन जकाँ सुनैत रहलाह। के. के. सिन्हा हिनक साहित्य-चर्चा सुनैत रहल। रोग सकताइत रहल। पंडित जी दुबराइत रहलाह। सभ किछु दिनेभरि। दिनभरि मेला, चारूकात साहित्यकारक मेला, आ राति भरि अन्हारक नहि, संवेदनाक अनुचिन्तनक एकान्त आ अकाट्य मौनक बेला। राति क' पंडितजी एसकरे भ' जाथि जेना। अस्पतालक महासमुद्र मे क्यो नहि। नर्स, हाउस-सर्जनक अतिरिक्त अपन कह' बाला क्यो नहि। कहियोक' पंडिताइन आ कहियो क' 'बिशो' बस। साहित्यकारक मेला राति मे जेना बिला जाय। अस्पतालक महाकाल, महारोग जेना मेला केँ गीड़ि जाय।

'सोसल' किसुनजी केँ कोना नीक लगतनि। रातुक निस्सीम एकान्त, अकाट्य

मौन काट' लगलनि किसुनजी केँ। किसुनजीक आत्मा औनाए लगलनि। बहिनदाइ, ओझा आ राँचीक साहित्यकार केँ ओ शत्रु बुझ' लगलाह। एहन शत्रु जे असमय हुनक प्राण लेब' चाहैत हो। एहन शिकारी शत्रु, जे हुनक प्राण चिड़ै संग हँसि-हँसि क' खेलाय चाहैत हो आ अन्त मे मारि देब' चाहैत हो। किसुनजीक मोन मे विचित्र तरहक आक्रोश उपजि गेलनि। आक्रोश—देश, समाज परिवार आ बेराम स्वयं के प्रति आक्रोश। ओ अत्यधिक संवेदनशील आ भावुक छलाहे। अपना स्वयंक प्रति घृणाक बोध दृढ़-दृढ़तर-दृढ़तम होम' लगलनि। रोगमुक्तिक उपाय ताक' लागलाह।

वार्डक नाना व्याधि-ग्रसित मरीज किसुनजीक रोग-वृद्धि मे सहायक होमय लगलाह। ककरो हाथ कटल, ककरो पेट सीयल, ककरो दुनू टाँग टाँगल, ककरो मुँह सुखाएल, ककरो देह सुखाएल! ककरो माथ मे पट्टी, ककरो मुँह मे आक्सीजन नली, ककरो हाथ मे सीरिन्ज भोंकल। ककरो पानि चढ़ैत। ककरो खून चढ़ैत। सभ रोग ग्रस्तसभक स्थिति चिन्तनीय। स्वस्थ मात्र किसुनजी। वार्ड मे सभतरहें स्वस्थ किसुनजी ककरो 'माइ गे माइ' ककरो—'बाबा हो' ककरो—'पानी', ककरो अभद्र गारि, ककरो वार्ड-सरभेन्ट संगे झगड़ा, ककरो कम भोजन देबाक शिकायत। ककरो मरि जायब। ककरो मरि जयबाक स्थिति मे रहब। सभ मिलिक' किसुनजी केँ मुक्ति-मार्ग मे बाधक होम' लगलनि। औनाइत आ रोगग्रस्त किसुनजी मुक्ति-मार्ग ताक' लगलाह। मुक्ति-मार्ग। रोग सँ मुक्तिक मार्ग। आ अन्त मे...

आ अन्त मे, करीब बारह बजे राति मे, किसुनजी भगवती उग्रताराक नाम लेलनि। मोने-मोन प्रयास कयलनि। खिड़की लग आबिक' ठाढ़ भ' गेलाह। एम्हर तकलनि, ओम्हर तकलनि। सर्वत्र स्वच्छ अन्धकार। निर्धूम गंध फिनाइलक। शान्ति। मौन आ नीरस एकान्त। डेराओन वातावरण। किसुनजी खिड़की पर चढ़ि गेलाह बिना छड़क खिड़की। ऊपर किसुनजी आ नीचा सिमेन्ट पिआओल श्वेत पृथ्वी। सीत स्नात धरती। जय उग्रतारा... जय उग्रतारा ज...य...उ...ग्र...तारा। आ किसुनजी अपना मोने खिड़की सँ खसि पड़लाह। रोग-मुक्त भ' गेलाह। आत्महत्या क' लेलनि।

मुदा नहि, से नहि भेलैक। नर्स किसुनजीक सभ क्रिया देखैत रहय। चुपचाप पाछू मे ठाढ़ रहनि। आत्महत्या कर' सँ पूर्वे पकड़ि लेलकनि। पंडितजी बेहोश भ' गेलाह। रोग मुक्त नहि भेलाह। नर्स आ हाउस-सर्जन मिलिक' बिछाओन पर पाड़ि देलकनि। बिशो आ पंडिताइन केँ जगा देलकनि।

पंडितजी पड़ले रहि गेलाह। रोग मुक्त नहि भेलाह। ओ अपना केँ अस्पताल मे नहि, जहल मे अनुभव कर' लगलाह। पड़एबाक मार्ग ताक' लगलाह। अस्पताल मे नर्स आ हाउस सर्जनक समक्ष अपना केँ लज्जित अनुभव कर' लगलाह।

दोसर दिन, पंडिताइन दूध मे सातु घोरिक' देलखिन, नहि लेलथिन। बिशो समतोलाक रस देलनि। ओहो नहि पीलनि।

दू बजेक करीब रौद मे कुर्ता पहिरलनि। ऊपर सँ नीचा उतर' मे पाँच ठाँ बैसलाह। चारि बेर माथ मे चक्कर देलकनि। नीचा आबिक' दू बेर फेर बैसलाह आ बस मे चढ़ि क' पंडितजी हमरा ओतए चल अयलाह। ठीक दूपहर मे, रौद मे। पाछाँ बिशो आ पंडिताइन बोरिया बिस्तर, दबाइ, थर्मस लेने चल अयलथिन हमरे ओहिठाम। एक टा छोट छीन मेलासन लागि गेलैक। ओझा आ बहिनदाइ सेहो आबि गेलाह। पंडितजी रूसल सन लाग' लगलाह।

एहन सन क्रम, पंडितजी आब नहि जयताह कतहु। हम पूछ' चाहलियनि। मुदा नहि पुछलियनि। मात्र पंडितजीक आँखि मे किछु तकबाक प्रयास करैत रहलहुँ। पंडितजी किएक चल अयलाह—मोन मे घुरिआइत रहल। हम पंडितजीक आँखि मे देख' चाहलहुँ। दुनू आँखि डबडबाएल। डीम, डबडबाएल आँखि—सर मे छटपटाइत। जेना कनेक पानि मे आहत मीन। आहत मीनसन रोग-ग्रस्त पंडितजी।

अत्यधिक आग्रह आ दिक कएला पर पंडितजी बजलाह—'अहाँ सभक की विचार? बिनु मृत्युएँ मरि जाउ। हमरा बुतें से पार नहि लागत। हम अस्पताल मे नहि रहब। गामे मे मरि जाएब।' तकरा बाद किछु कहबाक साहस ककरो नहि भेलैक।

तकरा बाद पंडितजी अस्पताल नहि गेलाह। बहिनदाइ आ ओझा जोर करैत रहलथिन, अप्रत्यक्ष रूपें हमहूँ आग्रह करैत रहलयनि मुदा पंडित जी नहि माननलि। विशाल जनसमूह मे ओझरा गेलाह। भाषण, कविता सभ किछु करैत एक दिन सीमान्त एक्सप्रेस पकड़ि क' पंडितजी राँची सँ सुपौल चल अयलाह। पंडितजीक संग रोग सेहो सुपौल चल आएल।

पंडितजी चल गेलाह। राधाकृष्ण द्वारा देखाओल दवाइ-गेनाक रस पीबैत रहलाह। आकाशवाणीक सन्दर्भ मे गंगेश गुंजनक पक्ष लड़ैत रहलाह। जीवकान्त केँ उपदेशात्मक पत्र लिखैत रहलाह! हमरा संगे पत्राचार मे राँचीक जीवन जीबैत रहलाह। अपना केँ स्वस्थ बुझैत रहलाह। मुदा एक दिन...।

वैदेही : जून 1971

नाम नहि जरैए

उपेन्द्र दोषी

किसुनजी स्व. रामकृष्ण झा किसुन आब नहि छथि।

पटनाक कुरजी अस्पताल मे पेप्टिक अल्सरक ऑपरेशन भेल रहनि आ पेन्सीलिनक रिएक्शनक फलस्वरूप हुनक देहांत 15.6.1970 केँ भ' गेलनि। से, किसुनजी आब नहि छथि मुदा होइत अछि कखनो कहि उठताह—'की औ! यैह होइ।'

कखनो क' होइए अपराध भाव सँ ग्रस्त छी। हम हुनका हेतुएँ किछु नहि कयल। किसुनजीक प्रतियें हमहीं टा अपराध भावना सँ ग्रस्त नहि छी। हम तँ कमोबेश स्वीकारैत छी, प्रचारित करैत छी जे किसुनजीक प्रतियें, किसुन जीक निमित्त हम किछु नहि कएल। मुदा किसुनजी सँ उपकृत कतेको एहन उपलब्धि छथि जे किसुनजीक नाम धरि बिसरि गेल छथि। बिसरि गेल छथि जे किसुनजी भट्ठा धरौने छथि। साहित्यक 'अ', 'आ' सिखौने छथि। ठेहुनियाँ देनिहार केँ 'लरे-लरे' कहिक' डेगा-डेगी बुलब सिखौने छथि। से सभ आब अतीतक बात भ' गेल। किसुनजी बीति गेलाह। कथा बीति गेल। सुपौलक साहित्यिक परिवेश बीति गेल। किसुनजीक बाद फेर ओहन तोरगर साहित्यकार-संगम नहि भेल अछि, जेहन किसुनजीक समय मे होइत छल। ओना आर्थिक आ राजनीतिक दृष्टियें सुपौल एक टा व्यापक परिवेश हथिऔलक अछि। साहित्यकार नामधारी जीव पूर्वापेक्षा कने बेसिए फड़लाह अछि तथापि ओहन संगठन-शक्ति आ ऊर्जाक अभाव कियैक?

किसुनजी कोनो चमत्कारी जीव नहि छलाह। ओ मात्र मनुक्ख छलाह, एक टा सोझ आ सहज व्यक्तित्व। तें ओ शीघ्रे घबड़ा जाइत छलाह। डरि जाइत छलाह। तें ओ अपन कष्टमय स्थिति मे अपन अभिन्न केँ अपना लग मे देख' चाहैत छलाह। हुनक 13.6.68क पत्र एहि बातक प्रमाण थिक।

कांके, 13.6.68

प्रियवर,

'हम अस्वस्थ भ' क' कांके आयल छी। 18 जून कें एतय पहुँचलहुँ अछि। सम्प्रति कमजोर बेसी छी, तें अहाँ सँ भेंट नहि क' सकलहुँ अछि। जँ पलखति भ' सकय तँ एक बेर अहूँ आउ ने।

श्री सुमन वात्स्यायन जी कें सेहो लिखलियनि अछि। पेप्टिक अलसरक चिकित्सा चलि रहल अछि। डॉ. के. के. सिन्हा मेडिकल कॉलजेक चिकित्सा चलि रहल अछि। नीकें भेला पर हम स्वयं अयबे करब।

हमर पता–द्वारा महीनारायण झा, लाइब्रेरियन, यूरोपियन मेंटल हास्पीटल, काँके, राँची–6

अहाँक किसुन।'

एतबा सत्य जे हमरा लोकनिक उपस्थिति किसुनजीक रोगक निदान छल। मुदा चेहरा पर एक टा संतुष्टि आ प्रसन्नताक स्पष्ट बोध हमरा लोकनि अनुभव कयने रही।

किसुनजी रोगजन्य पीड़ा सँ ग्रस्त तँ छलाहे, संगहि सामाजिक आ सांस्कृतिक परिवेश सेहो हुनका हेतु पीड़ाक सृष्टि कयने छल। किसुनजी कवि छलाह। अत्यधिक भावुक छलाह, तें सामाजिक आ सांस्कृतिक संवेदनाक प्रभाव शीघ्रातिशीघ्र हुनका पर होइत छल। किसुनजीक वैयक्तिक आ पारिवारिक पीड़ा भोगब हम लग सँ देखने छी। किसुनजीक आकुलता, व्यथा एक टा व्यापक सांस्कृतिक परिवेशक रचना करैत छल। किसुनजीक 20–7–68क पत्र—

'...अहाँक स्नेह एहि बेर राँची मे जे हमरा भेटल से हमरा लेल अविस्मरणीय रहत। हम सरिपहुँ स्नेहें गदगद छी। गाम अबितहि 'सहरसा जिलाक परिसर मे मैथिली साहित्यक सेवा' शीर्षक सँ निबंध लिखबा मे लागि गेलहुँ जे श्री रमानाथ झा अभिनंदन ग्रंथ मे छपि रहल छैक। निबंध किछु विस्तृत भ' गेलैक अछि। कहि नहि ओकरा ओ लोकनि संपूर्ण छपताह वा नहि। ओना हम निवेदन कयने छियनि जे एकरा अक्षुण्ण रह' देल जाय। अपना विचार अछि जे जँ काँट–छाँट करताह तँ कनेक आरो विस्तृत करा क' ओहि निबंध कें एक टा बुकलेटक रूप मे छपबयबाक आयोजन करी आ तकरा विक्रय क' क' लागत खर्च बहार क' ली। की विचार? अपना जिलाक बड़ उपेक्षा कयल गेल अछि...'

वस्तुत: निबंध जे छपल छैक तकर मौलिकता कें अभिप्रमाणित कयनिहार किसुनजी आब नहि छथि। छथि रमानाथ बाबूक शिष्य जे रमानाथ झा अभिनंदन ग्रंथक सर्वेसर्वा छलाह। ई हुनके लोकनिक विवेक–घोषणा क' सकैत अछि जे

प्रकाशित निबंध कतेक आ कोन रूप मे किसुनजीक आत्मा आ निवेदनक रक्षा कयने अछि।

ओना निवेदनक अवहेलना, इच्छाक अवहेलना, मैथिली अथवा मैथिली साहित्यकारक अवहेलना मैथिली मे एक टा आम बात मानल जाइत अछि। जकरा नोटिस लेब ने कहियो आवश्यक बूझल गेलैक, आ ने बुझल जाइत छैक। मैथिलीक साहित्यकार कें लोक निरीह आ दयाक पात्र बुझैत छथि। मैथिलीक साहित्यकार आ ताहू मे शुद्ध क' मैथिलीये टाक साहित्यकार होयब स्वयं मे एक टा अपराध थिक। किसुनजी प्राय: ताही अपराधक कारणें छँटाइत रहलाह, औनाइत रहलाह। अपन चांगुर सँ सभ कें नोचिक' लहुलहुआन क' देबाक हेतु बउआइत रहलाह। मुदा प्रत्यक्ष रूपें किछु नहि क' सकलाह।

सामाजिक आ राजनीतिक दृष्टिएँ मैथिलीक साहित्यकार कतबा हेय बूझल जाइत छथि, से मैथिली साहित्यकारक पदवी उघनिहार स्वयं अपन छाती पर हाथ राखि क' कहि सकैत छथि। तें ई कोनो आवश्यक नहि बूझल गेल होयत जे निबंध संपूर्ण छपय आ किसुनजीक निवेदन अथवा इच्छाक पूर्त्ति कयल जाय। जे किछु हमर धारणा एहि ठाम से नहि अछि जे किसुनजीक निबंध यथावत किएक नहि छपल? साहित्यकारक स्वर कें सामाजिक आ राजनीतिक मान्यता किएक नहि भेटैत अछि? किएक साहित्यकारक स्वर कें 'ई कवि छथि' कहिक' टारि देल जाइत अछि? ठोस सँ ठोम तर्क रखनिहार मैथिलीक साहित्यकार बिनु पेनीक लोटा जकाँ गुड़कि जाइत छथि, किएक?

हमरा दृष्टियें एकर मूल कारण थिक साहित्यकारक दँतनिपोड़ी प्रवृत्ति, जे पीढ़ी–दर–पीढ़ी पैतृक संपत्तिक रूप मे, उत्तराधिकारक रूप मे मैथिली साहित्यकार कें सांस्कृतिक धरोहरक रूप मे प्राप्त होइत रहलनि अछि। ई प्रवृत्ति जावत धरि उत्तराधिकारक रूप मे भेटैत रहतैक मैथिलीक साहित्यकार अपन गरिमामय परिवेशक स्थापना देश अथवा समाजक राजनीतिक भूमि मे नहि क' सकैत छथि।

किसुनजी मैथिल छलाह। ई प्रवृत्ति हुनको मे अत्यधिक विनम्रताक रूप मे पाओल जाइत छल। किसुनजी आवश्यकता सँ अधिक सज्जन आ विनम्र छलाह तें कात लागल रहलाह। काते रहि गेलाह। कहबियो छैक 'कूदय फानय, तोड़य, छान–तकरे दुनिया राखय मान।' साहित्यकारक एही प्रवृत्तिक कारणें संपूर्ण मिथिलांचलक उपेक्षा होइत रहलैक अछि। आ होइत रहतैक। नहि तँ एतेक टा उर्वर आ सुसंस्कृत भूखंड कतहु उपेक्षित आ तिरस्कृत रहय? यैह कारण थिक जे संसद मे प्रो. सुरेंद्र झा 'सुमन' सन समर्पित व्यक्तित्वक अछैतो मैथिली किछु नहि क' सकल। सुमनजी अपन एही प्रवृत्तिक कारणें संसद मे अपन स्वर ऊँच नहि क'

सकलाह। मैथिलीक हेतु किछु नहि क' सकलाह। जरद्‌गव जकाँ कुर्सी पर ओंघाइत रहलाह आ पुनः अपन एही प्रवृत्तिक कारणें पछड़ि गेलाह। पीढ़ी-दर-पीढ़ी आशुकवि होयबाक धारणा स्थापित कयनिहार कविजी अर्थात विद्याकर कवि सहरसा जिला मे मैथिली अथवा मिथिलाक नाम पर कोनो रेखांकित कर' योग्य काज कयने होथि—हमरा बूझल आ देखल नहि अछि। तें ई निश्चिन्तता पूर्वक कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक हेतु सोचनिहार लोक राजनीतिक दृष्टिएँ एखनो बहुत कम छथि। आ, किसुनक मृत्युक कारण एक टा इहो थिक। मैथिलीक दुखद स्थिति, बरोबरि बढ़ैत विसंगति किसुनजी केँ दिनानुदिन अल्पायु करैत गेल।

सात जुलाइ, 69क पत्र :

'अहाँक कार्ड 5.7 केँ भेटल। एम्हर हम फेर रोगक फेर मे तेना भ' क' पड़ि गेल छी जे स्कूल सँ छुट्टी ल' क' ओछौन धयने छी। पड़ल रहैत छी आ कुहरैत रहै छी। आब रोग युद्ध सँ अकच्छ भ' गेल छी, मोन ऊबि गेल अछि। पराजय भाव जागि गेल अछि।'

हमरा दृष्टिएँ किसुनजीक पीड़ा-भोग आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पीड़ा भोग छल। जाहि कारणें पराजय भाव जागब ओ स्वीकारैत छथि। तथापि किसुनजीक एकसर एतेक रास शत्रु सँ एक संग संघर्ष करब हुनक दृढ़ आत्मनिष्ठा आ संकल्पक परिचायक थिक।

किसुनजीक 2.9.69क पत्र :

'...संकल्पक घोषणा भ' गेल। आब निर्वाह अहीं लोकनिक हाथ अछि। पत्र पबितहि एक टा कथा पठा दिअ'। संगहि ग्राहक, सहयोगी, सहायक, संरक्षक जे भ' सकय बनाउ। अहुना सभ भार हमरे पर अछि जे सामर्थ्य सँ बाहर अछि। रसीद पठा रहल छी।...'

हमरा लोकनि किसुनजी केँ किछु दिन जीया क' राखि सकैत छलहुँ। हमसभ मैथिलीक कोनो साहित्यकार केँ अचानक काल कवलित होयबा सँ बचा सकैत छी। जँ साहित्यकारक विवेक, चिंतनधारा, सहजता आ रचना शक्तिक निष्ठापूर्वक मूल्यांकन करी। किसुनजीक इच्छा शक्ति आ चिंतन-धाराक अवहेलना सेहो हुनका मृत्यु केँ आरो लग आनि देने छलनि।

मिथिला मिहिर : 7 जून 1981

संकल्प, दधीचिक

उपेन्द्र दोषी

किसुनजीक संबंध मे कहल जाइत अछि जे ओ सफल बहुमुखी कलाकार छलाह। गद्यकार छलाह, कवि छलाह, संपादक छलाह। मुदा हमरा बुझाइत अछि, मात्र, लाल ठोप कयनिहार, धोती कुरता, बन्डी पहिरिनिहार खाँटी मैथिल छलाह। मनुक्ख छलाह। तिलजुगा पार, पुबारि पारक एक टा एहन मनुक्ख जे संस्कृतक शिक्षक छलाह। सभ्यता, संस्कृति मे पछवारि पारक पंडित, पाग, त्रिपुण्ड धारी पंडितक दृष्टिएँ हेय पुबारि पारक ई पंडित, मनुक्ख, किसुनजी भीतर सँ अक्खड़ आ तीक्ख, बाहर सँ माखन छलाह। पछवारि पारक पंडितक चेष्टा सँ कुपित, व्यथित, मोजर नहि देबाक प्रकृति सँ चिंतित, मिथिलाक समग्रताक संवाहक छलाह। इएह कारण छल जे किसुनजी केँ रमानाथ झा स्मृति ग्रंथ मे लिख' पड़लनि—'सहरसा जिला ओ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य-सेवा।' निबंध लिखि लेलाक बाद हमरा पत्र लिखलनि—'अपना जिलाक बड़ उपेक्षा कयल गेल अछि।'

पाग वला पंडितक पाखण्ड, द्वेष-ईर्ष्या सँ व्यथित भ' किसुनजी नवताक बाट धयलनि आ नव लेखनक अग्रदूत भ' गेलाह। ओना मिथिलाक प्राचीन संस्कृति सभ्यता, आचार-विचारक प्रबल समर्थक छलाह किसुनजी। मुदा पोंगापंथी पंडित लोकनिक व्यवहार किसुनजी केँ मानसिक आघात दैत छलनि तें, संस्कृतक विशुद्ध पंडित होइतहुँ, नव परिवेश आ सामासिक संस्कृतिक संवाहक भ' गेलाह किसुनजी।

सुपौलक परिवेश सामासिक संस्कृतिक परिवेश थिक। जतय विभिन्न वर्ण आ विभिन्न प्रान्तक लोक पटुआक व्यवसाय सँ जुड़बाक क्रम मे बसि गेल अछि। खेती योग्य विशाल भू खण्ड देखि आन जिला आ आन प्रान्तक लोक एहि क्षेत्र मे अपन कामत बनौलक। दोख्तारी पर आबि-आबि, जमीन कीनि एहिठामक निवासी भ' गेल! सुपौल मे मारवाड़ी लोकनिक निवास एकरे परिचायक थिक!

किसुनजी मनुक्ख छलाह, तें सामाजिक जीव सेहो। इएह कारण छल जे

किसुनजी एहि क्षेत्रक विभिन्न सामाजिक संगठन सँ जुड़ल छलाह। खाहे ओ सेठ लोकनिक व्यापार मंडल हो वा श्रमिकक कीर्त्तन भवन। सुपौलक राष्ट्रीय सांस्कृतिक मेला हो वा साओनक झूलन। किसुनजी एहि क्षेत्रक, 'आर्यावर्त', 'प्रदीप' आ 'नवराष्ट्र'क संवाददाता सेहो छलाह। ग्रामीण क्षेत्रक समाचार संकलनक हेतु श्री लक्ष्मी प्रसाद श्रीवास्तव केँ प्रोत्साहित करैत छलाह। ई समाचार सभ किसुनजी केँ पठाबथि आ किसुनजी प्रेस केँ।

ग्रामीण परिवेश केँ उजागर करबाक नियति किसुनजी केँ संस्कार रूप मे भेटल रहनि। आ ताहि नियति केँ विस्तार देबाक क्रम मे किसुनजी गाम-गाम मे पुस्तकालय स्थापनाक योजना बनौलनि। किसुनजी बिहार राज्य पुस्तकालय संघक सक्रिय सदस्य छलाह। सन 1959 मे जखन गाम मे हमरा लोकनि पुस्तकालयक स्थापना कयल त' किसुनजी सँ संपर्क आर दृढ़ भेल। हम तखन हरदी उच्च विद्यालय मे वर्ग नौक छात्र रही। हमर पितियौत लोकनि किसुनजीक छात्र छलथिन सुपौल मे। हमरा हिनक छात्र होयबाक सौभाग्य प्राप्त नहि भेल।

किसुनजी पुस्तकालय संघक सबडिविजनल मंत्री छलाह। प्रत्येक वर्ष चुनाव होइक आ प्रत्येक वर्ष हमरा लोकनि किसुनजी केँ मंत्री चुनि ली। पुस्तकालय संघक जिला मंत्री किसुनजी नहि बनि सकलाह कहियो। अति सक्रिय सदस्य रहितहुँ। जिला मंत्री पद सभ बेर बराहीक सुशील झा उचटि लैत छलाह। राजनैतिक पहुँच आ बुद्धिक प्रभावेँ। जाहि चाटुकार प्रवृत्ति आ राजनैतिक छल-छद्मक जरूरति छलैक से लूरि नहि छलनि किसुन जी केँ। निमूहधन देहाती मैथिल छलाह किसुनजी।

किसुनजी केहन निश्छल आ निर्मल आत्माक धारक शरीर छलाह तकर उदाहरण इएह जे बारह वर्षक दृढ़ पारिवारिक संपर्क रहितहुँ, हमरा कहियो हमर जाति आ कौलिक नाम नहि पुछलनि। हमरा सन् 1968 धरि राजपूत बुझैत रहि गेलाह। कारण, हमर लालन-पालन, मायक मृत्युक बाद, राजपूत परिवार मे, रामनगर मे भेल। हम ओहि परिवारक अद्यावधि एक टा सक्रिय अभिन्न सदस्य छी। किसुनजी सेहो ओहि परिवार सँ सुपरिचित छलाह। हमरा ओहि परिवार मे देखि राजपूत बुझैत रहलाह। सन् 1968 मे जखन हमर पितियौतक विवाह सुपौल मे भेल तखन किसुन जी केँ हमर जाति बुझना गेलनि। किसुनजी जाति, सम्प्रदायक गोलैसी सँ असंपृक्त एक टा सामाजिक आ सांस्कृतिक जीव छलाह। तें, ओ, रामानुग्रह झा, महाप्रकाश, सुभाष, उपेन्द्र दोषी, तारानन्द 'तरुण' आ एहने आरो नवतुरिया सभ केँ समान रूपें स्नेह आ प्रोत्साहन दैत छलाह।

कहल जाइत अछि किसुन जी सींघ तोड़ि क' पड़रू मे मिझरा गेलाह। मैथिलीक अज्ञेय बनबाक लौल पोस' लगलाह। ई धारणा हुनक 'आत्मनेपद' कविता संग्रह

आ 'तार सप्तक'क लीक पर मैथिलीक नव कविताक प्रकाशनक आधार पर स्थापित कयल जाइत अछि। मुदा, हमरा दृष्टियें ई धारणा मिथ्या थिक। नव पीढ़ी केँ मार्ग देखाएब, ओकर प्रतिनिधित्व करब पड़रू मे मिझरायब नहि होइछ। अपन अनुभव आ प्रतिभा सँ नव पीढ़ी केँ आलोकित करब ऊपर सँ नीचा आयब नहि थिक। किसुनजी मात्र किसुनजी छलाह। मैथिलीक सर्वविध प्रगतिक इच्छुक।

किसुनजी बिहार राज्य माध्यमिक शिक्षक संघक सदस्य आ ओकर मुखपत्र 'प्राच्यप्रभा'क संपादक मंडल मे छलाह। किसुनजीक सम्मान मे हम राँची मे दू बेर साहित्यकार सम्मेलन कयने रही। एक बेर अध्यक्ष रहथि क्षेत्रीय उप निदेशक (शिक्षा) माननीय हरिनन्दन चौधरी आ दोसर बेर रहथि हिन्दीक वरिष्ठ व्यंग्यकार राधाकृष्ण। दुनू बेर राँची मे अभूतपूर्व साहित्यकार सम्मेलन भेल छल। जकर चर्च 'मिहिर', 'आखर', मिथिला दर्शन, 'आर्यावर्त' आ 'प्राच्यप्रभा' मे विशेष रूपें छपल छल।

किसुनजीक प्रमुख विशेषता छल हुनक धैर्य, सहनशीलता। किसुनजी अगुताइत नहि छलाह। कुपित नहि होइत छलाह। भीतरे-भीतर तामस केँ पचा जाइत छलाह। मुदा ओ तामस, पित्त आँखि बाटें देखार भ' जाइत छलनि। हुनक आँखि देखला पर हुनक मानसिक स्थितिक पता लागि जाइत छल। आ हम इएह काज करी, हुनक आँखि निहारी। हुनक मानसिक स्थितिक पता लगाब' लेल। किसुनजी बाजथि कम आ सुनथि बेसी। आनक बात सुनब, आनक दुख सुनब हुनका नीक लगनि। धैर्य आ लगनपूर्वक आनक बात आध-आध घंटा धरि बिनु बजनहि निर्निमेष सुनैत रहैत छलाह। तमसायल व्यक्तिक तामस मे झीक नहि दैत छलाह। चुट्टी काटि, काकु भाषि ओकर क्रोधाग्नि केँ बढ़बैत नहि छलाह। एक केँ दोसरक प्रतियें उसकबैत नहि छलाह। टुसकबैत नहि छलाह। बल्कि बोधैत छलाह। तोषैत छलाह। आगि पर पानि ढारैत छलाह। किसुनजीक एहि मन:स्थिति केँ हम कतेको बेर देखने, भोगने छी।

आत्मसम्मान पर प्रहार होइत किसुनजी केँ सहाज नहि होइन। अत्यधिक विनम्र किसुनजी तखन विषपायी भ' जाथि। आँखि लाल होइन अवश्य मुदा विनम्रतापूर्वक तकर विरोध करथि। अन्तरक तमाम झंझावात केँ पचाक' या तँ कार्यक अग्रिम प्रगति देख' लागथि या कार्य स्थल सँ सहटि जाथि, कार्यक अवरोधक नहि बनथि। एहने स्थिति 1960 मे हरदी दुर्गा स्थान मे कला परिषद्क स्थापना काल मे भेल छल। एहन-एहन कतेको स्थितिक द्रष्टा, भोक्ता, हम, आदरणीय मायानन्द मिश्र आ रामानुग्रह झा प्रभृति रहल छी।

एक बेर 'मिहिर'क फगुआ अंक मे छपल—'पा भरि दही, आठ गोट केरा रामकिसुन केँ भोग! एतबा खयने कहु, फगुआ मे कोनाक' अओतनि ओज।' किसुनजी ई पाँती सभ पढ़लनि। चुप रहलाह। बजलाह तखन किछु नहि। कने

बिहुँसलाह। कहलनि—ई तँ हास्य-व्यंग्य नहि भेल। वैयक्तिक आक्षेप भेल। हमर बीमारीक, हमर पीड़ाक मजाक उड़ाओल गेल अछि।

दिनांक 11 आ 12 जनवरी 1970 केँ हीनू मे विद्यापति जयन्ती छल। मुख्य अतिथि छलाह किसुनजी। मुख्य वक्ता छलाह डॉ. सुभद्र झा! आ मुख्य आयोजक सभ मे पंडित श्री आद्याचरण झा। कार्यालय सचिव हम। डॉ. सुभद्र झाजीक भाषण समाप्त भ' गेलनि तँ किसुनजी टिपलनि—हमरा आशा छल जे आदरणीय डॉ. साहेब सँ किछु सुनब। मुदा डॉ. साहेब हमरा लोकनि केँ नेना बूझि लेमनचूस धरा देलनि। सुभद्र बाबू केँ ई बात जेना छूबि लेलकनि। हमरा देखितहि बजलाह—अच्छा, काल्हि हम बाजब। अहाँ एक टा स्टेनो ठीक क' क' राखब जे हमर भाषण टीपय।

दोसर दिन बारह जनवरी केँ हमरा लोकनि डॉ. सुभद्र झाक अभूतपूर्व, विद्वत्ता-पूर्ण भाषण सुन' लगलहुँ। हमर निवेदनक अनुसार ओ पुरुष परीक्षाक समीक्षा सँ आरंभ कयलनि। समस्त बुद्धिजीवी मैथिल केँ सुभद्र बाबूक अध्ययनक परिचय तखन भेटल रहैक। मुदा भाषणक क्रम दीर्घ होइत देखि पं. श्री आद्या बाबू पाछू सँ सुभद्र बाबूक कुरता घीचि-घीचि बैसि जयबाक संकेत कर' लगलथिन। सुभद्र बाबू अपन भाषण समाप्त कयलनि। नाच-गान आरंभ भेल। आ सुभद्र बाबू लगलाह किसुन जी केँ रेड़'—हम पहिनहि कहलहुँ, हमर भाषण क्यो नहि सुनैत अछि। ई सभ मैथिली विरोधी अछि। कहू तँ आद्या बाबू हमर धोती घीचथि? किसुनजी सभ टा फज्झति मौन भावें सुनैत रहलाह, किछु बजलाह नहि। ओहिठाम सँ टसकबो नहि कयलाह। किसुनजीक धैर्य आ सहनशीलता हम तहियो देखने रही।

किसुनजीक धैर्य आ सहनशीलता हम तहियो देखने रही, जहिया ओ पुबारि पार मे, सुपौल मे मैथिली आन्दोलनक प्रगतिक सर्वविध सहयोग हेतु अनेक आर्थिक संकट सहियो क' राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौल मे कवि सम्मेलन करथि। ओना सहरसा परिसर मे तखन ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र, पडित छेदी झा 'द्विजवर', जयनारायण मल्लिक प्रभति रचनाकार परसरमा, बरूआरी, सुखपुर डेउढ़ीक लक्ष्मी पात्र जमीन्दार तथा सुपौलक धन्नासेठ लोकनि मौजूद छलाह जे मैथिलीक हेतु पुबारि पार मे सभ किछु क' सकैत छलाह। मुदा, क्यो किछु नहि कयलनि। आर्थिक झाँट बिहाड़ि सहैत, शारीरिक पीड़ा उघैत किसुनजी सुपौल केँ मैथिलीक गढ़ बनौलनि। मैथिलीक नक्शा मे सुपौल केँ उजागर कयलनि।

किसुनजी निष्काम कर्मयोगी, दधीचि छलाह।

सुपौलक धन्नासेठ लोकनिकक निकट सम्पर्क मे रहि योग्य सलाह बँटैत छलाह। मुदा, स्वयं लेल कहियो किछु नहि कयलनि। चाहितथि तँ सेठ लोकनि सँ सर्वविध उपकृत भ' सकैत छलाह। गुदरी बाजारक किसुन कुटीर केँ दूमहला, तीन महला

मे बदलि सकैत छलाह। किछु नहि कएलनि किसुनजी। मात्र दानी दधीचि छलाह। अग्रज केँ योग्य आदर-सम्मान आ अनुज केँ स्नेह, प्रोत्साहन बँटैत रहलाह, धैर्यपूर्वक निःस्वार्थ भावें। अपन शरीर गलबैत रहलाह। हड्डी दान करैत रहलाह। मैथिली भाषा, साहित्यक श्रीवृद्धि हेतु परिवार केँ अबडेरैत रहलाह।

किसुनजी केँ रोगग्रस्त होएबाक कारण पर कहियो नहि सोचल गेल अछि। सोचल जयबाक चाही। रोग केँ जतने, यश लाभक लोभें किएक किसुनजी एतेक व्यस्त रहलाह? कहियो नवलेखन, कहियो गोष्ठी आ कहियो 'संकल्प'क योजना। स्वास्थ्य दिस किएक ध्यान नहि देलनि? प्रायः परिजन केँ संतुष्ट रखबाक हेतुएँ। किसुनजीक मानस मे प्रायः इएह धारणा रहल जे हमरा हेतुएँ हमर परिवार चिंतित आ परेशान नहि रहए।

किसुनजीक धैर्य आ सहनशीलताक परिचय एहू पत्र सँ भेटैत अछि—

'एम्हर फेर हम रोगक फेर मे तेना भ' क' पड़ि गेल छी जे स्कूल सँ छुट्टी ल' क' ओछौन धयने छी। पड़ल रहै छी, कुहरैत रहै छी। कुहरैत रहैत छी आ झहरैत रहै छी। आब रोग-युद्ध सँ अकच्छ भ' गेल छी। मोन ऊबि गेल अछि। पराजय भाव जागि रहल अछि। तैयो मोह धरि अछिये।'

किसुनजी आब नहि छथि तँ ओ बेर-बेर मोन पड़ैत छथि। हुनक संकल्प मोन पड़ैत अछि। हुनक उदारता मोन पड़ैत अछि। मुदा ताहि सँ की? मैथिलीक उत्थान आ विरोधी तत्त्वक नाश—हुनक संकल्प छल। ताहि संकल्पक निर्वाह आ प्रतिफलन होमक चाही।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

मान्यवर किसुन जी

गंगानाथ गंगेश

1968 ई. क अंतिम मास। पढ़ाइक महत्वाकांक्षा अपूर्ण रहबाक निराशा। घर मे पिता-पित्तीक मध्य भिन्न-भिनाउजक वातावरण। जोर मारैत लेखनक माया-लोक। कॉलेज छोड़ि लंबा छुट्टी पर गाम रही। एकाध कथा लिखने रही। 'आखर'क राजकमल स्मृति अंक पढ़ि चुकल रही। अजमेर सँ प्रकाशित 'लहर' हिंदी पत्रिकाक राजकमल विशेषांक सेहो संभवत: बहरा गेल छल। 'लहर' मे सेहो हिंदी लेखकक अतिरिक्त मैथिलीक किछु लेखक धीरेंद्र, जीवकांत, सोमदेव आदिक संस्मरण आयल छल। 'आखर' पत्रिकाक आ ओकर संपादकक नामकरण त' राजकमलजी मृत्यु सँ पूर्वे क' चुकल छलाह आ से कयने छलाह सुपौल मे आयोजित नव कविताक द्विदिवसीय गोष्ठीक मध्य। आयोजक छलाह मान्यवर किसुन जी आ गोष्ठी-सह-सेमिनारक रौनक छलाह राजकमलजी। एहि गोष्ठीक चारिए मासक बाद राजकमल दुनिया सँ विदा भेल छलाह। 'आखर' क एहि विशेषांक मे किसुनजीक बारह पृष्ठक संस्मरण मे राजकमलक व्यक्ति आ साहित्यकार दुनू रूप मे छोड़ल गेल असंख्य भ्रांतिक बड़ शालीनता सँ विवेचन कयल गेल छल हुनक 'जेनेसिस'क संग। हुनक कौलिक-यथा पिता-पितामहक-प्रतिष्ठाक समग्र रूप मे चर्चा छल। संगे सुपौल मे आयोजनक मध्य हुनका द्वारा कयल गेल 'शोभा-सुन्नरक'। ओना एहू सँ मर्मस्पर्शी, यथार्थपरक आ रोमांचक आलेख रामानुग्रह झाक छल, जिनका दूत रूप मे किसुनजी राजकमल केँ अनबाक लेल महिषी पठौने छलथिन। राजकमल जी महिषी सँ सुपौल धरिक यात्रा मे असंख्य बेर पात्र-प्रवृत्ति (अर्थात चानीक चीलमक उपयोग) आ सोमरसक पान क' चुकल छलाह। द्विदिवसीय ओहि नव कविता सेमिनारक भव्यताक वर्णन शैलेश कुमार पाठक आ रमानंद रेणु कयने छलाह। संभवत: आइ-काल्हुक लिटरेचर फेस्टिवल सँ बहुत बेसी भव्य छल होयत, जाहि मे सुपौल सन जगह मे असंख्य लोक सोल्लास भाग लेने छल, सेहो नव कविताक गोष्ठी मे।

किसुनजीक आकर्षक छवि स्कूलेक समय सँ शिक्षक अमरजी द्वारा देल गेल छल। अचानक किसुनजीक पत्र देखि हुलसि गेल छलहुँ। पत्रक आरंभ 'प्रियवर, शुभाशीष...' सँ भेल छल। पत्र मे नवकथा पत्रिका 'संकल्प' नाम सँ बहार करबाक योजना छल। एक टा नव्यतम कथा शीघ्रातिशीघ्र पठयबाक आग्रह छल, संगे स्नेह आ सहयोगक अपेक्षा छल। एहि पत्र सँ आत्मविश्वास आ प्रसन्नता सँ भरि उठल छलहुँ। संभवत: 'संकल्प' नामक कथा-पत्रिकाक योजना ओहि द्विदिवसीय सेमिनारेक प्रतिफल रहल हो। पहिने कहि चुकल छी, ओ समय हमर किशोरवयक निराशाक छल। एहि पत्र सँ स्फूर्त्ति सँ भरि उठल छलहुँ। अगिला दिन एक टा कथा 'अव्यक्त व्यतीत' शीर्षक डाक सँ पठा देने छलियनि। पिताजी पोस्टमास्टर छलाह, तें पत्रक प्रेषण आ प्राप्ति निरापद छल। पत्र मे सदस्यता-शुल्कक विवरण छल आ संगे ग्राहक बनयबाक आग्रह सेहो छल। अपना संग एकाध गोटेक सदस्यता-शुल्कक मनिआर्डर सेहो तदनुसार क' देने छलहुँ। पत्रोत्तर मे जे कथाक संग पठौने छलहुँ, ओहि मे गुरुवर अमरजी द्वारा सुनल-सुनायल कथा सभक चर्चा आ जिज्ञासा छल, यथा सिंहेश्वर, सुपौलक मेला समितिक आयोजन मे हुनक सक्रियता आ प्रबंधन कौशलक प्रसंग। भाषा कचकूह छल, वयस आर काँच छल, तैयो यथासंभव हुनक प्रशंसा कयने छलहुँ। पत्र लिखैत काल राजकमल सन विशाल स्वच्छंद आ अनियंत्रित युगांतरकारी साहित्यकारक किसुनजीक प्रति अप्रतिम सम्मान नचैत रहल, खास क' ओहि दुदिना सेमिनारक बाद स्टेशनक विदा बला दृश्य, जाहि मे पहिने राजकमल तदनन्तर रेणु, धीरेंद्र, जीवकांत आ कीर्त्तिनारायण मिश्र किसुन जीक पैर छुबैत छथि आ किसुनजी भाव-विगलित अश्रुसिक्त भ' जाइत छथि। ईहो सोचैत आ अनुमान लगबैत रहलहुँ जे 'संकल्प' नामक पत्रिका हिंदीक 'कहानी', 'नई कहानियाँ'क स्तरक वा ओहू सँ भव्य होयत। 'आखर' राजकमल स्मृति अंकक बाद लसकि गेल छल। अस्तु, जतबे दिन छपल, मैथिलीक नवलेखनक ऐतिहासिक दस्तावेज प्रमाणित भेल। पत्र आ मनिआर्डर प्राप्तिक सूचना दैत ओ हमरा द्वारा पठाओल कथाक बेर-बेर प्रशंसा कयने छलाह। हमर मित्र उपेंद्र संग सेहो पत्राचार भेल छलनि, तकरो सूचना दैत हर्ष व्यक्त कयने छलाह। हम मुजफ्फरपुर इंजीनियरिंग हॉस्टल घुरि आयल रही। मिथिला मिहिर मे किसुनजीक रचना छपिते रहैत छलनि। ओहि मे कुर्जी अस्पताल, पटनाक पता छपि रहल छल। हम हुनक स्वास्थ्य संबंधी जिज्ञासा करैत एक पत्र लिखने छलियनि। पत्रक उत्तर हमर हॉस्टलक पता पर आयल छल। ओहि मे कोनो घबड़ाय बला बात नहि छल, 'रूटीन चेक-अप'क बात लिखने छलाह। संगे ओ प्रसिद्ध मुजफ्फरपुरक होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. बनर्जी सँ कन्सल्ट करबाक बात लिखने छलाह। आ ओहि सिलसिला मे हमरो सँ भेंट हेबाक बात छल। एक टा

अवांतर प्रसंग सेहो अछि, जकर चर्चा करबाक लोभ संवरण नहि क' पाबि रहल छी। एकदिन अकस्मात हुनक पत्र भेटल छल। पत्र खोलैत सन्न रहि गेल छलहुँ। पत्र मे छल-'प्रियवर, हम सत्ते बेइमान छी, अहाँक कथा पठा रहल छी आ शीघ्रे अहाँ द्वारा पठाओल शुल्क सेहो। 'संकल्प' एखन धरि नहि बहरा सकल... आदि।' ओहि मे हमर पत्र पढ़ि दुखी हेबाक बात लिखने छलाह।

हम आश्चर्य व्यक्त करैत उत्तर देने छलहुँ, जे एहि प्रकारक कोनो अभद्रतापूर्ण पत्र लिखब हमरा लेल अकल्पनीय अछि। समस्याक निराकरण करैत ओ पत्र लिखने छलाह-'प्रियवर, सत्ते हमरा भ्रम भ' गेल छल, ओ किनको आनक पत्र छल।' बाद मे हमर मित्र उपेंद्र एहि प्रकारक पत्र लिखबाक सप्रसंग उल्लेख कयने छलाह। आ एहि प्रसंगक बाद दोसर पत्राचार नहि भ' सकल आ ने पत्रिका 'संकल्प' बहरायल। आ से किसुनजी सन दृढ़ संकल्प बला लोकक लेल अप्रत्याशित छल। जीवकांत जी हुनक स्वास्थ्य संबंधी परेशानीक संक्षिप्त उल्लेख कयने छलाह, ओना संगहि मिथिला मिहिर मे नियमित रूप सँ निरंतर हुनक रचना छपैत छल।

एहि बीच 1969 ई. क दिसंबर आबि गेल। किसुनजीक पहिल-पहिल 'प्रियवर' आ हमर 'मान्यवर' संबोधन मे उत्तर स्नेहसिक्त करैत एक बर्ख बीति चुकल छल। कविता-संग्रह 'असमाहि हमर हाथ'क (हमर आ उपेंद्रक) सामग्री एहि बीच तैयार भ' गेल छल। जीवकांतक भूमिका (टीपनि) आबि चुकल छल। प्रकाशन उपेंद्र दरभंगे मे करयबाक व्योंत क' रहल छलाह, ओना हमर पटना सँ करयबाक बात इच्छा रहितहुँ मोने-मोन रहि गेल। मात्र एक बेर कॉवरक आवरण-सज्जाक ब्लॉक बनयबाक लेल पटना आयल छलहुँ ओ ओही दिन ब्लॉक बनबाक' सँझुका स्टीमर सँ घुरि गेल छलहुँ। ओहि समय मे पटना सँ गामक यात्रा अमेरिकाक यात्रा जकाँ समय लैत छल। लौटैत मोन मे बहुतरास प्रश्न छल। रस्ता मे हमरा आ उपेंद्र सँ परिचित एक गोटे पाथर सदृश ब्लॉकक प्रति जिज्ञासा कयला पर हम ब्लॉक केँ टाल-मटोल करैत झोरा मे झाँपि लेने छलहुँ। बहुत गोटे सँ भेंट करबाक इच्छा छल, मुदा एहि परिचित जकाँ ओहि भेंटक बोरिंग हेबाक संभावना पर्याप्त छल। आ एक टा अतिरिक्त व्यर्थता-बोध सँ बचबाक बात पर आह्लादित होइत निसास छोड़लहुँ। ओना ओहि ब्लॉकक दोकान पर बैसल-बैसल समय बीति गेल आ आन बात सोचबाक अवसरे ने भेटल। ओना एकाध बेर आर एहि सिलसिला मे आब' पड़ल आ कागतक बड़का बंडल ल' क' घुरैत बहुतो आँखिक दंशक सामना कर' पड़ल छल। दरभंगा सँ चलैत काल उपेंद्र एना बाजथि, जेना हमरा पटना सँ घुरिते पोथी छपि क' तैयार। ओना ओहो प्रकाशकक 'बस दू दिन आर' बला कोडवर्ड पर व्यंग्य करैत हँसैत छलाह। ओना मार्च 1970 मे किछु-किछु प्रति छपि क' आयल छल अनाड़ी आ बेढंगा जकाँ।

व्यर्थता-बोध सँ पानि-पानि भ' गेल छलहुँ। कविता सभ लिखैत समयक उत्साह आ तकर एहि स्वरूप मे परिणति, सोच' लगलहुँ जे ई ईश्वरक शुभ संकेत ने हो व्यावहारिक जीवन मे प्रवृत्त हेबाक लेल। ओना एक सँ एक भ्रामक प्रतिक्रिया तत्कालीन मैथिली साहित्यकार सभ सँ अबैत रहल आ आगाँ लिखबाक महत्वाकांक्षा ओहि मे विलीन भ' गेल। कतेको गोटेक प्रति तामस उठैत छल। अस्तु, जे किछु।

पोथीक बंडलक संग पटना जयबाक नेयार-भास करैत एकाध मास बीति गेल। स्टीमर पर गुरुवर अमरजीक प्रतिक्रिया जे निराश कर' बला छल, सुनबा लेल बाध्य छलहुँ। अधिकतर प्रतिक्रिया जीवकांतक भूमिका वा संग्रहक छपाइ पर छल, कविताक मूल वस्तु बिला गेल छल। ईश्वरक लीला! परिस्थितिक एहने दुरभिसंधि मे मोन पड़लाह किसुनजी, जिनका सँ भेंट नहि छल, मुदा आशीर्वादक अपेक्षा छल। नेयारने छलहुँ जे पटना मे (जत' हेबाक संभावना छल) आर्यावर्त वा मिथिला मिहिर मे हुनक टोह लेब। अपन बहिनोइ आ प्रखर पत्रकार भाग्यनारायणजी सँ किछु सूचना भेटि सकैत छल, मुदा ओ तँ हमर लेखनक गतिविधिए सँ मुँह फेरि लैत छलाह। ई पोथी देखि व्यंग्य मिश्रित हँसी अधर पर आयल छलनि। पटना मे हुनके ओत' ठहर' लेल बाध्य छलहुँ। तावत ओ राजेंद्रनगर बला आवास मे नहि आयल छलाह। हुनका ओत' आगंतुक सभक भीड़ सामान्य बात छल। दू गोट मैथिलीक डॉक्टर बड़ी काल धरि पीएच.डी., डी.लिट्. क डिग्रीक महात्म्य बखानैत मिथिला विश्वविद्यालयक तात्कालिक अध्यक्षक कुर्सी दफानबाक तिकड़म मे छलाह, संगे प्रतिस्पर्द्धीक नामी ससुरक नाम साहित्य अकादेमीक सूची सँ हटबा चुकल छलाह। बुझाइत छल जेना समस्त मैथिली संस्थान हिनका लोकनिक जेबी मे हो। एक गोटे बाद मे पटना विश्वविद्यालयक आ दोसर बिहार वि.वि. मे अध्यक्ष भेल छलाह। एक गोटे वाचाल छलाह, दोसर गुटकैत छलाह। राति आठ सँ दसक करीब बहिनोइ प्रायः घुरैत छलाह प्रेस सँ आ गंभीर रहैत छलाह। ओहि दिन अबितहि हमर हाल-चाल लेलनि आ मायानंद मिश्रक शिकाइत करैत बजलाह, 'अहाँक किसुन जीक मृत्यु भ' गेलनि, मायानंदजी केँ प्रेस केँ सूचित करक चाहैत छल। मुदा प्रेसक लोक केँ पता लाग' सँ पहिने दाह-संस्कार भ' चुकल छल।' हमर बहिनोइ ओत' कनी काल लेल गेल छलाह, से सुनौलनि। हम कोनो प्रतिक्रिया नहि देने छलहुँ। किसुनजी सँ पुनः आशीर्वाद प्राप्त करबाक कामना अपूर्ण रहि गेल। सोचैत रहलहुँ एहि तिकड़मी जगत मे किसुनजी सन निष्ठावान साहित्यकार सेहो अपन अध्यवसाय मे दृढ़ रहैत छथि। मोन पड़ल हुनक एक गोट कविता, जाहि मे एक टा संतान शोक सँ व्याकुल पक्षी समुद्र उपछबाक प्रण लैत चोंच सँ चिरसाधना मे लागल अछि।

ओ दुनू मैथिली प्राध्यापक आइयो हमर स्मृति मे अबैत छथि। एहन-एहन

आधारभूत ढाँचा पर स्थापित शिक्षा-जगत कोना ने धराशायी हो! दुनू गोटे नव कविता केँ अनेरुआ घास-पात बुझैत छलाह। एक वाक्य जे यात्रीजी कतहु बाजल छलाह— 'नव कविता वैह लीखि सकैत अछि, जे छंद मे पटु हो'। हिनका लोकनिक सूत्र-वाक्य छल। हम शांत आ असहज भेल सोचैत रहलहुँ जे पारंपरिक कविता केँ तँ कवि-सम्मेलन मे वाहवाहीओ भेटैत छल, मुदा एहि कुंठा-संत्रासक कविताक तँ क्यो माय-बाप नहि अछि। देशी मुर्गी बिलैंती बोल। एहन परिस्थिति मे कोना किसुनजी नव कविताक एते बड़का आयोजन क' सकलाह? उत्तर भेटल, जे कर' बला करिते अछि अपन मनोनुकूल दृढ़ताक संग।

मोन पड़ल 1964 ई.। नेना-भुटकाक चौपाड़ि (मिथिला मिहिर) मे एकाध रचना छपि चुकल छल। दसम कक्षाक छात्र रही एम.एल. एकेडमी मे। लेखक बनबाक नव जोश जागल छल। दू-तीन दिनक मुसलाधार वर्षाक बाद ओही दिन पनिसोखा (इंद्रधनुष) उगल छल। तत्क्षण 'मिथिला मिहिर' मे छपल किसुनजीक 'विशेष कविता' 'आनल मेघ सनेस रे' पढ़ि बुझायल, जे ई क्षण पूरा-पूरी एहि कविता मे समा गेल अछि। मैथिलीक शिक्षक गुरुवर अमरजी किसुनजी सँ अपन मित्रताक खिस्सा सविस्तार सुनौने छलाह। किसुनजी रमेश्वर लता महाविद्यालय मे परीक्षा देब' दरभंगा आयल छलाह। अमरजी अपन पिताक आवास मे छला। किसुनजी धीया-पूता वा नोकर-चाकर बूझि तुम-ताम कयने छलथिन। अमरजीक पिता प्राचार्य छलथिन। परीक्षा-भवन मे अमर जीक गार्डिंग मे परीक्षा दैत किसुन जी घामे-पसीने नहा गेलाह, तखन ओ हँसिक' हुनका सँ कोनो असुविधा नहि अनुभव कर' लेल कहलथिन। आ यैह मित्रताक कारण बनल। ओ बतौने छलाह जे किसुनजीक नेतृत्व-क्षमता अद्भुत छनि। सिंहेश्वर स्थान, सुपौल मेला मे विभिन्न कार्यक्रम करबैत छथि। ओहि क्षेत्र मे काफी सम्मान छनि। नव-नव सोच आ सृजनशीलता सँ भरल व्यक्तित्व छनि।

किसुनजीक जन्म 1923 ई. मे आ मृत्यु 15 जून 1970 ई. केँ भेलनि। अपन संस्कृत माध्यमक शिक्षाक उपरांत सुपौलक विलियम्स हाइस्कूल मे मैथिलीक आदि शिक्षक भेलाह। ई मैथिलीक विकासक लेल विभिन्न संस्थाक निर्माण आ सफल संचालन कयलनि। कोसी क्षेत्रक विद्यापति समारोहक जन्मदाता यैह थिकाह। संस्कृतक विद्वान होइतो ई अंतिम कवि भेलाह, जे कविताक पारंपरिक रूप मे प्रतिष्ठित भ' नव-नव भावबोधक कविता सभ लिख' लगलाह। 1963 ई. मे हिनक 'आत्मनेपद' कविता-संग्रह आयल। ई कविता लेखने धरि सीमित नहि रहलाह, अपितु नव कविताक प्रवक्ता वा स्थापित मंच भ' गेलाह। ओ युग (1963 ई.) हिंदी भाषा मे 'तार सप्तकक' युग छल, जकर 'अज्ञेय' बनबाक प्रचुर क्षमता हिनका मे

छलनि। मुदा, ई नम्रता आ शिष्टाचारक संग सामान्य कविकर्म मे लीन रहलाह। ई आयुक पाँचो दशक पूरा नहि क' सकलाह। मैथिलीक दुर्भाग्य जे किसुनजी सन वटवृक्ष प्रचुर घनगर छायादार हैबा सँ पूर्वे कालकवलित भ' गेलाह। मैथिली नव कविता, जे आइयो कुपोषित सन अछि वा मुख्यधारा सँ फराक अछि, हुनक सधल साज-सँवार (grooming) सँ वंचित रहि गेल। ओना जे क' गेलाह सेहो ऐतिहासिक अछि। किसुनजी जन्मजात अभिभावक छलाह, अपन भागिन मायानंद सन प्रखर साहित्यकार द' गेलाह। आइ हुनक पुत्र केदार कानन पिताक विरासत केँ आगाँ बढ़ा रहल छथि। किसुन संकल्प लोक आ 'भारती मंडन' हुनक निशानी अछि। बहुमुखी प्रतिभाक एहि साहित्यकारक मूल्यांकन आइयो शेष अछि।

हिनक नव भाव-बोध बला कविता मे युगबोधक स्वर पूर्णता मे अछि। एहि मे उपमेय-उपमान, प्रतीक योजना, बिंबविधान तथा शिल्प-विन्यास सर्वथा नवीन अछि। भाषा मे अप्रतिम अनुशासन अछि, जाहि मे संस्कृतनिष्ठ आ ठेठ शब्दावलीक अद्भुत संतुलन अछि। हिनक 'अनुत्तरित' आ 'खुटेसल' कविता हिनक रचनात्मक ऊर्जाक प्रमाण अछि। जीवन जे अछि, तकर वास्तविक चित्रण अछि प्रेसिजन आ एकुरेसीक संग। 'अनुत्तरित' कविता मे प्रश्न पुछैत छथि जे की एहने जीवन चाही, जे नकली अछि? मदारीक डुगडुगी पर नचैत बानर जकाँ। ओ कहैत छथि, जे प्रत्येक भोर जहाजक बोझ लेने उठैत छी, हाफी लैत देह सोझ करैत छी आ बड़ी ध्यान सँ अथाह शब्दक पहेली सोझरबैत छी। जगिते कखनो बड़द तँ कखनो बानर मे रूपांतरित भ' जाइत छी, बेर-बेर जिबैत आ मरैत। विभिन्न क्षण जुलूसक शृंखला मे बदलि जाइत अछि, विभिन्न नाम सड़क पार करैत नारा जकाँ चिकरैत छी। हमर चमड़ी सँ एक टा कुक्कुर बहराइत अछि जे रोटीक टुकड़ा आ कोनो साड़ी दिस नाँगरि डोलबैछ। एकर नकली व्यक्तित्व सभ किछु अंगीकार करैत अछि। सभ प्रश्नक एक्के उत्तर दैत अछि—'ई सभ जीबाक लेल करैत छी।' की एहने जीवन चाही?

'खुटेसल' कविता मे परंपरा केँ खुट्टा कहैत छथि। हजारो बर्ख सँ हम सभ चलि रहल छी, चलब जारी अछि, मुदा लक्ष्य ओतबे दूर। जूआ मे जोतल वा कोल्हुक बड़द जकाँ। गंतव्य ओतबे दूर। लाशक झुंड सँ भरल अनंत परंपरा (पिता, पितामह, प्रपितामह आदि) केँ उघैत छी। हमसभ संघर्ष करबा सँ बेसी समावेशी छी। भरि जन्म पुरने बात दोहरबैत छी, कहियो खतम नहि होब'बला संस्कार सँ जकड़ल छी। एही व्यामोह मे पूरा देश लपटायल अछि। हमरा सभक मोन मे भूत-प्रेत जकाँ लहासक ढेरी नचैत अछि आ हमरासभ पर हुकुम बजबैत अछि। हमरालोकनिक पीठ मे विशाल अजगर अपन तेज दाँत गड़ौने अछि। हमसभ 'खुटेसल' छी।

हिनक कथासभ मे सेहो संस्कार सँ उबरबाक बात अछि। ओ नव कविताक अर्थ-विस्तार सेहो देलनि, जाहि मे कविताक मूल्यांकन मे कविक जीवन-शैली केँ

सेहो ध्यान राखल जाय। समीक्षक मोहन भारद्वाजक एहि पर प्रतिक्रिया छल, जे कत' कत' समीक्षक सतुआक पोटरी ल' क' कविक पाछाँ बौआइत रहताह?

किसुनजी सुच्चा संस्कृत पंडितक अतिरिक्त बहुआयामी साहित्यकार छलाह जे शुरूहे सँ नव सोचक कथाकारक संग पारंपरिक कविता मे दक्ष आ स्थापित छलाह। हुनका लेल अचानक आधुनिकता वा अति आधुनिकता दिस बढ़ब कते कठिन रहल होयत, से आइ हमसभ अनुभव करैत छी। सरल सुहृद समीक्षक भीमनाथ झा एहि बात कें नीक जकाँ फरिछा क' लिखैत छथि—'किसुन रहलाह सभदिन अपन कौलिके परिवार मे, चूल्हि रखलनि अपन पहिले भनसाघर मे, मुदा अपन रचना-पकवान धरि तैयार कयलनि ओहि प्रकारक, जेना यात्री-राजकमलक भनसाघर मे बनैत छलनि। ई बेसी कठिन आ चुनौतीपूर्ण कार्य छल। खतरनाक सेहो। किसुन एकरा अपना रुचिएँ स्वीकार कयलनि आ तकर अपना भरि नीक जकाँ निर्वाहो कयलनि अपन मर्यादा कें रखैत। ई मर्यादा किसुनक व्यक्तित्व कें दुनू दिस तनने रहलनि, उठौने रहलनि, मुदा हिनक रचना कें दुनू दिस झुका देलकनि। स्वाभाविके छल।'

हिनक गद्य आ कथाक मादे भीमनाथ जी कहैत छथि-'गद्य सेहो ई लिखलनि, ततेक कम नहि लिखलनि, जे लिखलनि से उच्चकोटिक लिखलनि। कथा-साहित्य मे सेहो हिनक योगदान रेखांकन योग्य छनि। जाहि कालखंडक लिखल हिनक कथा छनि, ताहि समयक उच्चकोटिक कथाकारगण मे हिनको गणना होइछ। से उचिते होइछ। पारंपरिक शिल्प मे अधुनातन प्रयोगधर्मिता भरि देब हिनक कथाक विशिष्टता थिक। ई बुझबा मे पंडित छलाह, बुझयबा मे साहित्यिक।'

कथा मे ई शुरूहे सँ आधुनिक सोचक छलाह। हिनक 'कंडोलेन्स' आ 'संस्कारक मोह' बहुप्रशंसित कथा अछि। हिनक शब्दानुशासन कविता-कथा सभ मे झलकैत अछि। हिनक पारंपरिक कविता मे सौंदर्यबोध अछि, तँ नव कविता मे परिस्थितिक तिक्तता अछि। एक वस्तु जे अविरल हिनक कविता सँ निर्गत होइछ से अछि निष्ठा।

किसुन जी नव रचनाकार सभक संग रामानुग्रह झा सन एकनिष्ठ समीक्षक कें सेहो उत्प्रेरित कयलनि। ओ हिनके जकाँ असमय चलि गेलाह। हमर धारणा अछि जे नव कविताक उचित संपोषण नहि भ' सकल। जहिना ई विस्फोट जकाँ आयल छल, एकर स्वाभाविक विकास (Evolution) नहि भ' सकल। मूलधाराक शाखा-प्रशाखा रूप मे आइयो ई पूर्ण प्रस्फुटित नहि भ' सकल। कारण ई पारंपरिक कविताक जड़ताक संग शास्त्रीयता सँ सेहो कटि गेल। किसुनजी सन 'केयरटेकर' क प्रतीक्षा आइयो अछि।

1967 ई. 5-6 फरवरी कें सुपौल मे राष्ट्रिय सार्वजनिक मेलाक तत्त्वावधान मे मैथिली नव कविताक द्विदिवसीय सेमिनार भेल छल। एकर कर्त्ता-धर्त्ता, सर्वेसर्वा

किसुनजी छलाह। एहि मे भाग लेने छलाह राजकमल चौधरी सन विराट, स्वच्छंद अल्पायु साहित्यकार संग प्रो. धीरेंद्र, रमानंद रेणु, जीवकांत, कीर्त्तिनारायण मिश्र आ रवींद्र नाथ ठाकुर। ई आयोजन हिनक साहित्यिक प्रतिभाक संग प्रबंध-कौशलक लैंडमार्क छल। ई अद्भुत ऐतिहासिक आयोजन छल, जकर परिणति 'आखर' (सं. कीर्त्तिनारायण मिश्र आ वीरेंद्र मल्लिक) सन विशुद्ध नवलेखन पत्रिका मे भेल। राजकमलजी हिंदी पत्रिका 'लहर' जकाँ एक टा आत्मीय, घरैया, नवलेखनक पत्रिका 'आखर' मैथिली मे चाहैत छलाह। ओना 'आखर'क प्रकाशन सँ पूर्वे ओ स्वर्गीय भ' गेलाह। ईहो पत्रिका अल्पायु होइतो अपन समयक दस्तावेज अछि। 'आखर' राजकमलक अप्रकाशित उपन्यास 'आंदोलन' कें धारावाहिक रूपें प्रकाशित कयलक। 'राजकमल स्मृति अंक' बहुमूल्य अछि। एहि मे सुपौलक नव कविता सेमिनारक विस्तृत ब्योरा शैलेश कुमार पाठक आ रमानंद रेणु प्रस्तुत कयने छथि। किसुनजीक विस्तृत ऐतिहासिक आलेख अछि, जाहि मे पहिल बेर राजकमलक प्रसारित वा हिंदी-मैथिलीक साहित्यकारक मध्य प्रचलित विभिन्न प्रकारक भ्रांतिक उद्भेदन संग नव कविताक ओहि गोष्ठी मे राजकमल कें पूर्णता मे देखाओल गेल अछि। एहि मे किसुनजी राजकमलक उतेढ़ प्रस्तुत कयने छथि। एहि उतेढ़ मे राजकमलक विद्रोही, स्वेच्छाचारी निरंकुश रूपक संग हुनक संस्कारी आदरभाव सेहो अछि, जे हुनक समृद्ध आ प्रशस्त वंशवृक्षक प्रतीक अछि।

राजकमलक बहुतरास उक्ति अछि, जे एक दिस हुनक जीवन-दर्शन दैत अछि तँ दोसर दिस भरमबैत अछि। किसुनजी हिनक समस्त व्यक्तित्वक 'पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन' दैत छथि। 'मछली मरी हुई' उपन्यास मे राजकमलक जन्म मसूरीक देखाओल अछि। किसुनजी कहैत छथि ने हिनक जन्म मसूरी आ ने हवेली खड़गपुर मे भेल, अपितु रामपुर, सहर्षा मे 13 दिसम्बर 1929 ई. मे भेल। पिताक विषय मे राजकमल 'ढोंगी पंडित'क छवि चित्रित कएने छथि। किसुन जीक शब्द मे-'पिता स्व. मधुसूदन चौधरी गणित आ साहित्यक अधिकारी विद्वान छलथिन। जहिना बिहारी, देव, रत्नाकर, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, निराला, प्रसाद, पंत, महादेवी आ मैथिलीशरण कंठस्थ छलनि, तहिना विद्यापति, गोविंद दास आ कविवर सीताराम झा। जहिना शेक्सपीयर, मिल्टन, शेली, वर्ड्सवर्थ तहिना कालिदास, माघ, भास, भारवि, भवभूति आ जयदेव प्रभृति! ओ 1930-31 मे असहयोग आंदोलनक क्रम मे जहलो गेल छलाह आ शुरू मे कवितो करैत छलाह जे तत्कालीन पत्रिका 'गंगा', 'सुधा' आदि मे प्रकाशितो भेल छल। हिनक सेवानिवृत्ति दीर्घकाल धरि नवादा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयक प्राचार्य सँ भेलाक बाद किछुए दिनक उपरांत 10 जनवरी, 1967 ई. कें मृत्यु भेल छलनि अपन पुत्रक मृत्यु सँ पाँच मास पहिने।'

किसुनजीक तर्क अछि, जे पिताक विकर्षणक कारण छल ज्येष्ठ पुत्र राजकमल

मे उच्च महत्वाकांक्षाक पूर्त्ति नहि हैब। पुत्रक विकर्षणक कारण छल पिताक तीन-तीन बियाह, एगारह पुत्र-पुत्रीक जन्म देब आ अपन असाध्य विद्वताक दाबी। ई प्रसंग तते सर्वविदित आ मार्मिक अछि जे ओ (राजकमल) अपन कुलीनताक विरुद्ध प्रतिमान ठाढ़ करैत छथि। विकर्षणक अंतिम परिणति पुत्रक पिताक संग उग्र बहस, जाहि मे ई पिता केँ मृत्यु उपरांत आगि नहि देबाक बात करैत छथि। आ तहिना पिताक मृत्युक तार भेटियो गेला पर ओ सिमरिया दाह-संस्कार मे नहि पहुँचलाह। ओना घंटो हुनक बाट देखल गेल। कहल जाइछ जे ओ उग्रतारा मंदिर मे निशा-पूजा मे मग्न छलाह। राजकमलक पितामह सेहो संस्कृतक सुविख्यात विद्वान छलाह। किसुनजी राजकमलक साहित्यक स्तरीय हेबाक कारक हुनक वंशवृक्ष केँ मानैत छथि। किसुनजीक राजकमल पर ई संश्लेषणात्मक लेख समग्रता मे हुनक व्यक्ति आ साहित्यक मूल्यांकन करैत अछि। सुपौलक सेमिनार पर शैलेश कुमार पाठक आ रमानंद रेणुक रिपोर्ट सभाक भव्यताक चाक्षुष आ मार्मिक विवरण प्रस्तुत करैछ। पहिल दिन विलियम्स बहु-उद्देशीय विद्यालयक सभा-भवन मे शताधिक उच्च कोटिक बुद्धिजीवी लोकनिक उत्साहवर्द्धक उपस्थिति मे चारि घंटा धरि गोष्ठी चलल, सभापतित्व राजकमल कयलनि। नव कविताक संबंध मे सर्वश्री रामकृष्ण झा 'किसुन', जीवकांत, कीर्त्तिनारायण मिश्र, रमानंद रेणु तथा अनुपस्थित प्रख्यात साहित्यकार सोमदेवक विद्वतापूर्ण निबंध-पाठ भेल। अन्वेषणमूलक गंभीर वक्तव्य राजकमलक। दोसर सत्र साँझ मे तीन-चारि हजार लोकक उपस्थिति मे आगत आ स्थानीय विविध भाषी कवि। तीन घंटाक कविगोष्ठी। दोसर दिन पूर्वाह्न मे पुनः गोष्ठी, सभापतित्व राजकमलक। प्रो. धीरेंद्र, जितेंद्र नारायण झा आ शैलेश कुमार पाठक नव कविता विषयक निबंध पढ़लनि। किसुनजी अनुपस्थित साहित्यकार धूमकेतु आ इलारानी सिंहक निबंध पढ़ि सुनौलनि। पाठक जी हुनका सरल, सहज आ बोहेमियन पौलनि, गाँजा, सिकरेट धुकैत आदि-आदि, मुदा किसुनजीक नजरि सँ बचाक'। अंत मे अध्यक्षपदीय अभिभाषण मे राजकमलजी शब्द आ ओकर अर्थ तथा शब्द-अर्थक प्रयोग पर विद्वतापूर्ण गंभीर वक्तव्य देलनि।

राजकमलजी तुरत्ते लिखल कविताक मंचोपयोगी प्रस्तुति देलनि। प्रत्येक कविताक एक-एक पाँती, एक-एक शब्द एना संयोजित छल, जे बिंब-ग्रहण मे कनिञो असुविधा नहि हो। सरल भाषा, सहज बिंब योजना आ भाव सँ ओत-प्रोत ई पाँती अनुगूँजित होइत रहल—

'अपने आंगन मे ठाढ़ भ' चिकरैत छी अपने नाम अपने गाछीक फूल-पात भ' गेल अछि अनचिन्हार...' एहन विराट छल किसुन जीक द्विदिवसीय गोष्ठीक आयोजन!

हमर स्मृति मे किसुनजी

सुभाष चंद्र यादव

रामकृष्ण झा 'किसुन' हमर गुरु छलाह। जखन हम अठमा किलास मे विलियम्स हाइ स्कूल, सुपौल मे पढ़ैत छलहुँ तँ ओ हिंदी आ संस्कृत पढ़बैत रहथि। ओ देखै मे सिडौल, गोर आ सुंदर छलाह। चेहरा ऊर्जा आ तेज सँ दीप्त। ओ धोती-कुरता पहिरैत छलाह। हुनक सादगी, विद्वता आ ओजस्वी वाणी मन पर आकर्षक छाप छोड़ैत छल।

हुनक कविता संग्रह 'आत्मनेपद' ओही समय छपल छलनि। हम ओ पोथी हुनके सँ क्लास मे लेने रही, से मोन अछि। ओ हमर जीवनक पहिल साहित्यिक घटना छल जे हमरा अज्ञात रूपें साहित्य-सृजन लेल प्रेरित कयलक।

संग्रहक कविता 'कोसीक बाढ़ि' हमर संपूर्ण मनोजगत केँ उद्वेलित केने रहय। कोसीक बाढ़ि हमर अप्पन जीवन-यथार्थ छल।

तकर बाद अनेक बर्ख धरि किसुनजी सँ हमरा कोनो संपर्क नहि रहल। अपन जीवनक उथल-पुथल, घटना-दुर्घटनाक कारणें हम साहित्यो सँ बहुत दूर रही। फेर एक टा आकस्मिक बोध साहित्य-सृजन दिस ल' गेल। तखन हम पटना कॉलेज मे बी.ए. मे पढ़ब आरंभ कयने छलहुँ। मिथिला मिहिर मे किछु रचना प्रकाशित भेल तँ एकदिन किसुनजीक चिट्ठी भेटल। हुनका ज्ञात भ' गेल छलनि जे हम सुपौले दिसका छी। ओ उत्साहवर्द्धन करैत लिखने रहथि जे हम जहिया कहियो ओम्हर आबी तँ हुनका सँ भेंट करियनि।

ओहि समय किसुनजी मैथिली साहित्यक शिखर पर रहथि। मिथिला आ मैथिलीक बहुमुखी विकास लेल चिंतित आ सचेष्ट रहथि। ओ एक टा उन्नत आधुनिक चिन्तनधारा केँ प्रतिष्ठापित करबाक लेल वैचारिक संघर्ष चला रहल छलाह आ तत्संबंधी लेखन मे अत्यधिक सक्रिय छलाह।

हम तँ एकदम नव रही; तें बहुत धखाइत हुनका सँ भेंट केलियनि। हुनका मे

कोनो आडंबर, कोनो गुरुडम नहि छलनि। एक टा सहज, सरल आ स्नेहशील इंसान छलाह। हमर व्यक्तिगत जीवन के जानकारी हुनका द्रवित केलकनि आ हमरा प्रति ओ वात्सल्य भाव सँ भरि गेल छलाह। हुनक विशाल हृदय अगाध प्रेम सँ भरल छलनि। हमरा अपने संतान सन मानैत रहलाह।

ओ पत्रिका निकालबाक नेआर कयने छलाह। हमरा रचना देब' कहलनि। हम कोसीक विभीषिका पर एक टा कथा लिखलहुँ। नाम छल एसकरुआ। कथा साधारण छल। लेकिन ओ राखि लेलनि। दुर्योग एहन जे ओ पत्रिका निकलि नहि सकल। किसुनजी दुखित रहय लगलाह आ अप्रत्याशित रूपें संसार सँ विदा भ' गेलाह।

अनेक साल बाद केदार साहित्य जगत मे सक्रिय भेलाह। पत्रिका प्रकाशनक किसुनजीक इच्छा केँ केदार साकार केलनि। 'संकल्प' नामक पत्रिका प्रकाश मे आयल। 'संकल्प'क तैयारीक क्रम मे केदार केँ हमर ओ कथा भेटलनि जे हम किसुनजी केँ देने रहियनि। कथा पढ़ला पर हमरा लागल एकर पुनर्लेखन करबाक चाही। फलतः ओ नव रूप मे 'परलय' नाम सँ अवतरित भेल। संयोग एहन जे ई कथा सुपौले कथागोष्ठी मे पढ़ल गेल आ केदारे द्वारा संपादित 'संकल्प' मे पहिल बेर प्रकाशित भेल।

कोसीक तांडव, जे किसुनजी केँ एतेक भावोद्वेलित कयने रहनि जे ओ ओहि पर एक टा अत्यंत मार्मिक दीर्घ कविता लिखने छलाह, से अहू कथा मे आयल अछि। किसुनजीक मर्मक प्रवाह हमरा आप्लावित कयने रहल अछि। हुनक संवेदना स्पंदित करैत रहल अछि। हमर मानस मे अंकित हुनक छवि अखनो बहुत साफ आ उज्ज्वल अछि।

हुनक साहित्य मे ध्वनित लोक-प्रेम आ लोक-चिंता मैथिलीक प्राण आ थाती बनल रहत।

व्यक्तित्व मे समाहित कविता

वरुण कुमार तिवारी

सुपौल मे 1967 ई. मे 'मैथिली नव कविता' पर द्विदिवसीय सेमिनार आयोजित छल राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला आ विलियम्स हाइस्कूलक प्रांगण मे, 5 आ 6 फरवरी केँ। आयोजक छलाह मैथिली नव कविताक सूत्रधार एवं सर्जक रामकृष्ण झा किसुन। पटना, दरभंगा, मधुबनी संपूर्ण मिथिला सँ कविगण, विद्वान आलोचक आ पत्रकार आमंत्रित छलाह। पैघ बात ई छल जे उक्त सेमिनार मे मैथिली एवं हिंदीक बहुचर्चित-बहुपठित कवि-कथाकार राजकमल चौधरी आब' बला छलाह। एतेक पैघ आयोजन केँ अपन संगठन-क्षमता, श्रम-शक्ति एवं सारस्वत साधनाक बल पर सुव्यवस्थित रूप मे संचालन एवं सुचारू रूप मे कार्यान्वयन हेतु किसुन जी कतेको मास सँ व्यस्त रहथि। ओ अभ्यागत केँ आनबाक लेल किछु उत्साही कार्यकर्त्ता केँ स्टेशन पठौलनि। सेमिनार स्थल पर समितिक जीप रुकैत अछि आ राजकमल चौधरी जीप सँ उतरैत छथि। किसुनजी स्वागत हेतु लपकि क' हुनका दिस बढ़ैत छथि आ कहैत छथि—हम रामकृष्ण झा किसुन। राजकमल चौधरी कहैत छथि—एकर कोनो आवश्यकता नहि आ हुनक चरण दिस झुकि जाइत छथि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई आयोजन ठाठ सँ संपन्न भेल, जकर संपूर्ण श्रेय किसुनजी केँ जाइत छनि। लोक आश्चर्यचकित रहथि जे पटना, दरभंगा, मधुबनी सँ दूर कोसी अंचलक छोट सन शहर सुपौल मे ओ कार्यक्रम एतेक सफल भ' गेल। कहय नहि पड़त जे मैथिली नव कविता आंदोलनक इतिहास मे उक्त सेमिनारक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। किसुन जी नव कविता आंदोलन हेतु अथक श्रम कयलनि आ तकरा एक लक्ष्य धरि पहुँचयबा मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कयलनि।

ई सर्वज्ञात तथ्य थिक जे हिंदी मे नव कविताक पूर्व छायावादक आगमन भेल जे सूक्ष्म मे निहित स्थूल, धर्म आ दर्शन मे निहित मानव आ मानवताक खोजक एक स्तुत्य प्रयास रहल अछि, जकर प्रौढतम रचना 'कामायनी' थिक। मुदा पाश्चात्य चकचोन्ही सँ प्रभावित बुद्धिजीवी लोकनि एकर गहराइ केँ नहि बुझि एहि पर

पलायनवादी आ अतीन्द्रिय हेबाक आरोप लगा देलनि।

छायावादक महल तँ ढहि गेल मुदा नव महलक लेल नक्शा आ सामग्रीक स्थिति अस्पष्ट छल। तेँ अज्ञेय कहलनि जे हम कतहु पहुँचल नहि छी। हम सभ बाटक अनवेषी थिकहुँ। आ ओहि कालक कविताक लेल 'प्रयोगवाद' नामकरण प्रचलित भ' गेल। फेर अनेक काव्यान्दोलन ठाढ कयल गेल। अन्ततः नव कविता नाम स्वीकृत भेल। नव कविता स्वतंत्रता प्राप्ति सँ आरम्भ होइत ओकर पहिल दशकक, कविता थिक। हिंदी मे अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता आदि नव कविताक श्रेष्ठ कवि छथि। नव कविताक प्रभाव मैथिली मे पड़ब स्वाभाविक छल। किसुन जी मैथिली मे नव कविताक प्रमुख उन्नायक मे सँ एक छथि।

किसुन जी नव कविताक ने केवल सूत्रपात कयलनि अपितु प्रचुर परिमाण मे तकरा रचबो कयलनि, कवि-सम्मेलन सभ मे तकर पाठो कयलनि आ विभिन्न संगोष्ठी मे तकर व्याख्या सेहो कयलनि। किसुन जीक नवकविक रूप मे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्रकृति मे नवीन चेतनाक उद्भास, नव प्रतीक, बिम्ब, नाद योजना आ शब्दक तराश आदि रूप मे अन्यतम थिक। हुनक उमड़ि रहल मेघ छंद, बरिसातक भोर, साँझ आ राति एहने कविता थिक, जाहि मे तप्त धरती केँ शीतल जल मे भिजबाक प्रतीक्षा अछि, भीजल माटिक सोन्हगर गंध अछि, नव उगैत दूभि मे प्राणक स्पन्दन अछि, प्रभात वेलाक बाल-सूर्यक सोनहुला रश्मि आदि प्राकृतिक उपादानक मनोरम चित्र अछि—

बरिसातक भोर / बरिसातक ई जन वरिजना
मेघक करीन मे / बान्हि-बान्हि
बिजरीक डोर

आ

बरिसातक साँझ / फूजल घन कुन्तल अछि
जंगल मे मंगल अछि / कामातुर चंचलाक छन-छन
रस रंगल अछि / बरिसय मधुश्रावणीक मधुरस मन माँझ...

वर्षा रानी / मुक्त कुन्तला / मिलनातुर विरहिनी शकुंतला
पावस प्रियतम (प्रिय दुष्यंतक) संग / मिलि नाचत
आइ ने किन्हु / हृदयक / एतेक दिनुका प्यासल संयम बाँचत

हुनक पीढ़ीक शीतयुद्ध शीर्षक कविता सामान्य जरूरतिक छोट-छीन वस्तुक जोगाड़ मे तीन सय पैंसठि दिन संघर्षरत टूटैत-बिखड़ैत आम आदमीक पीड़ा केँ वाणी द' क' जीवनक व्यापक सत्य केँ उजागर क' दैत अछि—

कहियो जे बड़े उत्साह सँ / गरदनि मे झुलैत छलैक

आइ ओ दुर्वह भार बनि गेलैक अछि / एक सय आठ नहि
तीन सय पैंसठि दानाक माला / एक-एक टा दाना
विषधर साँप थिकैक / जकर विष सौंसे अस्मिता केँ
स्याह क' देलकैक अछि / जकरा धाह सँ खकस्याह भ' गेलैक अछि
एहि पीढ़ीक समस्त आकांक्षा / आशाक सूर्य शिथिल भ' /
करिया समुद्र मे डूबि गेलैक अछि / आ तखन बहरयलैक अछि
एक टा दर्शन / देहक राजनीति / ब्लैकमेलक यंत्र / आत्माक शवयात्रा

किसुन जी अपन कविता मे अपन समयक सत्य आ निम्न मध्यवर्गीय मनुक्खक अभाव, टूटन एवं निराशाक सार्थक अभिव्यक्ति देलनि अछि, राजनीतिक-सामाजिक विद्रूपता आ मूल्यहीनता केँ मार्मिकता सँ रेखांकित कयलनि अछि।

किसुन जी पुरान परंपरा जड़बद्धताक मुखर विरोधी छलाह। परंपराक सड़ल-गलल वस्तु केँ ओ जीवन सँ हटा देबाक पक्षधर छलाह। संस्कृतक पंडित होइतो हुनका मे पुरानक प्रति मोह नहि रहनि। ओ जीवन केँ नव ढंगे देखबाक अभिलाषी रहथि। ओ चाहैत रहथि जे जीवन केँ गतानुगतिकता सँ मुक्ति भेटय आ मनुक्ख नवताक नव वातावरण मे साँस लेअय। ओ अपन कविता पुरानक मृत्यु आ नववर्षक जन्म मे पुरानक मृत्युक घोषणा करैत कहैत छथि—

सुनू सुनू ई सद्यः घोषणा / क' रहल जे निर्भय आ निःसंशय वर्तमान
डेथ कालम लेल एक टा छोट छीन समाचार छोड़ि
मरि गेल घबहा कुकूर जकाँ / क्षण-क्षण आ कण-कण केँ बीति चुकल
झुल-झुल बूढ़ ई अतीत, ई पुरान / काल 'बस'क चक्का तर पिचा क'
छहोछित्त भेल / सरिपहुँ हे मित्र / पुरानक मृत्यु भ' गेल

अपन खुटेसल कविता मे ओ कहैत छथि—

हमरालोकनि बान्हल छी / हमरा सब केँ अतीत हरी मे ठोकने अछि
हजार-हजार वर्ष बितलाक बादो / हमरा सब निरन्तर चलैत
ओहीठाम ठाढ़ छी / हमरालोकनिक अगिला पड़ाव
भरि दिन चललाक बाद / साँझ मे / पुनः ओहीठाम होइत अछि
जत' भोरखन, उठल छलहुँ / कोल्हुक बड़द जकाँ
हमसब समझौता वादी छी / लड़बाक अपेक्षें हमरा सब
बचि जयबाक बाट बनबैत छी / जीवन भरि अतीतक पाउजे करैत छी

ओ मानैत रहथि जे मनुक्ख केँ आगाँ बढ़ैत रहबाक चाही। अतीतक पाउज कयने जीवन मे किछु नव प्राप्त नहि भ' सकैत अछि। ओ प्रत्येक जड़ताक विरुद्ध मानव केँ सचेत करैत छथि, नव ऊर्जा आ नव संकल्प शक्ति प्राप्त करबाक आह्वान करैत छथि।

ओ नवता आ नव जीवन मूल्यक प्रबल पक्षधर छलाह। पुरान परंपराक ओहि पक्षक प्रति ओ कट्टर विरोधी रहथि जे जीवन मे किछु नव जोड़ैत नहि अछि आ तकरा मनुष्य मात्र एहि लेल उघैत रहैए जे ओकर पूर्वज एहिना करैत छलाह। उपादेय आ उपयोगी नहि रहलाक बादहु मनुष्य तकरा अनेरे उघैत रहैत अछि। अपन कविता सभ मे किसुन जी मनुष्यक उज्ज्वल पक्षक समर्थन मे ठाढ़ देखाइत छथि।

ओ मैथिलीक नव कविताक संपादन कयने रहथि। अपन वक्तव्य मे ओ स्पष्टत: कहैत छथि—'अपना कविताक प्रसंग वक्तव्य द' क' कविता कें कोनो कठघरा मे ठाढ़ करब बैलून मे हवा भरब बुझना जाइछ, कविताक विस्तार कें एक टा सीमा मे ठूसि क' मोंकि देब नीक नहि, तें कविता कें कोनो आंदोलन वा कवि-वक्तव्य आधार पर नहि ओकरा कवितहिक आधार पर बुझबाक आग्रह-अनुरोध हम करब।'

फेर ओ कहैत छथि—'सत्य सँ बड़ बेसी आसक्ति अछि तें असत्यहु कें सत्य बना क' लिखैत छी, ई हमर सहज प्रवृत्ति भ' गेल अछि। हम व्यक्तिगत रूप सँ अपना कें अभिव्यक्त करबाक सब सँ उत्तम एवं सुलभ कोटिक आ बेसी सशक्त माध्यम कविता कें बुझैत छी तें कविता हमरा अपना संतुष्टिक सर्वाधिक प्रिय साधन थिक। ओना साहित्य तथा कलाक अन्यान्य विधा सब सँ ई कार्य अवश्य होइत छैक से हमरा मान्य अछि। देश बदलैत छैक, काल बदलैत छैक आ पात्र बदलैत रहैत छैक तें दृष्टिबोध आ तें कविताक बहिरंगक संगहि बहुत दूर धरि अंतरंगो बदलैत छैक। एकरा (कविताक आधुनिकता कें) विवादास्पद बनयबाक प्रवृत्ति कें हम नीक नहि बूझैत छी।'

किसुन जी नवगीत विधा मे सेहो अपन सार्थक योगदान देलनि अछि। नव कविताक शिल्प सँ भिन्न छंद-प्रसंग सँ जुड़ल यथार्थबोधक कविता कें नवगीतक नाम देल गेल। नवताक शुभारंभ छायावादी लोकनि क' देने रहथि। महाप्राण निराला नव कविता जकाँ नवगीतक पहिल उन्नायक रहथि। युवा ठाकुर प्रसाद सिंह संथाल परगनाक एक बहुत पैघ उपेक्षित वर्गक करुणा ल' क' पीढ़ीक दुख-दैन्य आ दलितक नोरक दर्द आ अनुभव समेटि क' बनारस अयलाह। तें जखन हुनक 'बंशी और मादल' छपिक' आयल तँ कथ्य आ शिल्पक नवीनता आ टटकापन कें एक टा पैघ साहित्यिक समूह अनुभव कयलक। आब छोट-छोट छाया-बिम्ब आ शब्द-चित्र मे अनुभवक एक पैघ भाग कें व्यक्त करबाक प्रयास भेल। मैथिली मे सेहो एकर प्रभाव स्वाभाविक छल। मैथिली मे प्रभूत मात्रा मे नवगीत रचल गेल।

किसुनजीक एक राग एक गीतक पंक्ति द्रष्टव्य थिक। एहि मे कवि कें पछिला प्रणय-स्नेहक बात मोन पड़ैत छनि, मुदा ओ आँखि धरि आबि क' रुकि जाइत अछि, स्वर मे उतरि नहि पबैत अछि—

आँखि मूनि छी पड़ल सेज पर, कछमछ करइछ देह

मोन पड़ल अछि सजनी, अहँक पहिला सब प्रणय सिनेह
होइछ आइ सब लोकलाज तजि हमहूँ गाबी गीत
हमर प्राण अछि आतुर बिछुड़ल हमर स्नेह संगीत

किसुन जी जतय प्रीति प्रेमक गीत कें ऐकान्तिक सौन्दर्य सुखक सुकोमल अभिव्यक्ति देलनि ओतहि जीवनक यथार्थबोध सँ अनुप्राणित समयक तपैत एकपेरिया पर चलैत दुखानुभूतिक स्वर सेहो भरलनि अछि, जे युगीन संदर्भक चिन्तनक त्वरा सँ अभिव्यक्त भेलनि अछि।

हिंदी, मैथिली आ संस्कृत भाषा-साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान रामकृष्ण झा किसुन चालीसक दशक सँ लिखब प्रारंभ कयलनि। ओ 1943 मे हस्तलिखित पत्रिका 'सौरभ'क प्रकाशन कयलनि। 1949 ई. मे हुनक पहिल साहित्यिक कृति 'आओ गाएँ' प्रकाशित भेलनि। पुन: 1950 ई. मे दोसर कविता संग्रह 'इन्द्रधनुष' प्रकाशित भेलनि। 'आत्मनेपद' हुनक मैथिली कविताक संग्रह थिक, जकर प्रकाशन 1963 ई. मे भेलनि। मैथिली मे कथा संग्रह स्वयंवर, कविता संग्रह क्रमश: आ निबंधक संग्रह वैचारिकी मैथिली अकादमी, पटना सँ प्रकाशित भेलनि। मैथिलीक नव कविता शीर्षक सँ मैथिलीक सोलह कविक प्रतिनिधि कविताक संकलन सेहो ओ संपादित कयलनि।

त्रिवेणीगंज सँ प्रकाशित पत्रिका 'रश्मि', शिक्षक संघक पत्रिका 'प्राच्यप्रभा' आ 'ईस्टर्न एडुकेसनिस्ट'क संपादक मंडल मे ओ रहथि। ओ 'संकल्प' नाम सँ कथा त्रैमासिक प्रकाशित करय चाहैत रहथि। बहुमुखी प्रतिभाक धनीक किसुन जीक पत्रकारिता सँ अटूट संबंध रहनि। अपना क्षेत्रक ओ वरिष्ठ पत्रकार रहथि आ 1948 सँ जीवन पर्यन्त आर्यावर्त सँ जुड़ल रहथि। ओ पत्रकार संगठन समेत अनेक संस्थाक निर्माण कयलनि।

पुस्तकालय आन्दोलन हुनक जीवनक महत्त्वपूर्ण आयाम छलनि। गाम-गाम मे पुस्तकालय खोलबौलनि, नागरिक लोकनि कें एहि लेल प्रेरित-प्रोत्साहित कयलनि आ सामान्य जनता मे पढ़बाक-लिखबाक प्रति चेतना जागृत करबाक दिशा मे सन्नद्ध रहलाह। ओ 1943 मे श्री मिथिला पुस्तकालयक स्थापना कयलनि, जकर संचालन आरंभ मे स्वयं कयलनि आ बाद मे प्रो. मायानंद मिश्र, मैथिलीक प्रखर आलोचक रामानुग्रह झा आदि करैत रहलाह।

सुपौलक नागरिक जीवन मे हुनक गंभीर हस्तक्षेप रहनि। जाति-पाति आ धर्म सँ ऊपर उठि ओ वंचित आ पिछड़ल लोकक सहायता लेल सदैव अग्रिम पंक्ति मे ठाढ़ रहथि। एहन समर्पित व्यक्तित्व, अवदानी पुरुष, साहित्य आ समाज लेल एकनिष्ठ भावें काज करयबला महामानव कोनो साहित्य मे कम होइत छथि। ओ एक संग अनेक फ्रंट पर सक्रिय रहथि। आइ हुनक स्मरण क' हम स्वयं कें धन्य बुझैत छी।

किसुनजी सँ अंतिम भेंट

रमानाथ मिश्र 'मिहिर'

किसुनजी सँ कोनो रक्तक सम्बन्ध हमरा परिवार केँ नहि। ई बात हम बहुत पाछाँ आबि केँ बुझलियैक। पहिने यैह बुझैत छलियैक जे हमरा परिवार सँ हिनका बड़ पुरान सम्बन्ध छनि। कारण वाल्यावस्थे सँ कहैत छलियनि काका आ ई सम्बोधन सिखौने छलाह काकाजी माने अमरजी।

काका आ किसुनजी केँ भाइ-भाइ चलैत छलनि। काका सेहो बड़का भाइ कहैत छलथिन आ किसुनजी सेहो हिनका बड़का भाइ कहैत छलथिन। नीक जकाँ स्मरण नहि अछि पाँचम वा छठम वर्ग मे पढ़ैत छलहुँ। एक बेर काका केँ पुछलियनि किसुनजी सँ अपना सब केँ केहेन सरोकार अछि। काका कहलनि ई हमर बड़का भाइ थिकाह आ तें अहाँक काका भेलाह। तथापि हमर उत्सुकता शान्त नहि भेल, हम फेर पुछलियनि, अहाँक केहेन भाइ थिकाह अपना परिवार सँ कोन सरोकार छनि? काका कहलनि—ई हमर साहित्यिक भाइ थिकाह सरोकार यैह अछि। आ तखन ई बुझवा मे भेल जे हिनका सँ कोनो रक्तक सम्बन्ध नहि अछि। मुदा रक्तोक सम्बन्ध सँ बेसी आत्मीयताक बोध होइत छल जेना आन गाम सँ कोनो रक्तक सरोकारी अबैत छैक आ धीयापूता केँ अत्यधिक उल्लास ओ आनन्द भ' उठैत छैक तहिना किसुनजीक अयला पर हमरा लोकनि केँ होइत छल आ सनेस मे ओ दैत छलाह नीक बिस्कुट, लताम आ केरा, मुदा बाजारू लड्डू वा सस्तौआ लमनचूस नहि। कियैक तँ किसुनजी प्राकृतिक चिकित्सा पर बेसी विश्वास रखैत छलाह। गौरवर्ण कान्तियुक्त भव्य ललाट, संध्या वन्दन, साफ सुथरा संयमित खान पान, रहन सहन, बाजब भूकब आदि मे काका ओ किसुनजी मे बहुत साम्य भेटैत छल। हम पढ़िते छलहुँ ताही समय मे किसुनजीक एक गोट छोट पुस्तिका हिन्दी मे 'आओ गायें' प्रकाशित भेल छलनि। इन्द्रधनुष नामक पोथी सेहो छपि चुकल छलनि मुदा 'आओ गायें' बालोपयोगी गीतक संग्रह भेलाक कारणें ओहि पोथीक बहुत गीत हमरा गैबा मे नीक लगैत छल—बाल

खोले हुए रोने को घटा आती है। जिगर के दाग को धोने को घटा आती है—ई गीत हम कतेको सांस्कृतिक कार्यक्रमक अवसर पर गाबि केँ पुरस्कृत भेल छलहुँ आ हिनके लोकनिक सत्संगक कारणें साहित्यिक कार्य हमरो जागल। कतेको कवि सम्मेलन मे एक संग मंच पर उपस्थित हैबाक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल छल। ईस्वी तँ नीक जकाँ मोन नहि अछि। प्राय: 1966क बात थिकैक। सुपौल कालेज मे विद्यापति जयन्तीक आयोजन डॉ. श्री बालगोविन्द झा द्वारा कैल छल जाहि मे हमरो जैबाक सुअवसर भेटल छल। दरभंगा सँ एसकरे विदा भेल छलहुँ। अबूह अथाह लगैत छल जे कोना जायब, कोना समय पर घुरि क' ऐब। जैबे काल मानसी स्टेशन पर किसुनजी, मायानन्दजी आ रामानुग्रहजी संग अनायासे भेट भ' गेला पर बड़ आनन्द भेल छल। ई लोकनि बरौनीक विद्यापति जयन्ती सँ घुमल छलाह। जाड़ मासक पछबा रमकैत छलैक। जाड़ खूब होइत छलैक तें स्नान करक पक्ष मे हमहूँ नहि छलहुँ मुदा किसुनजी देखिते कहलनि—बुचकुन! तोहूँ अपन सब समान हमरे बला डिब्बा मे आनि कै राखि दहक। मायानन्द तँ स्नान करबे ने करत तें ओ सब वस्तु देखैत रहतह आ अपना लोकनि चलह गंगा मे स्नान क' चूड़ा दही खा ली। हम मायानन्दजी दिस तकैत किसुनजीक आदेशक पालन करक लेल पाछू लागल विदा भ' गेलहुँ। स्नानोपरान्त धोती खीचि सुखैबाक चिन्ता व्यक्त करिते किसुनजी एक छोर पकड़ि कहलनि दोसर छोर तों पकड़ने रहह आ 'मूस केँ नांगड़ि पिपर के पात' हुनका मुँह सँ बहराइते आगूक आखर हमरा धोती मे झल-झल बसात पड़ैत चूड़ा दहीक दोकान पर अबैत-अबैत धोती सुखा लेलहुँ।

सुपौलक आयोजन राति मे 12 बजे समाप्त भेलैक। 1 बजे हमरा लोकनि भोजन कय विश्राम कर' गेलहुँ। किसुनजी भोरे आबि केँ कहलनि—राति सँ पितिआइन तोरा पर आ हमरा पर बड़ तमसायल छथुन। हमरा गुम्म देखि कहलनि, नहि बुझलहक तोहर भानस राति वैह केने छलथुन आ तकरा बदला मे हमहूँ तोरे लोकनिक संग एहीठाम भोजन क' लेलहुँ तें एखन तोहर आ बुच्चीक भानस गामे पर भ' रहल छह (बुच्ची माने मायानन्दजी)। दुनू गोटे गामे पर भोजन कै जैहह। हम मोने मोन महाग असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। हमर भाव भंगिमा देखि किसुनजी पूर्ण भरोसक संग कहलनि—तों घबराइत कियैक छह? तोरा 8 बजेक गाड़ी नहि छुटतह सैह ने। जाड़क मास। भयानक धोनि लागल छलैक। 9 बजे धरि भगवान सूर्यक दर्शन नहि भ' सकल छल मुदा भात दालि चारि टा तरकारी भोजन करा किसुनजी 8 बजे सुपौल स्टेशन पर पहुँचा देलनि। समयक एतेक पक्का आ दुराग्रहक घोर विरोधी किसुनजी छलाह।

किसुनजी सँ अन्तिम भेंट हमरा भेल 16 नवम्बर 1969 केँ फारबिसगंज मे भारत सरकार द्वारा आयोजित गांधी जन्म शताब्दीक अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन

मे। दरभंगा सँ श्रीसोमदेवजी, बालगोविन्द झा 'व्यथित', भीमनाथ ओ हम गेल छलहुँ। सुपौल सँ किसुनजी आयल छलाह। अध्यक्षता कैने छलाह हिन्दीक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु'। राति मे जखन कवि गोष्ठी समाप्त भेलैक तखन आयोजक श्री गोविन्द शर्मा सँ हम पुछलियनि—दरभंगा जैबाक लेल हमरा गाड़ी कखन भेटत? ओ उत्तर देलनि 12 बजे दिन सँ पहिने कोनो ट्रेन नहि छैक। हम घबरा गेलहुँ।

किसुनजी हमरा उदास देखि कहलनि—तों हमरा संग चलिहह। हम तोरा 5-6 बजे साँझ धरि दरभंगा पहुँचबाक व्यवस्था लगा देबह। किसुनजी जहिना अपने समयक पक्का छलाह तहिना अनको समयक मूल्य बुझैत छलथिन। बाहर जैबाकाल आन-आन आवश्यक वस्तुक संग रेलवे टाइम टेबुल लेब ओ नहि बिसरैत छलाह। रेलवे टाइम टेबुल हुनका संग रहबे करैत छलनि। तैं अपना पूरा विश्वास भ' गेल आ स्वस्थ चित्ते हमरा लोकनि भोजन करक लेल विदा भ' गेलहुँ।

किसुनजी मात्र रसगुल्ला आ दूध लेलनि। केरा ओ अपना संगहि नेने आयल छलाह। हमरा लोकनि रोटी तरकारी खैलहुँ। किसुनजी बलजोरी हमरा पात पर दू टा रसगुल्ला दैत कहलनि तों धीयापूता छह। अस्तु भोजनोपरान्त बसडिपो मे लागल बस मे हमरा लोकनि 1 बजे राति मे जाक' पड़ि रहलहुँ। कारण किसुनजी केँ ई बूझल छलनि जे 3 बजे भोर मे एक टा बस एहिठाम सँ सहरसाक लेल फुजैत छैक आ 10 बजे दिन मे सहरसा पहुँचैत छैक आ तुरत्ते सहरसा मे समस्तीपुरक लेल ट्रेन छैक।

तैं डेरा पर सुतने समय पर निन्न टूटत की नहि, ताहि मे सन्देह। सोमदेवजी, हम, डाक्टरसाहेब माने बालगोविन्द बाबू ओ किसुनजी बसस्टैण्ड पर बहुतरास लागल बस मे तकैत सहरसावला बस मे गेलहुँ! जाही ठाम हाथ दैत छलियैक ताहिठाम लोके केँ सूतल देखैत छलियैक। किछु सीट पर बसक स्टाफ आ किछु पर यात्री। बड़ी काल धरि हथोड़िया देलाक बाद अन्त मे किसुनजी सीटक निचला खाली स्थान पर अपन होलडॉल ओछा देलथिन आ डॉक्टरसाहेबक होलडॉल केँ पौथान मे राखि कहलनि आबह एही ओछौन पर दुनू पित्ती भातिज कोनहुना दू घंटा लोट-पोट क' ली। श्री सोमदेवजी केँ एक झोरा पोथी छलनि जकरा कोरा मे ल'क' एक टा सूतल यात्रीक पौथान मे जाक' गौं सँ बैसि रहलाह आ धीरे-धीरे अपना लात सँ ओकरा माथ केँ ठेलैत-ठेलैत अन्त मे ओकरा उठा अपने फैल सँ पड़ि रहलाह मुदा ओ छल यात्रीजीक बूढ़ बोको। ई बात सोमदेव केँ तखन बुझबाक योग्य भेलनि जखन बोतुआइन गंध लगलनि। मुदा औंघायल लोक केँ बोतुआइन गंध कतीकाल जगा सकैत अछि। जेना-तेना हमरा लोकनि ठीक 10 बजे सहर्षा स्टेशन पर पहुँचलहुँ। गाड़ी सीटी द' चुकल छलैक। टिकट कटैबा मे महाग भीड़ छलैक आ गाड़ी मे सुई

राखक जगह नहि छलैक। किसुनजी खिड़की बाटे ठेलि ठालि क' जेना तेना गाड़ी मे चढ़ा देलनि आ ओतेक भीड़ रहलो पर सुपौल कालेजक मैथिली विभागक प्राध्यापक श्री धीरेन्द्र 'धीर'क द्वारा टिकट कटवा मँगबाक' हमरा दैत कहलनि—नव कविता संग्रह वला पोथी आब जल्दीए तैयार भ' जैतैक आ तकराबाद एक टा पैघ आयोजन करक अछि तैं खबरि देबह तँ अवश्य अबिहह आ भाइ केँ सेहो कहि दिअहुन। गाड़ी फुजि गेलैक। गाड़ीक संग प्लेटफौर्मक अन्तधरि कतेको समाद कहैत किसुनजी अड़ियातैत ऐलाह आ जावतधरि किसुनजी केँ देखि सकलियनि तावतधरि खिड़की बाटे मुड़ी बहार कैने देखैत रहलियनि। की जान' गेलियैक जे किसुनजी सँ ई अन्तिम भेंट थिक।

17 जून 1970 क संध्या मे प्रेस सँ डेरा अबैत छलहुँ। तावत काकाजी केँ गंजी पहिरने हाथ मे आर्यावर्त नेने हमरा डेरा दिस अबैत देखलियनि। साइकिल सँ उतरि पुछलियनि, कोमहर चललियैक अछि? काकाक आँखि सँ दहो बहो नोर बह' लगलनि आ मुँह सँ शब्द नहि बहार भ' सकलनि। सोझाँ मे आर्यावर्तक ओ पृष्ठ उनटाक' राखि देलनि। किसुनजीक फोटोक संग समाचार देखि जेना सौंसे शरीर मे बिजली दौड़ि गेल!

वैदेही : जून 1971

स्मृतिक निष्कंप ज्योति-शिखा

शेफालिका वर्मा

मोनक अव्यक्त कोना मे सुदूर अतीतक स्मृतिक निष्कंप ज्योति शिखा आलोकित भ' उठल। 1958क बात थिक। हमर मैट्रिकक सेंटर सुपौल पड़ल छल। कोनो अज्ञात अदृश्य अभिशापक छाहरि जेना हमर प्रथम साँसक संगे संग हमरा गलबहियाँ देने चलल आबि रहल अछि प्रतिपल। मैट्रिकक परीक्षाक मध्य हम बड़ जोर बीमार पड़ि गेल छलहुँ। 100-101 डिग्री ज्वर मे परीक्षा दैत छलहुँ। फर्स्ट सिटिंग खतम होइत छल तँ एक टा सुइया हमरा पड़ैत छल आ संगे बार्ली आ बिस्कुट। अपन माँ-पापा सँ दूर स्नेहमयी दिदिया (हमर पीसी) हुनके लग रहि परीक्षाक वैकल्यक पूर्णता मे लागल छलहुँ।

सभ केओ जखन चहकैत-चुहकैत अपन-अपन पेपरक बखान करैत छल... रंगबिरंगी मुस्कानक इन्द्रधनुष छिटकैत छल—तखन हमर नियति ओहि कम्पाउण्डरक आगाँ अपन अशक्त बाँहि पसारि दैत छल आ बार्लीक घोंट सँ हमर इच्छा अपन पिआस बुझबैत छल...

हमर दिदियाक घर सँ बौआ काकाक घर (हँ, हमसभ किसुनजी केँ बौआ काका कहैत छलहुँ) लगे छल। ओ सभ दिन साँझ मे आबि हमर हाल-चाल पुछैत छलाह। ओहि दिन समाज अध्ययनक परीक्षा छल। बुखार 102 डिग्री। सभ दिन बेड पर सूतिए केँ परीक्षा दैत छलहुँ। ओहि दिन हम कोना की लिखलहुँ, किछु मोन नहि छल। मुदा मोन बड़ उदास छल...दलान पर बैसल हम चुपचाप-उदास गुमसुम... ज्वर उतरि गेल छल—स्यात ओ परीक्षाक बेर हमरा परिश्रान्ते टा करबा लेल आयल छल आ सत्ते, हमरा परिश्रान्त कय एक टा विजयी योद्धा जकाँ ओ चलि गेल।

'केहेन मोन छह रजनी? की बात अछि—बड़ उदास बड़ गुमसुम छह?' हमर माथ पर स्नेहक निर्झरिणी झहराबैत बौआ काका बजलाह। स्नेहक एहि सांत्वना मे

हम भीजि फूटि पड़लहुँ—हमर रुदन हमर स्वर बनि गेल। वास्तव मे, परीक्षा हम ज्वर मे कोना-कोना देने छलहुँ, आइयो स्मरण होइत सर्वांग सिहरि जाइत अछि। पापाक पत्र पटना सँ आयल छल दिदियाक नाम सँ—रजनी बीमार अछि, एहि बेर परीक्षा छोड़बा दियौक—मुदा दिदियाक जिद्द—मरि जेतैक तँ मरि जेतैक, मुदा परीक्षा हम नहि छोड़ए देबैक। तखन दिदियाक जिद्द हमरा असह्य लगैत छल, मुदा, आइ ओही स्वर्गवासिनी दिदियाक लेल सेहो अपरिमित कृतज्ञता सँ भरल छी, जनिक जिद्दक प्रतिफल आइ हम 'हम' छी। ओहि अस्वस्थावस्था मे बौआ काका आ दिदियाक षडयंत्र सँ हम परीक्षा द' रहल छलहुँ।

'की सोचैत छह? बाजह कनैत किएक छह?'

...'हमर पेपर आजुक नीक नइँ गेल'—रुद्ध स्वरें हम बाजि उठल छलहुँ।

हमर माथ पर हाथ फेरैत बौआ काका बजलाह—'की हेतैक? पेपर नहि नीक गेलैक तँ? हम तोरा आशीर्वाद दैत छिय', तोहर भविष्य बड़ उज्ज्वल छह बड़ उज्ज्वल...।' हम तखन बौआ काकाक आँखि मे नहि ताकि सकलहुँ मुदा हुनक स्वरक एक-एक कम्प सँ बुझाइत छल जेना ओ तममय भविष्यक गर्भ सँ फुटैत आलोक रश्मि देखि रहल होथि।

आ हुनक ओहि दिनक बाजल ओ आशीर्वादी जेना हमरा आइ रजनी सँ 'शेफालिका' बनाय देलक। मैट्रिक मे प्रथम श्रेणी भेटल आ हम कथा कहानीक दुनिया मे आबि अपन अस्तित्व केँ मेटाए स्वयं एक टा अनपढ़ल-अनबुझल कथा बनि गेलहुँ।

जीवनक एक टा उदास दुपहरिया मे मन्द समीरण सन बौआ काकाक पत्र आयल छल ...'संकल्प' लेल रचना पठएबाक हेतु...आ तखन जेना हर्षक नोर रोम रोम सँ छलकि उठल। मानव सभ जगह सँ ख्याति, यश प्रतिष्ठाक पोटरी उठाय अनैत अछि मुदा अपनहि घर मे, अपनहि परिवार मे, ओकर परिचय सभ सँ अन्त मे होइत अछि। तखन बौआ काका ओ पत्र अपन परिवार मे अपन अस्तित्व, अपन परिचय...खुशीक अजस्र बरखा...

मुदा संकल्पक भार अग्रिम पीढ़ी पर सौंपि बौआ काका एहि असार संसार सँ विदा भ' गेलाह! बड़ दिन बाद केदार काननक पत्र आयल... तखन लागल ओ केदार नहि मुदा बौआ काकाक सूक्ष्म अस्तित्वक प्रेरणा छल।

आइ बौआ काका हमरा सभक बीच नहि छथि। श्रद्धा आ विचारणाक कोनो अभीष्ट तर्पण हम कोना दी? हुनक विषय मे हठात् किछु कहि देनाइ लगैत अछि जेना अधर्म होयत। ओ व्यक्ति नहि छलाह, जाति नहि छलाह, एक टा संस्था छलाह।

जाति-पाति, धर्म-अधर्म सँ ऊपर जाहि मे मानवता अपन धर्म खोजैत छल, अपन जाति खोजैत छल। साहित्य चिन्तनक एक टा सम्पूर्ण संभावना, ओकर परिणति, ओकर व्यक्तित्व केँ सदल अपना संगे ल' जाय बला एक टा महान साहित्यकार किसुनजीक संग चलि गेल की? ढेर-ढेर प्रश्नक मौन सिलसिला आइ हमर मोन मस्तिष्क केँ आन्दोलित क' रहल अछि आ हम सही उत्तरक खोज मे छी... विभ्रांत...परिश्रांत...।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

मनुक्ख जीबैत रहैत अछि

पूर्णेन्दु चौधरी

जखन बच्चा रही, पढ़बा-लिखबाक ज्ञान भ' गेल तँ लाल कक्काक लग राखल किताब सभ मे सँ किताब उठाक' ल' जाइ आ पढ़ल करी। कथा वा कविता बुझिऐक अथवा नहि, मुदा पढ़ैत जरूर रही।

एक दिन लाल कका बजाक' एक टा किताब पढ़' लेल देने रहथि। किताबक नाम प्रायः 'आओ गाएँ' छल। लेखकक नाम छलैक—रामकृष्ण झा किसुन। ओहि मे छपल एक टा कविता हमरा बड़ नीक लागल छल। ओकरा हम पूरा रटि लेने रही, मुदा आब सभ टा बिसरा गेल। एक टा पंक्ति एखनो मोन अछि—'माँ तुम बाबूजी से मत कहना, मैं आज न पढ़ने जाऊँगा।' जहिया स्कूल नहि जयबाक मोन होइत छल, बुढ़िया माँ लग बैसिक' ओकर पंक्ति सभ पढ़' लगैत रही।

एक दिन लाल कक्काक नामे एक टा पोस्टकार्ड 'डाकपिन' हमरा हाथ मे देलक। ओहि मे लिखल अक्षर बहुत सुंदर रहैक, लिखनिहार रहथि श्री किसुन। सुन्दर अक्षर देखिक' चिट्ठी पढ़' लागल रही। ओहि मे रहैक जे ओ फल्लाँ गाड़ी सँ विदा हेताह जे एतेक बजे दरभंगा पहुँचत। फल्लाँ ओहिठाम रुकताह। फल्लाँ सँ भेंट करताह। आ फल्लाँ दिन फल्लाँ गाड़ी सँ गाम लेल विदा भ' जयताह। ताहि समय मे चिट्ठी पढ़ि क' हमरा बड़ आश्चर्य लागल छल जे चिट्ठी मे बात तँ किछु नहि छैक तखन ई चिट्ठी किएक लिखलनि अछि। लाल कक्का केँ चिट्ठी दैत काल यैह बात कहने रहियनि। लाल कक्का चिट्ठी पढ़ि क' हँस' लागल छलाह आ हमरा कहने रहथि—'एहि मे बहुत बात छैक, एखन तों नहि बुझबही।' तखन हमरा मोन मे यैह आयल छल जे एहि मे कोनो बाते नहि छैक तखन कोन एहन बात छैक जे हम नहि बुझलिऐक?

किसुनजी दरभंगा मे लाल कक्का सँ जँ भेटो कर' आयल होयथिन तँ से हमरा मोन नहि अछि। जखन हम लिख' लगलहुँ तखन ओ स्वर्गवासी भ' गेल छलाह।

हुनका आ हमरा मे मात्र एक टा लेखक आ पाठकक संबंध रहल। हुनक कोनो रचना जँ हमरा नीको लागल तँ कहियो पत्र नहि लिखलियनि।

किसुनजी, गोविंद बाबू, अमरजी आ शेखरजी समकालीन छलाह। प्राय: लेखनो एके संग आरंभ कयलनि। मिथिला मिहिर प्रकाशनक बाद अमरजी जत' परंपरावादी रहलाह तत' गोविंद बाबू तटस्थ भ' गेलाह। शेखरजी आ किसुनजी नवतावादीक समर्थक भ' गेलाह। किसुनजी लिखैत छथि—देश बदलैत छैक, काल बदलैत छैक आ पात्र बदलैत रहैत छैक तें दृष्टिबोध आ तें कविताक बहिरंगक संगहि अंतरंगो बदलैत छैक।'

ओ नवताक समर्थन मे लिखैत छथि—

'साँझहि सँ बन' लगैत अछि सरिपहुँ भोर
विगत केर अंत थिक नूतन अनूप
पुरानक बाद अबैत अछि नव मंगल रूप
आबि रहल नव शिशुक करैत जाइ स्वागत...'

मुदा, जखन परंपरावादी सभ नवतावादी केँ एकदम अस्वीकार कर' पर तैयार भ' गेलाह तखन किसुनजी लिखने रहथि—

'उखड़ि गेल पुरना से गाछ बिहाड़िये छल जोरगर
उखड़ल अछि तइयो जड़ि छैक लगले
तें पारू कोदाड़ि खूनि दियौक चकरगर केँ चौर
चला कुड़हरि काटू एकर मुसरा
जे हँटय ई ढेंग
जमीन हो साफ।'

अमरजी, गोविंद बाबू, शेखरजी अपन रचना मे अंगरेजी शब्दक प्रयोग नहि करैत छलाह। मुदा, किसुनजी अपन रचना मे अंगरेजी शब्दक प्रयोग करैत छलाह। कखनो व्यंग्य करबाक लेल, कखनो सटीक अभिव्यक्तिक लेल—

प्रियतमे, नहि, नहि
डार्लिंग
... ...
... ...
एप्रोचक डिश मे एटेचमेंटक कप
आ ठंढा सन भेल
अहँक ब्यूटीक चाह अछि

हमरा बुझने किसुनजी मैथिली मे पहिले-पहिल छोटकिनमी कविता लिखने

रहथि। हुनक कय टा छोटकिनमी कविता मिहिर मे छपल रहय। एक टा कविता हमरा एखनो मोन अछि—

अहाँ केँ हमरे सप्पत हमरो बुझल अछि
जे कहियो ई बड़ मीठ लगैत छैक
मुदा ई जिनगी तेहन कसकूट बाटी थिक जे
कतबो ओरिया क' किछु राखू कसाइन होयबे करत

किसुनजी एकबेर सुपौल मे नव कविता पर सेमिनार आयोजित कयने रहथि जे बड़ सफल भेल छल। साहित्य सँ रुचि रखनिहारक बीच ओकर सर्वत्र चर्चा छल। मुदा, परम्परावादी साहित्यकार सभ ओकर सफलताक चर्चा नहि क' यैह चर्चा करैत छलाह जे किसुनजी भसिया गेलाह अछि। एहने लोक केँ उत्तर दैत किसुनजी लिखने रहथि—

जँ क्यो परम्पराक जंगल तोड़ि
नवका फसिल केँ पटबैत अछि
तँ अहाँक माथ मे दर्द कियैक होइछ

वस्तुत: किसुनजी आ शेखरजी भसियायल नहि रहथि। समयक संग चल' वला लोक रहथि। मैथिली साहित्यक विकासक लेल चिन्ता रखैत छलाह। जहिना शेखरजी अग्रज पीढ़ीक सम्मान दैत नवका केँ पीठ ठोकैत छलाह तहिना किसुनो जी करैत छलाह। ओ सहरसा क्षेत्र मे नवका पीढ़ीक साहित्यकार फौज तैयार करबा मे लागल रहलाह।

जँ गोविन्द बाबू, शेखरजी, अमरजी आ किसुनजीक कविता एकसंग राखिक' पढ़ल जाय तँ हमरा बुझने सभ सँ प्रखर कवि किसुनजी रहथि।

मिथिला मिहिरक पाठकक रूप मे हम देखने छी जे सभ सँ सौभाग्यशाली साहित्यकार किसुनजी रहथि जिनक दू टा रचना एकेसंग छपैत छल। एक टा रामकृष्ण झाक नामे दोसर श्री किसुनक नामे।

किसुनजी एक टा कविता राजकमल पर लिखने रहथि। वैह कविता हुनको पर सही बैसैत अछि—

'के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?
ई कथन फूसि थिक
ओ जिबैत अछि जिबैत रहैत अछि.. ...'

आरंभ : 7 (जून, 1995)

बाबूजी

बदरीनाथ झा

बाबूजीक संग बिताओल प्रत्येक क्षण अद्यावधि स्मृतिक आकाश पर टिमटिमाइत रहैत अछि आ ओहि प्रकाशपुंजक सहायता सँ जीवन-पथ पर सतत मार्गदर्शन भेटैत रहैत अछि। हुनक अनुशासन, पैघक प्रति सम्मान, शिक्षाक प्रति समर्पण, ककरो सहायता करबाक तत्परता आ सभ सँ पैघ हुनक जीवन दर्शन अद्‌भुत आ अनुकरणीय छल। हुनक कर्त्तव्यबोध उच्च कोटिक छलनि। बाबूजीक यैह दृष्टिकोण हमरो सभक मस्तिष्क आ हृदय मे एखनो संचरित रहैत अछि।

अनुशासनक अनुपालन मे बाबूजी सदैव तत्पर रहैत छलाह। नित्य भोर मे टहलबाक हुनक आदति छलनि। दोस्त काका (रजनीकांत लाल दास)क संग भोर मे टहलय निकलैत छलाह। एहि काज मे कोनो व्यतिक्रम नहि होनि ताहि लेल सदैव साकांक्ष रहैत छलाह। बरिसातक समय मे रेनकोटक संग छाता ल' क' बहराइत छलाह। टहलिक' अयलाक बाद विद्यालय जयबा सँ पहिने स्नानादि सँ निवृत्त भ' पूजा-पाठ नियमित रूप सँ करैत छलाह। हमरा जेना मोन अछि जे बाबूजी इनार पर स्वयं पानि भरि नहबैत छलाह आ अपन कपड़ा-लत्ता स्वयं साफ करैत छलाह। ओ ककरो पर निर्भर नहि रहैत छलाह। हुनक देखा-देखी आइधरि हमहूँ ओहि आदतिक निर्वाह करैत छी। बाद मे आबि क' छोटा भाइ (हमर ज्येष्ठ भाइ विश्वनाथ झा) बाबूजीक स्नान आ कपड़ा-लत्ता साफ करबा मे मदति करथि।

विद्यालय पहुँचलाक उपरांत हुनक पठन-पाठनक व्यस्त कार्यक्रम शुरू भ' जाइत छलनि। दूपहर मे बाबूजी 'ओवल्टीन' पिबैत छलाह। एक दिन संयोगवश थर्मस घरे पर रहि गेलनि। बाबूजी हमरा बजा क' कहलनि थर्मस घर पर सँ ल' आनह। तखन हम आठम वर्ग मे रही। घर गेलहुँ। माँ केँ कहलियनि आ थर्मस ल' क' अबैत हमरा थोड़ेक विलंब भ' गेल आ एम्हर क्लास शुरू भ' गेल छल। ओ हमरे क्लास मे रहथि। क्लास मे अयबाक हेतु हम आज्ञा मंगलहुँ। मुदा बाबूजी क्लास

अयबाक अनुमति नहि देलनि, कहलनि बाहर मे प्रतीक्षा करू। हम ओवल्टीन बला थर्मस स्टाफरूम मे राखि देल। घंटी बाजल, बाबूजी क्लास सँ बहरयलाह आ हम क्लास मे प्रवेश कयलहुँ। सभ मित्र चकित भ' क' हमरा दिस देखैत रहल मुदा हम बुझैत रही जे चलैत क्लास मे भीतर अयबाक अनुमति नहि देब अनुशासनक एक टा भाग थिक। हुनक अनुशासनक अनेक उदाहरण हमरा स्मृति मे अछि। स्कूल मे कोनो तरहक परीक्षा होइत छल जाहि मे बाबूजी आ दोस्त काका परीक्षा नियंत्रक होइत रहथि। परीक्षा मे चोरि करबाक आ करयबाक प्रचलनक आरंभ भ' गेल छल। छात्रक अभिभावकगण चोरि करेबाक लेल केंद्र पर जुमि जाइत रहथि। बाबूजीक धाक एहन रहनि जे ओ जखने नियंत्रण कक्ष सँ राउण्ड पर बहराथि कि सभ टा अभिभावक दृश्य सँ गायब भ' जाइत रहथि। लगिते नहि छल जे चोरिक उपक्रम मे अपस्याँत पूरा फौज कतय निपत्ता भ' गेल।

बाबूजी स्कूल सँ अयलाक पछाति रातिक भोजन जल्दीए खा लैत छलाह। तकरा बाद नियमित रूप सँ पब्लिक लाइब्रेरी क्लब जाइत छलाह। क्लब मे सुपौलक सम्भ्रांत नागरिकक जुटान होइत छल आ सभ क्यो अपन-अपन रुचिक अनुसार खेल, गपशप, पत्रिका आ समाचार पत्र देख'-सुन' मे व्यस्त भ' जाइत छलाह। ओ आधा-एक घंटा ओतय रहैत छलाह आ फेर आँगन आबि जाइत छलाह।

हम सभ भाइ ओसार पर लालटेन मे पढ़य लेल बैसी। सभक जुटान भेला पर पढ़ाइ सँ बेसी गप-शप मे लागि जाइत रही मुदा से बाबूजीक क्लब गेलाक पश्चात। गपशपक भाँज मे विशेष रूपें छोटाभाइक योगदान आ योजना रहैत छलनि, जाहि मे हमहूँ सभ सम्मिलित भ' जाइत छलहुँ। लालटेन मे हुनक युक्ति एहन रहैत छलनि जे टेमी फक् फक् करैत मिझा जाइ। तकरा बाद माँ केँ सूचित कयल जाइ जे लालटेन मिझा गेल। माँ हमर सभक भोजन बनयबा मे भनसाघर मे व्यस्त रहैत छलि तें लालटेन लेसय मे थोड़ेक विलंब भ' जाइ। हमरा सभ गपशप करबा मे लागि जाइत रही। माँ जखन पुनः लालटेन लेसि देथि तँ गपशप केँ विलंबित ताल मे छोड़ि फेर पढ़ाइ मे लागि जाय। छोटा भाइ पुनः युक्ति लगा क' किछु कालक बाद लालटेन लेसि देबाक प्रस्ताव माँ लग देथि। एहि तरहें चारि सँ पाँच बेर एहन समस्या उत्पन्न कयल जाइत छल तँ माँ हारि क' कहथि जे ठीक छै, आब पढ़ाइ बन्न करू। हमर सभक योजना सफल भ' जाइत छल आ गपशपक प्रवाह अबाधित चलय लागय। एहिना प्रतिदिन होब' लागल तँ एक दिन माँ आजिज होइत बाबूजी लग लालटेनक सभ खेरहा विस्तारपूर्वक कहि देलनि। बाबूजी आशंकित भेलाह जे अवश्ये पढ़ाइ नहि करबाक जतन मे हमसभ संलिप्त छी।

अस्तु एक साँझ बाबूजी रातिक भोजनक पश्चात क्लब लेल विदा भेलाह आ

हमसभ अपन-अपन गप्पक प्रवाह मे बहय लगलहुँ। ओहि ओसार पर एक टा खिड़की छल जे खरिहान मे खुजैत छल। गपशपक क्रम मे भाइसाहेबक (वैद्यनाथ झा) ध्यान खिड़की पर गेलनि। हुनका आभास भेलनि जे क्यो खिड़की लग ठाढ़ छथि। गप्पक प्रवाह मे व्यतिक्रम उत्पन्न करैत ओ हमरा सभ केँ कहलनि जे लगैत अछि खिड़की लग बाबूजी ठाढ़ छथि। सभ क्यो ओम्हरे ताक' लगलहुँ। हठात ओतय किछु मूवमेंट भेल आ बाबूजी हमरा सभ लग उपस्थित भ' गेलाह। आब काटू तँ खून नहि। हमसभ नि:शब्द आ आतंकित छलहुँ। अपराध बोध सँ सभक नजरि धरती मे गड़ल छल। बाबूजी हमरा सभ केँ बुझबैत कहलनि जे अहाँ लोकनि ई नीक काज नहि करैत जाइ छी। पढ़बाक समय मात्र पढ़ाइ पर ध्यान रहबाक चाही। पढ़ाइ छोड़ि गपशप मे रहब तँ जीवन मे की क' सकब? बाबूजीक अनुशासनक डायमेंशन हमसभ जनैत छलहुँ तें बिना किछु कहने फेर ने कहियो लालटेन मिझायल आ ने माँ केँ अपस्याँत होब' पड़लनि। ओही बीच घर मे बिजलीक कनेक्शन सेहो भ' गेल छल तें लालटेनक समस्याक स्थायी निराकरण संभव भ' गेल। एही प्रकरणक पश्चात पढ़ैत-पढ़ैत हमर सभक ध्यान अनायासहि खिड़की दिस चलि जाइत छल।

पढ़ाइ सँ संबंधित एक टा रोचक आ उल्लेखनीय संस्मरण हमरा लेल माइलस्टोन जकाँ अछि। बात 1969क थिक। हम सातम वर्ग मे छलहुँ आ ताहि समय बोर्ड परीक्षा होइत छलैक। बहुत मनोयोग सँ हम परीक्षाक तैयारी कयने छलहुँ आ तकर सुखद परिणाम सेहो प्राप्त भेल छल। परीक्षाफल एतेक नीक भेल छल जे डेरा पर बाबूजी सँ भेंट करय तत्कालीन अनुमंडलीय शिक्षा पदाधिकारी अखौरी वासुदेव नंदन प्रसाद आयल छलाह। बाबूजी केँ बधाइ दैत घोषित कयलनि जे, 'आपके बेटे ने पूरे भागलपुर कमिश्नरी में टॉप किया है और सुपौल का, हम सबका मान बढ़ाया है।' ताहि समय मे सुपौल भागलपुर कमिश्नरीक अंतर्गत छल। खबरि बहुत आनंददायी छल। बाबूजी हमरा बजौलनि आ अखौरी साहेब केँ हम गोड़ लगलियनि आ हमरा ओ बहुत आशीर्वाद देलनि। हमहूँ विस्मित छलहुँ एहि उपलब्धि पर।

हुनका गेलाक बाद बाबूजी हमरा फेर बजौलनि आ हमरा स्वास्थ्यक प्रति साकांक्ष रहबाक निदेश देलनि। हम बहुत दुब्बर-पातर छलहुँ आ यैह बाबूजीक चिंताक विषय छलनि। ओ कहलनि जे अहाँ कतबो बढ़ियाँ रिजल्ट आनब आ स्वास्थ्य नीक नहि रहत तँ सफलता संदिग्ध रहत। बाबूजीक एहि बात सँ हमरा आँखि सँ दहो-बहो नोर खसय लागल। बाबूजी हमरा बुझबैत कहलनि जे हम तँ ने अहाँ केँ डँटलहुँ ने मारलहुँ तँ कनैत कियैक छी? स्वास्थ्यक प्रति लापरवाही ठीक बात नहि। हुनक दृष्टिकोण कतेक स्पष्ट आ समीचीन छलनि जे आइयो ओहि बातक प्रासंगिकता बुझाइत अछि।

बाबूजी शिक्षक आ साहित्यकारक संग पत्रकार सेहो रहथि। ओहि समय मे

बिहारक अखबार आर्यावर्त उच्चकोटिक समाचारपत्र छल। पत्रकारिताक कारणें बहुत लोकक आवाजाही बनल रहैत छल, जाहि मे बरमहल अबैत रहथि पन्ना चाचा। पन्ना लाल दास एक्साइज दारोगा रहथि। गाजाक तस्करी ओहू समय मे होइत रहैक। पन्ना चाचा कोसीक नदीक तट आ अन्यत्र छापामारी करथि आ गाजाक संग तस्कर केँ गिरफ्तार करथि। बाबूजी लग आबि ओ छापामारीक विस्तृत वर्णन करथि। हमहूँ सभ हुनक बहादुरीक खिस्सा सुनी आ ओ सभ समाचार अखबार मे सेहो आबय।

पत्रकारिता सँ सम्बद्ध रहलाक कारणें ललित नारायण मिश्रक कोनो कार्यक्रम एहि परिसर मे प्रस्तावित रहनि तँ तकर पूर्व सूचना बाबूजी केँ आबि जाइत रहनि। एक तँ ललित बाबू केंद्रीय मंत्री आ बाबूजीक संग हुनक व्यक्तिगत संबंध, तें हुनक कार्यक्रम केँ सर्वोच्च प्राथमिकता देल जाइत छल। हुनक एकबेरक सुपौल यात्रा हमरा मोन अछि। दलान पर भोरहि सँ चहल-पहल छल। बाबूजी अपने सँ सभ व्यवस्था नियंत्रित क' रहल छलाह। सहयोग लेल अनेक लोक रहथि। ललित बाबूक आगमन सँ पूर्व सुपौल एसडीओ दलान पर आबि, बाबूजी सँ विचार-विमर्श कयने रहथि। व्यवस्था सँ ओ पूर्ण संतुष्ट रहथि। हमहूँ सभ ललित बाबूक आगमनक प्रतीक्षा अत्यंत उत्सुकताक संग क' रहल छलहुँ, जकर मुख्य कारण दोसर छल। हुनक आगमन हमरा ओतय पहिनो भेल छलनि, जकर आदर-सत्कारक क्षीण स्मृति मस्तिष्क मे अंकित छल।

अपन निर्धारित समय पर ललित बाबूक काफिला दलान पर रुकल। जिलाधिकारी समेत तमाम प्रशासनिक पदाधिकारी आ स्थानीय लोकक भीड़ जमकल छल। दलान पर तोसक-जाजिम आ मारते कुरसी लागल छल। ललित बाबूक स्वागत कयल गेलनि। फेर ओ भीतर अयलाह। बैसार थोड़बे कालक रहनि मुदा व्यवस्थाक तामझाम पूरा छलैक। जलखै आदिक नीक व्यवस्था बाबूजी द्वारा कयल गेल छल। ललित बाबू केँ गुलाब जामुन अत्यंत प्रिय रहनि, तें ओकर समुचित व्यवस्था छलैक। बाबूजीक आग्रह पर ललित बाबू किछु खयलनि आ तुरत्ते जयबाक लेल उद्यत भ' गेलाह। हुनक अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम रहनि। बाबूजी केँ धन्यवाद दैत ललित बाबू विदा भ' गेलाह। आब हमरा सभक प्रसन्नताक उत्कट अभिलाषा फलीभूत बुझना गेल। पुष्ट मिठाइ उगरि गेल रहैक, जे हमसभ भरि मोन खयलहुँ। ललित बाबूक यात्राक प्रयोजन जे होइन, हमरा सभ लेल मिठाइ खयबाक सुअवसरे रहैत छल। जेहन आत्मीयता आ अपनत्वक अनुभूति ललित बाबूक आगमन पर होइत छल, ओहि सद्भावना आ सहृदयता केँ बुझब आजुक परिप्रेक्ष्य मे अकल्पनीय छैक।

बाबूजीक संगठनात्मक क्षमताक परिचय ललित बाबूक संदर्भ मे करब एहिठाम प्रासंगिक होयत। ललित बाबू एक बेर ट्रेन सँ सुपौले आयल छलाह। हुनक अविस्मरणीय स्वागत ओहि बेर भेल छलनि। एहि समारोह केँ मूर्त्त रूप देबा मे

बाबूजीक अप्रतिम योगदान छलनि। लगभग तीन सय विद्यार्थी स्टेशन पर जुटल छल आ समवेत शंखनाद द्वारा पूरा वातावरण गुंजायमान भ' गेल छल। ललित बाबूक भव्य आरती कयल गेलनि। एहन अभूतपूर्व स्वागत सँ ललित बाबू अभिभूत भ' गेल छलाह। ट्रेनक दुनू कात लड़का-लड़की ठाढ़ भ' अनुशासनबद्ध तरीका सँ स्वागतक जे मनोरम दृश्य उपस्थित कयलनि, से ओहि समयक हिसाबें बहुत आगाँक सोच छल आ एहि स्वागतक चर्चा कतेको साल धरि होइत रहल।

सर्वप्रथम कीर्त्तन भवन मे आ बाद मे दलान पर बाबूजी द्वारा स्थापित मिथिला पुस्तकालय केर संचालन नियमित रूप सँ होइत छलैक। बाबूजी चाहैत रहथि जे अध्ययनक प्रति अभिरुचि सभक बीच होइ आ विशेषत: छात्रलोकनि लेल समाचार पत्र आ विभिन्न पत्र-पत्रिका सुगमता सँ उपलब्ध भ' सकय। संगहि समस्त सुपौल आ लगपासक गामक लोक सभ लेल विभिन्न साहित्यिक पठनीय सामग्री सहजता सँ उपलब्ध रहय। पुस्तकालय लेल पैघ सन दरी, जाजिम आ पेट्रोमेक्सक व्यवस्था छलैक। साँझ सँ ल'क' आठ बजे राति धरि पुस्तकालय संचालित होइत छल। एकर सफल संचालन हेतु टोल आ गामक किछु स्वयंसेवक विद्यार्थी सब रहथि जे संपूर्ण मनोयोग सँ एहि पुनीत कार्य मे स्वैच्छिक सहयोग दैत रहथि। प्रतियोगी परीक्षा आ पढ़ाइ-लिखाइ मे पुस्तकालयक सौजन्य सँ जतेक सहयोग उपलब्ध भ' सकैत छल, ताहि मे बाबूजी पाछाँ नहि रहैत छलाह। एहि प्रसंग हुनक एकमात्र उद्देश्य यैह रहैत छलनि जे सुपौल मे अध्ययनक प्रति अभिरुचि आ निर्धन छात्र सभ केँ पठनीय सामग्री उपलब्ध भ' सकय।

हमर सभक उपनयन संस्कार धूमधाम सँ आयोजित भेल छल। मास दिन धरि उत्सवधर्मी रहलहुँ हमसभ। आठ टा बरुआ, पैघ सन मड़बा। पाँच भाइ हमरा सभ आ तीन भाइ पितिऔत। खूब झमटगर भोज-भात चलैत रहल। सभ सँ आनंददायक छल ओहि अवसर पर बिहारक ख्यातिप्राप्त शास्त्रीय गायक पंडित रघु झाक गायन। खरिहान मे व्यवस्था कयल गेल छल। बड़ी राति धरि रघु बाबूक गायन चलैत रहल आ श्रोतागण भाव विभोर भ' हुनका सुनैत रहल।

बाबूजीक साहित्यिक गतिविधि अनवरत चलैत रहैत छलनि। संगहि शिक्षक संघक कार्य-संस्कृति आ गतिविधि मे ओ लागल रहैत छलाह। 'प्राच्यप्रभा' नामक पत्रिका शिक्षक संघ सँ प्रकाशित होइत छल, जकर संपादक मंडल मे बाबूजी छलाह। जमाल रोड, पटना मे शिक्षक संघक कार्यालय भवन मे हुनक पटनाक प्रवास काल बितैत रहनि। हुनका संग बेसी काल हमहीं जाइत रही। विभागीय काजें बाबूजी चलि जाथि तँ हमरा हाथ मे खयबा-पीबा लेल किछु पाइ द' देथि। हुनका बुझल छलनि जे मीठक प्रति हमरा बेसी आकर्षण अछि तें एकसर रहला पर एहि स्वतंत्रताक लाभ हमरा भेटैत छल।

एक टा प्रसंग मोन पड़ैत अछि। पटना जयबाक क्रम मे बरौनी स्टेशन पर ट्रेन बदलल जाइत रहैक। एहि मे बहुत समय लगैत छलैक। भोर होयबा पर छलैक। बाबूजी हमरा मुँह धोइ लेल कहलनि। हम एक टा पुड़िया मे राखल दंतमंजन, जे लालबाबू, हमर काका रामशरण झा प्रयोग करैत रहथि, ताहि सँ दाँत साफ करय लगलहुँ। मंजन हमरा केहनदन लागल। पहिले बेर प्रयोग कयने रही, ओकर गंध आ स्वाद सँ हमरा कै भ' गेल। बाबूजी तुरत दौड़ल अयलाह आ मंजन फेकबौलनि। ओ मंजन गुल छल, जाहि मे खैनीक अंश रहैत छैक। अबैत काल सोझाँ मे वैह मंजन छल, जकरा हम पुड़िया मे राखि लेने रही। अस्तु, बाबूजी हमरा तुरत लड्डू कीनि देलनि, तखन जान मे जान आयल। ओहि दिनक बाद गुल हमेशाक लेल हमरा जीवन सँ गुल भ' गेल।

स्टीमर सँ सेहो कतेक खेप पटना गेलहुँ। पहलेजा घाट, बच्चा बाबूक स्टीमर मोन अछि। बाबूजीक काव्यपाठ आ वार्त्ताक प्रसारण आकाशवाणी, पटना सँ सदति होइत रहनि। आकाशवाणीक स्टूडियो, प्रसारण आ रिर्काडिंगक तकनीक सँ परिचित होइत रहलहुँ। रिजर्व बैंक पहिल बेर हुनके संग गेलहुँ। आकाशवाणी सँ जे चेक भेटैत रहनि, तकर भुगतानक क्रम मे। प्रचंड गरमीक विभीषिका सँ एयर कंडीशन कतेक आफियत दैत छैक, से ताहि बेर बुझलहुँ।

पटना मे बाबूजी आर्यावर्त आ मिथिला मिहिरक कार्यालय अवश्ये जाइत छलाह। प्रेसक कारोबार विस्तारपूर्वक ओहिठाम देखल। इंडियन नेशन प्रेसक नामे प्रसिद्ध एहि एस्टाब्लिशमेंटक बड्ड नाम छलैक। एक बेर सुधांशु शेखर चौधरी जीक संग बाबूजी आ हम डाकबंगला चौराहा पर टहलैत रही। चौधरीजी पान खूब खाथि। ओ बाबूजी केँ कहलथिन, किसुनजी, एक टा बात कहू। हम कतबो पान आ जर्दा खाइत छी, तकर पीक नहि घोंटैत छी। अहाँ कही तँ हम एकर प्रमाण द' सकैत छी। बाबूजी विस्मित होइत हुनका दिस देखलनि। चौधरीजी सड़कक कात मे खखार फेकिक' देखौलथिन, देखियौ उज्जर खखार। जँ पीक भीतर जाइत तँ एकर रंग लाल होइत मुदा उज्जर रंग ई प्रमाणित करैत अछि जे पीक भीतर नहि गेल अछि। हुनक कहबाक अभिप्राय छलनि जे हुनका स्वयं पर कतेक नियंत्रण छनि।

बाबूजी अभिभावक रूप मे सुपौल मे बहुत कड़ाइ करैत रहथिन। सिनेमा आदि तँ कथमपि नहि मुदा बाहर रहला पर बाबूजी बहुत उदार भ' जाइत छलाह। नीक सिनेमा देखौनाइ, रेस्तराँ ल' गेनाइ हुनका लेल एकदम सामान्य छलनि मुदा सुपौल मे किन्हुँ नहि। 1968-69 मे हुनका संग हम पटनाक कॉफी हाउस गेलहुँ, जतय साहित्यकार-पत्रकारक जमघट छलैक। ओहिठाम पहिल बेर डोसा आ बदामक हलुआ हुनके संग खयने छलहुँ। पटनाक पिंटू-होटलक प्रसिद्ध रसगुल्ला सेहो खयने रही। बाबूजी स्वयं मिष्टान्न प्रेमी छलाह आ हमहूँ हुनक अनुसरण करैत रही।

बाबूजीक संगे जहिया-जहिया यात्रा पर रहैत छलहुँ, हमर मिठाइ खेनाइ प्राय: निश्चित रहैत छल।

बाबूजी मैथिलीक नव कविता मे मैथिलीक तत्कालीन प्रमुख कवि लोकनिक कविता संकलित क' प्रकाशित करबाक योजना बनौने छलाह। बाबूजी ओहि समय मे बहुत व्यस्त रहैत छलाह। चयनित कविलोकनिक बायोडाटा लेल गेल रहनि। हमरा मोन अछि जे बायोडाटा मे एक टा कॉलम छलैक विशेष अभिरुचि/व्यसन। ओहि मे भाइजी (मायानंद मिश्र) क अभिरुचि देखि हम आश्चर्यचकित छलहुँ। ओहि कॉलम मे वर्णित छल—आलस्य सेवन। भाइजीक एहि विशेष अभिरुचि जानि हम चकित भ' गेल छलहुँ आ आइयो हुनक व्यसन पर विहुँसि उठैत छी।

ओहि संकलनक प्रकाशन हेतु बाबूजी कागतक व्यवस्था मे व्यग्र छलाह। पटना प्रवासक क्रम मे भागि-दौड़ि क' व्यवस्था कयने रहथि। पुस्तकक प्रूफ देखबा मे सेहो व्यस्त रहैत छलाह। एक मिशनक रूप मे बाबूजी ओहि पर काज क' रहल छलाह। मुदा दुर्भाग्य, हुनका जीबैत ई पोथी, जे मैथिलीक नव कविताक माइलस्टोन थिक, प्रकाशित नहि भ' सकल।

बाबूजीक साहित्यिक गतिविधि बहुआयामी रहनि। कविता, कथा ओ निबंध पर हुनक जोर रहैत छलनि। संगहि संग अन्य साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन मे समर्पित भ' कार्यक्रमक सफल संचालन करैत छलाह। मेला समिति आ विलियम्स स्कूलक प्रांगण मे साहित्यिक सेमिनारक वृहद् आ स्मरणीय आयोजन कयने छलाह। एहि आयोजन मे तत्कालीन मूर्धन्य साहित्यकार लोकनिक जुटान भेल छल, जाहि मे राजकमल चौधरीक उपस्थिति आकर्षणक केंद्र छल। राजकमलक ई अंतिम साहित्यिक आयोजन सिद्ध भेलनि। एहि आयोजनक चारि मासक भीतरे हुनक असामयिक निधन भ' गेलनि। बाबूजी किंकर्त्तव्यविमूढ़ भ' गेल छलाह। भयंकर मानसिक वेदना सँ कतेको दिन बाबूजी व्यथित रहलाह।

बाबूजी नवतूरक साहित्यकार कें बहुत प्रोत्साहित करैत रहलाह आ लेखन दिस प्रवृत्त करबाक हेतु सदैव तत्पर रहैत छलाह।

बाबूजीक संग अनेक बेर राँची जयबाक सुयोग सेहो भेटल। हीनू आ धुर्वाक विद्यापति पर्व समारोह मे ओ सम्मिलित होइत छलाह। घंटो महाकवि विद्यापति पर ओ बजैत छलाह, फेर कवि सम्मेलन हुनके अध्यक्षता मे आयोजित होइत छल। राँचीक साहित्यिक कार्यक्रम मे सम्मिलित होयबाक अतिरिक्त आकर्षण इहो रहैत छलनि जे बहिनदाइ (सुनीता झा) आ ओझाजी (महीनारायण झा) कांके मे रहैत छलाह। ओझाजी मानसिक चिकित्सालय मे सेवारत छलाह। कांके सँ टैक्सी क' बाबूजी हीनू आ धुर्वा जाइत छलाह। हमरा एक टा दृश्य एखनो आह्लादित करैत अछि। ओही दिन हम सभ धुर्वा जाइत छलहुँ। ताहि समय मे ओवर ब्रिज नहि बनल

रहैक। रेलवे क्रॉसिंग लग चेन सँ फाटक बन्न क' देल जाइत छल। हम सभ ट्रेनक प्रतीक्षा करैत रही। तावत अकस्माते बरखा शुरू भ' गेल। आश्चर्य छल जे क्रॉसिंगक जाहि दिस हम सभ रही, ओम्हर एको बुन्न बरखा नहि आ क्रॉसिंगक दोसर दिस खूब बरखा भ' रहल छल। एहन नयनाभिराम दृश्य देखि चकित छलहुँ। बाबूजी हमर मनोदशा देखि कहलनि जे यैह थिक छोटानागपुरक नैसर्गिक छटा। बाबूजी सभ ठामक विशेषता कें बतबैत रहैत छलाह। राँचीक यात्रा हमरा लेल सदैव विशेष रहल। राँचीक प्रसिद्ध साहित्यकार राधाकृष्णजी सँ भेंट होइत छल। पुस्तक भंडार मे उपेंद्र दोषी रहथि, हुनक सान्निध्य-सुख प्राप्त भेल छल। आद्याचरण झाजीक पहिल बेर दर्शन भेल छल। हमरा लेल व्यक्तिगत लाभ ई भेल जे हमर जिद पर बाबूजी हमरा लेल ज्वेलथिप टोपी आ चश्मा फिरायालाल सँ कीनि देने रहथि, जकरा कतेको बर्ख धरि हम जोगा क' रखने छलहुँ।

बाबूजीक संग अलग-अलग समय मे हम कटिहार, दरभंगा, ड्योढ़, खजौली, धनखोरि, फुलपरास, भखराइन, निर्मली आ पटना इत्यादि जगहक परिभ्रमण कयलहुँ। दरभंगा मे अमरजी काका, जिनका संग पत्राचार मे बाबूजी लिखथिन—बड़का भाइ, आ ओ ओहि संबोधन सँ प्रत्युत्तर दैत रहथि। हुनका ओतय रुकल छलहुँ आ हुनक आतिथ्य अविस्मरणीय अछि। आ तहिना जीवकांत काका ओतय खाइत-खाइत अपस्याँत भ' जाइत छलहुँ। मुदा मन मे एहि बातक छाप पड़ि गेल जे मिथिलाक परंपरा आ आगत-स्वागतक की विशिष्टता होइत छैक।

निर्मली आ धनखोरिक खिस्सा सेहो अलगे अछि। बाबूजी संस्कृत टोल पाठशाला धनखोरि सँ अटैच्ड छलाह, कियैक तँ अध्ययन क्रम मे ओहिठाम सँ संबद्ध रहथि। बाबूजीक एक टा मीत ओतय अध्यापक रहथि। हुनका सँ भेंट करय बाबूजी हमरो संग मे ल' गेल छलाह। हमरा स्मरण अछि घोघरडीहा सँ तमौरिया स्टेशन जयबाक छल। बाबूजीक मीत सेहो रहथि। टिकट लेबाक लेल बाबूजी काउंटर दिस जाय लगलाह तँ मीत रोकि लेलथिन। मीतक कहब छलनि जे टिकट लेबाक प्रयोजन नहि छैक कियैक तँ टिकट कलेक्टर हुनक विद्यार्थी छथि आ देखिते गोड़ लगैत छथि। बाबूजी कहलथिन बिना टिकट लेने हम यात्रा किन्हुँ नहि करब। बहुत काल धरि दुनू गोटे मे तर्क-वितर्क होइत रहलनि। अंतत: जीत बाबूजीक भेलनि आ टिकटक संग हमसभ ट्रेन मे सवार भेलहुँ। टिकट कलेक्टर अवश्य हुनका आ बाबूजी कें गोड़ लगलनि।

कटिहार यात्राक क्रम मे हमरा स्मरण अछि जे शिक्षक संघक कोनो बड्ड पैघ आयोजन छलैक। बड्ड भीड़। भोजन कूपन सँ भेटैत छल ओहि सेमिनार मे। दू दिन रुकल छलहुँ ओतय। अनुभव कोष मे बहुत तरहक ज्ञान भेटैत रहल।

1970 मे बाबूजीक पटना यात्रा दू बेर तुरत-तुरत भेल छलनि। पहिल यात्रा

मे हम संग छलहुँ। ओहि समय बहुत तरहक व्यस्तता हुनका रहनि। आकाशवाणी मे काव्यपाठ, प्रेस मे आवश्यक काज। रामधारी सिंह दिनकर सँ सेहो हुनक राजेंद्र नगर स्थित आवास पर जाक' भेंट कयने छलाह। ओहि बीच बाबूजीक मोन खराब भ' गेल छलनि। हुनका पेप्टिक अल्सर रहनि। सुपौलक डॉ. महादेव चंद (पैथोलोजिस्ट) सब्जीबाग मे प्रैक्टिस करैत रहथिन। बाबूजी हुनको सँ अपन बीमारीक संदर्भ मे सभ टा रिपोर्टक संग भेंट कयलनि। डॉक्टर साहेब स्पष्ट कहलथिन जे शल्यक्रियाक अतिरिक्त कोनो रास्ता नहि अछि। तें मन बना लिय' आ आपरेशन करबा लिय'। अहाँक कष्टक निवारण ओहि सँ भ' सकैत अछि। हम सभ टा वार्तालाप सुनैत रहलहुँ आ परिस्थितिक गंभीरता कें बुझलहुँ।

बाबूजी लगभग मन बना लेने छलाह जे आब शल्यक्रिया कराइये लेब। एहि धारणा कें मजगूत करैत सुपौल घुरलाह आ पाइ-कौड़ीक व्यवस्था मे लागि गेलाह। सब व्यवस्था भेलाक उपरांत पटना जयबाक कार्यक्रम तय भ' गेल।

बाबूजी हमरा कहलनि पटना चलबाक लेल मुदा हम हुनका संग ओहि बीच बहुत यात्रा कयने छलहुँ, हम मना क' देलियनि। हुनक ऑपरेशन पटनाक कुर्जी अस्पताल मे होयब निश्चित भेल छल। हुनका संग माँ, लालबाबू आ छोटाभाइ ट्रेन सँ विदा भेलाह। स्टेशन पर पुनः बाबूजी हमरा कहलनि पटना चलब तँ चलू। मुदा कालक ओहि आक्रांत क्षण सँ अनभिज्ञ हम कहलियनि, हम नहि जायब। ट्रेन खुलय सँ पहिने बाबूजी एतबे कहलनि जे दीदी (हमर पीसी) कें दिक् नहि करबै। हमरा कोनो आभास नहि छल जे बाबूजीक सुपौल सँ ई अंतिम यात्रा भ' जेतनि।

ग्रीष्मकालीन समय छलैक आ कलमबाग मे ओहि साल आम खूब भेल छलै। हम सब भाइ छोटका दोल मे आम भरि क' मड़बा पर खाइत छलहुँ। अचानक मोती चाचा (मोती लाल अग्रवाल) अयलाह। हमरा सभ कें आम खाइत देखि पुछलनि, पटना सँ कोनो खबरि अयलह अछि? हम सब निरुत्तर छलहुँ। फोन हमरा ओतय छल नहि आ ने कोनो संवाद पटना सँ भेटल छल। मोती चाचा ई कहैत विदा भ' गेलाह जे काल्हि धरि सब समाचार भेटि जयतह। भाइसाहेब कें किछु संशय भेलनि जे अनायासे मोती चाचा आँगन मे आबि पटनाक समाचार कियैक पुछलनि। मूलतः ओहि साँझ प्रादेशिक समाचार मे बाबूजीक असामयिक निधनक समाचार प्रसारित भेल छल, जकरा सुनि क' मोती चाचा आँगन आयल छलाह।

बाबूजी पता नहि कियैक ओहि बेरक पटना यात्रा मे बारंबार हमरा संग चलबाक लेल कहैत रहलाह आ हम एकदिसाहे मना करैत रहलहुँ। हुनक सभ यात्रा मे हम संग रहैत छलहुँ मुदा हुनक अंतिम महाप्रयाणक यात्रा मे संग नहि भ' सकलहुँ, एकर कचोट एखनो व्यथित करैत रहैत अछि।

यातना-भोगक क्षितिज

केदार कानन

मध्य जूनक प्रचंड रौद सँ धीपल एक टा दिन मोन पड़ैत अछि। दुपहर। रौद अपन पूर्ण यौवन पर छल। गरमी आ धाह सँ मोन आउल-बाउल करैत। घरक एकमात्र पंखा अपन सम्पूर्ण वेग सँ चलैत। मुदा, ओहू मे आफियत नहि। चैन नहि! रौद छल जे मोन सँ उतरैत नहि छल। बेचैनी छल, जे मोन-प्राण कें गछारने छल। संपूर्ण घर शान्त आ भीषण ताप कें भोगैत।

ई दूपहर छल 16 जून, 1970 केर। एहि दुपहर मे सहरसा दिस सँ कोनो गाड़ी आयल छल। एहि गाड़ी सँ ओहि दुपहर वैधव्य-वेश मे हमर मा उतरल छलीह। मा गेल छलीह बाबूजीक संग, आयल छलीह एकसरे। संग मे हमर पित्ती, जेठ भाइ, बहिन-बहिनोइ। मुदा, बाबूजी नहि छलाह!

बाबूजी हमरा सभ कें जीवनक विकट यातना आ दुख भोगबाक लेल एकसरे छोड़ि चलि गेल छलाह। हुनक मृत्यु पटनाक कुर्जी अस्पताल मे 15 जून 1970 कें भ' गेल छलनि। बाँस घाट पर हुनक अरथी राखल गेलनि, फेर ओहि मे आगि लगा देल गेलनि। बाँस घाट पर, ओहि आगि मे—हमर परिवारक सुख-सम्पन्नता, जीवन-भोगक अनेक इच्छा-आकांक्षा, अनेक सपना जरि क' खकसियाह भ' गेल छल। चुटकी भरि सिन्दूर, माक भरि हाथक चूड़ी ओहि आगि मे जरि गेल छल। गंगाक स्वच्छ धार मे फेर सभकिछु विलीन भ' गेलै, समाहित भ' गेलै। गंगाक धार फेर ओहिना निर्मल आ स्वच्छ भ' गेलै। अविराम बहैत मगहिया गंगा।

मुदा, हमर मोन छल जे एहि मृत्यु कें स्वीकारि नहि रहल छल। आँखि छल जे अखनो ओहि रिक्शाक पछोड़ धयने छल, जाहि पर सँ बाबूजीक उतरबाक संभावना बनल छल। मा उतरि गेल छलीह। सभ उतरि गेल छलाह। मुदा, बाबूजी? ओ कतय रहि गेलाह? प्रायः पाछाँ सँ कोनो रिक्शा पर अबैत होथि...। प्रायः बाट मे ककरो सँ गप करय लागल होथि। मुदा, नहि। ई हमर मिथ्या सत्य छल, जकरा हम ओहि

दुपहर मे भरि पांज गसिया केँ पकड़ने छलहुँ। मुदा से नहि भेल। हमर बाँहिक बन्हन ढील भ' गेल छल। हमर मोन, हमर आँखि मे शून्य भरि गेल छल। एहि प्रचंड दुपहर मे, हमरा चारूकात अन्हार पसरि गेल छल। ओहि भयावह अन्हार मे, जेना किछुओ सुझैत नहि हो। क्यो देखाइत नहि हो।

जेना, कोनो भयंकर विस्फोट भेल छलै। ओहि विस्फोटक भयंकरता, ओकर अनुगंज जेना अखनो, आइयो हमर चेतना पर पसरल रहैत अछि। कतहु चलि जाइ, कतबो दूर चलि जाइ ओ स्वर, ओ अनुगूँज हमर पछोड़ धयने सभठाम चलि जाइत अछि। हम एहि विस्फोटक अनुगूंज सँ बचि नहि पबैत छी, किन्हुँ नहि।

एगारह बर्खक हमर चेतना बौक भ' गेल छल। कन्नारोहट, हाहाकार पसरि गेल छल। टोल-मोहल्लाक सभ टा लोक, गाम-समाजक सभ टा लोक। करमान लागल लोक स्तब्ध भेल ठाढ़ छल, कलपैत। सभ एक-दोसरा केँ सम्हारैत, बौंसैत, चुप करबैत, सान्त्वना दैत। हम, माँझ आँगन मे, एतेक लोकक बीच एकसर ठाढ़, ओहि कन्नारोहट मे संग दैत छलहुँ। हमरो भीतर ओहिना हाहाकार भरल छल।

ओहि कन्नारोहट आ हाहाकारक बीच, हम अपन कान्ह पर कोनो स्नेहिल स्पर्शक अनुभव कयलहुँ। चौंकि क' पाछाँ तकलहुँ। गुड्डी छलीह। हमरे समवयस्का, संगी। ओ हमरा अनेक तरहें बुझाबय लागलि। नहि कानबाक लेल अनुरोध करय लागलि। ओ हमरा विगत सँ खींचि वर्तमान मे आनय चाहैत छलि। ओ हमर माथ केँ अपना कान्ह पर ल' लेलक। हमर माथ केँ स्नेहपूर्वक थपकाब' लागलि। हमरा ओकर स्नेह क्षण भरि लेल अपूर्व लागल मुदा भीतर सँ जेना आरो कोंढ़ फाटि गेल... दहो-बहो नोर सँ कानय लगलहुँ...।

घर केँ, घरक सदस्य केँ सामान्य होयबा मे अनेक बर्ख लागि गेल। अनेक-अनेक बर्ख। बात-बात मे, डेग-डेग पर बाबूजी मोन पड़थि। कोना रही, कोना गप करी, कतय जाइ, कतय नहि जाइ, कखन पढ़ी, कखन खाइ, कखन ओछाओन पर जाइ, सभठाम बाबूजीक नियमबद्धता आ अनुशासन मोन रहैत छल, संग रहैत छल। जीवनक तमीज, जे हुनका सँ सिखने छलहुँ, हुनका देखि सिखने छलहुँ—से बड पैघ उपलब्धि आ सम्बल जकाँ बुझाय। हमसभ हुनके देखाओल बाट पर चलबाक प्रयास करी। कतहु हूसि जाइ, कतहु खसि जाइ तँ माक स्नेहातुर विशाल बाँहिक आसरा छल, जे जखन-तखन सम्हारैत रहैत छल।

बाबूजीक ओ खाली पड़ल कोन सभ सँ बेसी कचोटैत छल। उतरबरिया घरक ओ कोन, जतय हुनक टेबुल-कुरसी आ ताहि पर सजाक', क्रम सँ राखल हुनक कागत-पत्तर। ओहि कुरसी-टेबुल लग जाइ तँ लागय जे बाबूजी अखने कतहु गेल छथि, अबिते हेताह। मुदा, ई मोनक भ्रम छल जे ओहि खाली पड़ल कोन लग जयबा

सँ, कोन केँ देखला सँ, मोन मे अनायास उगैत छल।

हम बेसीकाल बाबूजीक पत्र सभ खसयबाक लेल जाइत छलहुँ आ ओतय सँ हुनका नामे आयल पत्र सभ अनैत छलहुँ। मारते रास पत्र हुनका अबैत रहनि। डाकघर मे, एक टा पत्रक खोप हुनका नामक छलनि। आब डाकघर जयबाक बेगरता नहि छल। आब डाकघर जयबाक ओ समय जेना काटने नहि कटय। बड्ड रिक्त लगैत छल ओ समय! ओहि आदति सँ लाचार कतेक दिन हम डाकघर जाइ, पत्रक खोप लग जाइ आ निःशब्द घुरि आबी। आब ओहि खोप पर, बाबूजीक नाम निर्ममताक संग मेटा देल गेल रहनि! जेना काल स्वयं आबि अपन आँगुर सँ नाम केँ मेटा देने होइ आ ओहि पर अनकर, कोनो अपरिचितिक नाम लिखि देने होइ। डाकघरक पोस्टमेन इस्माइल काका हमरा देखथि, जिज्ञासा मे चश्मा तर सँ अपन आँखि उठबथि आ हम उदास भ' जाइ। घुरि आबी चुपचाप।

घर मे राखल छलै 'संकल्प' पत्रिकाक निमित्त दस वा बीस रीम कागतक बंडल। बान्हल-छेकल आ सुरक्षित। बाबूजी ओकरा खोलबो नहि कयने छलाह। प्रायः सोचने हेताह जे पटना सँ ऑपरेशन करबा क' घूरब, तखन कागत खोलब आ पत्रिका मे हाथ लगायब। घर मे, संकल्प कथा-त्रैमासिकक थाकक थाक पोस्टकार्ड, थाकक थाक अन्तर्देशीय या लेटरपैड छपल राखल छल। 'संकल्प' लेल अनेक कथाकारक टटका कथा सुरक्षित राखल छल। फाइल मे बन्न ओहि कथा सभक व्यथा सँ हमरा भीतर टीस उठैत छल। की हेतैक आब एहि कथा सभक? की उपयोग? बाद मे, बहुत बाद मे ओहि पत्रिकाक निमित्त राखल कागतक उपयोग 'मैथिलीक नव कविता'क प्रकाशन मे भेल छल।

बजार मे कोनो सड़कक कात मे अपन रिक्शा ठाढ़ कयने मंगतू भैया भेटैत छल। मंगतू महतो, माने बाबूजीक प्रिय रिक्शाबला! कहियो, भीषण गरमी मे, जखन देह सँ दहो-बहो घाम बहैत छल, मंगतू भैया चुपचाप अपन रिक्शा ठाढ़ क' देअय—'बैसू बौआ। घर पर उतारि दैत छी।' मोन नहि मानय। बैसि तँ जायब मुदा पाइ? कतय सँ देबै पाइ? मुदा मंगतू भैया एक्के ठाम जिद् धयने—'बैसू ने बौआ, चलू।' अछताइत-पछताइत हम बैसि जाइ आ मंगतू भैया बड्ड सिनेह सँ घर पर उतारि देअय। एहन अनेक खेप भ' जाइत छल। मुदा बाद मे, घर मे ज्ञात भेला पर सभ मना कयलनि। आब अपनो खराप लागय। खराप हमरा पहिनो लगैत छल मुदा मंगतू भैयाक सिनेहक खातिर हम बैसि जाइत रही। ओहि रिक्शा सँ, ओहि रिक्शाबला मंगतू महतो सँ बाबूजी केँ अतिरिक्त स्नेह रहनि। ओ कतहु जाइत छलाह तँ पहिने मंगतू भैयाक खोज अवश्ये क' लैत छलाह। तें ई रिक्शा आ मंगतू भैया अप्पन लागय...।

बाबूजीक मृत्युक बाद, शुरू-शुरू मे साँझ हमरा लेल अत्यन्त दुखदायी आ यातनादायक लागय। पहिले साँझ मे बाबूजी फलाहार करैत छलाह! हमरा ओ नियमित रूपें संग मे बैसबथि। से जहिना साँझ होअय, हमर मोन भारी होब' लगैत छल। लागय, जेना कतहु किछु छूटल छैक, कोनो रिक्ति छैक, जे हमरा सँ भरयबला नहि अछि। हम विवश होइ आ कोनो किताब मे आँखि गड़ौने रहि जाइ चुपचाप। साँझ धीरे-धीरे कखन राति मे बदलि जाइ, तकर होश नहि रहय जेना।

बाबूजी मइक अंत मे पटना ऑपरेशन लेल गेल छलाह। अनेक मित्र सँ कर्ज ल' पाइ एकट्ठा कयने छलाह। स्कूल सँ अत्यन्त मामूली आर्थिक सहयोग भेटल रहनि। ओहि समय स्कूल स्थानीय समितिक देखरेख मे चलैत छल। वेतनो पर आफत रहैत छलैक आ सेहो वेतन एक टा परिवार केँ चलयबा लेल अपर्याप्त होइत छल। मुदा, बाबूजी बहुत संयमित जीवन जीबैत छलाह। एहन संयम, एहन नियमितता ठीके दुर्लभ अछि।

जाहि साँझ बाबूजी पटना जाइत छलाह, सुपौलक प्लेटफार्म अभूतपूर्व दृश्य मे जेना बदलि गेल छल। करमान लागल लोक। अनेक शिक्षक, अनेक प्रोफेसर, ओकील, अफसर, व्यवसायी, छात्र, अनेक आत्मीय जन, सम्बन्धी, परिवारक लोक आ तकरा संग-संग अनेक पिछड़ल समुदायक लोक। करमान लागल लोक। सभ बाबूजी सँ भेंट करथि, थोड़ेक काल गप करथि आ बाबूजी हँसि क', सहज भ' क' सभ सँ विदा लैत छलाह।

हम बाबूजी केँ दूर सँ देखैत रहियनि। मोन बेकल भेल रहय। बड्ड कठिनता सँ हुनका लग जा सकल छलहुँ! लग मे जखन गेलहुँ तँ ओ बड्ड आपकता सँ कहलनि—'मोन लगाक' पढ़ब। एम्हर-ओम्हर नहि जायब।' हम चुपचाप सुनलहुँ आ तत्काल कहलियनि—'बाबूजी, हम किछु दिन लेल मलाढ़ जाइ। फेर तुरत चलि अयबै?' बाबूजी आ मा संगहि हँसैत आज्ञा देने रहथि। हम गदगद।

गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ि रहल छल। डिब्बा सभ धीरे-धीरे ससरि रहल छल। बाबूजी खिड़की सँ सभक अभिवादनक जबाव दैत रहलाह आ गाड़ी अपन गति मे आबि गेल।

मलाढ़, हमर जेठ भाइक सासुर। 1969क 9 जून केँ हुनक विवाह भेल छलनि। एहि इलाकाक पहिल आदर्श विवाह। एकहु कैंचा काटर नहि लेल गेल छल। भौजीक मुँह देखाइ सेहो बाबूजी सभ बरिआतीक हाथ मे पहिने द' देने छलाह दू टाका मात्र। क्यो बरियाती एहि सँ बेसी किन्नहु नहि द' सकैत छलाह। अद्‌भुत विवाह छल ओहो। नेना रही आ मलाढ़ सँ अद्‌भुत आकर्षण छल, तें बाबूजी सँ 'अंतिम गप' मलाढ़े जयबाक प्रसंग कयने रही।

ऑपरेशन लेल ओ कुर्जी अस्पताल मे भरती भेल छलाह। अस्पतालक रजिस्टर मे ओ अपन नाम मात्र 'रामकृष्ण' लिखबौने छलाह। ई तथ्य अखनो चकित करैत अछि जे ओ अपन पूरा नाम कियैक नहि लिखबौने छलाह। भ' सकैत अछि, जे ओ ऑपरेशन सँ पूर्व एकहि मनस्थिति मे केन्द्रित रहय चाहैत छलाह। मित्र परिचित आ आन-आन लोक सँ भेंट कयला पर, गप-शप कयला पर प्रायः हुनक आत्मविश्वास आ निर्णयक निश्चितता कमजोर भ' सकैत छलनि। जतेक लोक, ततेक रंगक बात। कुर्जी सँ नीक तँ पी. एम. सी. एच. रहैत, ओतहि कियैक नहि भरती भ' गेलहुँ अथवा एहने तरहक बात हुनका क्षणो भरि लेल भरमा सकैत छलनि। तें चुपचाप ओ भरती भ' गेल रहथि, अपन पूरा नाम नहि लिखबौने रहथि। प्रायः यैह सभ कारण छल जे ओ किछु दिन पूर्व राँची मेडिकल कालेज अस्पताल मे ऑपरेशन लेल एडमिट भेलाक बादो, चुपचाप बिनु ककरो किछु कहने बेड छोड़ि, कांके स्थित बहिनदाय (हमर जेठ बहिन)क डेरा पर आबि गेलाह। फेर ओ नहि-ए गेलाह अस्पताल। जखन कि ओतय हुनक ऑपरेशनक तिथि निश्चित भ' गेल छल, सभ टा तैयारी भ' गेल छल।

हुनका सूइ धरि सँ डर होइत छलनि। ऑपरेशनक कल्पना ओहन रोगी लेल कतेक भयावह भ' सकैत अछि, से सहज अनुमान्य थिक। मुदा, एहि बेर ओ हारि क' पटना लेल विदा भेल रहथि। रोग हुनका भीतर सँ जर्जर क' देने रहनि, बहुत बेचैन रहथि। दर्द सँ, भीषण दर्द सँ ओ छटपटाइत रहैत छलाह। तखन गैस्ट्रिक लेल कोनो एहन प्रभावशाली दबाइयो उपलब्ध नहि छल। पुरान गैस्ट्रिक आब अल्सर भ' गेल रहय, जकर एकमात्र विकल्प ऑपरेशने छल। तें एहि खेप ओ बिना मीन-मेष निकालने विदा भ' गेल रहथि, अपन रोग सँ तंग आबि। रोग हुनका कोनो काज ढंग सँ नहि करय दैत छलनि! ओ एकदम आजिज भ' गेल रहथि।

हुनक ऑपरेशन सफल भेलनि। होश मे अयला पर ओ उपस्थित सभ सँ प्रसन्नतापूर्वक गपशप कयलनि। आनठाम ओ सभ सँ पहिने चिकित्सक केँ सूचित क' दैत छलाह जे हुनका पेनिसिलीन ग्रूपक दबाइ रिएक्ट करैत छनि। मुदा, नहि जानि पटना मे ओ एहन आवश्यक जानकारी चिकित्सक लोकनि केँ कियैक नहि देलनि? आ तकर परिणाम भेल जे हुनका सूइ रिएक्ट क' गेलनि। समय बहुत बीति गेल छल, ओहि रिएक्शन केँ काटबाक तमाम प्रयास असफल भ' गेल, बाबूजी केँ कोनो तरहें बचाओल नहि जा सकल।

ई समय छल, जखन ओ अपन 'फार्म' मे आबि रहल छलाह। अपना केँ मैथिली साहित्यक स्तम्भ जकाँ ठाढ़ क' रहल छलाह। सुपौल सन छोट आ उपेक्षित जगह मे रहि ओ अनेक सृजनात्मक काज क' रहल छलाह। एक टा ओहन साहित्यिक

आ सांस्कृतिक गौरवशाली वातावरणक निर्माण क' रहल छलाह जे अभूतपूर्व छल। ओ महत्त्वपूर्ण संगठन, आन्दोलन आ नवताक व्याख्या केँ अपन सम्पूर्ण ऊर्जा समर्पित क' रहल छलाह। ओ साहित्यकारक निर्माण क' रहल छलाह। ओ साहित्य केँ एक टा नव परिदृश्य, एक टा नव ऊँचाइ, एक टा नव क्षितिज द' रहल छलाह।

मुदा, बहत रास सोचल नहि भ' पबैत छैक। ओ समयक प्रवाह मे कतहु रुकि जाइत छैक, कतहु अटकि जाइत छैक आ मोनक भीतर सोचलाहा ओहि काल-प्रवाह मे सड़ि जाइत छैक। ठीक तहिना, हमरा लगैत रहैत अछि जे बाबूजीक संग भेलनि। ओ अखन बहुत किछु करय चाहैत छलाह मुदा कालक विशाल बाँहि मे, असमय ओ समाहित भ' गेलाह।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक डायरी

केदार कानन

रामकृष्ण झा 'किसुन' नियमित रूप सँ डायरी नहि लिखलनि। जखन ओ राति-दिन कोनो कार्यक्रम, कोनो आंदोलन अथवा कोनो रचनात्मक सृजन मे लागल रहैत छलाह आ जखन हुनक अस्वस्थता बढ़ैत गेलनि तखन ओ आंदोलन, संघटन, कार्यक्रम सँ प्राप्त व्यापक जनानुभव आ व्यक्तिगत अनुभव केँ आ अपन जीवन आ मृत्युक कष्टक यंत्रणा आ तकर अनुभव केँ अपन डायरी मे व्यक्त करब आरंभ कयलनि। मुदा, दुर्भाग्य सँ 1968 आ 1969क ओ डायरी आब उपलब्ध नहि अछि। ई एक टा फराक बात थिक जे एतेक कष्ट मे रहलो पर ओ सतत जागल आ संघर्षशील रहैत छलाह। हुनक अस्वस्थता हुनक कोनो साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम मे बाधा उत्पन्न कइयो क' अवरोध उत्पन्न नहि क' सकल। हुनक कार्यक्रम, हुनक समारोह, हुनक यात्रा कहियो नहि रुकल, नहि थम्हल। इहो एक टा सत्य थिक जे यैह यात्रा हुनक महायात्राक एक टा प्रमुख कारण सेहो बनल।

जे आब उपलब्ध नहि अछि ताहि मे हुनक एक टा सामाजिक उपन्यास 'समाज' सेहो अछि, जे प्राय: डेढ़सय पृष्ठ लिखा गेल छल। हालधरि ओहि उपन्यासक अपूर्ण पांडुलिपि सुरक्षित छल मुदा नहि जानि कतय आ कोना ओ अलोपित भ' गेल। अनेक चेष्टाक उपरान्तो ओ उपलब्ध नहि भ' सकल अछि। सुपौल मे हुनक समाज बहुत पैघ छलनि। कोनो रोक-टोक नहि। कोनो दुराव नहि। किओ छोट-पैघ नहि। एक दृष्टि सँ सभ केँ देखनिहार किसुनजीक ओ समाज 'समाज'क सामाजीकरण क' देलक।

किसुनजीक डायरी सँ हुनक संगठनात्मक क्षमता, हुनक संघर्षशीलताक पता चलैत अछि। मैथिलीक प्रचार-प्रसार आ उत्थान कोना हो, ओ सतत एहि चिन्तना मे रहैत छलाह। अपन प्रारंभिक लेखन-वर्ष मे ओ निरंतर हिंदी मे लिखलनि मुदा जहिया सँ मैथिली मे लिखब आरंभ कयलनि तहिया सँ मैथिलीक प्रति हुनक एकांत सेवा-भावना अद्‌भुत छल। ओना मातृभाषाक संग-संग ओ राष्ट्रभाषाक प्रति सेहो

सम्मानक भावना रखैत छलाह। एहि दृष्टियें जे ओ एक संग अनेक संस्थाक संस्थापक छलाह आ प्रत्येक संस्था दिस सँ वर्ष भरि मे अनेक कार्यक्रम आयोजित करैत छलाह। आ से सफलतापूर्वक सम्पन्न होइत छल। ओहि संस्था सभ मे किछु प्रमुख संस्था छल—भारतीय साहित्यकार संघ, तुलसी स्मारक समिति, नागेश्वर कला मंदिर, श्री मिथिला पुस्तकालय, श्री मैथिली समिति, जिला पत्रकार संघ, अवर प्रमंडलीय पुस्तकालय संघ, विद्युत उपभोक्ता संघ आदि।

किसुनजी जँ निरंतर डायरी लिखितथि तँ ओहि डायरी सँ संपूर्ण पूर्वांचलक मैथिली आंदोलन आ जिला भरिक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनक क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध भ' सकैत छल मुदा से नहि भेल। ई एक टा एहन अलिखित तथ्य अछि जे आब बहुत श्रमसाध्य आ अर्थसाध्य अछि मुदा आवश्यक अछि।

एतय प्रस्तुत अछि किसुनजीक जनवरी 1953 क डायरीक किछु अंश, जाहि मे हुनक व्यक्तित्व आ प्रवृत्तिक किछु अंश उद्घाटित भेल अछि—

3 जनवरी 1953

अष्टम वर्गक उपयुक्त मैथिली पुस्तकक संकलन केँ प्रकाशित करबाक विचार भेल। स्वीकृतिक की प्रणाली छैक, एहि संबंध मे पूछताछ करक चाही। संग्रह करब आरंभ क' देबाक चाही। स्कूलक छात्र सब मे चारित्रिक बलक महत्त्व-ज्ञानार्थ आयोजन करी, से निश्चय कयल आ एकर सूचना एवं परामर्श प्रधानाध्यापक केँ देलियनि।

5 जनवरी

श्री अशांतक पत्र आएल छल। आर्थिक परिस्थितिक कारणें कॉलेज मे रहि क' नहि पढ़ि सकत। बड़ दुख होइछ एहन समाचार सँ। बेचारा प्रतिभाशाली व्यक्ति। सायंकाल लहेरियासरायक श्री सोमदेव जी (कवि) संयोगात सुपौल अयलाह आर भेंट भेल। कनेकाल दरबाजा पर कविगोष्ठी भेल। नीक प्रतिभा छनि। उदार स्वभावक आ महत्वाकांक्षी व्यक्ति। श्री मायानंद आ श्री अमर भाइ केँ पत्र देलियनि हिनके हाथें।

8 जनवरी

26 जनवरी सँ आरंभ होइबला राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक रेडियो मे प्रसार करक हेतु कथोपकथन मे मेलाक सांगोपांग संक्षिप्त विवरण भ' सकय, एहन रचना श्री सुधीर बाबूक आग्रह पर बना क' देलियनि। पेट काल्हुक अपेक्षा आइ अधिक खराब बुझि पड़ल। बलहीन बुझि पड़ैछ मन।

9 जनवरी

काल्हुक अपेक्षा मन आइ अधिक कमजोर रहल। डॉ. लक्ष्मण झाक पठाओल 'मिथिला' आइये प्राप्त भेल। स्कूल मे मैथिली-साहित्य-समितिक साधारण बैसक

भेल जाहि मे निश्चय भेल जे सरस्वती पूजाक अवसर पर सँ मैथिलीक त्रैमासिक हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित हो।

12 जनवरी

आइ श्री जटाशंकर चौधरी, श्री रमेश झा एम.एल.ए. आदि सहरसा सँ हमर भेंट करय आयल छलाह। हुनकालोकनिक इच्छा छनि जे सहरसा जिला मैथिली साहित्य परिषदक संगठनक आयोजन फरवरी मासक 8/9 तारीख केँ कयल जाय, जखन कि सहरसा कॉलेजक निरीक्षण मे कुमार श्री तारानंद सिंहजी आबि रहल छथि। हम पूर्ण सहयोग देबाक वचन देलियनि। विज्ञप्ति लिखि देलियनि आ स्वागत-समितिक हेतु निम्नलिखित नाम देलियनि—श्री तेजनारायण सिंह ठाकुर, श्री कमल नारायण झा, श्री हरिनारायण ठाकुर, श्री लक्ष्मण चौधरी आ श्री रामकृष्ण झा।

13 जनवरी

आइ श्री लखन बाबू, श्री कमलू बाबू, श्री हरिबाबू लोकनि केँ स्वागत समितिक हेतु कहि देलियनि। स्वीकृति सब सँ भेटि गेल। श्री सोमदेवक पत्र आयल अछि डॉ. लक्ष्मण झा द्वारा संपादित 'मिथिला'क बिक्रीक हेतु। विचार कयल अछि जे मिथिलाक किछु प्रति विक्रयार्थ मंगाबी। मैथिली सेवाक इहो माध्यम तँ आवश्यके अछि। आइ श्री लखन बाबू (डॉ. लक्ष्मण झा), श्री राघवाचार्य, श्री अमर, श्री मायानंद, श्री किरण आदि केँ पत्र देलियनि।

24 जनवरी

आइ श्री किरण जीक पत्र आयल सहरसा जिला मैथिली साहित्य परिषदक संबंध मे। स्कूलक बाद सहरसा गेलहुँ। प्रो. श्री जयमंत मिश्र सँ गप्प कयल ओ श्री जटाशंकर चौधरी सँ परिषदक संबंध मे व्यवस्था विषयक परामर्श क' अपील ओ आगामी 1 फरवरी केँ स्वागत समितिक आवश्यक बैसकक हेतु लिखा-पढ़ी कयलहुँ। ओही दिन पत्रकार संघक संगठन सेहो होयत।

1 फरवरी 1953

आइ सहरसा गेलहुँ। प्रेस प्रतिनिधिक बैसक ए.डी.एम.क अध्यक्षता मे भेल, तकरा सँ पूर्व जिला पत्रकार संघक संगठन कयल। उपरांत मैथिली साहित्य परिषदक स्वागत समितिक बैसक श्री तेजनारायण सिंह ठाकुरक अध्यक्षता मे भेल। निश्चित भेल जे 8.3.53 केँ सम्मेलन कयल जाय। सुपौल केँ 300 टाकाक संग्रह करक भार भेटलैक। 1000 टाकाक व्ययक संभावना छैक। पत्रादि देब आरंभ करक चाही। पोस्टर, प्रतिनिधि रसीद, निमंत्रण पत्रादिक ड्राफ्ट बनाक' पठबय पड़त आ पटनाक हेतु पत्र। ई काज परसू धरि क' लेमक चाही।

भाखा : 1989

सुपौल आ किसुनजी

केदार कानन

सुपौलक गौरवशाली साहित्यिक सांस्कृतिक पक्ष पर सोचब आब एक टा स्वप्न जकाँ लगैत अछि। विश्वास नहि होइत अछि जे ई वैह सुपौल थिक, जतय प्राय: प्रत्येक मास किछु ने किछु होइते छल। अपसोच! सुपौलक ओ बितलाहा समय घुरि पबितै!

किसुनजी 1941 सँ सक्रिय सामाजिक साहित्यिक जीवन शुरू कयलनि। शिक्षकक मामूली नोकरी बाद मे भेटि गेल रहनि। परिवार केँ एक टा आर्थिक आधार भेटि गेल छलैक।

एक टा आदर्श शिक्षकक रूप मे किसुनजी सदैव मोन राखल जयताह। समयक महत्त्व, व्यक्तिगत चरित्र आ अनुशासन केँ सर्वाधिक प्रश्रय देब' बला ओहन शिक्षक आब ठीके दुर्लभ अछि। संस्कृत, हिन्दी, मैथिली ई तीनू विषय ओ पढ़बैत छलाह। ओना मूलतः ओ मैथिली शिक्षक छलाह। ताहि समय मे शिक्षक संघ नहि छल। सर्वप्रथम ओ सहरसा जिला मे शिक्षक संघक स्थापनाक दिशा मे प्रयत्नशील भेलाह आ सहरसा जिला माध्यमिक शिक्षक संघक स्थापना मे अपन विशिष्ट योगदान देलनि।

कोसीक हैजा सँ, कालाजार सँ झमारल एहि इलाका मे, जतय लोक कुपोषण आ अनेक बीमारीक शिकार छल, जतय लोक केँ कोनो तरहक सुविधा नहि छलैक, दुनियाक प्रत्येक भाग सँ, ओकर गतिविधि सँ सम्पर्क टूटल छलैक, ओतय किसुनजी अपन सक्रिय गतिविधि सँ, अपन कर्मठता आ सौजन्यता सँ, अपन व्यवहार कुशलता सँ अनेक-अनेक महत्त्वपूर्ण काज कयलनि।

1943 मे मिथिला पुस्तकालयक स्थापना कयलनि। एहि पुस्तकालयक स्थापनाक बाद सम्पूर्ण जिलाक गाम-गाम मे अनेक पुस्तकालय खोलबाक प्रेरणा देलनि। गाम-गाम जाक' एहि दिशा मे काज कयलनि। मैथिलीक अनेक संस्था समितिक स्थापना कयलनि।

हिन्दी मैथिली आ उर्दूक साहित्यकारक बैसार होइत छल—'भारतीय साहित्यकार संघ'क तत्वावधान मे। एहि संघक अध्यक्ष एवं संस्थापक किसनुजी छलाह। अपना संग-संग सुपौलक बुद्धिजीवी वर्ग केँ समेटने 'तुलसी स्मारक समिति', 'श्री मैथिली समिति', 'नागेश्वर कला मंदिर', 'विद्युत उपभोक्ता समिति' आदिक स्थापना एवं ओकर सुचारु संचालन करैत रहलाह। 'नागेश्वर कला मंदिर' सँ अनेक पोथीक प्रकाशन सेहो भेल। प्रेस प्रतिनिधि होयबाक कारणें हुनका अनेक ठाम जयबाक होइत छल, जाइत छलाह आ गाम-गाम मे मैथिलीक विकास लेल, मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल संगठन करैत छलाह, संघर्षशील जुझारु प्रवृत्तिक लोक समूह केँ तैयार करैत छलाह। 'जिला पत्रकार संघ' के स्थापना मे सेहो किसुनजीक योगदान केँ बिसरल नहि जा सकैछ।

सुपौल सन पिछड़ल कोसी पीड़ित इलाका मे रहियो क' 'चेतना', 'कोशी दर्पण' (हिन्दी) आ 'सौरभ' (हस्तलिखित मैथिली पत्रिका) आदिक प्रकाशन कयलनि। 'संकल्प' (मैथिली पत्रिका) लेल प्रतिबद्ध छलाह, अनेक काज एहि दिशा मे करबो कयलनि मुदा, हुनका जीवन मे ओ प्रकाशित नहि भ' सकल। कथा त्रैमासिकक योजना छल 'संकल्प'।

सुपौल मे प्रतिवर्ष कवि सम्मेलन होइत छल। ताहि कवि सम्मेलन आ साहित्यिक गोष्ठी सभ मे मैथिली, हिन्दी, उर्दू आ बांग्लाक कवि लेखक उपस्थित होइत छलाह।

सुपौलक जनता मनोयोगपूर्वक प्रत्येक कार्यक्रम मे उपस्थित भ' क' सभ केँ उत्साहित करैत छल, कार्यक्रम केँ सफल बनबैत छल।

सुपौल मे राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक स्थापना 1951 मे भेल, ई मेला गणतंत्र दिवसक अवसरि पर एक मासक लेल एखनो लगैत अछि। एहि मेलाक उद्देश्य राष्ट्रीय भावनाक अभिवृद्धि आ संपुष्टिक संग-संग सांस्कृतिक विकास करब थिक। एहि मेलाक स्थापना मे किसुनजीक योगदान अविस्मरणीय अछि। ओ यावज्जीवन एहि मेलाक सांस्कृतिक प्रभारी रहलाह। एही मेलाक तत्वावधान मे मैथिलीक ऐतिहासिक नवलेखन सम्मेलन भेल छल। स्मरणीय जे राजकमलक अंतिम साहित्यिक मंच यैह नवलेखन सम्मेलन छल।

सन् 1965-66 क एक टा प्रसंग थिक। सुपौलक मदरसा मे गालिब जयन्तीक आयोजन कयल गेल छल। बाहर सँ अनेक शायर, वक्ता आयल छलाह। किसुनजी सेहो निमंत्रित छलाह, संग मे रामानुग्रह झा रहथि। ओहि ठाम किछु उत्साही मुसलमान युवक किसुनजी सँ गालिब पर किछु बजबाक आग्रह क' देलकनि। रामानुग्रह बाबू गुम्म भ' गेलाह जे आब की होयत? ओ एकाधिक बेर चेष्टो कयलनि जे पंडित जी (किसुनजी) केँ छोड़ि देल जाय मुदा, माइक पर नाम कहि देल गेल रहनि। मुदा,

तावत, किसुनजी उठलाह आ शुद्ध उर्दू मे गालिब पर बाज' लगलाह। उपस्थित समूह मंत्रमुग्ध भ' सुनैत रहल, वाह-वाह करैत रहल। मंच पर उपस्थित वक्ता, शायर चकित विस्मित भेल किसुनजी कें सुनैत रहल।

सुपौलक साहित्य संग जुड़ल एक टा प्रसंग बहुत रोचक अछि। किसुनजीक आयोजकत्व मे एतय एक बेर टिकट पर कवि सम्मेलन भेल। एक तँ कवि सम्मेलन, दोसर टिकट पर। मुदा तैयो लोकक अपूर्व जुटान छल। टिकट सठि गेल मुदा भीड़ ओहिना उमड़ल। एहि सँ सुपौलक लोकक सुसंस्कृत परिष्कृत साहित्यिक रुचिक ज्ञान सहजहि कयल जा सकैत अछि।

संस्कृतक छात्र रहितो किसुनजी अद्‌भुत रूपें प्रगतिशीलताक पक्षधर छलाह। हुनक उदारता, हुनक कर्त्तव्यनिष्ठा, हुनक कर्मठता, घोर परिश्रमी व्यक्तित्व हुनक अनुशासनप्रियता, हुनक संयम आ त्याग सुपौलक लेल, सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक लेल आ मैथिली आन्दोलन लेल स्मरण राखल जायत।

हमरा जहाँधरि मोन अछि, हुनका कखनो बैसल नहि देखलियनि। सतत पढ़ैत अथवा लिखैत अथवा चिन्तन करैत। शान्तिप्रिय किसुनजी जखन आँगन मे रहैत छलाह,सभ गोटे चुप रहैत छल। हुनका कोनो प्रकारक हो-हल्ला पसिन्न नहि रहनि। हम सभ अपन-अपन काज मे शान्तिपूर्वक व्यस्त भ' जाइ। हुनक कागज-पत्तर, टेबुल-कुर्सी कें हम सभ नहि छुबैत रही, अनुशासने एहि तरहक छल। टेबुल पर सैंतल राखल रहैत छल कागज-पत्तर। कलम। अनेक पोथी आ पत्रिका सब। पत्रक फाइल अलग राखल रहैत छल। पत्रक उत्तर ओ पीठ उपारे दैत छलाह। हमरा सभ मे क्यो एक गोटे प्रतिदिन डाकघर जाइ आ हुनका नामे बहुत रास पत्र देखि चकित होइत रही जे कतय सँ एतेक पत्र सभ अबैत छनि। आदि-आदि।

स्थानीय समाजक सभ वर्ग मे किसुनजी समान रूपें लोकप्रिय छलाह। प्रत्येक छोट-पैघ काज मे हिनक उपस्थिति अनिवार्य होइत छलनि। सुपौलक गरीब गुरबा हो वा व्यापारी वर्ग वा प्रशासनिक वर्ग, सभ ठाम अपरिहार्य रूपें हिनका बजाओल जाइनि। ओ सभठाम जाइत छलाह। सभक समस्या सुनैत छलाह, सभक समाधान करैत छलाह।

एक टा विशिष्ट गुण छलनि हुनका मे। ओ कोनो जातिक लोक कें छोट नहि बुझैत छलाह। पंडित होइतो जाति-पाति मे विश्वास नहि करैत छलाह। छोटो वर्गक लोक कें सतत आदरसूचक सम्बोधन आ सम्मान दैत छलाह। यैह कारण थिक जे आइयो पंडितजी, मास्टर साहेब, बौआ आदि अनेक नामधारी व्यक्ति किसुनजी कें एहिठामक साधारण वर्गक लोक मोन राखने अछि।

किसुनजी अनेक साहित्यकारक निर्माण कयलनि। हुनका सभ कें प्रोत्साहित

प्रेरित कयलनि। सुपौल, सहरसा, दरभंगा, पटना, राँची, कलकत्ता आदि सभठामक साहित्यिक गतिविधि मे ओ सक्रिय रहैत छलाह। सक्रिय रहैत छलाह मिथिलाक गाम-गाम मे मैथिली साहित्य आ मिथिलाक प्रगति लेल, विकासक लेल।

उन्नैस सय पैंतालीसे सँ हुनक बीमारी सेहो आरंभ भेल। पहिने क्रॉनिक डिसेंट्री। आयुर्वेदिक चिकित्सा अम्लपित्त आ एलोपैथी हुनका पेप्टिक अल्सर घोषित कयलक। प्राकृतिक चिकित्सा, दुग्ध कल्प आदि करैत रहलाह। होमियोपैथी चिकित्सा डॉ. राधाकृष्ण (प्रसिद्ध व्यंग्यकार) सँ करबैत रहलाह। योग करैत रहलाह। जीवन कें संयम सँ जीबैत रहलाह। बाद मे पाचन क्रिया बहुत कमजोर भ' गेलनि। दूध मात्र पचैत छलनि। तें खाली दूध आ फलक सेवन करैत छलाह।

13 जून 1970 कें पटनाक कुर्जी अस्पताल मे आपरेशन लेल एडमिट भेलाह। आपरेशन सफल भेलनि मुदा आनठाम पहिने कहि दैत छलाह जे पेन्सिलीन ग्रूप रिएक्ट करैत अछि, पटना मे से नहि कहलनि। अपन मूल नाम नहि दर्ज कराय, अस्पतालक रजिस्टर मे मात्र 'रामकृष्ण' दर्ज करौलनि। जीवन मे एक टा सुइयो सँ डरैत छलाह। अकारण नहि थिक जे ओ राँची अस्पताल सँ आपरेशनक डरें घूरि आयल छलाह मुदा अत्यंत बेचैनी आ रोगाधिक्यक कारणें पटनाक कुर्जी अस्पतालक आपरेशन बेड पर, बहुत आत्मबलक संग, निडर भ' क', चुपचाप सूति रहलाह। अन्त मे वैह भेल, पेन्सिलीनक प्रतिक्रिया सँ हुनक मृत्यु मात्र सैंतालीस वर्षक अल्पावधि मे भ' गेलनि।

किसुनजीक मृत्युक बाद ठीके समस्त पूर्वांचलक मैथिली माहित्य, मैथिली आन्दोलन, पुस्तकालय आन्दोलन आदि-आदि अनाथ भ' गेल। आइ किसुनजीक आवश्यकता, किसुनजी सन-मन व्यक्तित्वक आवश्यकता पूर्वांचल कि सम्पूर्ण मिथिला कें अछि। मुदा...मुदा, एक टा प्रश्न बनल अछि, पता नहि, कहिया धरि ई प्रश्न बनल रहत...।

लोकवेद : 1987

पत्राचार आ सुपौलक सेमिनार

केदार कानन

मैथिलीक नव कविताक सेमिनार फरवरी 1967 मे सम्पन्न भेल छल। ई सेमिनार सुपौलक ऐतिहासिक विलियम्स उच्च विद्यालयक प्रांगण मे भेल छल। द्विदिवसीय कार्यक्रम। अस्वस्थ आ अनेक तरहें व्यस्त रहितो रामकृष्ण झा 'किसुन' अगस्त 1966 सँ निरन्तर एहि सेमिनार, नव कविता संकलन आ नव कविताक व्याख्यामूलक निबंध संकलनक विषय मे सोचि रहल छलाह। मैथिली मे ई एक नव घटना घटित भ' रहल छलैक। अद्भुत तँ ई थिक जे यात्रीजी पर्यन्त एहि विषय मे तखन नहि सोचि रहल छलाह, जखन किसुनजीक मानस मे एहि प्रकारक चिन्तन-मनन चलि रहल छलनि।

प्रत्येक साँझ पं. रामानुग्रह झा किसुनजी लग अबैत छलाह। ई हुनक नियमित कार्यक्रम छलनि। नियमित साहित्यिक गोष्ठी। कोनो ने कोनो विषय पर विचार-विमर्श आ बहस। सभक मूल मे मैथिलीक उत्कर्ष, मैथिलीक विकास-भावना। नव कविता सेमिनारक विषय मे जतेक पक्ष छल, सभ पर विचार विमर्श भ' रहल छल। नव कविलोकनि केँ चिह्नित कयल जा रहल छलनि आ सम्पर्क करबाक निर्णय आ तकरा बाद सघन पत्राचार आरंभ कयल जा रहल छल।

23 सितंबर'66क अपन एक पत्र मे किसुनजी जीवकान्तजी केँ लिखलनि-'एम्हर मिहिर मे श्री मायानन्दक आधुनिक कविता पर एक टा निबंध गेलनि अछि। 28.9 केँ रेडियो सँ 'मैथिली कविताक नवीन दिशा' पर हमर वार्त्ता अछि। ओकर विस्तार क' मिहिर मे देबाक विचार अछि। श्री रामानुग्रहक 'बिम्ब' पर निबंध तैयार भ' रहल अछि। नव कविता पर अहूँक एक टा निबंध चाही। प्रत्येक मास एहि तरहक निबंध रहय ई आवश्यक।'

किसुनजी जाहि टीम-भावनाक संग नवता आ ओकर सांगोपांग व्याख्याक संग जुड़ल छलाह से हुनक दूरदृष्टिक प्रमाण थिक। ओ एक्के संग अनेक कवि आ लेखक

केँ एहि विषय मे पत्र द्वारा चरिअबैत रहैत छलाह। किसुनजीक एहि पत्रक उत्तर मे जीवकान्तजी अपन 26 सितंबर'66क पत्र मे लिखलनि—'नव कविताक व्याख्या आ विश्लेषण हेबाक चाही। हमरो विश्वास अछि जे नव कविता आब आत्म-रक्षा आ हीन-भावनाक लहरिं सँ बहार भ' गेल अछि। मुदा ओकर प्रवृत्ति, मूल भावना आ विशेषताक व्याख्या आ मूल्यांकन हैब बाकिए छैक... से आब हेबाक चाही, तकर क्षण आबि गेल छैक। ...नव कविताक विश्लेषण-यज्ञ मे अपने हमरो आह्वान करैत छी, से हमरा नीक लागल अछि। मुदा, एखन हमरा एकदमे फुर्सति नहि अछि। ओना हमर अपन बड्ड सेहन्ता अछि जे गंभीरतापूर्वक नव कविताक विश्लेषण-मूल्यांकन करी ... तें एक टा एहन मुहूर्त्तक प्रतीक्षा मे छी जखन अपन सेहन्ता पूरा क' सकब आ नव कविताक मूल्यांकनक प्रति जे अपन दायित्व अनुभव करैत छी, ताहि सँ मुक्त भ' सकब।'

प्रत्येक साँझ किसुनजीक संग एहि पर अनेक प्रकारक विचार-विमर्श मे पं. रामानुग्रह झा सम्मिलित रहैत छलाह। एहि नव कविता-सम्मेलन पर भेल विमर्शक प्रभाव ग्रहण क' रामानुग्रहजी जीवकान्तजी केँ अपन 29 सितंबर '66क एक पत्र मे लिखैत छथि—'मैथिलीक हेतु नव कविता आ कथा पर किछु आलोचनात्मक कार्य करबाक हेतु प्रयत्नशील छी। श्री किसुनजी सँ ज्ञात भेल जे एहि मे अपनेक सहयोग हमरालोकनि केँ भेटत। हमरालोकनि नव कविताक पक्षधर कविलोकनि सँ (यथा सर्वश्री राजकमल, जे सम्प्रति गामहि छथि तथा सोमदेव, मायानन्द, धीरेन्द्र, बालेश्वर प्रभृति सँ) एतद्विषयक पत्राचार कयने छी आ आशा जे ओहो सब अपन सहयोग देबे करताह। हमरा जनैत नव कविताक एक टा प्रतिनिधि संकलनक बड़ आवश्यकता छैक। ओ जँ नवकविक काव्य-विषयक वक्तव्य सँ युक्त हो, तँ से नीक। कारण जे, अनर्गल आ प्रहेलिकामूलक कविताक दुखद बाढ़ि एतावता नियंत्रित भ' सकैछ। दोसर गप ई जे तथाकथित परम्परावादीक हेतु जे नव युगबोधक समस्या, तकर न्यूनाधिक समाधान आ नव साहित्यक उचित आलोचनाक बाट प्रशस्त भ' सकतैक। आ ई काज अपरम्परावादिये सँ संभव। विशेष योजनाक यथासमय आशा करी, से निवेदन।'

स्मरणीय थिक जे रामानुग्रह जीक ई पहिले पत्र छल जीवकान्तजीक नामे। इहो ध्यान देबाक थिक जे रामानुग्रहजीक सासुर ड्योढ़े छलनि आ सम्बन्धें जीवकान्तजी ससुर सेहो लगैत छलखिन।

28 सितंबर '66क एक पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी केँ लिखैत छथि—'...सुनल अछि जे सुपौल मे नव कविता पर एक टा परिगोष्ठी आयोजित भ' रहल अछि। जँ ई समाचार सत्य, तँ ई अपनेक संयोजन मे हैत, से निर्विवाद...नीक विचार

अछि। नव कविताक शक्ति जे विकेन्द्रित छैक आ नव कविताक विषय मे जे कुहेसावृत्त संस्कार छैक, से सभ दूर भ' सकत। परिगोष्ठीक पूर्ण विवरण जनबाक लेल उत्सुक छी।'

ई 28 सितंबर बला पत्र तावत हुनका नहि भेटल छलनि। एहि बीच 30 सितंबर '66कें एक पत्र मे किसुनजी जीवकान्त जी कें नव कविता सम्बन्धी योजनाक विषय मे लिखलनि—'हमर विचार अछि जे सुपौल मे मैथिलीक नव कविता लिखनिहार कवि लोकनि एक मंच पर समवेत होथि आ एक टा संकलन सवक्तव्य प्रकाशित होमक चाही, जकर योजना बनय, कार्यान्वयन हो। विश्वास अछि, अहूँ एकर आवश्यकताक अनुभव करैत हैब। श्री राजकमल गामहि छथि। कनेको नीक होइतहि हम भेंट करबनि। श्री धूमकेतु, श्री धीरेन्द्र, श्री सोमदेव, श्री रामदेव प्रभृति कें सेहो पत्र देलियनि अछि। श्री रामानुग्रह सँ सेहो चर्चा कैल तँ ओहो सहमत छथि। अहाँक पूर्ण आ सक्रिय सहयोग एहि मे भेटत से स्वाभाविके।'

25 सितंबर 1966क लगपास ओ अपन एक शिक्षक सहयोगी श्री विद्यानन्द प्रसाद सिंहक संग मोटर साइकिल सँ शिक्षक संघक कार्य समितिक बैसक मे सहरसा गेलाह। सहरसा सँ घुरला पर भेलाही मे, जे सुपौलेक एक टा गाम थिक, मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त भ' गेल आ विद्यानन्द बाबूक संगहि किसुनजी सेहो खसि पड़लाह। ठेहुनक हड्डी तँ नहि टूटल रहनि मुदा चोट एतेक गंभीर रहनि जे लगभग एक-डेढ़ मास धरि ओछाइन धयने रहय पड़लनि।

3 अक्तूबर '66क एक पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी कें लिखलनि—'गत 3.9 कें हम लहेरियासराय गेल रही। ओहिठाम सोमदेवक बासा पर प्रो. रामदेव सँ सेहो भेंट भेल। ईहो दुनू लोकनि अहाँक नव कविता सँ सम्बधित वार्त्ता रेडियो पर सुनलनि। दुनू गोटे अहाँवला कार्ड देखौलनि : नव कविताक परिगोष्ठीक विषय मे। ओहि सँ पूर्व सोमदेव हमरा लिखने छलाह, एहि परिगोष्ठीक विषय मे। हम तँ प्रस्तुत छीहे, ओहो लोकनि प्रस्तुत छथि। विस्तृत कार्यक्रमक विवरणक प्रतीक्षा मे छी। वास्तव मे एहन वस्तुक आवश्यकताक अनुभव हमहूँ करैत छलहुँ। अपनेक संयोजनक कष्ट लेल धन्यवाद।... मोटर साइकिल दुर्घटना मे अपनेक कष्टभोगक लेल सहानुभूति अछि, आशा अछि आब स्वस्थ हैब।'

जीवकान्त जीक दू-तीन गोट पत्रक उत्तर दैत किसुनजी 6 अक्टूबर '66 कें लिखलनि—'नव कविताक विश्लेषण-यज्ञ-वस्तुत: ई बड़ उपयुक्त संज्ञा अहाँ अपना पत्र मे देल अछि—हमरा बुझने आब बड़ आवश्यक अछि। एकर अध्वर्यु अहूँ होइ, अहूँ छी, तें एहि लेल पलखति तँ बहार करहि पड़त। ...आब चाही पूर्ण व्याख्या, स्वीकार आ तकर विश्लेषण, संस्थापन-मूल्यांकन। से सब गोटय जाधरि मिलि-

जुलि क' नहि करब ताधरि पथ-प्रशस्ति कोना हैत? हमरा तँ ई पढ़िये क' भरोस भ' गेल जे नव कविताक मूल्यांकनक प्रति अपन दायित्वक अनुभव क' लेने छी। सेहंता पूरा करबाक मुहूर्त्तक प्रतीक्षा अहाँक संगे आब हमरो भ' गेल अछि।'

जीवकान्तजी एहि पत्रक उत्तर दैत अपन 11 अक्तूबर '66क पत्र मे किसुनजी कें लिखैत छथि—'अपनेक योजना आ संकल्प पर विश्वास अछि जे आब परिगोष्ठी भैये क' रहत। एहि मे एक टा विषय-सूची बनबाओल जाय आ विषय सभ कें बाँटि देल जाय अथवा परिचर्चा जकाँ एक टा प्रश्नावली घुरा देल जाय। संगे सभ प्रतिनिधि कविक कम सँ कम तीन-तीन टा कविता ल'क' संकलन कयल जाय, वक्तव्य सहित। ई प्रयास आ ग्रंथ ऐतिहासिक महत्त्वक होयत।'

पुन: 1 नवम्बर '66क पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी कें लिखैत छथि—'...गोष्ठी। कोनो आवश्यक नहि जे गोष्ठी काल्हिए भ' जाय। होअय अवश्य आ होअय नीक जकाँ, ठाठ सँ... भने एहि मे चारि-छौ मास लागि जाय। कर्तृत्वक महत्त्व छैक, दू-चारि मासक कोनो महत्त्व नहि।'

किसुनजी आनो कविलोकनि सँ एहि प्रसंग निरन्तर पत्र द्वारा सम्पर्क क' रहल छलाह। एहि प्रसंग धूमकेतु जी अपन 7 अक्तूबर '66क पत्र मे किसुनजी कें लिखलनि—'आयोजनक विचार हमरा बड्ड पसिन्न पड़ल। समय नवम्बरे नीक। जाड़-ठाड़ सेहो ने आ सभ कें छुटियो। जनवरी त हमरा अनुकूल नहि हयत। कार्यक्रमक विषय मे, कनेक विस्तार सँ जान' चाहैत छी। हमर कोन तरहक 'सक्रियता' सँ अपने कें सन्तोष हयत? डाकक मार्फत आगू गप्प चालू राखल जाय।'

सोमदेव जी अपन 5 अक्तूबर '66क पत्र मे किसुनजी कें पत्रोत्तर दैत लिखलनि—'मैथिली कविताक नव दिशा सम्बद्ध कोनो तरहक सम्मेलन मे हमर सभ तरहक सहयोग (जौं एकर अर्थ उपयोग नहि हो!) सर्वदा अपनेक चरण तल मे प्रस्तुत रहत। समय निश्चित क' शीघ्र सूचित करू। रूपरेखा पठाउ।

राजकमल, धीरेन्द्र, हंसराज, ताराकान्त प्रकाश, बालेश्वर, धूमकेतु, अणु (बहेड़ा), रामानन्द रेणु, जीवकान्त, मायानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामदेव झा आर किछु नव नाम कें सूचना अवश्य पठा देल जाओ। आर विवरण पठाउ, तखन हम अपन आर विचार देब। मुदा, कोनो तरहक सम्मेलन पूर्ण प्रतिनिधि सम्मेलन हो आधुनिक मैथिली कविताक।'

नवकविक रूप मे अनेक कविक नामावली किसुनजी लग अबैत छलनि। ओ प्रत्येक नाम पर गंभीरतापूर्वक सोचैत छलाह, आत्ममंथन करैत छलाह। मुदा अंतिम निर्णय ओ अपन विवेक सँ कयलनि। ओहि संकलित कवि मे सँ बाद मे जा कए अनेक कवि अपन दिशा बदलि लेलनि, ई अलग बात थिक।

मोटर साइकिल दुर्घटनाक समाचार जखन सोमदेवजी केँ भेटलनि तँ ओ 16 नवम्बर '66 केँ एक पत्र किसुनजी केँ पठौलनि—'अपनेक समाचार सुनि दुख भेल, कोनो आश्चर्य नहि—कारण आधुनिक कविताक उपासक मोटर साइकिल सँ नहि टकराओत तँ कि बैलगाड़ी सँ ओझराओत?

जहिया अपने सम्मेलन करी, हम तत्पर रहब। मात्र 25 दिन पूर्व सूचित क' देब, जाहि सँ किछु लिखि सकी।'

एहि तरहें किसुनजी सभतरि पत्राचार करैत रहलाह आ आयोजनक तैयारी मे निरन्तर व्यस्त रहलाह। अपन 14 जनवरी '67क पत्र मे कार्यक्रमक सूचना अन्य अनेक कविक संग जीवकान्तजी केँ सेहो पठौलनि—'कार्यक्रमक सूचना जा रहल अछि। अपन विचार लिखी से अनुरोध। निबंधक विषय-सूची पठा रहल छी—मैथिली नव कविताक उद्भव ओ विकास, नव कविताक परिवेश आ युगबोध, नवकविक सामाजिक दायित्व, नव कविता मे चित्रित मनुष्य, नव कविता मे बिम्ब-विधान, नव कविता मे प्रतीक विधान, नव कविता मे सौन्दर्य-बोध, परम्परा आ प्रयोग, नव कविता पर पाश्चात्य प्रभाव, नव कविता मे प्रकृति-चित्रण, नव कविता मे प्रणय-चित्रण, नव कविता मे भाषा आ शब्दप्रयोग, नव कविता मे पछिला पीढ़ीक योगदान, नव कविताक साधारणीकरण, रसवाद, नव कविताक मूल्यांकनक समस्या, नव कविताक वर्तमान आ भविष्य आदि-आदि। एहने विषय पर निबंध अपेक्षित अछि।

सर्वश्री यात्री, राजकमल, मायानन्द, अहाँ, धूमकेतु, धीरेन्द्र, रामदेव, सोमदेव, हंसराज, रवीन्द्रनाथ, मधुकर गंगाधर, कीर्त्तिनारायण मिश्र, बालेश्वर, ताराकान्त प्रकाश, श्रीकान्त मिश्र, रमानन्द रेणु, मार्कण्डेय प्रवासी, रघुपति राघव केँ पत्र द' रहल छियनि। जँ कोनो नाम छूटि गेल हो तँ से लिखी। आरो जे विचार-सुझाव एहि प्रसंग हो शीघ्र लिखू।'

एहि कार्यक्रमक आमंत्रण-पत्र एहि तरहें छल—'राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समितिक तत्वावधान मे ओकर सांस्कृतिक उपसमितिक आयोजनानुसार दिनांक 5.2.67, रवि केँ मैथिली कवि-सम्मेलन तथा 6.2.67, सोम केँ सर्वभाषा कवि-सम्मेलनक आयोजन अछि। विनीत निवेदन जे एहि मे सम्मिलित भ' एहि राष्ट्रीय ओ साहित्यिक आयोजन केँ सफल बनयबा मे सहयोग देल जाय। कृपया शीघ्र अपन स्वीकृति पठौल जाय।

सांस्कृतिक विभाग केँ बहुत अल्प टाका छैक तें यातायात मार्गव्ययक संक्षिप्त प्रबंध अछि। साधन अल्प मनोरथ बेसी। मार्ग-व्यय एत्तहि देल जायत।

विनयावनत—श्री रामकृष्ण झा, संयोजक, सांस्कृतिक उपसमिति।'

स्मरणीय जे तखन राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौलक पदाधिकारीगण रहथि-श्री आर.सी. प्रसाद, आइ.ए.एस, जिलाधिकारी, सहर्षा- अध्यक्ष, श्री शिवप्रिय, अनुमंडलाधिकारी, सुपौल-उपाध्यक्ष, श्री आनन्द मोहन दास, अधिवक्ता, मंत्री, श्री गोपाल चन्द्र पुगलिया, सचिव, व्यापार संघ आ श्री गोपाल चन्द्र प्रसाद, अधिवक्ता-संयुक्त मंत्री, श्री रामकृष्ण झा 'किसुन' - सहायक मंत्री, श्री लक्ष्मण चौधरी, अवैतनिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी, श्री लक्ष्मी प्रसाद सिंह, अवैतनिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी-सह-उपाध्यक्ष, अधिसूचित क्षेत्र, श्री कमलनारायण झा. अधिवक्ता, श्री वीरवरनारायण सिंह, अधिवक्ता आ डॉ. सुधीर कुमार मुखर्जी- कार्यसमितिक सदस्य तथा श्री मोती प्रसाद अग्रवाल, सचिव, व्यापार संघ-अंकेक्षक।

एहि आमंत्रणक संग किसुनजी जीवकान्तजी केँ एही तिथि मे एक आरो पत्र देने रहथि, जाहि मे कार्यक्रमक विषय मे विस्तृत सूचना छल। ओ पत्र एना अछि—'मेला दिस सँ निमंत्रण पठा रहल छी। हमर विचार अछि जे मैथिली मे नव कविता लिखनिहार समस्त कविगण एक मंच पर समवेत होथि आ एक टा ऐतिहासिक महत्त्वक कार्य करक आयोजन हो। तें हम अपना दायित्व पर नव कविता लिखनिहार सब कवि केँ अयबाक आग्रह क' रहल छियनि।

अनुरोध जे 4.2.67क साँझ धरि सुपौल अवश्य पहुँचि जाइ।

कार्यक्रम निम्नलिखित अछि—5.2.67 तथा 6.2.67केँ - दिनुका 8 सँ 11 बजे धरि- मैथिलीक नव कविताक सम्बन्ध मे निबंध पाठ। दुपहरियाक 2 सँ 4 धरि-निबंध संकलन, प्रकाशन आदिक प्रसंग विचार गोष्ठी। साँझक 7 बजे सँ कवि-सम्मेलन।

हमर ई विशेष आग्रह जे यथासंभव एक टा अनतिदीर्घ निबंध गोष्ठी मे पाठ करक हेतु लिखि क' नेने आबी, जाहि मे मैथिलीक नव कविताक सम्बन्ध मे अपन विचार आ दृष्टिकोणात्मक वक्तव्य स्फुट हो। जँ नहि हो तथापि आबी धरि अवश्य।

पत्रोत्तर, सुझाव आ स्वीकृति अविलंब पठौल जाय। कार्यक्रम पसिन्न कि ने? जँ कथंचित कोनो अनिवार्य कारणवश नहि आबि सकी तँ अपन संदेश धरि अवश्य आ शीघ्र पठाबी।'

श्री रमानन्द रेणु अपन 18 जनवरी '67क पत्र मे किसुन जी केँ लिखलनि—'सांस्कृतिक आयोजन आ नव कविताक संदर्भ मे, अत्यन्त हर्षक विषय। पूर्व सूचना भेटत, तखन कोना नहि आयब? आयब आ अवस्स। अपनेक निर्देशानुसार सभ वस्तुक संगहि आयब।

मातृभाषा मैथिली मे, नव कविताक सम्बन्ध मे वस्तुस्थितिक स्पष्टीकरण होयब बड़ आवश्यक छल, तें एहि आयोजनक हेतु अपनेक आभार। विचार संकलनक

प्रकाशन स्तुत्य। समग्ररूपें विचार-विनिमय क' सामीप्यक प्रयास अनिवार्य छैक। आ से नहि भ' रहल छल।'

अपन 19 जनवरी '67क पत्र मे सोमदेवजी सेमिनार मे सम्मिलित नहि भ' सकबाक कारणक उल्लेख करैत लिखैत छथि—'अपनेक निमंत्रण भेटल। धन्यवाद। हम सम्मिलित नहि होएब'—लिखैत कष्ट भ' रहल अछि, किन्तु हर्षक विषय जे 5 तारीख केँ हमर बहिनक विवाह निश्चित भेलनि अछि। तदर्थ, हम अपन विचार संक्षेप मे पठा देब।

एहि बेरक गोष्ठीक बाद प्रयास करू जे एक टा नव कविता संकलन 'तार सप्तक' जकाँ बहार भ' सकय। व्यक्ति, विचार, कविता। तीनू। अपनेक प्रत्येक डेग मे हमर आस्था अछि, अपनेक कर्मठता गुणें।'

तहिना 20 जनवरी '67क पत्र मे श्री कीर्त्तिनारायणजी लिखलनि—'मैथिली मे नव कविता लिखनिहार समस्त कविगण केँ एक मंच पर समवेत करबाक अपनेक प्रयास केर हम हार्दिक सराहना करैत छी। एहि ऐतिहासिक महत्त्वक अनुष्ठानक लेल हमर पूर्ण सहयोग अपने केँ प्राप्त हैत। आत्यन्तिक रूप सँ व्यस्त रहितो हम अपनेक आयोजन मे भाग लेबाक निश्चय कए चुकल छी। राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन मे तँ हम भाग लेबे करब, मैथिली नव कविताक परिवेश आ युगबोध पर निबंध पाठ सेहो करब।'

नव कविता सेमिनार 5 आ 6 फरवरी '67 केँ सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। सुपौलक बौद्धिक जनसमुदायक अद्‌भुत भागीदारी छल एहि आयोजन मे। जीवकान्त जी 18 फरवरी 67 केँ अपन एक सर्वेक्षण मे, एहि नव कविता सेमिनारक विषय मे टिप्पणी करैत लिखैत छथि—'...एहि ऐतिहासिक अनुष्ठानक श्रेय भेटल ओहिठामक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक आयोजक लोकनि केँ आ ओहि मे सब सँ बेसी श्री रामकृष्ण झा किसुन केँ , जे सहरसा जिलाक समस्त राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक जागरणक प्रतीक आ ओकर मशाल छथि। ओहि सम्मेलन मे श्री धीरेन्द्र एकबेर बजलाह जे जे आयोजन दरभंगा, मधुबनी, पटना अथवा कलकत्ता मे नहि भ' सकल, से आइ सुपौल मे भ' रहल अछि। एहि सेमिनार मे मैथिलीक नव कविता लिखनिहार कवि समान रूपें सहयोग देलनि। एहि मे भाग लेलनि श्री राजकमल चौधरी, प्रो. धीरेन्द्र, जीवकान्त, श्री रमानन्द रेणु, श्री कीर्त्तिनारायण मिश्र, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री वैद्यनाथ झा आ श्री रामकृष्ण झा 'किसुन'। कविलोकनि नव कविताक स्थापना करैत अपन-अपन भिन्न-भिन्न आलेख पढ़लनि। नवपीढ़ीक सशक्त आलोचक श्री रामानुग्रह झा अपन विशिष्ट निबंधक पाठ कयलनि ... आ जे कवि नहियो आबि क' समस्त आयोजन केँ अपन उपस्थितिक बोध करबैत रहलाह, से छलाह कवि धूमकेतु। हिनक कविता

'ई नहि, हे प्राण बन्धु!' प्रो. धीरेन्द्रक मुहें सुनि समस्त श्रोता दू-दू बेर कानल।... एक नवीन संभावनाक जन्म भेल जे समस्त साहित्यिक लोकनि एक्के कुटुम्बक अंग छथि, तें ने कोनो औपचारिकता, आ ने छल, आरोपण, हाथी-दाँतक कोनो मीनार नहि। साधारण लोक, साधारण व्यवहार। स्वाभाविकता, सहजता।

ई सेमिनार मैथिलीक नव कविताक जतेक विश्लेषण क' सकल, ओहि सँ बेसी मैथिली-साहित्यक प्रचार कयलक। मैथिलीक लेल एक टा आह्लाद आ आकर्षण उत्पन्न क' सकल। संगहि, मैथिली पुस्तक-प्रदर्शनी मैथिलीक आन्दोलनक एक अविभाज्य अंग छल। ओतुक्का जनता मैथिलीक नव कविता पर निबंधे नहि सुनलक, वरन मैथिलीक अनेकानेक प्रकाशन उदारतया कीनिक' एहि प्रकारक सभ आयोजन मे भाग लेनिहार लोकक मार्ग प्रदर्शन कयलक।'

एहि नव कविता सेमिनारक द्विदिवसीय आयोजन मे समस्त नवकविलोकनिक वक्तव्यक संग प्रतिनिधि कविताक संग्रह आ नव कविताक स्थापना सम्बन्धी वैचारिक निबंधक एक संकलन प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल। राजकमल चौधरी आ रामकृष्ण झा 'किसुन'क सम्पादन मे एकर प्रकाशन हो—तकर निर्णय कयल गेल छल।

मुदा, कालक निर्णय केँ के टारि सकैत अछि? एहि आयोजनक चारि मासक बादे राजकमल चौधरीक असामयिक निधन भ' गेलनि। समस्त साहित्य-संसार शोकाकुल भ' उठल। आब दू सम्पादक मे सँ एक बचल रहथि किसुनजी। किसुनजी प्राणपण सँ दुनू पोथीक प्रकाशनक ओरिआओन मे लागि गेलाह। फेर सघन पत्राचार प्रारंभ कयलनि आ लगभग 1969क अंत आ 1970क प्रारंभ धरि हुनका समस्त प्रकाशन-सामग्री भेटि सकलनि।

समारोहक बाद अपन 11 फरवरी '67क पत्र मे सोमदेवजी किसुनजी केँ लिखलनि—'रेणुजी सँ समारोहक सफलताक पता चलल, बधाइ स्वीकार करू। हम विवाह मे ततेक व्यस्त भ' गेलहुँ जे रचनो नहि पठा सकलहुँ। यथाशीघ्र सभ वस्तु पठा देब। दुनू पोथी छपब अत्यावश्यक।

कोनो अति नवीन गीति व्यक्तित्व अथवा छद्मवेशी परम्परावादी केँ कथमपि सम्मिलित नहि करब। नवीनतावादीक बीच एक टा लीडर केर कमी छल, से आब अहाँक नेतृत्व सँ पूर्ण भ' गेल अछि। हमर सभ तरहक सहयोग तथा अनुगमन समर्पित अछि।'

नव कविता सेमिनारक बाद जीवकान्तजी सुपौल सँ गेलाक बाद किसुनजी केँ एक पत्र 13 फरवरी '67 केँ पठौलनि—'एखन निरमली प्रतीक्षालय सँ लिखि रहल छी। ...ई यात्रा, जाहि मे साहित्य, धर्म, कुटुम्ब आ संगे-संग लेखकक परिवारक

संभावना उदित भेल अछि, आजन्म स्मरण रहत। महानाशक छाउर सँ जनम लैत नवीन सहरसाक जन्म भ' रहल अछि। अपनेक स्नेह आ सौहार्द्र चिरकाल धरि स्मरण रहत।'

एकर उत्तर दैत किसुनजी अपन 18 फरवरी '67क पत्र मे जीवकान्तजी केँ लिखैत छथि—'निरमली प्रतीक्षालय सँ लिखल स्नेह पत्र भेटल। कोना गाम पहुँचल हैब से चिन्ता बनल छल। हमरालोकनि एक्के परिवारक छी—ई बोध एहि आयोजन मे सभ सँ बेसी भेल। तें ने श्री धूमकेतुक 'ई नहि' कना देलक?'

यात्रीजी अपन 22 मार्च '67क एक पत्र मे किसुनजी केँ लिखलनि—'सुपौल बला समारोह बड़ बढ़िया भेल से समाचार हमरा धरि दरिभंगे मे पहुँचि गेल छल। ई सब टा अहींक तपस्याक फल छल। हमरा नहि जा भेल तकर कचोट रहबे करत। निबंधावली जेना-तेना अविलंब प्रकाशित हो, तदर्थ आयास अहाँक रहबे करत...।'

पुनः ओ अपन 5 दिसंबर '68क पत्र मे लिखलनि—'विशेष आहे-माहे पछाति लिखब। तत्काल सूचनार्थ एतबे लिखबाक अछि जे 'मैथिलीक नवीन साहित्य' वला संकलन मे हमरा तूरक कोनो साहित्यकारक रचना नहि रखिअइ। हमर ई निश्चित विचार। फेर लिखब।'

एहि सेमिनार केँ सफल बनयबा लेल स्थानीय मेलाक मंत्री आनन्द मोहन दास (प्रसिद्ध मदन बाबू)क योगदान केँ किन्हु नहि बिसरल जा सकैत अछि। ओ जँ उदारतापूर्वक किसुनजीक एहि आयोजन मे सहयोग नहि करितथि तँ एकर सफलता संदिग्ध रहैत। ओहि सेमिनार, कवि-सम्मेलन आ मेलाक एहन अनेक मनोरंजक संस्मरण सभ अछि जे मैथिली मे विभिन्न ठाम प्रकाशित अछि।

एहि तरहें ई सम्मेलन सम्पन्न भेल आ 1970 मे 'मैथिलीक नव कविता' नामक पोथीक पांडुलिपि सुपौलक जनसहयोग प्रेस मे प्रकाशनक निमित्त गेल। कम्पोजिटर रहथि मल्लिकजी, ओ मुंशी रघुनन्दन दासक नाति रहथि। ओ अपन संपूर्ण जीवन सुपौले मे बिता देलनि। ओ कम्पोजिंगो करथि आ मशीनो चलबथि। ओ द्रुतगतियें काज करबाक अभ्यासी रहथि।

किसुनजी लगभग सभ टा काज क' लेने रहथि, प्रूफक किछु काज मात्र बचल छलनि। तावत महाकाल हुनको हमरा सभक बीच सँ उठा लेलक आ अन्ततः पं. रामानुग्रह झाक प्रयाससें 1971 मे पाथी बहरा सकल। नव कविता पर केन्द्रित निबंधक संकलन कालक गर्भ मे रहिए गेल...।

रचना : 2003

किछु साहित्यिक प्रश्न आ किसुन जी

ललितेश मिश्र

अपने केँ मैथिली साहित्य सँ सम्पर्क कहिया भेल ? अपनेक प्रथम मैथिली रचना कहिया आ कोन पत्र मे प्रकाशित भेल छल ?

ईसवी तँ ठीक-ठीक मोन नहि अछि। एतबा मोन अछि जे स्वर्गीय भुवनजीक कोनो पुस्तक प्रकाशित भेल छल आ मुजफ्फरपुरक कोनो चौक पर ओहि पुस्तक प्रसंग किछ लोक ठाढ़ भ' क' गप्प क' रहल छलाह। लोक सब मे श्री मधुपजी मुख्य वक्ता छलाह। हम ताधरि मैथिली केँ व्यर्थक साहित्य बुझैत छलहुँ। संयोग सँ हम चलि आबि रहल छलहुँ। एहि तरहें लोक केँ समवेत देखि ठाढ़ भ' गेलहुँ। आ मैथिली केँ हिन्दीक विरोधी कहैत एहि सम्बन्ध मे अवहेलनात्मक विचार प्रकट कयलहुँ। भुवनजीक ओ पुस्तक सम्भवतः 'अर्घ्य' छल। मधुपजी हमर नाम आ निवासक ठेकान पूछि हमरा संगहि विदा भ' गेलाह। डेरा पर आबि दू घंटा धरि हमरा मैथिली साहित्य आ ओकर उन्नयनक औचित्य आदिक प्रसंग मधुपजी वाद-विवादक क्रम मे बुझबैत रहलाह आ हरदा बजाक' छोड़लनि। हम प्रभावित भेलहुँ। तकरा बाद सँ ओ बरोबरि पद्यात्मक पत्र द' क' मैथिली मे रचना कर'क प्रेरणा दैत रहलाह। फलतः मधुपजीक प्रेरणा सँ हम मैथिली मे 1941 सँ लिखब आरम्भ कयल आ सम्पर्क राखय लगलहुँ।

हमर प्रथम मैथिली रचना ('शिशु सँ' शीर्षक कविता) 1945 ई मे दरभंगा सँ प्रकाशित होइत मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल छल।

की अपनेक दृष्टि मे मैथिली साहित्यक प्रगति सन्तोषजनक अछि ?

'मैथिली साहित्यक प्रगति' ई शब्दावली विवादास्पद अछि। कोन अर्थ मे प्रगति ? जँ रचनात्मक प्रगति सँ तात्पर्य हो तँ से अवश्यमेव सन्तोषजनक अछि। कारण जे पहिने सँ बेसी रचनाकार एखन छथि, बेसी साहित्य-सर्जन भ' रहल अछि तथा

एहि सम्बन्ध मे लोक पहिने सँ बेसी संख्या आ परिमाण मे जागरूक अछि। मुदा जँ तुलनात्मक दृष्टिएँ अन्यान्य साहित्यक अपेक्षें मैथिली साहित्यक प्रगतिक विषय मे विचार करी तँ से सन्तोषजनक नहि कहल जा सकैछ। ई निर्भयत: कहल जा सकैछ जे आन-आन समसामयिक साहित्य मे जखन नव-नव विधा सब मृतप्राय भ' जाइत अछि तखन तत्तद् विधा मैथिली मे प्रसव-वेदना उत्पन्न करैत अछि आ तथापि दुर्योग ई जे अद्यावधि कतेको नवविधा मैथिली साहित्यक गर्भ मे एखन आयलो नहि अछि।

जँ युग-बोध, शिल्प-शैली, मौलिकता आदिक प्रसंगें विचार करी तँ आधुनिक मैथिली साहित्य आब पुनरावृत्तिक दोष सँ मुक्त भेल जा रहल अछि, कम सँ कम गतिरोधक स्थिति नहि अछि आ उत्तरोत्तर नवीन विकासक मार्ग प्रशस्त भेल जा रहल अछि। प्रकाशन आ विक्रयक स्थिति संतोषजनक नहि अछि, सैह स्थिति अछि पढ़बाक, संग्रहक आ प्रचारक। मुदा समग्र रूप सँ कतेको अंश मे प्रगति संतोषजनक कहल जा सकैछ। शर्त्त ई जे सन्तोष सँ आकुलताबोध आ गतिशीलता बाधित नहि होइत हो।

मैथिली साहित्य मे नव प्रयोगक प्रतिष्ठापक अपनेक विचार सँ के मानल जा सकैत छथि? यात्रीजी किंवा राजकमल?

मैथिली साहित्य मे नव प्रयोगक प्रतिष्ठापक छथि यात्रीजी आ राजकमल नव प्रयोगक समर्थ प्रयोक्ता छलाह।

रूढ़िवादी आलोचक कहैत छथि जे राजकमल मैथिली साहित्य मे अश्लीलता भरि दूषित क' देने छथि। कि ई सत्य?

आलोचकक विशेषण एहि प्रश्न मे रूढ़िवादी अछि जे एहि प्रश्नक यथार्थता कें सहजहि क्षीण क' दैछ। कोनो वाद सँ ग्रस्त व्यक्ति जाधरि पूर्वाग्रह मुक्त नहि बनि जायत ताधरि ओकर मान्यता अखण्ड नहि मानल जा सकैछ। तें रूढ़िवादी आलोचकक कहब सर्वमान्य नहि भ' सकैछ। एहि प्रश्नक जे मूल आग्रह अछि ताहि सन्दर्भ मे हमर विचार अछि जे राजकमलक सम्बन्ध मे रूढ़िवादी लोकनिक ई धारणा बहुत अंशधरि भ्रांत अछि। पूर्वहुक साहित्य मे यौन-सम्बन्धक नग्न आ अतिरंजित चित्रण बहुत भेल अछि जकरा क्यो-क्यो उत्तान श्रृंगार वा उत्तान सौंदर्य कहलनि अछि। संस्कृत वाङ्मय मे महाकवि कालिदास कुमारसंभवक आठम सर्ग मे आ मेघदूतक किछु श्लोक मे जेहन उपमाक प्रयोग कयने छथि तेहन तथाकथित अश्लीलता राजकमलक रचना मे नहि छनि। अश्लीलता कें रूढ़िवादी चश्मा सँ फराक भ' क', ओकरा उतारि क' देखने वास्तविकताक बोध भ' सकैछ। वस्तुत: यौन वर्जना आ अवर्णनीय अवयवक वर्णन साहित्य मे सदैव अधलाहे नहि मानल जाइछ। हमरा बुझने श्लील अश्लीलताक महत्त्व ओकर सोद्देश्यता पर निर्भर करैछ।

राजकमलक रचना मे अश्लीलता पर विचार करैत काल ओकर प्रायोगिक उद्देश्य ध्यान मे राखक चाही। ओना अश्लीलता एक टा विवादास्पद विषय थिक।

नव कविताक सम्बन्ध मे अपनेक की विचार अछि? डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' तँ अपनेक आत्मनेपद मे अभिव्यक्त नव कविताक परिभाषा कें अति व्याप्ति परिभाषा दोष सँ ग्रस्त मानैत छथि।

नव कविताक सम्बन्ध मे हम अपन विचार अपन प्रथम मैथिली कविता संग्रह 'आत्मनेपद'क भूमिका मे प्रकट कयने छी आ समय-समय पर आकाशवाणी, मिथिला मिहिर एवं गोष्ठी सब मे ओकरा स्पष्ट क' चुकल छी। आत्मनेपद मे हम नव कविताक परिभाषा नहि, ओकर वस्तुस्थितिक उल्लेख कयने छी। हमरा बुझने नव कविताक परिभापा सम्पूर्ण आ दोषमुक्त एखनहुँ नहि घोषित कयल जा सकैछ। एखनधरि नव कविताक स्वरूपे मैथिली मे स्पष्ट नहि भ' सकल अछि। कोनो परिभाषा तावत सम्पूर्ण आ दोषमुक्त नहि भ' सकैछ यावत ओकर जाति वा विभेदक-गुण अर्थात स्वरूप स्पष्ट नहि भ' जाय। ताहि मे एखन कसरि अछि। डॉ. श्रीश वस्तुस्थितिक उल्लेख कें परिभाषा मानि लेने छथि आ ओहि मे अति व्याप्ति दोष मानने छथि से हुनक दृष्टिकोण थिकनि। ओना ओकरो स्पष्टीकरण सँ एकर परिमार्जन सरल अछि। ताहि लेल विस्तार अपेक्षित अछि। नव कविताक सम्बन्ध मे हमर विचार 'मैथिली साहित्य मे नव कविता,' 'मैथिली कविताक नवीन दिशा' तथा 'नवलेखन कियैक, कोना आ की' निबंध मे नीक जकाँ स्पष्ट अछि, से द्रष्टव्य थिक।

जीवकान्तजीक एमहर बड़ प्रगति भेल छनि। किछु व्यक्ति कहैत छथि जे जीवकान्त दोसर राजकमलक चोङा पहिरि मैथिली साहित्य कें अश्लीलता सँ दूषित क' रहल छथि। जेना—'टिल्हाक धुक-धुकी' पर 'आखर' मे उठाओल गेल प्रश्न... की ई सत्य यिक?

जीवकान्तजी मे प्रखर प्रतिभा छनि तें हुनक जे बड़ प्रगति भेल अछि तँ से एकदम स्वाभाविक थिक। जे क्यो हुनका पर मैथिली साहित्य कें अश्लीलता सँ दूषित करक दोषारोपण करैत छथि हुनका कनेक गम्भीर भ' क' जीवकान्त जीक रचना कें पढ़क चाही आ तखन अपन विचार प्रकट करक चाही। जीवकान्तजी राजकमलक प्रयोगवादिता सँ प्रभावित छथि ताहि सन्दर्भ मे राजकमलक प्रयोगशीलता कें ओ एक धाप आगाँ बढ़ा रहल छथि। राजकमलक चोङा पहिरबाक कथा जीवकान्त विरोधी स्वर थिक। जीवकान्त विरोधी एहि स्वर मे जीवकान्तजीक साहित्यकारक जीवन्तताक स्पष्ट आभास हमरा भेटैत अछि जे साहित्यहुक विकासक दृष्टिञे वस्तुत: जीवन्तताक परिचायक थिक। 'टिल्हाक धुकधुकी' पर (एहि तरहक) अश्लीलताक

प्रश्न नहि, कुण्ठाक प्रश्न उठौल गेल अछि। अश्लीलताक प्रसंग हम अपन विचार पहिनहि व्यक्त क' चुकल छी।

'ललका पाग'क भूमिका लेखक राजकमलक सुरमा सगुन विचारे ना, माहुर प्रभृति कथाक उत्कट यथार्थ केँ उत्कट अश्लीलताक संज्ञा द' ओकरा व्यर्थ साहित्य सृजनक संज्ञा देल अछि। की ई नव पीढ़ीक अपमान नहि भेल?

इहो प्रश्न अश्लीलताक आरोप सँ सम्बद्ध अछि तैं एहि पर फेर की कहू? व्यर्थ साहित्य सृजनक संज्ञा देब भूमिका लेखकक अपूर्व बुद्धिमत्ताक परिचायक थिकनि। ओना हमरा 'ललका पाग' संग्रह देखबाक अवसर नहि भेटल अछि। रहल नव पीढ़ीक अपमानक बात, से ऊपर मुँहें थूक फेंकने अपनहि पड़बाक सम्भावना रहैत छैक। एहि सँ बेसी कहब व्यर्थ थिक।

नव पीढ़ी मे अपनेक साहित्यिक दृष्टि सँ सब सँ नीक कवि तथा कथाकार के छथि? की हुनक रचनाक मूल स्वर ओ ओकर प्रभाव केँ अपने स्पष्ट क' सकैत छी?

एहि तरहक प्रश्न धर्मसंकट उत्पन्न करैत अछि। सब सँ नीकक घोषणा एना पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित करा क' करब हमरा बुझने नीक नहि। दोसर बात जे ताहि लेल बहुत विचार कर' पड़त। ओना उच्चकोटिक कवि आ कथाकार मे सोमदेव जी, जीवकान्त जी, धीरेन्द्र जी, धूमकेतु जी, कीर्तिनारायण जी, मायानन्द जी प्रभृतिक नाम अबैत अछि। सभक अपन-अपन विशेषता छनि आ प्रभाव छनि। साफ बात ई जे 'सब सँ नीक'क विचारो हम नहि कयने छी।

की भविष्य मे अपने केँ नव प्रयोगक विकासक आशा देखाइ दैत अछि?

नव प्रयोगक अर्थ जँ नवलेखन हो तँ स्पष्टे अछि। एकर विकास केँ के रोकि सकैत अछि। की आब सम्भव छैक जे संसार पाछाँ मुँहे घूमि जाय? आइ धरिक उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान आ जीवन-बोध केँ जँ हम नहि बिसरि सकैत छी तँ नव प्रयोगक विकास कोनो तरहें अवरुद्ध नहि भ' सकैछ। एकर विकास तँ एक टा स्वाभाविक प्रक्रिया थिक। कोनो प्रयोगक जखन जीवन सँ सम्पर्क टूटि जेतैक तखनहि ओकर विकासक आशा नहि कयल जा सकैछ। ई नव प्रयोग जीवन सँ प्रतिबद्ध अछि आ अपना पूर्ववर्ती लेखन सँ अपना केँ एतेक पृथक क' लेने अछि जे कथ्य, शिल्प, चिन्तन आ अभिव्यक्ति सब स्तर कर अपन पृथक अस्तित्व बना लेलक अछि। एकर विकास एकदम सहज आ सर्वथा स्वाभाविक अछि।

सन्निपात

किसुन जी, 'आखर'क संदर्भ आ हुनक पत्र

कीर्त्तिनारायण मिश्र

1967 सँ पूर्व किसुन जी सँ हमर पत्राचार नहि छल। मुदा, एक दोसर सँ रचनाक माध्यम सँ परिचित छलहुँ।

हमरा ओ पहिल पत्र राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौल दिस सँ जनवरी 1967 मे लिखने छलाह कलकत्ताक पता पर आ अन्तिम पत्र फरवरी 1970 मे, जे हमरा बरौनी मे प्राप्त भेल छल। एहि तीन वर्षक अवधि मे हुनक साक्षात्कार, आत्मीयतापूर्ण पत्र आ अकुण्ठ स्नेह हमर त्रिवर्षीय अस्वस्थताक यंत्रणा-सहनक लेल कतेक शक्ति आ मैथिली मे लेखनक लेल कतेक प्रेरित-प्रोत्साहित कैलक—से हमरा लेल शब्दातीत अछि। अनेक घटना-दुर्घटना केर ओ मात्र साक्षिये नहि, सूत्रधारो छलाह। 'सीमान्त' आ 'आखर'क प्रकाशन मे राजकमल आ किसुन जीक प्रेरणा, सहयोग आ निर्देशन हमरा समान रूपें प्राप्त भेल छल। सत्त तँ ई जे हिन्दीक संग-संग मैथिली मे क्रमबद्ध लेखनक लेल यैह दुनू व्यक्ति हमरा अग्रसर कैने छलाह।

राजकमल संस्कारतः क्रांतिकारी आ आधुनिक छलाह। आधुनिकता बोध हुनक चिन्तन-प्रक्रिया मे छलनि। आचरण भलें असाधारण आ कखनहुँ असामाजिक भ' जाइत छलनि मुदा, हुनक जीवन आ विचार मे कतहु आडम्बर अथवा आरोपित विडम्बना नहि छलनि। जीवन आ साहित्य मे ओ शत-प्रतिशत आधुनिक छलाह तथा आजुक जीवन-विपर्यय एवं क्रूरता केर निर्भीक वक्तो।

किसुन जी सहज मानवीयता केर महान उद्गाता छलाह। हुनक आडम्बरशून्य निश्छल जीवन आ व्यवहार सभ केँ आकृष्ट करैत छलैक—खाहे ओ कोनो अत्याधुनिक नवतुरिया साहित्यकार हो अथवा चानन-चद्दरि-पागधारी कोनो कर्मकाण्डी पण्डित। ओ एक संग परम्परा-प्रेमी आ आधुनिकता केर पक्षधर छलाह। परम्परा आ आधुनिकता केर एक गोट संगम, दुनू केर बीच एक गोट जीवन्त सन्तुलन। हुनक दस वर्ष पूर्वक रचना सभ मे परम्पराक प्रति अगाध मोह तथा संस्कार-संवेदित

भावुकता केर दर्शन होइत अछि, जे हुनका साहित्यक यजमनिका मे व्यस्त पण्डित सभक प्रिय-पात्र आ मित्र बनौने छलनि, तँ दोसर दिस जीवनक अन्तिम दशक मे ओ उग्र आधुनिकतावादी तथा सड़ल परम्परा एवं कुसंस्कारक विरोधी बनि गेल छलाह। पण्डित लोकनि (एहिठाम पण्डालोकनि कहब उचित हैत) पर कुठाराघात भेलनि। हुनक पूर्ववर्ती मित्रवर्ग कैं आश्चर्यक ठेकान नहि। किसुन जी सन गम्भीर साहित्यिक आ विनीत विद्वान आधुनिकता केर बिड़रो मे कतय भसिया गेलाह! जेना कोनो कुलवधू केर अवैध गर्भपातक पता गामक कुटनी माउगि सभ कैं लागि गेल हो। सभतरि दुर-दुर, छिः-छिः! मुदा, किसुन जी कैं जड़ परिवेश सँ समस्त अवैध सम्बन्ध तोड़बाक छलनि, तोड़ि लेलनि। ओ भारतीय आ पाश्चात्य साहित्यक समुद्र मे डुबकी मारि आधुनिक बोध केर रत्न बहार क' चुकल छलाह, पोखरिक काश-सेमार मे ओझड़ाएल रहब कोना नीक लगितनि?

हुनक पहिल पत्र सँ हमरा बड़ आश्चर्य भेल छल। मैथिली मे नव कविता पर सेमिनार, आ सेहो सुपौल मे। मुदा, किसुन जी सन कर्मठ आ दृढ़ संकल्पक व्यक्तिक लेल किछुओ असंभव नहि छल। आब तँ रामानुग्रह झाक सत्प्रयासें प्रकाशित 'मैथिलीक नव कविता' किसुन जीक नव कविता सम्बन्धी दृष्टिकोण कैं स्पष्ट कए चुकल अछि।

सुपौलक नव कविता सेमिनारक पूर्व ओ पुरनका पीढ़ी सँ असम्पृक्त नहि भेल छलाह। नवीन बोध कैं स्वीकार क' चुकल छलाह आ सस्त लोकप्रियताक लेल साहित्य कैं सीढ़ीक रूप मे प्रयोग कयनिहार व्यक्ति सभक नियति सँ ओ परिचित भ' चुकल छलाह, तथापि पूर्ण रूप सँ मोह-भंग नहि भेल छलनि।

किसुन जी मैथिली नवलेखनक मार्ग प्रशस्त करए चाहैत छलाह, नवतुरिया वर्गक रचनात्मक क्षमता आ वैचारिक नवीनता, शिल्पगत नवीन प्रयोग आ निर्भीक अभिव्यक्ति सँ मैथिली कैं सम्पन्न देखए चाहैत छलाह। एहि सभक लेल एक गोट स्वस्थ मंचक प्रयोजनीयता पर एक्केसंग राजकमल, जीवकान्त, रेणु जोर देलनि। 'आखर'क योजना तें सफल भ' सकल। 'राजकमल स्मृति अंक' बहार करए मे सोमदेव जी द्वारा पठाओल सुझाव तथा किसुन जीक अथक प्रयास सँ राजकमलक पारिवारिक जीवन पर लिखल लेख सँ बड़ मदति भेटल छल।

'आखर'क नियमित प्रकाशनक लेल किसुन जी बड़ उद्योगशील छलाह, मुदा 'राजकमल स्मृति अंक' बहार कैलाक बाद जे 1968 सँ हमर अस्वस्थता आरंभ भेल तकर क्रम 1970क अंत धरि चलैत रहल। एहि बीच 'आखर' बन्द भ' गेल, किसुन जी विदा भ' गेलाह आ मैथिली मे जे नवीन विद्रोही स्वर, स्वस्थ साहित्यक सर्जनाक मार्ग कैं प्रशस्त कर'क लेल संघर्षरत छल, प्रकाशन तथा संघटनक अभाव मे घबरा कैं अपन सुविधा आ विज्ञापनक लेल समझौतापरस्त भ' गेल।

किछु व्यक्तिगत पत्र उद्धृत क' रहल छी, जाहि मे हुनक व्यवहार, विचार, कर्मठता तथा 'आखर'क लेल उद्योगशीलता स्पष्ट होइत अछि।

सुपौल, 10.03.1967

प्रियवर,

अहाँक 7-3क पत्र काल्हि भेटल। सुपौल सँ गेलाक बाद जे एको टा पत्र नहि आयल छल से चिन्तित छलहुँ।

संकलनक काज चलि रहल अछि। निबंध सभक प्रतीक्षा अछि। सुपौल मे जे निबंध सब प्राप्त भेल छल, तकरा बाद सँ कोनो नहि आयल अछि। कविता-संकलन लेल सर्वश्री जीवकान्त, श्रीकान्त, गंगेश गुंजन, रेणु जी अपन दस गोट कविता, अधुनातन पासपोर्ट साइज फोटो, वक्तव्य आ परिचय पठौलनि अछि। अहाँक उक्त वस्तु सभक प्रतीक्षा अछि।

अहाँक
किसुन

सुपौल, 22.11.1967

प्रियवर,

कार्ड (14.11.67क) भेटल। 10 प्रति 'आखर' सेहो। धन्यवाद। जेना उत्साह आ लगन सँ काज भ' रहल अछि, आखर अवश्ये नवलेखनक प्रतिमान सिद्ध होयत। शर्त्त जे उद्देश्य मे अवान्तर भेद नहि हो। रचना लेल आग्रह करबनि। अपन कथा यथाशीघ्र पठा देब। संकलन सुपौल मे छपत। कवर आनठाम छपायब।

स्नेहाधीन
किसुन

प्रियवर,

'आखर'क पाँचम अंक भेटल। सामग्री सब नीक। केवल प्रूफ पर कने ध्यान राखी से आवश्यक। 'आखर'क लोकप्रियता बढ़ि रहल अछि। वार्षिक ग्राहक बनयबाक उद्योग मे छी।

श्री मायानन्द कैं पुनि पत्र देलियनि अछि कि ने?
हम अप्रैल धरिक हेतु क्षमा चाहैत छी। तकरा बाद लिखब।
राजकमल अंक लेल श्री सोमदेव जी सँ पटना मे गप्प भेल छल।
कार्यारम्भ अछि कि ने? रचना संग्रह भ' रहल अछि?
सुपौलक चर्चा लेल एहिठामक सब क्यो बड़ आयन प्रकट क' रहल छथि।

अहाँक
किसुन

सुपौल, 23.04.1968

प्रियवर,

पत्र आ आखर भेटल। अहाँक अस्वास्थ्यक चिन्ता अछि। स्वास्थ्य पर ध्यान राखी। अहाँक स्वास्थ्य केवल अहींक नहि, मैथिलीक आ हमरा सभक स्वास्थ्य थिक।

राजकमल-स्मृति-अंकक हेतु हमहुँ आवश्यक पत्राचार आइ सँ आरम्भ क' देल अछि। प्राय: सब कें अहूँ पत्र देने हेबनि।

'आखर'क टाकाक की स्थिति छैक—से बूझल नहि अछि! रचनाक अभाव नहि होमक चाही—से विश्वास अछि।

10 मइ धरि जे रचना मंगलियैक अछि से बड़ कम समय भेलैक तथापि प्रयत्न क' रहल छी।

किसुन

सुपौल, 16.05.1968

प्रियवर,

पत्र भेटल। पटना आबि सकी तकर प्रयत्न मे छी। छुट्टी पर निर्भर करैछ प्रोग्राम। श्री जीवकान्त जी रचना सब पठा देलनि से लिखने छलाह। डॉ. बालगोविन्द झा कें कहने रहियनि। ओ रचना कलकत्ता पठा देलनि अछि। श्री रामानुग्रह कें रचनाक सेहो तगेदा कयने छियनि। श्री धीरेन्द्र जी कें जनकपुर पत्र देलियनि अछि। महिषी जयबाक अछि। हमर सर्वविध सेवा उपलब्ध हो, तकर समग्र चेष्टा मे छी।

स्वास्थ्य नीक नहि रहैत अछि। दरभंगाक प्रतिक्रिया बूझि हर्ष भेल अछि।

अहाँक
किसुन

राँची, 12.06.1968

प्रियवर,

अहाँक 29 मइ '68 वला कार्ड हमरा सुपौलहि मे भेटल छल। मुदा अत्यधिक अस्वस्थ रहक कारणे तत्काल उत्तर नहि द' सकलहुँ। एम्हर फरवरिये सँ हमर स्वास्थ्य ह्रासोन्मुख भेल जा रहल अछि। मइक अन्तिम सप्ताह धरि बेसी अस्वस्थ भ' गेलहुँ। तखन 7 जून कें सुपौल सँ एतय चलि आयल छी। एहिठाम जमायक डेरा मे ठहरल छी। मेडिकल कॉलेजक ख्यातनामा डाक्टर के. के. सिन्हाक चिकित्सा चलि रहल अछि। बीच मे मरणासन्न भ' गेल छलहुँ। मरय नहि चाहैत छी से आब क्रमश: नीके भेल जाइत अछि।

अस्वस्थताक कारणे किछु नहि लिखि-पढ़ि सकल छी, से बुझाइत अछि जे एतेकरास जिनगी हेरा गेल अछि।

अहाँक
किसुन

काँके, 26.06.1968

प्रियवर,

कतय राजकमल-स्मृति अंक लेल सम्पादन, संकलन आ आरो-आरो अनेक आयोजनक योजना बनौने छलहुँ आ कतय अपनहुँ रचना एतेक विलम्ब सँ पठा रहल छी। शरीर-दौर्वल्य सब तरहें निरस्त क' देलक।

इहो रचना रोग-शय्ये सँ अनेक दिनक प्रयासें लिखने छी—थोड़ेक-थोड़ेक क' क'। तहिना जे चाहैत छलहुँ से नहि लिखि सकलहुँ। विचार आ योजना किछु छल आ भ' सकल किछु।

तैयो हमरा जनैत स्मृति अंक कें ई बेसी दूरि नहि करत से विश्वास अछि। आ कि नहि!

रचनाक प्रसंग हमर एके टा हार्दिक अनुरोध जे एकरा बिनु काट-छाँटक अक्षुण्ण प्रकाशित क' देबैक। कारण जे एहि मे बहुत रास एहन सूत्र सब अछि—जे हमरहु आ अहूँ कें, मने आखर कें —मैथिलीक आन्दोलन कें, कहियो काज देतैक। 24.6 कें तार पठबौने छलहुँ। अहाँ अपन स्वास्थ्यक हालति लिखब।

अहाँक
किसुन

काँके, 27.06.1968

प्रियवर,

राजकमल-स्मृति अंक लेल काल्हिये निबन्धित डाक सँ अपन निबंध आ चिरंजीवी ओझा जीक कविता पठौने छी।

आइ श्री शैलेश कुमार पाठकक एक टा रचना 'राजकमल चौधरीक अन्तिम साहित्यिक मंच' पठा रहल छी। एहि मे सुपौल सेमिनारक सम्पूर्ण विवरण, राजकमलक योजना सब आ राजकमलक असामान्य चरित्रक एक टा घटना (जकर साक्षी आ भोक्ता एक टा अहूँ छी) सभक उल्लेख अछि। हमरा विचारें ई स्मृति अंक मे अवश्य छपक चाही।

अहाँक
किसुन

सुपौल, 02.07.1968

प्रिय बन्धु,

काल्हिये राँची सँ अयलहुँ। आब पूर्वापेक्षया स्वस्थ भेल जाइत छी। एहिठाम अयला पर पता लागल जे प्रायः अहाँ सुपौल आयल छलहुँ आ संग मे आरो क्यो रहथि। की बात थिकैक, कृपया सूचित कए जिज्ञासा निवृत्त करी।

राजकमल चौधरीक प्रसंग किछु बेसी प्रामाणिक जानकारीक प्रयत्न हुनका परिवार सँ कयने रही, मुदा हमरा से उपलब्ध नहि भ' सकल छल। गाम अयला पर प्राप्त भेल अछि। तें से लिखि कैँ पठा रहल छी। जँ हमर वला निबंध मे एखन गुंजाइश भ' सकय तँ तकर उपयोग क' लेब। ई भेने बड़ प्रामाणिक विवरण एहि मे आबि जायत।

पत्र देब। देब कि ने? अपन स्वास्थ्य केहन अछि?

अहाँक
किसुन

सुपौल, 02.08.1968

प्रियवर,

अहाँक 27.07क कार्ड भेटल। 'आखर'क चिन्त्य आर्थिक स्थिति सँ दुख भेल। वस्तुतः एकर उपाय करहि पड़त। एहि प्रसंग पूर्व पत्र मे हम एक टा योजना लिखने छलहुँ। विशेषांक सनगर बहरायल अछि। पुनि दोसर खेप।

अहाँक, किसुन

सुपौल, 29.11.1968

प्रियवर,

पाँच टा कविताक संग अहाँक चिन्ताप्रद पत्र भेटल। अहाँक अस्वास्थ्य बड़ चिन्तित क' देलक। ओना हमहुँ, आइ चारि-पाँच मास सँ अस्वस्थ रहैत छी। अतीव दुबरा गेलहुँ अछि। बन्धुवर राजकमलक बाद आब जँ कोनो साहित्यकार बन्धुक अस्वास्थ्य-संवाद पबैत छी तँ मन बड़ घबड़ा उठैत अछि। स्वास्थ्य पर बेसी ध्यान राखू। बीच मे मधुबनी गेल छलहुँ। श्री जीवकान्त जी सँ गप्प भेल। वीरेन्द्र जीक प्रसंग हुनका सँ ज्ञात भेल छल। एम्हर सुपौल सँ एक टा कथा त्रैमासिक बहार क' रहल छी। जनवरी मे प्रवेशांक भेटय, से नेआरने छी। सहयोग मंगैत छी।

अपन कविता-कथा पठा देब। बिसरि गेल छलहुँ। पाँच टाक अतिरिक्त शेष कविता शीघ्र पठाबी। संकलन ठीके अहाँ ल'ग आबि कैँ अटकल अछि। श्री जीवकान्त जी 15-16 दिसम्बर कैँ कलकत्ता जयताह।

किसुन

सुपौल, 06.02.1970

प्रियवर,

आइ बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि भाव-विभोर भ' उठलहुँ।

एम्हर श्री जीवकान्त जीक पत्र सँ अहाँक सम्बन्ध मे यदा-कदा समाचार भेटैत छल, जाहि सँ दुख एवं औत्सुक्य बढ़ैत रहैत छल।

हमहुँ मरणासन्ने छलहुँ। अस्पताल मे भरती छलहुँ। ऑपरेशन सँ पूर्व आत्महत्याक प्रयास मे पकड़ल गेलहुँ आ अतीव दुर्बल रहक कारणें ऑपरेशन नहि भेल।

एखन होमियोपैथी चलि रहल अछि। सुधरि रहल अछि।

श्री हंसराज हमरे संग भरती छलाह। आब पटना छथि। सुधरल।

पत्र सँ सब ज्ञात क' दुखी छी। मुदा आब नीके भ' रहल छी, से जानि सन्तोष अछि। हमर शुभकामना।

स्नेहाधीन
किसुन

सुपौल, 28.02.1970

प्रियवर,

15.02क कार्ड पहिनहि भेटल छल, मुदा उत्तर एहि सँ पूर्व नहि द' सकलहुँ।

हमर स्वास्थ्य ठीके अछि। अहाँ सँ भेंट कर'क बड़ उत्कण्ठा भ' रहल अछि। यदि पटना दिसुक यात्रा भेल तँ बरौनी उतरि अवश्य भेंट करब। हमरा राँची प्रवास (रोग क्रम मे) आर्थिक दृष्टियें तेना थकुचि देलक अछि, जे होश नहि भ' सकल अछि। अपन कुशलादि लिखैत रही।

शुभैषी
किसुन

एकर बाद ने कोनो पत्र, ने साक्षात्कार। एहि सँ पूर्व आओर बहुत रास पत्र आयल छल, जकर उद्धरण अनावश्यक बुझना गेल। सोमदेव जी बरौनी आबि कहलनि जे हमरा संग किसुन जी, गंगेश गुंजन, जीवकान्त आदि सेहो आब' बला छलाह मुदा, हुनका सभक कार्यक्रम बदलि गेलनि।

15 जून 1970। सोमदेव जी, जीवकान्त, श्री रामानुग्रह झा आदिक एक्के संग पत्र-टेलिग्राम—'किसुन जी हमरा सभ कैँ छोड़ि विदा भ' गेलाह।' 19 जून राजकमल चौधरीक पुण्य-दिवस। 15 जून कैँ किसुन जी द्वारा महाप्रयाण। एकरा की कहल जाय? अनुजक असहनीय मृत्यु-शोक मे अग्रज द्वारा मृत्यु-वरण!

वैदेही : फरवरी 1973

किसुन जीक किछु पत्र जीवकान्तक नाम

किसुनजी एक टा नीक पत्र लेखकक रूप मे विख्यात छलाह। हुनक घनेरो पत्र सर्वश्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', राधाकृष्ण चौधरी, सोमदेव, जीवकान्त, कीर्त्तिनारायण मिश्र, रमानन्द रेणु, धीरेन्द्र आदि कतेको लेखक लग छनि। जँ ओहि सभ पत्र कें एकत्र क' छापल जाय तँ मैथिली मे पत्र-साहित्यक एक टा नीक संकलन आबि सकैत अछि। मैथिली मे पत्र-साहित्यक अहुना बड़ अभाव अछि। यदि किसुनजीक पत्र सभ कें एकत्र क' छापल जाय, तँ एहि अभावक पूर्तिक दिशा मे एक टा ठोस कार्य भ' सकैत अछि। एत' जीवकान्तक नाम लिखल किसुनजीक किछु पत्र प्रकाशित कयल जा रहल अछि। ई पत्र सभ श्री केदार कानन, जे पैतृक सम्पत्तिक रूप मे अपनहुँ एक टा नीक पत्र-लेखकक रूप मे ख्याति अर्जित कयने छथि, क सौजन्य सँ प्राप्त भेल अछि। एहि पत्रसभक माध्यम सँ किसुनजीक संघर्षशीलता, जिजीविषा, तथा साहित्यक प्रति समर्पित भावनाक यथेष्ट परिचय भटैत अछि।

—राज मोहन झा

सुपौल
11-1-67

प्रियवर,

अहाँक प्रथम पत्र (5-12-66क) 10 12-'66 कें भेटि गेल छल। तकरा बाद सँ यैह-वैह करैत रहि गेलहुँ। विलम्ब भ' जयबाक कारणें एक प्रकारक मनोवैज्ञानिक अवरोध जकाँ भ' गेल छल जे आब कने नीक जकाँ पत्र देबनि। 'ग्रहणक छाहरि'क प्रकाशन लेल प्रतीक्षा कयलहुँ आ तकरा बाद अपन 'पुरानक मृत्यु आ नववर्षक जन्म' लेल रुकल रहलहुँ। मूलत: एक टा उत्सुक आलस्य, जाहि मे स्नेहक तरलताक संग प्रतिक्षणक दीर्घसूत्रताक विकल मनोभाव जाग्रत रहैत अछि; सदिखन बनल रहल।

'संस्कारक मोह' पर अहाँक विचार हमरा बड़ नीक लागल। 'ग्रहणक छाहरि' पढ़ि क' शत् प्रतिशत झंकृत भ' उठलहुँ। वस्तुत: मैथिली मे एहन कथा बड़ विरल भ' सकल छैक। बहुत दिन पर (एम्हर हिन्दी मैथिली मिला क') एहि तरहक उत्तम कथा पढ़' लेल भेटल अछि। एहि लेल कतेक बधाइ दी से ओरिआइये नहि रहल अछि। कथा प्रकाशित होइतहि एकर चर्चा-परिचर्चा अपना गोष्ठी मे कयल। एहि गोष्ठी मे किछु हिन्दी, अंगरेजी आ मैथिलीक साहित्यकार, साहित्य प्रेमी तथा मनीषी पाठक लोकनि छथि। किछु प्रोफेसर, किछु अध्यापक आ किछु एडवोकेट लोकनि। सब क्यो एकर प्रशंसा कयलनि! हमरा तँ होइत छल जेना ई सब टा प्रशंसा हमरे भ' रहल अछि, सुनि-सुनि ततेक ने विभोर होइत छलहुँ। सविता आ संजयक माध्यमे समस्त पुरातनक केंचुआ हटा क' वर्त्तमानक जाहि संशय-सर्पक जीवित फुत्कार देखौल गेल अछि से सरिपहुँ बड़ यथार्थ आ मर्मस्पर्शी अछि। समस्त कथा मे जाहि अनुभूत आ निरपेक्ष अंतर्दृष्टिक सामना पाठक कें कर' पड़ैत छैक से अत्यन्त चिन्हार बुझना जाइत छैक। संगहि जीवनक प्रात जे एक टा आचूड़ मानवीय भावनाक सर्वग्रासी करुणा पाठक कें निरविच्छिन्न रूपें अपना 'पकड़' मे रखने रहैत छैक, से तँ सरिपहुँ 'मारभेलस' अछि। कथाक अंत एकदम सँ राकेटक यात्रा कराक' लोक कें मिथिलाक माटि-पानि पर उतारि दैत छैक जे बड़ सोन्हगर अछि, बड़ आकर्षक अछि। हमर शत-सहस्र बधाइ!

राँची विद्यापति पर्व मे हकार छल। नव कविता कहनिहार एक टा हमहीं छलहुँ। बाकी सब नव पर काटे कयनिहार छलाह। करबो कयलनि। ताही सँ उद्वेलित भ' 'पुरानक मृत्यु' लिखल। यैह लोकनि थिकाह पुरानक पियायेल, मुइल, सड़ल लहास कें धू' बनाक' नाम ऊँच कयनिहार, डॉक्टरेट लेनिहार दलपति लोकनि। हमरा कविता मे 'वर्ष' तँ बहाना मात्र थिक। तें आग्रह जे एहि कविता कें एहि दृष्टि सँ एकबेर पुनः पढ़िक' लिखी जे केहन लागल।

सुपौलक कार्यक्रम (कविगोष्ठी वला) 5/6 फरवरी कें हो तकर ओरिआओन क' रहल छी। निश्चित भ' गेला पर पुनः पत्र देब। तावत एक टा निबंध नव कविताक सम्बन्ध मे लिखि राखी जाहि मे अपन दृष्टिकोण स्पष्ट हो। शीघ्र पत्र लिखू।

'किसुन'

अहाँक 8-1-67क खजौली वला कार्ड आइये भेटल अछि। रुसल रहक कोन बात? हम तँ अपना चुप्पी सँ अपनहि विकल भेल छलहुँ। होइ छल जे अहाँ कियैक नहि खिसियाक' लिखैत छी।

सुपौल
2-3-67

प्रियवर,

पत्र भेटल हैत। आर्यावर्त (प्रात: संस्करण) क 28-2 वला अंक मे सेमिनारक अपूर्ण (काटल-खोंटल) समाचार आ 1-3क अंक मे सेमिनारक ब्लॉक छपलैक अछि। ब्लॉक मे प्रो. धीरेन्द्रक नामक बदला मे श्री धूमकेतु छपि गेलैक अछि। ई गलती प्राय: पठैबाकाल हमरहि बुतें भेल अछि। बड़ लज्जित छी। श्री धीरेन्द्र जी केँ अहूँ लिखि देबनि।

कार्य-प्रगति ओहिना अछि। रचना सब नहि आबि रहल अछि। स्मार-पत्र पठा रहल छियनि।

सपरिवार सानन्द छी। छातीक दर्द ठीक अछि। पत्र दिय'।

अहाँक, किसुन

सुपौल
22-5-67

प्रियवर,

अहाँक 'लिफाफ मे अनेक पीड़ा' भेटल। अभिभूत भ' उठलहुँ अभिव्यक्ति सामर्थ्य पर गदगद होइत। प्रणिवेदित आ ओकर प्रतिक्रियाक स्वरूपे अहाँ बदलि देलहुँ। कायल छी।

परीक्षाक नियति तँ भोगहि पड़त। भूत नहि, भूतवाहन बनि क'—सामर्थ्य-वाने लोक मृत क्षण केँ जीवन्त बना दैत छथि। से सामर्थ्य अहाँ मे अछि, ई हमर एकान्त विश्वास थिक। 'शव' केँ 'शिव' बनयबा लेल तँ ओहि परिवेशक स्थिति सँ यात्रा करब आवश्यके! परीक्षाक क्रम मे नवीन उपलब्धि सँ कम महत्त्व मन्थन-श्रम नहि होइत छैक।

चि. रामू (रामानुग्रह झा)क प्रसंग हम एतबे कहब जे ओ एखन नेना अछि; नेना तँ अहूँ छी मुदा ओ अहूँक (पद-मर्यादाक) दृष्टि मे बेसी नेना अछि। प्रो. धीरेन्द्रक मनोभाव बड़ भावुक बुझना जाइछ, बड़ खिच्चा (लेखन मुदा प्रौढ़ छनि) अवचेतनक हिसाबें। श्री सोमदेव जीक बात हमरा व्यावसायिक विवशता जकाँ बुझना गेल। जँ ई हमर भ्रम हो तँ बहुत प्रसन्नता हैत। ओना एकला चलो तँ रवीन्द्रोक्ति अछिये। तें का चिन्ता?

'लहर' आब' लागल अछि। नीक वस्तु।

श्री मायानन्दक रचना भेटल अछि। प्रो. धीरेन्द्र रूसले छथि आ राजकमल जीक

कोनो पत्र नहि भेटल अछि। पत्र तँ धीरेन्द्रोजीक नहि भेटल अछि; तखन अहींक पत्र सँ रूसि रहबाक पता लागल अछि। पत्र देने छिऐनि।

'निबंध संग्रह'क प्रसंग कलकत्ता, सिन्दरी पत्र देने छिऐनि। भरिसक 28-5 केँ सिन्दरी पहुँचब। पाण्डुलिपि (प्रेस कॉपी) तैयार भ' रहल अछि। गाम अयला पर लिखब। गर्मीक छुट्टी कहिया सँ भ' रहल अछि? पत्र (जँ तुरन्त दी) एहि पता पर दी! -c/o श्री महीनारायण झा, पुस्तकाध्यक्ष, एच एम.डी., कांके, राँची-6। जँ सिन्दरी जैब तँ राँची होइत गाम आयब 31-5 धरि वा 1-6 धरि।

'मिहिर'क मादे बहुत रास गप्प अछि। दवाइ खाइये रहल छी।

किसुन

22-5-67

प्रियवर,

काल्हि अन्तर्देशीय पठौल अछि।

आइ, अहाँक 5-10 वला पत्र भेटल। जनकपुर नहि जा सकलहुँ से संदिग्ध मनोभाव हमर रहिए गेल श्री धीरेन्द्र जीक प्रसंग।

अहाँक पाँचम + छठम पाराग्राफ पढ़ि एक टा अवसादक भाव उठल। मुदा ई एक टा क्षणिक स्थिति थिक। बात ठीके किन्तु सर्वथा परिहार्य।

से नहि भेने लोक जीउत कोना? नियति छैक तँ रहओ, हमरो तँ रहबाक अछिए। तखन कतहु ने कतहु सामंजस्य तँ करहि पड़त। हमरा सब केँ जीबाक अधिकार अछि। ताही लेल तँ संघर्ष अछि।

किसुन

सुपौल, 6-10-67

प्रियवर,

अन्तर्देशीय भेटल। स्वातंत्र्य-बोधक हर्ष बड़ पैघ वस्तु थिक। एहि अनुभूतिक लेल बधाइ। रचनाक ममत्व सँ कम मोह प्रकाशनक नहि होइत छैक।

मिहिरक रुखि हमरा अभरल छल अवश्य मुदा एहि रूप मे हम ध्यान नहि देने छलिऐक। अहाँक पत्र काल्हि भेटल आ आइ पुन: 3 मार्च आ 17 मार्चक मिहिर बहार क' कामरूप चौधरीक माटि-पानि वला लेख (दुनू) पढ़लहुँ। अहीं टा नहि, नवलेखन वला सब व्यक्ति केँ लथाड़ मारने छथि (श्री) चौधरि।

कविताक त्याग की भ' सकत? ई आमरण संग नहि छोड़त।

अपन पहिले प्रकाशन मे एतेक अधिक वितृष्ण नहि होउ। मैथिलीक एहि

दु:स्थितिक दायित्व ककरा पर देबैक जे लेखके केँ प्रकाशको होब' पड़ैत छैक? जे हो, स्थिति तँ यैह छैक। तें हताश भेने काज नहि चलत। अन्यथा नहि मानब। टैक्टफुल (?) लोक केँ छोड़ि मैथिली मे कोन लेखक एहि अवसादक वृत्त सँ बाँचल छथि—बहरायल छथि? नहि कस्तूरिका मोह : शपथेन विभाव्यते। शपथ देला सँ कस्तूरीक सुगंधि केँ झाँपल-तोपल नहि राखल जा सकैछ। खौंझेने क्यो अहाँक प्रतिभा केँ नहि नुका सकताह। हम अहाँक बहुत रास कृतिक आशा-प्रतीक्षा मे छी।

किसुन

सुपौल, 23-4-68

पुनि एक टा गप्प तँ लिखबे नहि कयल।'आखर'क राजकमल-अंक लेल अहाँ की द' रहल छिऐनि? दियौन अवश्य।

कांके

24-6-68

प्रियवर,

19-6क डयोढ़ सँ लिखल कार्ड भेटल। किछु नीकेँ भ'क' फेर बड़ बेसी बीमार भ' गेलहुँ। एकदिन बरियातूक राजेन्द्र मेडिकल कालेज हास्पिटल मे भरती रहि क' सेहो भोग यत्किंचित भोगि लेल। पछाति जमाय बाबूक कोशिश पैरवी सँ बेड पर सँ मुक्ति भेटि गेल। कांके सँ करीब 10 मील पड़ैत छैक। हमरा ओत' रहने हिनका लोकनि केँ बड़ असुविधा। जे-से।

'मिथिलावाणी'क खबरि सँ बड़ हर्ष भेल अछि। बड़ आशा अछि। मिर्जापुर दरभंगाक पता सँ एक टा कविता पठा रहल छी। कहिया धरि मुक्ति भेटैछ, से नहि कहि।

पत्र देब। राजकमलक सम्बन्ध मे किछु-किछु लिखि रहल छी।

अहींक, किसुन

सुपौल

15 अगस्त '68

प्रियवर

13-8क अन्तर्देशीय। खूब लिखल अछि। स्वस्थ हयबाक चेष्टा करितहि छलहुँ, आब बनियाँ हयबाक जोगाड़ लगायब। नीक लागल अहाँक संकेत। मुदा करू की? मोनक गति तेहन दूरि भ' गेल अछि जे हठात पिशाच बनल हैत कि नहि, से कहब कठिन। बनक चाही से किछु दिन सँ सोचैत छलहुँ। ई अहाँक पत्र एहि विचार केँ निर्णायक रूप देम' लागल अछि। जँ बनि जायब तँ तकरा हेतु आभारी रहब।

एक टा सलाह पुछैत छी। होइत अछि जे सुपौल सँ एक टा त्रैमासिक कथा-पत्र बहार करी। वार्षिक 4 टाका, एक अंकक 1 टाका। पुस्तकाकार डिमाइ 1/8मे। अपन विचार लिखू। सहयोग करक हैत।

8.9 केँ रेडियो पर कथाक हेतु बजाहटि अछि। दू सँ अढाइ बजे दुपहर दिन मे।

आरो सब नीके।

किसुन

सुपौल

16 जनवरी '69

प्रियवर,

एम्हर बहुत दिन सँ पत्र नहि भेटल अछि। एना कियै? मोन आउल-बाउल भ' गेल अछि।

अपना जीवन-व्यापी रोग सँ संघर्ष क' रहल छी। मुजफ्फरपुर वला समाचार लिखनहि रही। एखन धरि साधारण भोजन पर मने अन्न पर नहि उतरल छी। सुधार धरि मुदा भेल जा रहल अछि।

संकल्प आब फरवरीक अन्ते मे प्रकाशित भ' सकत। कथो कहाँ आयल अछि? कविता संकलनवला काज सेहो अधहा छपिक' पड़ल अछि। ने प्रेस केँ पलखति आ ने रोग हमरा छुट्टी द' रहल अछि। तथापि फरवरीक मध्य धरि अवश्य बहरा जायत से आशा क' रहल छी। पत्रक प्रतीक्षा मे।

किसुन

आरंभ : 7 (जून, 1995)

हे अग्रज!

कीर्त्तिनारायण मिश्र

दर्शन आ कविताक कादो केँ गीजि-गीजि
जखन भ' गेल छी अपस्याँत
समस्या आ संघर्षक मध्य
रोगाक्रान्त शरीर जखन ल' रहल अछि
ऊर्ध्वश्वास
एहि मरण-वेला मे
जखन हम लोकान्तरणक लेल
क' रहल छी अहर्निश कामना
आ कि अहाँ अहू बेर मे
हमरा कात मे ठाढ़ क'
बढ़ि गेलहुँ आगाँ
क' लेलहुँ ज्येष्ठत्व स्थापित
बौक जकाँ कहिया धरि रहब
हम एना टकटकी लगौने
हे अग्रज!
हमरा कम-सँ-कम एतबा तँ बता जयतहुँ

की सह्य नहि भेल अनुजक मृत्युशोक?
की बड़ नीक लागल चश्माक भीतर सँ
टुकुर-टुकुर देखैत ओकर आँखि
की थिर नहि रह' देलक

वय-वार्द्धक्य-विस्मृत
ओकर बाल-सुलभ निर्दोष चापल्य?
बड़ विचलित क' देलक
दिव्या-मुक्ता-नीलू केर
अभावक आँच मे मुरझाइत मुखाकृति
देखि नहि भेल 'शशि' केर धोयल-पोछल सीथ?
की मुइलोक बाद
मरणोत्तर लाभ प्राप्त करैत
साहित्यिक व्यावसायिक केँ देखि
तामसें आग्नेय भ' उठल छल राजकमल?
आ अहाँ बुझाब'क लेल भ' गेलहुँ विदा?
आ कि तेसर वर्षीक अवसर पर
श्रद्धांजलि अर्पित कर'क हेतु
उन्नैस जून सँ पहिने पहुँचबाक
हड़बड़ी मे
कयलहुँ महाप्रयाण?

सोमदेव लिखैत छथि
किसुनजीक मृत्यु सँ लगैछ जेना
हमरोसभ बूढ़ भ' गेल छी
हौ, भाइ
बूढ़े नहि, हतप्राण भ' गेल छी
हमरासभ केँ तँ अपन समाज
पहिनहिं अघोरी बनाक'
श्मशानघाट पहुँचा देने छल!

रोग आ मृत्यु-साधनाक एहि तांत्रिक मुद्रा मे
कहिया धरि धुनी रमौने रहब हमरालोकनि
से नहि कहि
कहिया धरि हारल जुआरी जकाँ
अपन-अपन जिनगी केँ
दाओ पर चढ़ौने हमसभ

खेलक परिणामक प्रतीक्षा करैत रहब?
कहिया धरि सार्त्रक 'रौकान्ते' जकाँ
अपनहि हाड़-मासुक लगौने रहब हाट
कहिया धरि यंत्रणाभोग करैत
लैत रहब ऊर्ध्वश्वास?

आह!
मृत्यु कतेक दुर्लभ होइत अछि
अन्त मे एहि अलभ्य वस्तुक
ऐकान्तिक उपभोगक लेल
किसुन जी,
अहाँ भ' गेलहुँ एकसरे विदा!

हम स्तवन नहि लिखब

स्मृति

भीमनाथ झा

जनिका मे छल कृष्णक
सम्मोहन गुण-महिमा
मधुर वचन, मधु भरल कलम
व्यक्तित्वक गरिमा
देल पिआय हजारो केँ
साहित्यक घुट्टी
गाड़ल 'किसुन' मैथिलिक
दू पग आगाँ खुट्टी

सारथी

मैथिलीक नव कविता आन्दोलनक सारथी
मुखर प्रवक्ता व्याख्याता निर्भीक सत्पथी
कथा निबंध समीक्षा संस्मरणक पटु शिल्पी
के न भेल अछि पुष्ट तृप्त 'किसुन'क मधुरस पी?

स्मृति-चित्र

रामलोचन ठाकुर

किसुन मैथिलीक ओ छला पंडित जी मिथिलाक
रामकृष्ण संगम जेना कोसी ओ कमलाक
कोसी ओ कमलाक उपासक नव उन्मेषक
सतहित जे साहित्य सदा तकरे परिवेशक
कह लोचन कविराय किसुन सन मात्र टा किसुन
बनल सुपौल सुतीर्थ मैथिलक पाबि कें किसुन।

किसुनजीक प्रति

तारानंद झा तरुण

जो रे जून, तों खूनियां छें
तोंही अपना उन्नैसम दिन
सड़सठि मे खयने छलें
मैथिलीक एक टा तप: पूत
ओह! जकरा सोगें एखनो धरि संतप्ते अछि मैथिल समाज
कतेको दिन धरि बेकल भ' सोर पाड़ैत रहल
डबडबायल आँखियें राजकमलक नाम
आ फेर कयलें तों वज्रपात
नहि भेलहु संतोख तें पुनि सत्तरि मे अपन पन्द्रहम दिन
सुरसा सदृश मुँह बाबि गीड़ि गेलें पेट मे
मैथिलीक एक टा दोसरो तप:पूत
मैथिलीक सेवा मे रहथि युग-युग सँ जे व्यस्त दिन-राति
झाड़ि काँट-कूस कयलनि प्रशस्त नवलेखनक बाट
तोड़लनि निज पौरुष सँ विपत्तिक पहाड़
अपन अपकारो सहि करैत रहलाह जीवन भरि परक उपकार
धन्य छलाह ओ किसुन
मिथिला भरि पसरि गेल बहैत बसात जकाँ
जीविते मे जनिक अपन शुभनाम
अर्पित अछि हुनका श्रद्धाक फूल
आ जोड़ल युग भुज सँ अगणित प्रणाम।

परिक्रमा

केदार कानन

सैंतालिस वर्ष पुरान एक टा सक्कत खाम्ह
जे हमरा घर केँ
अपन कान्ह पर लदने छल
ओ आइ खसि पड़ल
हम चकित छी जे दुनिया पूर्ववत अछि
मात्र हमर घर खसि पड़ल
आ सिन्दूरक
एक टा अट्ठाइस वर्ष पुरान रेखा उज्जर भ' गेल
ओ खाम्ह हमर पिता छलाह

निरन्तर भटकैत रहलहुँ
एहि जंगल सँ ओहि जंगल
एहि पहाड़ सँ ओहि पहाड़ पर चढ़ैत रहलहुँ
अनेक-अनेक नदी मे
डूबैत-उतराइत रहलहुँ बेर-बेर

पेट मे अन्न नहि आगि छल
हाथ खाली मुदा संकल्प छल
दिमाग मे नचैत विद्रोहक लुत्ती छल
एहि सभक अलावे दुनू पयर
बहुत-बहुत थाकल रहलाक अछैतो
आगाँ बढ़बाक लेल तत्पर छल

आइ जीवनक पचीस वर्ष बीति गेल
आइयो हमर पयर उत्सुक-उसाहल अछि
कतेक रास बात आओर अछि
जे बलात हम दाबने छी
अपन मुँह जाबने छी
मुदा ई बाते अछि जे बेर-बेर
ठोर पर हुलकी दैत रहैत अछि
सभ टा कथा-व्यथा विद्रोहक कहैत रहैत अछि

एहि पचीस वर्षक हमर उपलब्धि
मात्र किछु मोट कागतक टुकड़ी
थोड़ेक अरजल औपचारिक प्रतिष्ठा
आ किछु परिचिति अछि

एहि सभ चीजक संग एखनधरि
अनेक शहरक परिक्रमा कयने छी
आइ धरि ओहि मोट कागतक टुकड़ी सँ किछु नहि भेटल
जे युनिवरसिटी हमर अनेक वर्ष
दीमक जकाँ चाटि क' देने छल

ओ सभ टा कागत
आ अपन गमाओल सभ टा वयस
जे पहिने फूल जकाँ लगैत छल
आब सूल जकाँ गड़ैत अछि
कखनो पेट मे
कखनो माथ मे
कखनो हाथ मे
ई दोसर बात थिकै
जे हम एखनो एहि सभ
मोटरी-चोटरी केँ उघैत छी
अनेक-अनेक शहरक
परिक्रमा करैत छी

समय आ अनुभवक दंश सहैत छी

परिक्रमे भ' गेल अछि जीवन
पन्द्रह वर्ष पूर्व मे
टूटल हमर घरक खाम्ह
आइयो ओ घटना
आँखिक आगाँ ओहिना अछि
ओ निर्जन दुपहरिया
आ सुन्न भेल बाट
सीदित-पीड़ित करैत अछि एखनो बेर-कुबेर

घर ओहिना अन्हारक आतंक सँ आतंकित
मोन ओहिना रिक्तताक बोध करैत अछि
जेना नहुँए-नहुँए प्रतिदिन
हमरा भीतर क्यो मरैत अछि

मुदा,
एहि मृत्युक लागले हमरा भीतर
क्यो उगैत अछि
हमरा सँ द्विगुणित बल लेने
जेना राति भरिक
सूचीभेद्य अन्हारक बाद
अहल भोरे
नवल-सूर्य उगैत अछि

आकार लैत शब्द/1993

मूल्यांकन

रामकृष्ण झा 'किसुन' : व्यक्तित्व ओ कृतित्व

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

1946 ई.क प्राय: दुर्गा पूजावकाश छलैक। मित्रवर रामकृष्ण झा किसुन' ओहि समय विलियम्स उच्च माध्यमिक विद्यालय मे अध्यापक छलाह। मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा संचालित परीक्षा मे भाग लेबाक हेतु दरभंगा आयल छलाह। हम ओहि समय धरि महारानी लक्ष्मीवती एकेडमी, लहेरियासराय मे अध्यापक पद पर नियुक्त नहि भेल छलहुँ। हमर आवास महारानी अधिरानी संस्कृत महाविद्यालयक छात्रावास मे छल। परिषदक परीक्षा मंत्री डा. श्री सुभद्र झाजीक फ्रांस चल गेलाक कारणें महावैयाकरण स्व. पं. दीनबन्धु झाजी परीक्षा-मन्त्रीक भार वहन क' रहल छलाह। उपर्युक्त महाविद्यालय एक मात्र उत्तमा परीक्षाक केन्द्र छलैक। हम ओहि समय मे परिषदक उपमन्त्री छलहुँ। तें उक्त केन्द्रक केन्द्राधीक्षक हमरे बनाओल गेल छल।

पूजावकाश रहलाक कारणे सभ छात्र गाम चल गेल छलाह। परीक्षा-संचालित करबाक हेतु एकमात्र हम छात्रावास मे छलहुँ। स्वभाव वा संस्कारवश हम अण्डर वीयर आ अधकट्टी गंजी पहिरने छात्रावास केँ झाड़ू सँ साफ क' रहल छलहुँ। सहसा एक गोरनार, दीप्त मुखमंडल, कारी भौर केश, सिन्दूर तिलकित भाल, पान सँ रंगल ठोर, जर्दा सुगन्ध सँ गमगम करैत मुँह, मटकाक कुर्त्ता मे चमचम करैत एक व्यक्ति अबिते कहलनि—'ऐजी! सुनते हो? मुझे 'मिथिला मिहिर' के सम्पादकजी ने भेजा है। इस विद्यालय में एक परीक्षा होने वाली है। मैं वही परीक्षा देने आया हूँ। तीन चार दिन लगेंगे। मुझे एक जगह ठहरने की मिल सकती है?'

हुनक दीप्त मुखमण्डल हमरा प्रथमहि दृष्टिपात मे आकर्षित क' लेलक। हमरा ईहो बुझबा मे भाँगठ नहि रहि गेल जे हमर वेश-भूषा देखि हिनका हमरा प्रसंग छात्रावासक नौकर होयबाक भ्रम भेलनि अछि। हमरा कुतूहल सूझल, कहलियनि—'एँह, सरकार जगह के कोन कमी छैक। अहाँक नाम की थिक आ कतय सँ अयलहुँ हें?' 'मेरा नाम है रामकृष्ण झा 'किसुन'। सुपौल सहर्षा से आया हूँ।' उत्तर सुनि

हम कहलियनि—'हम अहाँ कें एक टा कोठलीए द' दै छी।' किसुनजी मुस्कुराइत कहलनि—'मुझे तीन चार दिन लगेंगे। मेरा छोटामोटा काम होगा वह भी कर दोगे तो जाते समय तुझे खुश कर दूँगा।' हम मित्रवर श्री छीतन बाबूक कोठली फोलि देलियनि। चौकी कें झाड़ि देलियनि। किसुनजी श्री सुमनजीक नौकर कें पेटी आ ओछोनाक मोटरी राखि देब' कहलथिन आ चारि आना पाइ द' क' विदा क' देलथिन। हम हुनका आज्ञा सँ मोटरी फोलि चौकी पर ओछा देलियनि, स्नान कर'क हेतु बाल्टी मे पानि भरि देलियनि, धोती खीचि क' परती पर पसारि देलियनि, जलपानक हेतु लगे मे हलुआइक दोकान सँ पूरी-जिलेबी आनि देलियनि। जलपान क' जाइत काल कहलनि—'सूख जाने पर धोती उठाकर रख देना। मैं कभी आ सकता हूँ।'

2 बजे दिन सँ परीक्षा छलैक। केन्द्र मे व्यवस्थाक हेतु उत्तर-पुस्तिका ओ प्रश्न पत्र आदि ल' हम पहिने चल गेलहुँ। किसुनजी सीट पर आबि बैसलाह। हमरा जहाँ धरि स्मरण अछि, प्रो. श्री आनन्द मिश्रजी सेहो ओहि परीक्षा मे सम्मिलित भेल छलाह। जखन कापी वितरण करैत किसुनजी लग पहुँचलहुँ तँ चकुअयलाह। हम तावत चश्मा पर कविते लिखि क' लोकप्रियता प्राप्त कयने छलहुँ, स्वयं चश्मा लगयबाक प्रयोजन नहि भेल छल। ओ हमरा आकृति सँ छात्रावास मे टहल टिकोरा कयनिहारक आकृति कें मिलाबथि आ चकुआथि।

परीक्षा द' क' ओ प्राय: श्री सुमनजीक डेरा पर चल गेलाह से एक घंटाक बाद घुरलाह। हम अपना कोठली मे बैसि क' उत्तर पुस्तिका सभ कें 'सील' क' रहल छलहुँ। कोठलीक मुहथरि पर आबि, धखाइत बजलाह—'हम अन्दर आबि सकैत छी?' 'अवश्य, अवश्य' उत्तर सुनि भीतर आबि संकुचित होइत कहलनि—'हमरा सँ तँ आइ बड़ भारी गलती भ' गेलैक। अपने कें हम चिन्हलहुँ नहि, तें एहन भयंकर अपराध भ' गेलैक।' हम कहलियनि—'अपने-तपने किछु नहि, पहिल सम्बोधन छलह तुम, आब ओहि मे कोनो परिवर्तन नहि होयबाक चाही।' ई कहबाक हमर आधार छल। हमर पहिल रचना 'मिथिला मिहिर' मे छपल छल। तें हम मिहिरक नियमित पाठक छलहुँ आ किसुनजीक रचना मिहिर मे पर्याप्त छपैत छलनि, हिन्दी-मैथिली दुनू मे जाहि कारणें हिनका नाम सँ पूर्व परिचय छले। हम दुनू पाँखुड़ पकड़ि अपना चौकी पर बैसा लेलियनि। वस्तुत: ओहि दिन ओ हमरा चौकी पर नहि, ह्रदयक आसन पर बैसि रहलाह से आजीवन तँ बैसले रहलाह, देहावसानक बादो ओ स्थान अद्यावधि आक्रान्त कयनहि छथि। हुनक देहावसान सँ हमर एक टा डेन टूटि गेल। पूर्वाञ्चल मे बढ़ैत मैथिलीक आन्दोलनक चरण जे ठमकल ताहि मे एखनहुँ धरि गति नहि आबि सकल अछि।

एक नहि, अनेक मंच पर, एक बेर नहि, शताधिक बेर दुनू गोटे एकत्र भेल होयब। मैथिली साहित्य परिषद हो अथवा विद्यापति-स्मृति पर्व, माध्यमिक विद्यालय शिक्षक संघ हो वा बिहार प्रान्तीय पुस्तकालय संघ, जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो वा तुलसी जयन्ती, मैथिलीक विकासक प्रश्न रहय वा संस्कृतक संरक्षणक—सर्वत्र दुनू गोटे एक संग एकमत रहलहुँ। सहर्षा जिलाक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संघटनक तँ किसुनजी प्राणे छलाह।

पहिल परिचयक बाद पत्राचार द्वारा, दुनू गोटेक सम्बन्ध दृढ़-सँ-दृढ़तर होइत गेल। मैथिली आन्दोलन कें गति देबा मे जाहि प्रकारें हमर बाँहि ओ पुरैत रहलाह आ हुनक हम पुरैत रहलियनि तकरा व्यक्त करबाक सामर्थ्य हमरा शब्द मे नहि अछि। हमर बड़का भाइ ओ छलाह आ हुनक बड़का भाइ हम छलियनि।

हमरा दुनू गोटेक व्यक्तिगत सम्बन्ध मे एक गोट मनोरंजक घटना अछि जकर उल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत।

23 अप्रैल 1967क 'मिथिला मिहिर' मे भाइक एक टा 'निवेदित' शीर्षक कविता प्रकाशित भेल छलनि। कविताक स्वरूप छलैक :

हम की करू?
हमर प्रेम
फोटोक ओ फ्रेम तँ नहि थिक
जे फोटोक पुरान भ' गेला पर वर्षाक टघार सँ
दिवार वा उचरिनक चटला सँ
दूरि भेल एक फोटो कें हटा क'
दोसरा मे फिट क' देल जाइत अछि।
हम की करू?
हमर प्रेम पिकासोक कलाकृति तँ नहि थिक
जे संरचनाक प्रक्रिया सँ रूपायित होइत अछि
आरम्भिक क्षण सँ 'फिनिशिंग टच' धरि
नियोजित यथार्थ कें अभिव्यक्ति दैत अछि
प्रदर्शनी मे सजला पर जकर स्तुति लोक करैत अछि
अमूर्त्त कें मूर्त्त करबाक जे महिमा पबैत अछि।
हम की करू?
हमर प्रेम कोनो एहन वस्तु तँ नहि थिक
जे हम कीनि क' पौरि क' ओरिया क'
भार मे साँठि दी

बेन मे पठा दी
की उपहार मे अर्पित क'
नैवेद्य जकाँ उत्सर्गि दी।
हम की करू?
हम स्वयं नहि निश्चयत: बुझैत छी
जे हमर प्रेम संगति थिक की विसंगति
स्थापित थिक की संभाव्य
पज़ेबा थिक की पजेबाक माटि।
हम की करू?
हम स्वयं नहि बुझि पबैत छी
तें हम अपन प्रेम जे अवश्य हमर 'हम' थिक
हमर समग्र सत्ता
से हम अहाँ संग निवेदित करैत छी
अपन समस्त ज्ञान समस्त ज्ञानवत्ता।

एहि कविता केँ पढ़लाक बाद हम एक कविता लिखल जे 'प्रणिवेदित' शीर्षक सँ मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल[1] ओ 'आशा-दिशा' संकलन मे 'प्रेम: एक परिभाषा' शीर्षक सँ संकलित अछि। एहि कविताक स्वरूप अछि :

हमर प्रेम की थिक से हमरा धरि बुझल अछि,
हम मात्र हमहीं छी, अहुँ केर छूति नहि,
प्रेम केँ विसंगति हम बूझल नहि जीवन मे
संगति थिक प्रेम जे समाज बीच रखने अछि।
हमर 'हम'—
पुत्र, पिता, मित्र, भाय, बन्धु, पति, शिक्षक ओ छात्र
आदि रहि क' समाज बीच सब किछु बनैत अछि।
सब किछु बनबा मे
बहुत किछुक काज छैक
अत: ताहि सब किछु केर करितो जोगाड़ अछि।
पिता केर प्रेम—
सौंस नारिकेर पुत्र हेतु
ऊपर सँ सक्कत ओ रुच्छ सन लगैत अछि,
भीतर मे सजल, तरल, दुग्धोज्ज्वल कोमल फल
खयले पर बुझल जाय, व्यर्थ स्वाद कहने की।

पुत्र केर प्रेम—
पिता केर हृदय-घृतक हेतु रौद थिक
देखला सँ लगले पिघलि जाइछ। शिक्षक केर प्रेम—
शुद्ध भुल्ली कुसियार बुझू
देखबा मे ठेङा सन देखि चौंकि उठी, मुदा
जँ जँ चिबबैत जाउ, मधुरइ बुझैत जाउ।
मित्र केर प्रेम—
पानि चिन्नी केर रूप
स्वत: आपस मे मिलला सँ भिन्नता समाप्त तुरत।
भाय-बन्धु केर प्रेम—
डोरी ओ डोल बनल
तृषित जे समाज तकर तृषा मेटा दैत अछि।
जीवन थिक साइकिल,
पति-पत्नी केर प्रेम 'क्रैंक चेन' बनल
साइकिल केँ आगाँ घिचैत अछि।
किन्तु जे समग्र रूप प्रेमक हम देखल से
दूध मध्य अन्तर्हित नेनुक समान अछि
मथला सँ फक्क द' क' ऊपर अलगि जाइछ
लाख यत्न कयलो पर मिश्रित नहि होइत अछि।

एहि कविताक प्रकाशनक बाद बहुतो नारदक वंशधर लोकनि मोंछ मे मटिया तेल लगब' लगलाह जे आब बझल दुनू मित्र मे। तकर कारण छल जे 1958-59क करीब मे तथाकथित प्रयोगवादी ओ परम्परावादीक मध्य पद्यमय शास्त्रार्थ 'मिथिला दर्शन'क मंच सँ घन-घोर रूपें भेल छल। ओहि क्रम मे बहुतो महारथी कलम भंजने छलाह। हमरो टू गोट कविता 'तथाकथित प्रयोगवादीक प्रति' तथा 'घिनबै चाही तँ घिना लिअ' शीर्षक छल आ भाइ पछाति नवतावादीक पक्षधर भ' गेल छलाह। ओही पृष्ठभूमि मे किछु झलिबज्जा लोकनि केँ विश्वास भ' गेल छलनि जे आब दुनू मित्र मे खूब मचत। परन्तु 8.6.67क लिखल किसुनजीक पत्र भेटल जकर मात्र एक शब्द केँ छाँटि अविकल रूप एतय प्रस्तुत क' रहल छी—

सुपौल, 8.6.67

स्वस्ति श्री बड़का भाइ केँ गोड़ लगैत छिऐनि। अपना निवेदितक प्रत्याख्यान मे 'प्रणिवेदित' पढ़ि बड़ हँसी लागल। तुरन्ते एक टा कविता फुरायेल, मुदा से अपनहि नीक नहि बुझना गेल। कथ्य एतबे जे कबीर लुच्चा छल जे कहियो कहने छल—

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाय। राजा परजा जेहि रुचे, सीस देइ लेइ जाय।' प्रणिवेदितक यैह मान्यता अभिव्यक्त भेल अछि। जे से, हम कबीरक सिद्धान्त मानि क' लिखने छी निवेदित, आ तों भाइ सरिपहुँ कबीर केँ काटि क' क्रान्तिकारी काज कयलह अछि। हर्ष ई जे भाइ क्रान्ति कयलनि अछि। कविता नीक लागल। मइ-जून 67क वैदेहीक सशक्त सम्पादकीय बड़ रुचिकर छह। साहित्यकारक मूल्य स्थापना आ राजनेताक वंचकता पर खूब चोटगर लिखलह अछि। साहित्य परिषदक की सब होइत छैक? आरो सब कुशल किने? हम सपरिवार सानन्द छी। पत्र दैह। तोरे—'किसुन'।

तकर बाद हमरा दुनू गोटेक बीच केहन मधुर सम्बन्ध रहल से हमर लिखल संस्मरण 'अश्रुतर्पण' सँ ज्ञात कयल जा सकैछ।

व्यक्तित्व

एक साधारण वित्तक ब्राह्मण परिवार मे जन्म भेलनि। परीक्षाक नाम पर व्याकरणशास्त्री आ मैथिली साहित्य परिषदक उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण छलाह। एक हाइ स्कूल मे साधारण शिक्षकक पद पर काज करैत छलाह। जीवनक आदिए काल मे मातृहीन भ' गेल छलाह। रुग्ण ओ वृद्ध पिताक सेवा, मातृहीन अनुजक शिक्षा, बाल विधवा बहिनिक पालन, कोसीक विभीषिका सँ पीड़ित घर-दुआर खेत-पथार संग-समाज सभ केँ थतमारि क' रखबाक दायित्व, एक मात्र दुलारू भागिन (प्रो. मायानन्द मिश्र)क अभिभावकत्व आ अपना संग लागल दरिद्रता सँ घोर संघर्ष। एहि चतुर्मुखी प्रहार सँ बचबाक हेतु एक दिस स्कूलक नोकरी, दोसर दिस पैतृक जीविका पौरोहित्य, तेसर दिस अर्थोपार्जनक हेतु पुराण बाँचब आ ताहि पर साहित्य-साधना सेहो। साहित्य सर्जन मात्र नहि, संगहि साहित्यकारोक सर्जन मे संलग्न। हिनका सन स्थिति मे रहलाक कारणें कतेको प्रतिभा कुमहड़क बतिया जकाँ आँगुर देखबिते सड़ि गेल अछि, परन्तु ई अपन अद्‌भुत प्रतिभा, अनुपम शील, अद्वितीय कर्मनिष्ठता ओ असाधारण आत्मबलक प्रसादात् जतहि रहलाह, सभ पर व्याप्त भ' जाइत छलाह।

26 जनवरी, गणतन्त्र दिवस पर सुपौल मे एक सार्वजनिक राष्ट्रीय मेला लगयबाक स्वप्न केँ साकार क' नगरक विकासक लेल ओहि मेला सँ भेल आय केँ लगयबाक अद्‌भुत विचार हिनके मस्तिष्कक उपजा छलनि। ओ मेला आबहु लगैत अछि, परन्तु एक मात्र हिनक अभाव मे आब ओ श्री, ओ शोभा, ओ व्यवस्था कहाँ पाबी?

सावधान ई कतेक छलाह तकर उदाहरण हमरा लग अनेक सुरक्षित अछि। 1957 ई. मे हम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक महामन्त्री निर्वाचित भेल छलहुँ।

कार्यकारिणी समितिक एक सदस्य भाइओ छलाह। समितिक दू गोट बैसक भ' चुकल छलैक। तेसर बैसकक सूचना गेल छलनि। साधारणतः तीन बैसक धरि भाग नहि लेनिहारक सदस्यता स्वतः समाप्त भ' जयबाक नियम छैक, परन्तु परिस्थिति विशेषवश ओहू बैसक मे भाग लेबाक स्थिति मे नहि छलाह। तुरन्त क्षमा प्रार्थना पूर्वक अपन विवशताक सूचना समिति केँ पठा देलथिन।

समय निष्ठा मे सेहो अद्वितीये छलाह। वर्ष मे एक नहि, अनेक बेर सुपौल, सहर्षा, मधेपुरा, बनमनखी, मुरलीगंज आदि विभिन्न स्थान मे हमरा अवश्य आहूत करैत छलाह। हुनका नीक जकाँ बुझल छलनि जे श्री झिंगुर कुमरजीक सदृश समयनिष्ठ ओ कर्मठ व्यक्तिक प्रशासन मे रहि हमरा काज करय पड़ैत अछि। अतः आमन्त्रण पत्र मे रेलवेक टाइम टेबुल, आवश्यकतावश, सेहो लिखि दैत छलाह जाहि सँ कोनो असुविधा नहि हो।

अपना नगर मे पण्डितजी नामें सम्बोधित होइत छलाह, परन्तु प्रशासनिको पदाधिकारी पर तेहन वर्चस्व छलनि जे ओहो लोकनि बिनु हिनक परामर्श सार्वजनिक कोनो काज नहि करैत छलाह। किन्तु 'ईश्वरेच्छा वलीयसी'। एहन सतर्क, सावधान, कर्म कुशल, पटु रहितो एक क्षणक हिनक असावधानता हिनका हेतु प्राणघातक भ' गेलनि। पेन्सिलिन केर प्रतिक्रिया हिनका पर होइत छलनि। एक तँ विवशते भेला पर ई एलोपैथी चिकित्सा मे जाइत छलाह। अन्यथा प्राकृतिक चिकित्सा, ताहि सँ बेसी भेल तँ होमियोपैथी, नहि तँ आयुर्वेदिक। अन्तिम समय मे कुर्जी अस्पताल मे जखन भर्ती भेलाह तँ सुनल अछि जे एलोपैथी डाक्टर केँ सभ सँ पहिने कहि दैत छलथिन जे पेन्सिलिन केर प्रतिक्रिया होइत अछि, परन्तु ओहि दिन नहि कहि सकलथिन आ पेन्सिलिनेक प्रतिक्रियाक फलस्वरूप ई अप्रतिम प्रतिभा हमरा सभक बीच सँ छिना गेल। एहने विशाल छलनि किसुनजीक व्यक्तित्व।

कृतित्व

(एहिठाम पहिने हम कहि देब' चाहैत छी जे किसुनजी सदृश बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकारक समग्र अध्ययन समय सापेक्ष अछि। हमरा जतेक अल्प समय मे सूचना भेटल ताहि अल्प अवधि मे हिनक सभ विधा केँ स्पर्श क' विषय केँ दूरि करबाक अपेक्षा हिनक मुख्य प्रवृत्ति मात्र पर विचार करब उपयुक्त बुझना गेल।)

साहित्य क्षेत्र मे सर्वप्रथम ई हिन्दीक माध्यम सँ प्रवेश कयलनि। प्रथम प्रकाशित रचना 'कौन है वह' कविता 1939 ई. मे 'बालक' हिन्दी मासिक मे प्रकाशित। 1941 सँ मैथिली मे लेखन, परन्तु प्रथम प्रकाशित रचना 'शिशु सँ' मिथिलामिहिर मे 1945 ई.मे।[3] संग्रहोक प्रकाशन मे हिन्दी मे अगुआयल रहलाह। 'आओ गायें' बाल साहित्य,

जकर भूमिका हमरे लिखल अछि, 1949 मे आ 'इन्द्रधनुष' कविता संग्रह 1950 ई. मे प्रकाशित भेल छनि।[4] आरम्भ मे हिन्दीक प्रति बेसी मोह छलनि। परिचय भेलाक बाद पहिल पत्र जे हमरा लिखने छलाह से हिन्दी मे। यद्यपि तकर स्पष्टीकरण सेहो देने छलाह। ओहो पत्र हमरा लग सुरक्षित अछि। एतय हम कहि देब' चाहब जे हिनक मृत्युक बाद हिनका सम्बन्ध मे संस्मरण लिखबाक आग्रह स्व. राजेश्वर झाजी कयने छलाह आ हम संस्मरण प्रस्तुत क' देनहुँ छलियनि। ओ स्व. कुमार गंगानन्द सिंहजी एवं स्व. किसुनजीक स्मृति मे 'मिथिला भारती'क एक अंक प्रकाशित करय चाहैत छलाह, परन्तु ओ अंक प्रकाशित नहि भ' सकल। हमर ओ रचना 'मिथिला भारती'क फाइल मे कतहु होयबाक चाही। संस्मरण लिखबाक हेतु जखन पत्रक फाइल मे तकलहुँ तँ गोट अस्सीएक पत्र हमरा सुरक्षित भेटि सकल। ओहि पत्र सभ सँ मैथिलीक संगहि किसुनजीक अपनो गतिविधि पर पूर्ण प्रकाश पड़ि सकैत अछि परन्तु बाद मे क्रमशः मातृभाषाक प्रति कर्तव्यबोध तीव्र-सँ-तीव्रतर होइत गेलनि। मैथिली सँ निकट होइत गेलाह आ हिन्दी सँ दूर, परन्तु हिन्दीओ मे ततबा काज छनि जकर मूल्यांकन फराक सँ आवश्यक अछि।

साहित्य सर्जना मे कविता, कथा, निबंध, एकांकी ओ पत्रकारिता सभ क्षेत्र मे समान गति छलनि। अनेक पत्रक संवाददाता सेहो छलाह। अतः हिनक सम्पूर्ण कृति पर अनुसन्धान अपेक्षित अछि, जाहि सँ सम्पूर्ण मूल्यांकन संभव भ' सकय।

प्रयोजन पड़ला पर ई सभ विधा मे लिखैत छलाह अवश्य, परन्तु मूल उत्स छलनि हिनक कविता। हृदय सँ कवि छलाह। उदार, असीम उदार, ईर्ष्या नामक वस्तु सँ छूति नहि छलनि। एहिठाम हम हिनक मूल उत्स मात्र पर विचार करब।

हिनका प्रसंग आन-आन विद्वानक विचार हम पहिने उपस्थित करैत छी—स्व. प्रो. रमानाथ झाजी, जे मैथिली मे आचार्य मानल जाइत छथि, अपन विचार लिखने छथि—'आत्मनेपदक ख्यातनामा लेखक रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिलीक प्रौढ़ कवि छथि जे मैथिली-काव्यक नवीनतम प्रवृत्ति कें आत्मसात् करबा मे ककरहु सँ पाछाँ नहि रहैत छथि। इएह प्रगतिशीलता हिनक काव्य-प्रवृत्तिक विकासक विशेषता थिक। ई एमहर प्रयोगवादी वा नव कविताक रचना दिसि विशेष प्रवृत्त भेल छथि आओर ताहि मे युग-जीवनक कुंठा एवं अनास्थाक चित्रण कयने छथि वैयक्तिक ओ नवीन विम्ब तथा प्रतीक ग्रहण कय। 'स्मृति', 'चौरचनक चान' तथा 'नववर्षक चारि प्रतिक्रिया' तेहने रचना थिक, किन्तु नववर्षक चारि प्रतिक्रिया कें छोड़ि अन्य रचना आत्मानुभूतिक व्यंजनाक दृष्टिएँ नवीन गीतक श्रेणी मे सेहो परिगणित भ' सकैत अछि। भाषा पर कविक अधिकार सर्वत्र परिलक्षित होइत अछि जे मुख्यतः संस्कृतनिष्ठ होइतहुँ कविक अन्तर्मुखी भावना कें अभिव्यक्त करबा मे प्रायः समर्थ

होइत अछि। उत्कट प्रयोगवादी रचना मे नवीन अभिव्यंजनाक चमत्कार उत्पन्न करबाक हेतु अंग्रेजी हिन्दी आदि शब्द एवं सामयिक जीवन सँ सम्बद्ध उपादान प्रस्तुत रूप मे ग्रहण कयने छथि। किसुनजीक अधिकांश रचना मे विषय ओ भावक बौद्धिक प्रतिपादन कविताक प्राण रागात्मकता पर आवरण सन दैत प्रतीत होइत अछि। तें जाहि रचना मे बौद्धिकता कें त्यागि विशुद्ध भावाभिव्यक्तिक भूमि पर अवतरित होइत छथि से शुद्ध कवित्वक दृष्टिएँ हिनक उत्कृष्ट रचना होइत अछि। 'वसन्त' शीर्षक कविता हिनक तेहने रचना थिक जाहि मध्य भावानुभूतिक रागात्मक स्वाभाविकता तथा भाषा-शिल्पक सुलभ, सरस ओ मधुर गतिशीलता हृदय कें मुग्ध क' दैत अछि।'[5]

डॉ. श्री शंकरकुमार झा अपन विचार व्यक्त करैत लिखने छथि—'सहर्षा जिला मे, वर्तमानकाल मे, मैथिलीक ज्योति कें घर-घर पहुँचओनिहार, मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी, साहित्यक सभ विधा मे विश्वासपूर्वक लेखनी चलओनिहार, आत्मनेपदक यशस्वी कवि किसुनजी मैथिली कविताक प्रायः कोनो प्रवृत्ति नहि बाँचल हेतैक, जाहि मे स्तरीय रचना करबा सँ बाज आयल होथि। पहिने ई गीत लिखैत छलाह, तँ मौलिक, प्रवाहपूर्ण, ओजस्वी ओ प्रसादगुण युक्त, किन्तु जेना-जेना मैथिली कविता मे नवीन प्रवृत्ति जोर पकड़ैत गेलैक, हिनक लेखनीयो ओम्हरे मोड़ लैत गेलनि आ आब तँ नामधारी नव कविता ओ अकवितोक क्षेत्र मे ई ओहिना अपन हस्तसिद्धत्वक परिचय द' देलनि अछि। अत्याधुनिक नव कविता किंवा अकविता मे दुरूहता, अनास्था, अर्थापत्ति आ कतो-कतो अश्लीलता आदि जे दुर्गुण आबि गेलैक अछि, ताहि सँ ई साफ बाँचल छथि एवं ओहि मे जे स्वाभाविकता, अनुभूतिक यथावत् प्रस्तुतीकरण, आडम्बरहीनता तथा वर्तमान दुरावस्थाक प्रति विद्रोह आदि विशेषता छैक, तकर हार्दिक समर्थक आ पूर्ण प्रचारक छथि।[6]

प्रो. श्री मेधातिथिक हिनका प्रति विचार छनि जे—'वर्तमान युगक संघर्षशील मानवक प्रगतिऋचाक उद्गाता रामकृष्ण झा 'किसुन' केर कविता मैथिली साहित्य मे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि। वर्तमानकालीन कविताक प्रवृत्तिक विश्लेषण करबा काल किसुनजीक विभिन्न रचना मानदण्डक काज करत। आइ सभक डेग एके दिशा मे बढ़ि रहलैक अछि आ ओ दिशा अछि युग-युग सँ अभिशप्त त्रस्त मानव जातिक मुक्ति। हिनक कविता मे नवयुगक आशा आ विश्वासक झंकार स्पष्ट रूप सँ सुनि पड़ैत अछि।[7]

संस्कृत साहित्यक छात्र रहलाक कारणें संस्कृतक प्रभाव हिनका संस्कार पर पड़ब स्वाभाविक छलनि। प्रमाणस्वरूप हिनक पद योजना मे संस्कृत बहुल शब्दक प्रयोग सर्वत्र देखबा मे अबैत अछि। हिनक एक मात्र प्रकाशित कवितासंग्रहक नाम

थिक आत्मनेपद। ई सभ केँ ज्ञाते अछि जे संस्कृतक धातु किछु परस्मैपदी अछि तँ किछ आत्मनेपदी तथा किछु उभयपदी। क्रियाक फल प्राप्तिक अभिलाषा अपना हेतु रखनिहार जखन प्रयोग करैत छथि तँ आत्मनेपदी क्रियापदक प्रयोग कयल जाइत अछि, यथा-श्री सत्यनारायण पूजन महंकरिष्ये, मुदा अनका निमित्त जखन कयल जाइत छैक तँ परस्मैपदी क्रिया पदक प्रयोग होइछ, यथा—श्री सत्यनारायण पूजन महं करिष्यामि। सामान्य लोक आत्मनेपदक सामान्यो अर्थ बुझबा मे अक्षम अछि, गूढ़ार्थक तँ गप्पे नहि हो, परन्तु एहि तथ्य सँ अवगत रहितो पुस्तकक नामकरण आत्मनेपद अवश्य हिनक संस्कृताह संस्कारक प्रतिफल थिक। पद योजनाक एक उदाहरण अछि—

'तन सँ क्षयिष्णु, मन सँ ओ मानव अविनश्वर
ओ सत्यान्वेषी मनुज कि जे अछि अमर-प्राण
द्यावा पृथिवी मे सब सँ महती महीयान
दै रहल सृष्टि केँ असत्-मरण सँ क्रमिक त्राण
अधुना पर्यंत न भेल सत्य उपलब्ध पूर्ण
नहि भेल असत्यक एखनहुँ धरि ई शिला चूर्ण
बढ़ि रहल शिखा-सम ज्ञान-वर्त्ति लै मनुज दीप
क्रमशः विनष्ट कै जटिल मनुष्यक अंधकार
सत्यक सुस्थापित करय विश्व मे शिव-सुन्दर
इन्द्रियातीत आलोक-रश्मि केँ निर्विकार।[8]

प्रतिक्षण अगणित समस्या सँ ओझरायल रहितहुँ जीवन संग्राम मे ई घबड़यलाह नहि। हिनक अटूट आत्म-विश्वास नाव केँ फूटल ओ वायु केँ प्रतिकूल रहितहुँ अपन गन्तव्य दिस बढ़यबा मे सर्वदा ओ सर्वथा समर्थ रहलनि। हिनक सभ सँ पहिल रचना (जे 'विद्यापति के देश में' नामक कविता संकलनक सम्पादन करैत छलहुँ तँ ताहि हेतु 1949 ई. मे पठौलनि) हिनका व्यक्तित्व दिस हमरा बेसी आकर्षित कयलक। ओ रचना काल-देशक सीमा सँ ऊपर उठि सार्वकालिक ओ सार्वदेशिक अछि। ओहि मे आन्तरिक शक्तिक प्रति हिनक आस्था रूपायित भेल अछि। कविताक स्वरूप निम्नलिखित अछि :

लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी
जीर्ण-शीर्ण जिंजीर कड़कि केँ टूटि गेल अछि,
अणु-अणु सँ सम्बद्ध दासता छुटि गेल अछि,
नव सूर्यक नव-रश्मि गगन मे फूटि रहल अछि,
सृष्टि आइ नव सृजन-पुष्प ई लूटि रहल अछि,

विश्वक कण-कण सँ स्वागत हम पाबि रहल छी।
लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी।
हमर मार्ग थिक अपन स्वयं निर्माण भेल अछि,
हमरहि जय सँ नियतिक चिर कल्याण भेल अछि,
सुनि हुंकार हमर तिमिरक अवसान भेल अछि,
हमर क्रान्ति उद्घोषक चिर-सम्मान भेल अछि,
अग्निक शत-शत शिखा कुचलि हम दाबि रहल छी।
लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी।
हमरा स्वर सँ गुंजित अछि ई गगन असीमित,
जागू यौवन हे अनन्त तेजोमय दीपित,
जागू हे दुर्धर्ष शक्तिधर अटल अकम्पित,
जागू, उठू, करू नव युग मे प्राण संचरित,
अग्नि वीण पर युगक गीत हम गाबि रहल छी।
लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी॥[9]

एहन रचना पढ़ि दुर्बल-सबल समान रूपें वीर रसाप्लुत भ' उठैत अछि। अग्नि वीण पर युगक गीत गौनिहार साधकक आत्म-विश्वास पद-पद सँ प्रस्फुटित भ' रहल अछि।

'विद्यापति के देश में' कविता संग्रह दू खण्ड मे विभाजित अछि। पहिल खण्ड मे हिन्दीक ओ दोसर खण्ड मे मैथिलीक कविता सभ संकलित अछि। हिन्दी मे जे रचना पठओने छलाह तकर स्वरूप अछि :

उग रहा सूरज कि मिटती जा रही है रात
जा रही है रात मिटती
फट रही तम की जवनिका
और अब तो लड़खड़ाते पाँव हैं इस अंधियारी के
उजाला आ रहा है,
दूर वंशी के स्वरों में झूम
हिमगिरि के शिखर पर बैठ कोई
इस नये संसार की नूतन प्रभाती गा रहा है,
गा रहा है यह कि
जय हो हे मानव मनुष्य!
कर्मशील मनुष्य जय हे सृष्टि के सम्पूज्य!
हे जमाने के उपेक्षित और शोषित देव!

जय तुम्हारी बोलते भूगोल और खगोल
अब निरे अज्ञान की यह अंधियारी मिटेगी ही
पौ फटेगी—
फट रही है,
स्वस्थ होंगी ये दिशाएँ
भूमि से आकाश तक सब साफ होगा
चहचहायेंगे विहग दल
झूम पुलकेगी धरित्री
और इस युग-सरोवर के कष्ट कीचड़ में
खिलेगा मनुज के सुख का सरस जल जात,
उग रहा सूरज कि मिटती जा रही है रात।

शक्तिधर इन राक्षसों के हाथ
पिस रहा युग हाय! जिसमें
पिस रहा संसार।

किन्तु अब बस
अब सँभलकर मिल गये हैं सब जगह के खूनवाले
खून वाले वे कि जिनका पी लिया सारा लहू
अब हड्डियों के शेष भर हैं

बँध गई है आज मुट्ठी हड्डियों की
जो पड़ेगी, और अब भी पड़ रही है
खून के चसके हुए वे दाँत उनके टूटते ही जा रहे हैं

मिटेगी यह विषमता
सब एक होंगे आज के मानव
कि बस अब एक से सुख-दुख बँटेंगे
सभी होंगे सुखी औ सन्तुष्ट जीवन
रह न पायेगा कहीं कोई कभी अब
मनुज विह्वल, वस्त्र-हीन, विपन्न
या. कि निर्धन, निरानन्द, निरन्त

और अब इन मन्दिरों के देवता से
मस्जिदों गिरजा घरों के
गौड या अल्लाह से ऊँचा रहेगा
हाड़ मांसों का बना यह मनुज सर्वश्रेष्ठ
लिख रहा पूरब क्षितिज पर
नये युग का मधुर अरुणिम प्रात
लाल स्याही से यह कुछ इस तरह की बात
उग रहा सूरज कि मिटती जा रही है रात।'[10]

एहि कविता मे दलित शोषितक संगठन सँ उद्भूत जे जनशक्ति तकर अन्तरक आत्मविश्वास अभिव्यक्त भेल अछि; परन्तु 'लाल स्याही से' पद पर विशेष रूपें ध्यान देबाक थिक। जखन हिनक ई कविता पढ़ैत छी तँ—सहसा यात्रीजीक निम्नलिखित पंक्ति स्मरण पथ पर चल अबैत अछि—

धन्य हे श्रमशील मानव विश्वभरि मे व्याप्त
धन्य तोहर जाति
नरक कैँ सुरपुर बनाबक लेल
सदच्छन तों रहै छह अपस्याँत
एक दिस सँ तोड़ि रहला राच्छसक तों दाँत
सम्मिलित स्वेच्छा प्रणोदित जयति जय जन-शक्ति
हृदय मे अछि एक केवल तोहरे टा भक्ति
आन देवी देवता दिस नइँ नवै अछि माथ'।।

आरंभे सँ ई श्री यात्रीजी सँ प्रभावित छलाह। क्रमश: श्री यात्रीजीक साहित्यिक प्रभाव ओ विचारधारा सेहो हिनका शिल्प कैँ बिन प्रभावित कयने नहि रहलनि, परन्तु एहि ठाम एक टा विषय विचारणीय अछि जे आचार सँ भिन्न रहितहुँ कोनो विचार कैँ क्यो पूर्णत: आत्मसात् क' सकैत अछि? हमरा दृष्टिएँ कोनो विचार यदि ककरहु पर थोपल जाइत छैक तें तकरा ओ उघैत अछि अवश्य, परन्तु आचार मे बिनु परिवर्तन भेने ओहि विचार कैँ आत्मसात नहि क' पबैत अछि। विचार तँ देखा-देखी मे बदलैत अछि, परन्तु आचार मे तँ क्रिया करय पड़ैत छैक। एहि ठाम हमरा कविशेखर स्व. बदरीनाथ झा जीक ओ पाँती स्मरण होइत अछि जखन हैहय गुरुकुल सँ घुरला पर अपना पिता द्वारा पूछल प्रश्नक उत्तर दैत छथिन—

वाल्य अवस्था सँ जे दृढ़ संस्कार।
तकर न हो परिवर्तन वा परिहार॥[12]

हमरा जनैत श्री यात्रीजीक अनुकरणे मे 'लालस्याही से' पदक प्रयोग कयने

छथि। अन्यथा ई आचार सँ छलाह परम स्मार्त्त, प्रतिदिन चानन फूल ल' घंटी बजा क' शालग्रामक पूजा कयनिहार, नित्य पितर केँ जल दैत छलाह। तें विचार सँ समतावादी होइतहुँ कम्यूनिष्ट नहि भ' सकैत छलाह आ लाल स्याही तँ तकरे प्रतीक थिक। हिनका देवी-देवता लग माथ नहि झुकैत छलनि से बात व्यावहारिक जीवन मे तँ नहिएँ दृष्टिगोचर भेल, हिनक रचनो मे एक दिस ई आस्था प्रकट भेल छनि—

देवि हमर अछि यैह याचना देल जाओ वरदान[13]

अत: प्रो. मेधातिथिक कथन—'ज्योतियाचना' मे कवि मे शिथिलताक भावना देखल जाइत अछि। बुझि पड़ैत अछि कवि केँ जेना अपना पर विश्वासे नहि रहि गेल होइनि तहिना देवीक शरणागत बनैत छथि।[14]

हमरा जनैत श्री यात्रीजी प्रगतिशीलताक नाम पर लिखलनि—

भ' गेलाह बाबा कपिलेश्वर आन्हर आर बहीर
सुनितहि नव नचारी बूढ़ा केँ उठैत छन्हि खौंत।[15]

अथवा— *अगड़ाही लागउ, वज्र खसउ*
बरु किच्छु कह',
पचकल लोढ़ा तों धन्य रह'
नहि नमतै तोरा खातिर किन्हु हमर माथ
पाथर भेलाह तों सरिपहुँ बाबा वैद्यनाथ॥[16]

तँ प्रगतिशील कविक पंक्ति मे बैसबाक हेतु ईहो लिखलनि—

जे पुण्यक बदला स्वर्ग दैछ से व्यापारी
बनिञा ईश्वर नहि दानी अछि; छह व्यर्थ त्रस्त
थिक भाग्यवाद हारल असाहसिक तर्कजाल
तो सर्वशक्तिसम्पन्न करह निज पथ प्रशस्त।।[17]

कहबाक तात्पर्य जे विचार सँ अत्याधुनिक ओ प्रगतिशील होइतो श्री यात्रीजी जकाँ आचारक दृष्टिएँ प्राचीनता अथवा बद्धमूल संस्कार सँ पिण्ड नहि छोड़ा सकलाह। एहि ठाम ईहो ध्यातव्य थिक जे भाग्यवाद ओ ईश्वरवाद केँ कवि एके मानने छथि। यदि ईश्वरक सत्ता के अस्वीकार क' देल जाय तँ लोक भाग्यक भरोस नहि राखत, परन्तु हमरा जनैत भाग्यक भरोस बिनु कयनहुँ ईश्वरक सत्ता पर आस्था राखल जा सकैत छैक अथवा ईश्वरक अस्तित्व स्वीकार करितहु अपना पौरुष पर लोक केँ विश्वास रहि सकैत छैक। परन्तु प्रगतिशील बनवाक लोभ मे संस्कारक विरुद्धो यदि लिखैत छथि तँ मान' पड़त जे ओ प्रभाव थोपले छनि। आगाँ चलि एही प्रगतिशीलताक कारणें नवतावादी हिनका अपन आचार्यत्व देलथिन जकर प्रतिफलन थिक मैथिलीक नव कविता नामक संकलन। अस्तु, एहि प्रसंग पछाति विचार कयल

जायत।

समाज मे मिथ्या मर्यादाक मोह पसरल अछि। उपनयन, विवाह, मुंडन आदि अवसर पर निरर्थक व्यय क' परिवारक परिवार एहि इज्जतिक रक्षा मे नि:स्व भ' जाइत अछि, ताहि पर कविक उक्ति छनि—

बेटिक गहना बन्हकी रखने जँ चलि रहले काज
धूमधाम सँ श्राद्ध हैत आ गद्-गद् हैत समाज
फल्लां बाबू मुइला कयलनि चिल्लां बाबू भोज
आगाँ पाछाँ जे हो क्यो की काज करै अछि रोज?
... ...
की करबै लय, बिका जाय जँ गाछी आ बँसबारि
कन्यादान करब तेहने ठाँ पढ़य न गौआँ गारि
... ...
गोलेदारक वा मरवाड़िक बढ़ल जाइछ जँ कर्ज
सरकारी 'लोनक' नोटिस जँ भेटय तँ की हर्ज
मुदा हैत उपनयन ठाठ सँ जेहने मुंडन भेल
की न करै अछि लोक कहू तँ अपना इज्जति लेल?[18]

दीनताक मारल, आर्थिक संकट सँ आक्रांत लोक नव विवाह द्विरागमन क' ओहि घरनी केँ अन्न-वस्त्र देबाक हेतु विवश भ' जखन परदेश जयबाक हेतु बाध्य भ' जाइत अछि तँ सांसारिक सुखक परित्याग करैत ओकर शरीर कोना आगाँ आ चित्त कोना पाछाँ खिचाइत रहैत छैक तकर स्पष्ट चित्र 'बटोहीक व्यथा'[19] शीर्षक कविता मे अभिव्यक्त भेल अछि। एहने सन भावना केँ कोना शब्दक रेखा मे कवि चित्रित करबा मे सफल भेल छथि तकर रसास्वादन 'असम्भाव्य'[20] शीर्षक कविता सँ कयल जा सकैत अछि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादो जनसामान्यक जीवन सँ दुख-द्रारिद्रयक अन्त नहि भ' सकलैक। राजनेता लोकनिक बाह्य चाक चिक्य, मिथ्या आश्वासन ओ दिनानुदिन बढ़ैत स्वार्थान्धता पर कवि व्यंग्य करैत छथि—

उड़ा क' सबतरि तिरंगा
पहिरि खादिक कोट अंगा
मानि ली जे सब गोटय छी सर्वथैव स्वतन्त्र
जयति जय गणतन्त्र
मुदा ई सब टा लिफाफे मात्र थिक
... ...।

ऊँच मंचक उपर चढ़ि जे
गर्व सँ फहरा रहल छथि राष्ट्रध्वज केँ
अमुक नेता, अमुक अधिकारी
कि देशक कर्णधार महान
ओहि दिन केँ ताकि रहल अछि स्वदेशक लोक
जहिया होइनि हुनका एहि सभहुक ज्ञान
से जखन भ' जैत
तखने हैत ग' चरितार्थ ई गणतन्त्र[21]

समस्त आशा-आकांक्षा केँ हृदय मे जोगओने अध्ययन क्रम मे अनेक अभिलाषा मनोरथ केँ हृदय मे पोसने नवयुवक जखन विश्वविद्यालयक डिग्री लेने भाइभतीजावादक परिधि सँ बाहर रहलाक कारणें सभ दुआरि खट-खटाक' घूरि अबैत अछि आ सोझाँ मे निराशाक घोर अन्धकार पसरल रहैत छैक तकर मनक भावना व्यक्त भेल अछि 'तथापि' शीर्षक कविता मे—

मुदा सभक थिक मूल पाइ
तकरे अभाव
नहि भेल नौकरी, पढ़ब लिखब बेकार
व्यर्थ थिक ज्ञान, जीवनक बदहजमी थिक
इन्टरव्यू सब बेर बेकारे
हम नहि छी भातिज, भागिन, सरबेटा ककरो
जकरा बल सँ जनतन्त्रक युग मे,
पबैत अछि लोक नौकरी।[22]

केहन नग्न सत्यक उद्घाटन एहि पंक्ति मे भेल अछि?

एहि वैज्ञानिक युग मे विज्ञानक बढ़त चरण केँ देखि कवि केँ आत्म गौरवक बोध होइत छनि तँ कहैत छथि—'सर्वत्र मनुष्यक आइ व्याप्त अछि विजय रोल'[23] परन्तु जखन मनुष्य द्वारा विज्ञानक निर्मातृशक्तिक दुरुपयोगक कारणें महाविनाशक आशंका देखि पड़ैत छनि तँ—

वर्त्तमान केँ देखि भयाकुल
आ भविष्य केँ चिन्ता संकुल
उठल कविक सहसा सशक्त स्वर
देखू एमहर भस्मासुर बनि
निर्माता केँ भस्मीभूत करक हित सत्वर
दौड़ल आबि रहल अछि मनुजक अनुचर ई विज्ञान
जन-जन केँ आतंक ग्रस्त क'

मन-मन केँ सन्तप्त त्रस्त क'
बना रहल भूतल केँ अनुक्षण नष्ट-भ्रष्ट वीरान
थर-थर थर-थर काँपि रहल अछि
नाशक आशंका सँ विषण्ण बनि
भयाक्रान्त भूलोक[24]

एहिठाम एक टा उद्धरण देबाक लोभ हम करैत छी—

नव चिन्तन नव भावभूमि पर
नव-नव सृष्टि विधान
करय नित नूतन मनु सन्तान

जाहि प्रसादें—

भ्रमण करक हित नभ अनन्त ई
नव ज्योतिर्मय दिग्दिगन्त ई
सभ्यताक वन मे वसन्त ई
सर्वशक्ति-सम्पन्न कहाबय एकमात्र विज्ञान
जकर कर्ता थिक मनु सन्तान
किन्तु विजय नहि अहंभाव पर
मनक कलुष विकृतिक प्रभाव पर
मनुज चलय दनुजक स्वभाव पर
तखनहुँ भेटि रहल नहि कत्तहु
दानवताक निदान
विकल मन देखय मनु सन्तान[25]

दुनू कविता मे समाने आशंका व्यक्त कयल गेल अछि, परन्तु एक टा केँ प्रगतिशील ओ दोसर केँ परम्परावादी कहल जाइत अछि जखन कि दुनूक रचना-शिल्प मे मात्र अन्तर अछि। वस्तुतः किसुनजीक कवि केँ जीवनक समग्र वैषम्य ओ समाजक सभ समस्या पर दृष्टिपात करैत देखल जाइत अछि, परन्तु हुनका तँ पीर बवर्ची भिश्ती खर सभ किछु बनय पड़ैत छलनि आ ताहि पर सँ जन्मक रोगी रहलाह। जाहि कारणें जीवन मे पर्याप्त अवकाश कहाँ जे अपन सम्पूर्ण प्रतिभाक उपयोग रचनात्मक दिशा मे लगा सकितथि। परिणामतः हिनका सन प्रतिभा सम्पन्न लोक सँ प्रभूत परिमाण मे साहित्य रचना सँ समाज वंचिते रहि गेल। अन्यथा मातृभाषाक अतिशय श्रीवृद्धि होयबाक सम्भावना छल।

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे नवतावादी लोकनि हिनका आचार्यक पद देलथिन आ ई ओकर एक प्रवक्ताक रूप मे प्रस्तुतो भेलाह।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादक एहि तीन दशक मे काव्य क्षेत्र मे अनेक वाद अबैत गेल। प्रगतिवादक बाद प्रयोगवाद, प्रयोगवादक पछाति नव कवितावाद पर सँ कूदिक' अ-कवितावाद पर आबिक' अटकल अछि जे स्वच्छन्दतावादक परिधि पार करैत उच्छृंखलतावादक सीमा धरि प्रवेश क' चुकल अछि। आइ धरिक सम्पूर्ण स्थापित मान्यता केँ बदलि देबाक उद्घोषणा चारू भाग सँ भ' रहल अछि। एहि प्रसंग श्रीवामन शास्त्रीक मतक उल्लेख क' देब अप्रासंगिक नहि होयत। जनजीवनक गह-गह मे राजनीति दूबि जकाँ गछारने अछि। ओ राजनीति साहित्योक क्षेत्र मे उत्फाल मचओने अछि। अपना देशक राजनीति माने छल-छद्म ओ मिथ्या प्रचार द्वारा आत्मश्लाघाक स्थापन। एहि पृष्ठभूमि मे श्री वामन शास्त्री अपन विचार व्यक्त करैत छथि—'जँ एहि क्षेत्र मे छल-छद्म चलैत अछि तँ मानय पड़त जे लेखक अमृतपायी देवगणक बीच धूर्तता सँ प्रविष्ट भेल राहु तुल्य थिक, देवत्व नहि रहलहुँ वेशधारी थिक। ओकरा ग्रहक रूप मे मान्यता भले भेटि जाउक, ओ विशुद्ध देव (तँ) भ' नहि सकैत अछि। ओना ग्रहरूप मे राहु केतुओ पुजले जाइत अछि, हँ विशुद्ध देवपूजा काल ओकर कतहु पुछारि नहि, किन्तु एहन राहु आ देवताक भेद करत के? के सूर्यचन्द्र अपन ग्रासक संकट लेअय।'[26] वस्तुतः सत्य कहब सम्प्रति संकट काल उपस्थित क' सकैत अछि, परन्तु तेँ किसुनजीक संग दू शरीर एक प्राणक सम्बन्ध रहल आ एहि बिन्दु पर मतभेद रहल तेँ एकर चर्चा करब आवश्यक प्रतीत भेल।

नव कविताक स्वरूप स्थिर करैत राजकमल लिखैत छथि—'हमरा विचारेँ कविताक लेल ई आवश्यक नइँ अछि जे छन्द, लय, गीतात्मकता, प्रसार विधि, यतिप्रणाली केँ मान्यता देल जाय। कविताक लेल एक्के वस्तु आवश्यक अछि शब्द! शब्द बिना कविता नइँ कैल जा सकइए, बस! कविता गद्य नइँ थिक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधान केँ मानि केँ चलत। गद्यक लेल व्याकरण-सम्मत एक टा सुनिश्चित स्वरूप आ मार्ग बना लेल गेल अछि...कविता मे एहन कोनो नियम उपनियम नइँ अछि। छन्द योजना कविताक शृंगार मात्र थीक, आभूषण मात्र थीक आ कविताक वस्त्र थीक शब्द'[27] हमरा जनैत शब्द अभिव्यक्ति मात्रक हेतु आवश्यक छैक तखन तँ जतय, जे, जे किछु बजैत अछि सभ कविते कहाओत। गद्यक हेतु जाहि अनुशासन केँ ओ स्वयं स्वीकार करैत छथि ताहि सँ गद्यक अस्तित्व कविता सँ पृथक स्वीकार करैत छथि। तें कविता ओ गद्यक विभाजक जे रेखा थिक तकरे यतिप्रणाली अथवा लयात्मकता कहल जाइत छैक। यदि ओकरा अहाँ स्वीकार नहि करैत छी तँ गद्य ओ पद्यक विभाजन नहि होयत। यदि ई कही जे कोनो नियम, उपनियम, व्याकरण आदिक अनुशासन केँ तोड़ैत जे किछु कहल जाय से थिक कविता। तखन ताड़ी पिउनिहारक समग्र अपलाप कविताक कोटि मे आबि जायत! वस्तुस्थिति ई

अछि जे भारतीय काव्यशास्त्र गद्यो सँ कठिन अनुशासन पद्यक हेतु निरूपित कयने अछि। सभ अनुशासनक उल्लंघन करितहुँ यति प्रणाली ओ व्याकरणक अनुशासन लग आबि बाध्यता अछि ओकरा तोड़ने ओ अपलाप मात्र कविता कहाओत।

हमर विवेच्य कवि नव कविताक प्रसंग अपन मत व्यक्त करैत लिखैत छथि—

'मैथिली साहित्य मे नव कविताक सम्बन्ध मे पर्याप्त आ स्पष्ट चिन्तन ने एखन भेल अछि आ ने तकर स्थितिये सरल भेल अछि, कारण जे एक तँ लोकक मन मे पुरान आग्रह बद्धमूल अछि आ दोसर एखन धरि नव कविताक सम्पूर्ण चित्र सुपुष्ट आ स्पष्ट नहि भ' सकल अछि।'[28]

'जहाँ धरि पुरान आग्रहक प्रश्न अछि, काव्यक आत्मा रस केँ हम सभ मानैत छी। रस इन्द्रिय ग्राह्य वस्तु थिक, इन्द्रिय ग्राह्य वस्तुक प्रति आग्रह नहि, स्वतः प्रवृत्ति होइत छैक। अबोधो नेना तीत आ मधुर स्वाद नीक जकाँ जनैत छैक; मधुर सँ आकृष्ट आ तीत सँ विकृष्ट होइत छैक। पाठकक अबोध केँ अपन अस्पष्टताक दोष दिऐक से स्वेच्छा थिक। स्वेच्छारिता लग तर्क देब निरर्थक। आगाँ ओ लिखैत छथि जे शब्द योजनाक सम्बन्ध मे मितव्ययिता एकर दोसर विशेषता थिक। भरतीक शब्द, अनावश्यक विशेषण तथा अगबे संगीतमयताक दृष्टिएँ प्रयुक्त पदावली सँ अपना केँ मुक्त राखब नव कविताक रचना पद्धति भ' गेल अछि।

एहि कथन केँ हिनके कविताक कसौटी पर कसला उत्तर संगत नहि पबैत छी। सत्यान्वेषी शीर्षक कविताक एक टा उपशीर्षक अछि 'विजय' जाहि मे कवि मानव-मस्तिष्कक चिन्तन-मन्थन सँ उद्भूत विज्ञानक उपलब्धिक वर्णन करैत छथि—

अछि भेल आइ युगस्रष्टा मनुजक चिर-अनुचर
ई महाभूत जल, अग्नि, पवन, क्षिति, नभ अनन्त

एहिठाम विचारणीय अछि जे भूत पदेन पंचभूतक बोध होइते अछि। मितव्ययिताक दृष्टिञे पुनः जल, अग्नि आदि पदक उल्लेख अनावश्यक अछि। नभक अन्त नहि छैक ईहो स्पष्टे अछि पुनः अनन्त विशेषणक प्रयोगक कोन सार्थकता रहि जाइछ? अतः उपर्युक्त कथन युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइछ। मितव्ययिताक बदला नव कविता मे एके पाँतीक बारंबार दोहरयबाक फैशन चलि गेल अछि जकर शतशः उदाहरण देल जा सकैछ[30]। अगबे संगीतमयता केँ अनिवार्य तत्व प्राचीनो कविताक आचार्य लोकनि नहि मानने छथि। जहाँ धरि अनावश्यक विशेषणक प्रश्न अछि नव कविता मे भरि बाकुट दुलार, औचित्यक पोर-पोर, पिजुआयल दृष्टिकोण, आकाशक एक कतार, रौदीक देवाल, कारी हँसी सदृश उटपटांग प्रयोग पर्याप्त मात्रा मे होइत देखल जा रहल अछि। अनुपयुक्त विशेषण केँ नवीन बिम्बक संज्ञा द' झाँपल नहि जा सकैत अछि।

मनोरंजनार्थ एक टा उदाहरण—एक व्यक्ति प्रयोग कयलनि जे रमेश केँ स्कूल मे ततेक मारि लगलनि जे आँखि एक घंटा धरि मुतैत रहलनि। आँखि कोना मुततैक? एहि प्रश्नक उत्तर मे तर्क देल गेलैक जे नोर आ लघुशंका दुनू शरीरेक तरल मल थिकैक, तें ई नव प्रयोग भेल। एहन नव प्रयोग सँ साहित्यक कोन दिशा निर्देश होइछ से सुधी सभ जानथि। ककरो तर्क छनि जे जीवन मे ततेक व्यस्तता आबि गेलैक अछि जे प्रकृतिक फूजल पृष्ठ पर दृष्टिपात करबाक पलखति लोक केँ छैके नहि।

ई कर्मभूमि थिकैक। शरीरधारी केँ शरीर धारण करबाक हेतु कर्मनिष्ठ बनहि पड़ैत छैक। कारण शरीर एक सन्तुलित तापमान पर चलैत छैक। ओहि तापमान केँ बनाक' रखबाक हेतु जठराग्नि केँ इन्धनक प्रयोजन होइत छैक। ओ इन्धन जुटयबाक हेतु लोक केँ कर्म करय पड़ैत छैक। कर्म मे जे जतेक सम्यक् रूपें संलग्न रहैत अछि ओकर जीवन-यात्रा ततेक सुगम होइत छैक। अत: कर्म मे लागल रहलाक कारणें प्रकृतिक पृष्ठ के देखबाक पलखति यदि नहि होइत छैक तँ ई कोनो नवीन बात नहि थिकैक। नवीन बात तँ ई थिकैक जे एतेक कर्म-संकुल स्थितिओ मे क्यो ओहि पृष्ठक अवलोकन करबाक पलखति बाहर क' लैत अछि। ओही अनुभूति केँ कविताक बीज हम मानैत छी। ओहि अनुभूतिक अभिव्यक्तिए तँ कविता थिक। ई यदि सभ मे भूखपियास जकाँ समाने रहितैक तँ कवि-दृष्टि ओ सामान्य लोकक दृष्टि मे अन्तरे नहि रहितैक। इएह अन्तर कवि केँ जनसाधारण सँ फराक करैत छैक। ओहि अनुभूति केँ दोसर धरि सम्प्रेषित करबा मे जे जतेक पटु होइत अछि से ततेक सफल कवि मानल जाइत अछि। हमरा दृष्टिएँ नव कविता मे सम्प्रेषणीयताक त्रुटि अछि। हम सभ नव कविता पर ई आरोप नहि लगबैत छी, बहुतो सक्षम नव कवि छथि जेना स्वयं किसुनजी, ओ मायानन्द मिश्र, रामदेव झा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, एहि सम्प्रदायक आचार्य श्री यात्रीजी आदि बहुतो गोटे छथि जनिक सम्प्रेषण विधि कतहु दुरूह नहि छनि। किछु गोटे एहनो छथि जे बहुतो ठाम सोझरायल दृष्टि रखैत छथि तँ कतोक ठाम ओझरायल (जाहि मे सोमदेव, कुलानन्द मिश्र आदि छथि) परन्तु बहुतो छथि जनिका कवि कर्मक अवगति लेशमात्र नहि छनि, अपन अपलाप केँ नव कविताक नाम पर खपब' चाहैत छथि आ वामन शास्त्रीक शब्द मे देव नहिओ रहैत वेशधारी बनि गेल छथि। एहन तथाकथित कवि अथवा अकवि मे सम्प्रेषण शक्तिक सर्वथा अभाव छनि। किसुन जीक संग एहन बिन्दु पर हमरा मतभेद रहैत छल। एहि दृष्टिएँ ओ स्वयं नव कविता मे दुरुहता ओ दुर्बोधता केँ स्वीकार करैत छथि, परन्तु जखन नव कविताक प्रवक्ताक काज कर' लगैत छथि तखन कविक असामर्थ्यक उद्घाटन नहि क' पाठक केँ अबोध मानि बैसैत छथि। तें लिखैत छथि—'जन-साधारण द्वारा ई नवीन साधन पूर्ण परिचित आ अभिज्ञान नहि रहला सँ नव कविता मे दुरुहता वा दुर्बोधता उत्पन्न होइत अछि। मुदा एकरा बूझब

आवश्यके टा नहि, हमरा सभक सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरा लोकनि पछड़ले रहि जायब आ इतिहास मे अपराधी मानल जायब।'[31] हमरा जनैत इतिहास मे एहन अस्पष्ट, दुरुह, ओझरायल विचार व्यक्त कयनिहार अपराधी मानल जयताह, पाठक नहि।

एहिठाम आचार्य रमानाथ झाजीक मत सँ हम पूर्णत: सहमत छी। हुनक उक्ति छनि—'यात्रीजी मुक्तवृत्त लिखए लगलाह जाहि मे छन्दक बन्धन तँ नहि छैक, परन्तु लयक प्रधानता छैक ओ जे ओ स्वयं कहल करैत छथि, मुक्तवृत्तक सफल प्रयोग ओएह कए सकैत छथि जनिका छन्दक ज्ञान छन्हि, लय केँ ग्रहण करबाक कान छन्हि। खेदक विषय थिक जे आधुनिकताक तरंग मे कतोक कवि एहि दिस ध्यान नहि दय तेहन कविता लिखैत छथि जकरा मुक्तवृत्त सेहो नहि कहि सकैत छी, कारण ओ वृत्त थिके नहि। नव कविता मे ई स्वच्छन्दता एतेक बढ़ि गेल अछि जे एहि जातिक कतोक कविताक प्रसंग उमानाथ बाबूक उक्ति सर्वथा समीचीन जँचैत अछि जे कविता तँ ओ थिके नहि, ओकरा नीक गद्य सेहो नहि कहि सकैत छी। लय केँ त्यागि देला सँ कविताक शिल्पहि पर आघात होइत छैक। ... जाहि कविता मे लय समेत नहि छैक से हमरा बुझने कविता नहि कहल जाए सकैत अछि।'[32]

किसुनजी जें छन्दोबद्ध रचना मे पटु छलाह तें हिनक रचना पर एहन दोषारोपण नहि कयल जा सकैत छनि।

मनोरंजनार्थ एक दोसर उदाहरण अछि : कहलथिन—कनेक हमर तौनी लेने आउ। ओ व्यक्ति कोदारि आनि क' राखि देलकनि। ओ अकचकाइत कहलथिन—औ! अहाँक गाम मे लोक कोदारिए केँ तौनी कहैत छैक? उत्तर देलकनि—हँ। कारण, तौनी सेहो लोक कान्ह पर रखैत अछि आ कोदारि सेहो कान्हे पर राखल जाइत छैक, तें हमरा गाम मे लोक एकरे तौनी कहैत छैक। शब्द मे एहन नवीन अर्थवत्ता देबाक हेतु जे प्रतिबद्ध रहथु, अपने गाम धरि सीमित रहय पड़तनि, आन गाम मे ई नवीन अर्थवत्ता चल' बला नहि।

नव प्रयोगक नाम पर एक सेर नाम, आध सेर चाकर पातपर, आध गज चूड़ा, एक गज दही, एक बीत चीनी, चारि इंच मेरिचाइ, तीन इंच नोन लोक अहींक गाम मे खाइत होयत, हमरा गाम मे नहि।

नव कविता जाहि ठाम सुस्पष्ट अछि ओहिठाम ध्वन्यात्मकता छैक जे कोनो नव बात कविताक हेतु नहि थिकैक। उदाहरणस्वरूप मात्र तीन गोट उद्धरण उपस्थित अछि—

ओ बाजल—आत्मा-परमात्मा आ अन्तर आत्मा
की होइत छैक से हम अहाँ सभ केँ कहब

परंच, हमर एक टा शर्त अछि
अहाँ सभ मिलि क' पहिने हमरा
एहि मन्दिरक महन्थ बना दिय'
आ महन्थ बनलाक बाद ओ
गाम भरिक लोक केँ डँटैत बाजल—
'आत्मा-परमात्मा आ अन्तर आत्मा
किछु नहि होइत छैक
हम जे कहैत छी से अहाँ सभ सुनू
हम जे कहैत छी सैह अहाँ सभ करू।' [33]

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य मे एहि सँ जे ध्वनित होइत अछि ताहि मे ने दुरूहता अछि ने दुर्बोधता, परन्तु अन्तर ओ अन्तः शब्द मे जे अर्थ भिन्नता छैक तकर अवगम नहि रहलाक कारणें कवि अन्तरात्मा शब्द केँ तोड़ि अन्तर आत्माक प्रयोग कयने छथि जे बोद्धाक हेतु त्रुटिपूर्ण अछि, तथापि कथ्य वा सम्प्रेषणीयता मे कोनो दौर्बल्य दृष्टिगोचर नहि होइछ।

दोसर उदाहरण—

अपना कोठली मे
खिड़की केबाड़ केँ बन्द क' बैसल छी,
अपन नाक मुह दाबि
साँस वाक् बन्द क' जे
कहीं हमर नाकक साँस, मुहक उच्छ्वास
वातावरण मे मीलि
ओकरा विषाक्त ने क' दैक,
आन्दोलित ने क' दैक।
बच्चा सब अबैत अछि बाहर सँ
कहैत अछि—बाहर मे छैक बड़ गर्मी
उत्ताप आ गुमार छैक।
खिड़कीक फाँक सँ हुलकी द' देखै छी—
आहि रे बा, आहि रे बा!
कतहु अछि हवा ने बसात
तखन किए डोलै छै पीपर केर पात?? [34]

आपातकालीन स्थितिक परिप्रेक्ष्य मे जाहि तरहक औनाहटिक अनुभव लोक करैत छल आ भीतरे-भीतर जाहि प्रकारक आक्रोशक आगि सुनगि रहल छल तकर

प्रतिफल लोकसभा तथा विधानसभाक निर्वाचन परिणाम सभक सम्मुखे अछि। एहि तथ्य केँ उपर्युक्त कविता स्पष्टता सँ ध्वनित करैत अछि। अतः ध्वनिवाद काव्यक क्षेत्र मे कोनो नव वस्तु नहि थिक, नव कवितो मे जाहिठाम स्पष्टता अछि ओहि ठाम ध्वनिएक महिमा थिक।

समद्विवाहु त्रिभुजक आधार परहक
दुनू टा कोण जकाँ होइत अछि बरोबरि
मोंछ लग मोंछ
आ धोंझ लग धोंछ [35]

वर्तमान समय मे स्वार्थसिद्धिक हेतु जाहि प्रकारक गोजामिलान चलैत अछि ताहि पर स्पष्ट व्यंग्य उभरि आयल अछि।

अवकाश ओ स्थानक अल्पताक कारणें एहि ठाम अधिक उदाहरण नहि देल गेल अछि। शीघ्रता मे लिखबाक जे बाध्यता छल तें बहुतो नव कविक जनिका मे अर्हता छनि, नाम ओ रचनाक उल्लेख नहि भ' सकल अछि। आरो स्पष्टता सँ विश्लेषण नहि भ' सकल अछि। अतः जानि-बुझि क' ककरो उपेक्षा नहि कयल गेल अछि।

उपसंहारक क्रम मे एके तथ्य केँ व्यक्त करबा मे कथ्य मे जे भिन्नता अछि तकर एक उदाहरण द' हम विराम लेब। मित्रवर किसुनजी सत्यान्वेषी कविताक उपशीर्षक 'विजय'[36] मे विज्ञानक उपलब्धिक प्रसंग लिखने छथि—

अछि भेल आइ युग-स्रष्टा मनुजक चिर-अनुचर
ई महाभूत जल, अग्नि, पवन, क्षिति, नभ अनन्त।
कोटानुकोटि जीवन धारी चर-अचर निखिल
अति सूक्ष्म-पृथुल, अणु-महत्, वृहत्-लघु दिग्-दिगन्त
अछि आइ मनुज मे केन्द्रित ई आसिन्धु क्षितिज
अम्बुधि-वसना पृथिवी विस्तृत दश-दिक् खगोल
दुर्गम अरण्य, चट्टान खण्ड, सर्वोच्च शृंग
सर्वत्र मनुष्यक व्याप्त आइ अछि विजय रोल।'

एही विषय केँ आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' अभिव्यक्ति दैत छथि—

प्राचीन जीर्ण जगतीक वीन—
मे बाजि रहल अछि युग नवीन
झरि रहल पुरातन पत्रजाल,
अंकुरित देखू नव-नव प्रबाल,
पट पीत-धूसरित प्रकृति त्यागि

छथि पहिरि रहल परिधान लाल
जगतीक पड़ल उद्यान जीर्ण
छथि आगत युग ऋतुपति नवीन।
टूटल अछि क्षुद्र देश सीमा
भूगोल बनल एके खीमा,
अछि दिशा संकुचित गति वेगें,
पुनि काल सन्तुलित यन्त्र बले
परमाणु विभाजित अंश-अंश
नव सर्जनक मूलक ध्वंस-ध्वंस
सहजहि अतीत टूटल सितार
जत युक्त वर्तमानहिक तार
प्राचीन जीर्ण जगतीक वीन—
मे बाजि रहल अछि युग नवीन।[37]

उपर्युक्त दुनू कविताक अध्ययन कयला सँ स्पष्ट अछि जे जकरा नव कविता कहल गेल अछि तकर रचना-पद्धति मे छन्द नहि अछि, परन्तु लयात्मकता विनष्ट नहि भेल अछि तथा किछु क्लिष्ट शब्दावलीक प्रयोगक कारणें प्रसादगुणक अल्पता आबि गेल अछि। जकरा पुरान कविताक पंक्ति मे राखल जाइत अछि ताहि मे छन्द अछि, सरल शब्दावलीक प्रयोगक कारणें प्रसादगुण अछि। कथ्य केँ सर्वजनबोध्य बनयबाक प्रयास अछि। ई कोनो भिन्नता तेहन नहि अछि जाहि सँ एक केँ नकारल जाय आ दोसर केँ सकारल।

निष्कर्ष ई जे रामकृष्ण झा 'किसुन' एक सिद्धहस्त, समतावादी, प्रगतिशील कवि छथि जनिक कविता सँ मैथिलीक श्रीवृद्धि भेल अछि। जनिक रचना मे युगक प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूपें प्रतिबिम्बित भेल अछि, परन्तु जहाँ धरि नव कविताक प्रवक्ताक रूप मे देखैत छियनि ताहि मे स्वरूप निर्वचन मे अपन मन्तव्य स्पष्ट करितो नव कविता केँ परिभाषित करबा मे स्पष्टता नहि आबि सकलनि अछि। पूर्वहु कहल अछि, पुनः कहय चाहैत छी जे 'किसुनजी'क साहित्यक समग्र मूल्यांकनक हेतु अनुसन्धान अपेक्षित अछि।

स्मृतिसंध्या : 1980

संदर्भ :

1. मिथिला मिहिर : 14 मइ 67
2. तत्रैव, 19 जुलाई 1970

3. मैथिलीक नव कविता, परिचय, पृ. 29 राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला प्रकाशन, सुपौल, 1971
4. तत्रैव
5. नवीन गीत संग्रह, पृ. 222, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा
6. कविता कलाप, पृ. 82, अ.भा. मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा
7. मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि, पृ. 128, ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा
8. आत्मनेपद, पृ. 4-5
9. विद्यापति के देश में, पृ. 129, विद्यापति गोष्ठी, दरभंगा
10. तत्रैव, पृ. 49-53
11. चित्रा, पृ. 84, तीरभुक्ति पब्लिकेशंस, 1 सर पी.सी. बनर्जी रोड, प्रयाग
12. एकावली परिणय, पंचम सर्ग, पृ. 69, पाठक एण्ड संस, दरभंगा
13. आत्मनेपद : 'ज्योति याचना' शीर्षक कविता, पृ. 53
14. मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि, पृ. 130
15. चित्रा, 'युगधर्म' शीर्षक कविता, पृ. 74
16. पत्रहीन नग्न गाछ,
17. आत्मनेपद, पृ. 57
18. तत्रैव, इज्जति कोन पदार्थ—पृ. 55
19. तत्रैव, पृ. 48
20. तत्रैव, पृ. 53
21. आत्मनेपद, पृ. 16
22. तत्रैव, पृ. 14
23. तत्रैव, पृ. 4
24. तत्रैव, पृ. 23
25. आशा-दिशा, 'मनु संतान' शीर्षक, पृ. 37, नवरत्न गोष्ठी, मिश्र टोला, दरभंगा
26. मिथिला मिहिर, 29 मइ, 77—पृ. 25
27. स्वरगंधा : भूमिका, पृ. 7
28. आत्मनेपदक भूमिका, पृ. 3-7
29. तत्रैव, पृ. 7
30. 'मैथिलीक नव कविता' : संपादक 'किसुन', राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला प्रकाशन, सुपौल, पृ. 19, 60, 62, 63, 162
31. मैथिली नव कविता : भूमिका, पृ. 3
32. नवीन गीत संग्रह : भूमिका, पृ. 36
33. श्री पूर्णेन्दु कुमार चौधरी, 'चारि टा कविता' मिथिला मिहिर, 22 मइ 77
34. डा. रामदेव झा, स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा
35. चित्र विचित्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पृ. 3
36. आत्मनेपद, पृ. 4-5
37. प्रतिपदा, मैथिली प्रकाशन, राजकुमारगंज, दरभंगा, पृ. 76-79

पंडित रामकृष्ण झा 'किसुन'

ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

परिचय ओ संस्मरण

रामकृष्ण झा 'किसुन'क जन्म सुपौलक उपनगर (जिला-सहरसा) मे भेल छलनि— एक निम्न मध्यवर्गीय मैथिल ब्राह्मण परिवार मे। सुपौल कोसी क्षेत्र मे पड़ैत छलैक आ हिनक जुआन होइत-होइत हिनक अन्नपूर्णा अठारह हाथ पानिक तर मे जलमग्न भ' चुकल छलथिन। पुरहिताइ हिनक कौलिक पेशा छलनि। आ उच्च शिक्षा पयबाक मध्यवर्गीय सौभाग्य हिनका नहि प्राप्त भ' सकल छलनि।

छरहर सौम्य शरीर। स्मित हासी अधर। प्रसन्न मुद्रा। चिक्कन छह-छह मुखमंडल। ओ बहुत मधुरभाषी लोक छलाह आ छलाह तेहने लोकप्रिय। हिनका बहुत पैघ जीवन संघर्ष करय पड़ैत छलनि अपन अस्तित्व कायम राखक लेल। पैघ परिवार। जीविकाक कोनो ठोस आधार नहि।

ई मात्र एक टा पंडित शिक्षक छलाह स्थानीय उच्च विद्यालय मे। मैथिलीक परीक्षा देने छलाह मैथिली साहित्य परिषदक मैथिली परीक्षाक आयोजन द्वारा। एहिठाम हुनक परिचय विख्यात कवि श्री अमर सँ भेलनि आ ई परिचय आजन्म बन्धुत्व मे, पारिवारिक एकात्मता मे आ साहित्यिक सहयात्रा मे परिणत भ' गेलनि। हिनका सँ प्रथम परिचय सहरसाक मैथिली कान्फ्रेन्स मे हमरा भेल छल। ई घटना '55-56 ई.क थिक। हिनक साहित्यकार आ कविक हैसियत सँ पूर्ण विकास भारतीय स्वतंत्रताक बादे भेलनि।

परिवेश

पूब मे पूर्णिया, पच्छिम मे दरभंगा, उत्तर मे हिमालय आ दक्षिण मे गंगा। स्वतंत्रताक उपरान्तक उमंग भरल युग। संविधान सँ वंचित मातृभाषा मैथिली। मैथिलीक उत्थानक हेतु जन-आन्दोलनक हिलोर उठत। युवक किसुन जुटि गेलाह सामाजिक आन्दोलन आ साहित्यिक सृजनक मोर्चा पर।

मोर्चा शब्दक व्यवहार हम जानि-बूझि क' कय रहल छी। सहरसाक एक टा पैघ मैथिली आयोजन मे भाषणक उपरान्त ओ हमरा कहने छलाह—अहाँ मैथिली-मोर्चाक चर्च कयल अछि, आब सामाजिक मोर्चा पर डटल रहब।

कौलिक परम्पराक अनुसार ओ पुरोहित सेहो छलाह। साल मे दू या तीन बेर कथा सेहो बाँचथि। परम्पराक अनुसार ओ संस्कृतक एपिक आ क्लासिकक अध्ययन कयने छलाह, किन्तु ओकरा ग्रहण कयने छलाह मुक्त हृदय सँ। एक टा मुक्त मानवक हैसियत सँ। एक टा क्रांतिकारी विचारक जकाँ।

ई स्पष्ट अछि जे हिनक प्रारम्भिक जुआनी काल एक दिस गांधीवादी युगधारा सँ आप्लावित भ' रहल छल तँ दोसर दिस रूसक मार्क्सवादी बिहाड़ि सँ। साहित्य मे रोटी-वाद, वर्गवाद, जन-शोषण आ उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्षक ललकार गूँजि रहल छल। तरुण किसुन एहि सभ परिवेश सँ अवश्य प्रभावित भेल छलाह।

सुपौल मे एक टा सम्पन्न पुस्तकालय छलैक। तरुण किसुनक वास्तविक शिक्षा, सभ्यता आ दैन्यभार सँ कुहरैत समाज आ एहि पुस्तकालयक साहित्य, इन्किलाबी हवा आ युगज्वाला द्वारा भेलनि। हुनक मातृभाषा प्रेम हिमालय जकाँ अटल छलनि आ गंगा जकाँ पवित्र । ओ मैथिली साहित्य केँ समाज बदलैक साधन बुझैत रहलाह, साध्य नहि, जे हुनक रचना आ चिन्तन सँ स्पष्ट अछि। ओ अपना जीवनक अन्तिम क्षण धरि एहि आस्था केँ कायम रखलनि।

युगबोध

हुनक युगबोध हुनका एक टा भारतीय आ एक टा मैथिल ब्राह्मण होइ सँ नहि डिगा सकलनि। सस्तौआ ख्यातिक लोभें ओ कहियो सेक्सक अवंडपना द्वारा चौंका देबाक लोभ नहि कयलनि। ओ पश्चिमक तुच्छ साहित्यक नकल करैक मोह कहियो ने कयलनि, यद्यपि ओकर यथार्थता केँ कहियो ने नकारलनि। कलकत्ताक एक टा आयोजनक मंच पर ओ अपन कविता पाठक उपरान्त हमरा कहने छलाह—'हम अपना समाज सँ प्रेरणा लैत छी, अखबारक पन्ना सँ नहि।' तें हुनक युगबोध कागजी युगबोध नहि छल, अपना जीवन सँ आ माटि-पानि सँ प्राप्त युगबोध छल। वर्ग-संघर्ष आ जनसाधारणक भीषण शोषण हुनका अत्यधिक झकझोरि देने छल।

ओ अपन एक टा कविता मे कहैत छथि—'प्रतिदिन प्रातः काल हमरा मे सँ बहराइत अछि एक टा पिल्ला। जानि ने जानि एक टा कौरा लेल ओ कतेक गोटेक आगू मे भरि दिन ओकर सबहिक पयर चाटैत नांगरि डोलबैत रहैत छथि।'

एतेक स्पष्ट रूपें यथार्थक गरल पान करैत नीलकंठी अभिव्यक्ति हमरा कतहु अन्यत्र नहि भेटल अछि।

दिशाबोध

किसुनजी कखनहुँ दिशाहारा नहि भेलाह आ अपन साहित्यिक व्यक्तित्व कैँ कोनो तथाकथित कैम्पक हाथें नहि बेचलनि। आगू चलिक' जखन तरुण साहित्यकार लोकनिक बुभुक्षित-पीढ़ी (हंग्री जेनरेसन) आ क्रुद्ध पीढ़ी (ऐंग्री जेनरेसन) कैँ नेतृत्व देमय लगलथिन तँ किछु वृद्ध वटवृक्षक सीर पकड़ि क' रचना करयवला साहित्यकार चिकरि उठल छलाह—'किसुनजी सिंग तोड़ि पड़रुक हेंज मे मिझरा गेलाह अछि।' तखनहुँ हुनक दिशाबोध गलत चेतनाक कुहेस सँ आछन्न नहि भेल छलनि आ ओ अपन 'सत्यान्वेषी' शीर्षक रचना द्वारा युग कैँ ललकारि देने छलथिन आ कहने छलथिन जे अपना काल मे कोन सत्यान्वेषी कैँ ओकर युग बिना आगि बालु ढारने बाट द' सकलइ। तखनहि ओ तिमिराछन्न आकाश सँ 'ज्योति-याचना' कयने छलाह। ओ 'ज्योति-याचना' कयने छलाह आकाशक करेज पर कड़कैत ठनका सँ; ओ 'ज्योति याचना' कयने छलाह विताड़ित समाज सँ आ कालसर्पक दंश सँ छटपटाइत अपन वैदिककालीन आरण्यक आत्मा सँ।

आत्मबोध

हुनक आत्मबोध सुरा सुन्दरी मे निमज्जित, गजदन्त प्रासाद (आइभोरी टावर) मे कमल-मधु-भक्षी (लोटस इटरक अर्थ मे)क आत्मबोध नहि छल। हुनक आत्मबोध कामासक्त गिन्सवर्गक 'नांगट गीत'क आत्मबोध नहि छल आ हुनक आत्मबोध नैराश्यक घाटी मे चित्कार करैत भटकल पथिकक आतंकग्रस्त आत्मबोध नहि छल, वरन हुनक आत्मबोध ओहि फरहादक आत्मबोध छल जे युग-चेतनाक यथार्थक सीढ़ी ल', पाथरक चट्टान पर अपन माथ टकरा क' लोककल्याणक निर्झरिणी कैँ कलकल-छलछल प्रवाहित होइ लेल बाध्य करैत छैक। हुनक आत्मबोध पाब्लो नेरुदाक आत्मबोध छल, फैज अहमद फैजक आत्मबोध छल आ कलकत्ताक गगनचुम्बी प्रासादक भार सँ पिसाइत सुकान्त भट्टाचार्यक आत्मबोध छल। एकर ध्वनि सुनबाक हो तँ हुनक 'बटोहीक व्यथा' मे सुनू। ओहि बटोहीक मार्मिक व्यथा ई छैक जे मरुकातर मे यात्रा करैत ओ ततेक तबधि गेल अछि जे ओकरा मने ने रहलैक अछि जे ओकरा कत' जाइक छैक आ पियासक अतिरेक मे ओकरा अपना चारू भर मृगजले मृगजल देखाब दैत छैक।

संस्कृतक एपिक आ क्लासिकक इन्द्रधनुषी छटा हुनका सम्मोहित नहि क' सकलनि। महाभारतक एक टा महानायक अर्जुन कैँ ओ सम्बोधित करैत ओकरा नपुंसकक हृदय दौर्बल्य सँ पीड़ित व्यक्ति कहैत छथि।

सामाजिक चेतना

कवि अपना परिवेशक सामाजिक चेतना सँ सतत ऊर्जस्वित छथि। ई सामाजिक चेतना हुनकर सार्वभौमिक चेतना अछि जे एक विन्दु पर केन्द्रित होइत-होइत हुनका करेज परक शाश्वत अंगोर बनि गेल छनि—ज्याँपाल सार्त्रक रिप्रीवक नायक जकाँ ओ छटपटाइत तँ छथि, किन्तु वाह रे किसुनजीक चट्टानी अडिगता जे ओ रोमां रोलांक आत्मजयी नायक जानक्रिस्तोफर जकाँ अपना ग्लानि सँ मुक्ति पाबय लेल अतिकामासक्त नहि भ' क' कला साधनाक पूर्णता मे लागि क' 'कविताक विद्रोह' मे समस्त सड़ल साहित्य कैँ नकारि दैत छथि।

साधक

हमरा लगैत अछि जे किसुन जी अपना कविक दर्शन मात्र एक टा साधकक रूप मे कयलनि। ओ साधक जे अपन मुखौटा कैँ भीड़ मे अपने उतारिक' फेकि दैत छैक, ग्रीन रूमक अपना मेकअप कैँ नोचि क' फेकि दैत छैक जाहि सँ जनसाधारण ओकर असली रूप कैँ आ ओकर जीवनक यथार्थ कैँ देखि सकय आ परखि सकय। ओ अपन 'जयलिप्सा' शीर्षक कविता मे संसार भरिक विजेताक मुखौटा उतारि क' चूर्ण-विचूर्ण क' देलनि अछि। नहि, नहि, ई हुनक अपन मुखौटा सभ छिअनि जे परम्परा आ परिवेश हुनका पहिरा दैत छलनि आ ओ तकरा उठा क' फेकि दैत रहलाह। अपन 'रीतिकालीन आ प्रीतिकालीन' कविता मे ओ स्वर्ग-काम आ शय्या काम मध्यकालीन कवि सभहिक खूब बखिया उघाड़लनि अछि। हुनकर 'खंडित समन्वय' हमरा विश्वविमोहक नैराश्य काव्य टी.एस. एलियटक 'वेस्ट लैण्ड' कैँ मन पाड़ि दैत अछि। आइ मानवक व्यक्तित्व आ ओकर आत्मा क्षण-क्षण मे खंडित भ' रहल छैक। खंड-पखंड भ' रहल छैक। परिवार, समाज आ मानवता सँ ओकर सम्बन्ध छिन्न-भिन्न भ' गेल छैक। तेँ खंडित समन्वय कैँ किसुन पूछि रहल छथिन—की मानवता कैँ, मानवीय आत्मा कैँ सह-अनुभूतिक स्नेह मे सिक्त भेल एकाकार भ' जाइक कोनो आशा छैक?

अपन 'पुरान-मूल्य' आ 'नववर्षक जन्म' मे ओ कहैत छथि—मरि गेल घबहा कुकुर जकाँ एक टा वर्ष जकर जीवन निरर्थक छलैक आ जे जीवन भरि मात्र भुकिते टा रहल।'

से, साधक किसुन अपन आत्मदाह कैँ, युग-समझौताक आसव पान क' ओकरा बिसरैक प्रयास आ झूठ भुलावा दैक प्रयास किन्हहुँ नहि करैत अछि। हुनक साधनाक ज्वाला हुनक जीवनरसक आहुति पबैत सतत प्रज्वलित रहैत छनि।

ओना किसुनजी साहित्यक सभ विधा मे लिखैत छलाह, लिखि सकैत छलाह,

किन्तु ओ पहिने एक टा कवि छलाह तखन आर किछु। किसुनजी यद्यपि कम कथा लिखलनि अछि, किन्तु जे लिखलनि अछि से बड़ ज्वलन्त अछि। हुनक कथा नगर आ ग्राम, शोषक आ शोषित, नवीन आ प्राचीनक तुलनात्मक चित्र उपस्थित करैत अछि। हुनक पात्र सभ कथा मे प्राय: परिस्थितिजीवी छनि, तैयो पात्रक सेक्स कतौ उत्कट नहि भ' उठैत छैक।

'इन्टरव्यू' हुनक एक टा व्यंग कथा छनि जकरा हम हुनक सर्वश्रेष्ठ कथा मानैत छी। एहि मे एक टा नारी केँ बलात् आधुनिक बनाओल जाइत छैक। ओकर खंड-पखंड व्यक्तित्व जगजगार भ' अयलैक अछि। हुनक 'संस्कारक मोह' शीर्षक कथा मे एक टा मिसेज गुप्ता (जे नागरिका छथि)क निर्लज्जता पर ग्राम सँ नगर आयल एक टा मैथिलानी खौंझाइत तँ छथि, किन्तु नागरिक जीवनक संघर्षक अनुभूति पबिते ओ ओकरा माफ क' दैत छथिन।

से, आत्मनेपदक कवि होथि वा संस्कारक मोहक कथाकार—किसुनजीक प्रतिभा, चिन्तन आ दशा-दिशा सभठाम एक्के रंग ज्वलन्त रहैत छनि आ युग-सत्य आ जीवन सत्य सँ साक्षात करैत रहैत छनि।

किछु निबंध सेहो छनि किसुनजीक। ओ निबंध सभ सामयिक समस्या सभ केँ उजागर करैत छैक।

भाषा शैली आ प्रवाह

ओना सहरसा जिलाक मैथिली स्वत: मिश्री केरा सन मधुर होइत छैक आ धेमुराक प्रवाह सन कल-कल करैत छैक, किसुनजीक भाषा कतहु संस्कृताह भ'क' मैथिली भाषा केँ क्लिष्ट नहि क' देलकनि अछि। हुनक शैली पंचकोसीक छवि-छटा नेने आ समाजक समग्रता सँ अपना केँ फराक करयबला शैली नहि छनि। ओ बेसी अतुकान्त कविता लिखलनि जाहि मे एक टा मोहक सरगम छैक।

प्रभाव

ई सगर्व कहल जा सकैत अछि जे किसुनजी ने संस्कृतक, ने अंगरेजीक आ ने हिन्दी साहित्यक साहित्यकार सँ प्रभावित भेलाह आ ने मैथिली साहित्यक कोनो होहि सँ। तिलक-दहेज विरोधी 'रंज लीडर तो बहुत है मगर आराम के साथ' वला साहित्यक शौकीन हिलकोर सँ ओ अप्रभावित रहलाह। मार्क्स-साहित्यकार ओ भइये ने सकलाह, सेक्सी रचनाकार ओ कहियो ने भेलाह आ संस्कृतकाव्यक अलंकार, झंकार आ अहंकार केँ ओ अपन मुखौटा बन' सँ अस्वीकार क' देल।

चिन्तनधारा

हुनक चिन्तनधारा कोनो आन ठामक पहाड़ सँ उतरि क' हुनका मानसभूमि पर नहि प्रवाहित होइत छलनि। ओ स्वत: स्फूर्त छलनि।

मौलिकता

किसुनजीक देन मैथिली साहित्य मे अपन बेजोड़ मौलिकताक दुआरे अमर रहतनि। आइ हमरा लोकनिक कर्तव्य भ' जाइत अछि जे एहन युग प्रवर्तक साहित्यकार जनिक एक टा अपन युग आ अपन विद्रोह रहलनि, जे टूटि जाइ लेल सतत प्रस्तुत रहैत छलाह, परिस्थिति सँ समझौता कय कखनो नहि झुकला तनिक जीवन-साधना पर अधिक-सँ-अधिक खोज आ शोध करी। हुनकहु सम्बन्ध मे कहल जा सकैत अछि—'तोहर सदृश एक तोहें माधव मन होइछ अनुमाने।'

स्मृतिसंध्या : 1980

किसुनजीक साहित्यिक संदर्भ

मायानन्द मिश्र

रामकृष्ण झा 'किसुन' आधुनिक मैथिली जगतक एक टा एहन नाम थिक जे सन् 1940 ई. सँ ल' क' सन् 1970 धरिक एहि कालखंड पर अपन बहुमुखी प्रतिभा, प्रौढ़ रचना कृति तथा स्पष्ट जीवन दर्शनक कारणें अति समर्थ हस्ताक्षर सिद्ध भेल तथा अपन प्रखर रचनात्मकताक कारणें मैथिलीक आन्दोलन केँ एक धाप आगू बढ़बैत अमर भ' गेल।

किसनुजीक काव्यव्यक्तित्व एक टा एहन आयाम थिक जाहि मे तीन-तीन युगक चेतना, मान्यता, आदर्श तथा शिल्प बोध समाहृत भेल, रूपायित भेल आ अभिव्यक्ति पओलक।

हिनक वैयक्तिकता ततेक सम्वेदनशील, सहज, सरल, प्रबल ओ दुर्जेय छल जे अपना संगे सदति एक टा समाज नेने चलैत छल आ जे कालान्तर मे एक टा व्यक्ति नहि, अपितु एक टा संस्था बनि क' रहि गेलाह।

ई शिल्प बोधक ओहि संक्रमण बिन्दु पर ठाढ़ छथि जाहि ठाम पूर्ववर्ती काव्य युगक परम्परा तथा परवर्ती युगक प्रगति प्रयोग दुनू आबिक' मीलि जाइत अछि आ रचनाकार केँ एक टा अद्‌भुत गतिशीलता प्रदान करैत अछि।

किसुनजीक जन्म 1 जनवरी 1923 ई. केँ सुपौल मे भेल आ हिनक अध्ययन अध्यापनक माध्यम संस्कृत ओ मैथिली रहल। किन्तु हिनक लेखनारम्भ सन् 1937 ई. मे हिन्दी मे भेल आ शीघ्रहि सन् 41 ई. मे मैथिली जगत मे पर्दापण कयल। हिनक प्रथम मैथिली रचना सन् 45 ई. मे मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल जकर शीर्षक छल 'शिशु सँ'। यद्यपि हिनक हिन्दी मे दुइ गोट गंभीर काव्य संग्रह 'आओ गायें' आ 'इन्द्रधनुष' सेहो प्रकाशित अछि, किन्तु सम्प्रति एहि निबंधक उद्देश्य मात्र हिनक मैथिली रचनाक अवलोकन करब थिक।

ई अपना युगक सर्वाधिक सफल बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार छलाह। हिनक सम्पूर्ण काव्य व्यक्तित्व केँ मुख्यत: तीन रूप मे विभाजित कयल जा सकैछ,

गद्यकारक रूप मे, कवि रूप मे तथा सम्पादकक रूप मे।

असल मे किसनुजी जाहि युग मे मैथिली जगत मे प्रवेश कयल ओ युग छल संघर्ष ओ निर्माणक युग। ओहि युग मे प्राय: जतेक साहित्यकार भेलाह सभ केँ अस्तित्व रक्षा एवं साहित्य समृद्धिक लेल साहित्यक सभ विधा मे रचना करब आवश्यक प्रतीत भेलनि, ई प्रवृत्ति एखनहुँ वर्तमान अछि। ओहि युगक कतिपय साहित्यकार मे रचना द्वारा यश-लोभ सँ अधिक आकर्षक छल मैथिली आन्दोलन द्वारा अपन अस्तित्व घोषणा। किसनुजी युगक एही प्रयोजन एवं प्रकृतिक प्रतिफलन सिद्ध भेलाह। एक दिस तँ ओ मैथिली मे हस्तलिखित एवं मुद्रित पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सम्पादन करैत अपन सौहार्दपूर्ण व्यक्तित्व सँ अनेक समकालीन केँ प्रोत्साहन दैत रहलाह तँ दोसर दिस सुपौल मे मिथिला पुस्तकालयक स्थापन करैत, अनेक सभा समितिक निर्माण संचालन करैत अपन रचनात्मक व्यक्तित्वक कारणें पूर्वाञ्चलक मिथिला केँ मैथिली आन्दोलनक दृष्टियें एक टा गढ़ रूप मे निर्माण कयलनि।

जहाँ धरि हिनक गद्यकारक रूप अछि ओ तीन दृष्टि मे विकसित भेल अछि, प्रथम कथाकार रूप मे, द्वितीय निबंधकार रूप मे आ तृतीय एकांकीकार रूप मे। सन् 50क आसपास सामाजिक पृष्ठभूमि पर 'समाज' नामक एक टा मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखलनि जकर मूल स्वर रोमांटिकता थिक आ जे आइ धरि अप्रकाशित रूप मे अछि। तहिना हिनक गल्प संग्रह 'स्वयंवर' सेहो अप्रकाशिते अछि। ('समाज' हेरा गेल आ 'स्वयंवर' पछाति मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित भेल) किन्तु एहि तीन दशक मे जे कतिपय गल्प मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभ मे प्रकाशित होइत रहल अछि ताहि आधार पर किसुनजी निश्चित रूपें मैथिलीक एक टा समर्थ गल्पकार सिद्ध होइत छथि। हिनक गल्प सभक कथावस्तुक कलात्मकता, घटना विन्यासक चमत्कार, चरित्र चित्रणक मनोवैज्ञानिक वातावरणक सजीवता ओ मांसलता तथा वर्णनशैलीक रोचकता हिनक गल्प शिल्पक अद्‌भुत परिचय दैत अछि। हिनक गल्प सभ मे युगीन यथार्थवाद तथा रोमांटिकताक विलक्षण सामञ्जस्य भेल अछि जाहि मे पछिला युगक शिल्पबोध एवं अपना युगक प्रयोगधर्मिता दुनू अति संतुलित रूप मे भेटि जाइत अछि। हिनक 'पुरान पत्र : टटका बात', 'एक अंक तीन दृश्य' तथा 'संकल्पक आधार' नामक गल्प निश्चित रूपें मैथिली गल्प विकास यात्राक एक टा मानक डेग रूप मे मानल जायत। एहि युगक अधिकांश गल्प जकाँ हिनकहु गल्प, शैल्पिक सम्पति थिक।

जहाँ धरि किसुनजीक निबंधकारक प्रश्न अछि तकर उत्तर भेटि जाइत अछि प्रारम्भिक कोशी दर्पणक सम्पादकीय सँ ल 'क' सन् सत्तरिक 'मैथिलीक नव कविता' नामक सम्पादनक सम्पादकीय मे। हिनक निबंध लेखादिक मुख्य विषय रहल साहित्यिक तथा ओकर दृष्टि बिन्दु बनल अनुसंधानात्मक। हिनक निबंध रचना मैथिली निबंधक विकास आन्दोलन मे अपन परिमाणक दृष्टियेँ भने महत्त्वपूर्ण नहि

हो, किन्तु स्थापन प्रवर्तन एवं शोध प्रवृतिक कारणें मैथिली आलोचना साहित्यक एक टा ऐतिहासिक उपलब्धि अवश्ये कहाओत।

हिनक निबंधक कोनो संकलन प्रकाशित नहि भ' सकल अछि, किन्तु निकष मे प्रकाशित 'काव्यक प्रयोजन' अपन काव्य संकलन 'आत्मनेपदक भूमिका' 'मैथिली नव कविताक भूमिका तथा आचार्य रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित 'सहर्षाक परिसर मे मैथिलीक साहित्यसेवा' आदि निबंधक प्रौढ़ता, वैचारिक मौलिकता एवं शोध प्रवृत्ति हिनका चिंतनशील निबंधकारक पंक्ति मे स्थापित क' दैत अछि।

ई अपन अधिकांश निबंध सन् साठि सँ सत्तरि धरिक दशक मे लिखलनि जाहि मे उपरोक्त चारू निबंध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। (निबंधक संकलन 'वैचारिकी' नाम सँ मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित भेल अछि) एकर अतिरिक्त किछु छिटपुट निबंध मिथिला मिहिर, वैदेही, मिथिला दर्शन मे सेहो प्रकाशित भेल जकर मुख्य विषय छल मैथिलीक नवीन काव्यक स्थापना एवं ओकर विश्लेषण। मैथिली मे नवीन काव्यान्दोलनक पक्ष स्थापन मे हिनक विचार विवेचन वस्तुत: आर्षवाणीक रूप मे कार्य कयलक।

सन् 1960 ई. मे अभिव्यंजना नामक पत्रक जन्म भेल आ ओही पत्र मे पहिलुक बेर मैथिली मे नवीन काव्य, जकरा किछु जन प्रयोगवादी काव्य कहैत छथि, एक टा काव्यान्दोलन रूप मे ठाढ़ भेल आ जे पाछू मिथिला मिहिर मे अपन विकास पओलक। सन् साठि सँ किछुए दिन पूर्व यात्रीजीक 'आन्हर जिनगी' तथा राजकमलजीक 'स्वरगंधा' मैथिली जगत मे नवीन काव्यक क्षितिजक उद्घाटन क' चुकल छल। तें साठि सँ सत्तरिक दशक मे नवीन काव्यक स्वरूप निर्धारण एवं सिद्धान्त स्थापनक दिशा मे अनेक विवाद विवेचन ठाढ़ भेल। अनेक कवि समीक्षक जाहि समय मे एहि वाद-विवाद मे ओझरायल छलाह ताहि समय मे सर्वप्रथम किसुनजी नवीन काव्यक स्वरूप निर्धारण एवं प्रवृति विवेचन अपन विभिन्न निबंध द्वारा स्पष्टताक संग क' रहल छलाह। विशेषत: आत्मनेपदक भूमिका एवं मैथिलीक नव कविताक भूमिका निश्चित रूपें मैथिली आलोचना साहित्यक एक टा उपलब्धि मानल जायत। विभिन्न निबंध मे व्यक्त हुनक वैचारिकता, तथ्य निर्धारणक प्रौढ़ता, भाषाक स्पष्टता तथा अभिव्यक्तिक मौलिकता हुनका नवीन काव्यक आचार्य रूप मे प्रतिष्ठापित करैत अछि।

मैथिली मे हुनक एक टा एकांकी 'उगना रे मोर कतय गेला' बहुत लोकप्रिय भेल। कथावस्तु मौलिकता तथा चरित्रचित्रणक विशिष्टता भने ओहि एकांकी मे नहि हो, किन्तु घटना विन्यासक नाटकीयता, अभिनयशीलता एवं रंगमंचक अनुकूलता एतेक अधिक छल जे लगैत छल जे किसुनजी एकमात्र नाटककारे टा होथि। इएह

कारण अछि जे हुनक एकांकी अनेक स्थान पर रंगमंच पर प्रस्तुत कएल गेल जे कोनो नाट्य कृतिक सर्वाधिक सफलता थिक।

किसुनजीक एक टा आओर रूप अछि जे थिक हुनक सम्पादकक रूप। एना तँ ओ बहुत रास क्षणजीवी हिन्दी मैथिली पत्र-पत्रिकाक सम्पादन कयलनि, किन्तु हुनक विकसित सम्पादन कलाक दर्शन होइछ 'मैथिलीक नव कविता' नामक पुस्तकक प्रकाशन सँ। हिन्दी मे जे स्थान अज्ञेय द्वारा सम्पादित तार सप्तकक अछि, हमरा बुझने इएह स्थान मैथिली मे किसुनजी आ हुनक 'मैथिलीक नव कविता' नामक संकलनक अछि। एहि दृष्टियें किसुनजी मैथिलीक अज्ञेय थिकाह। सम्पादन कलाक सर्वोपरि गुण थिक संतुलन एवं औचित्य। आ एहि दुनू गुणक कोनो अभाव हुनक सम्पादन कला मे अथवा मैथिलीक नव कविता नामक पुस्तक मे नहि भेटत।

रामकृष्ण झा किसुन मैथिलीक एक टा संतुलित सम्पादक, सफल कथाकार, सक्षम नाटककार एवं प्रौढ़ निबंधकार भने रहल होथि, किन्तु हुनक काव्य व्यक्तित्वक सर्वाधिक ओ सर्वोपरि व्यापक पक्ष थिक हिनक कवि रूप। मैथिली काव्य जगत मे प्राय: तीन दशक धरि अपन प्रतिभा, चेतना तथा गतिशीलताक आधार पर ई आलोकपुञ्ज बनल रहलाह।

एहि तथ्य केँ नि:संकोच स्वीकार कयल जा सकैछ अछि जे आधुनिक भारतीय काव्य विकासक प्रेरणाक अनेक बिन्दु मे सँ पाश्चात्य काव्य साहित्य एक टा मुख्य प्रेरणा बिन्दु रहल अछि। ई बात भिन्न थिक जे जाहि भाषा साहित्यक जतेक सुदीर्घ परम्परा रहत ताहि पर अन्य भाषा साहित्यक प्रभाव किरण ओतेक निस्तेज रूपें पड़त। हिन्दीक छायावाद पर अंग्रेजीक रोमांटिक कविताक जतेक व्यापक प्रभाव पड़ल अछि, ततेक मैथिलीक संस्कारवादी काव्य मे नहि पड़ल अछि, जकर बहुत रास कारण अछि आ जकर विस्तृत विवेचन विषयान्तर थिक। हिन्दी मे छायावादी काव्यक पश्चात प्रगतिवादी काव्यान्दोलन ठाढ़ भेल छल। हिन्दीक एहन कालखंड सन् 40 ई.क आसपास पड़ैत अछि।

मैथिली जगत मे सन् 40 ई.क पश्चात जे काव्यक स्वर स्पष्ट भ' रहल छल ताहि मे जँ एक दिस पाश्चात्य मुख्यत: अंगरेजीक रोमांटिक कविताक ध्वनि छल तँ दोसर दिस हिन्दीक छायावाद ओ प्रगतिवादक संयुक्त अनुगूंज आ तेसर दिस अपन परम्परागत काव्यक लहरि प्रवाह। मैथिली काव्यक ई प्रवृति सन् 30 ई. सँ ल'क' सन् 50 ई.धरि रहल अछि। एकरहि हम संस्कारवादी काव्य कहल अछि।

संस्कारवादी काव्यान्दोलनक एही अपराह्न काल मे किसुनजीक नक्षत्रक उदय मैथिली काव्य क्षितिज पर होइत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक तत्कालीन काव्यक विषय जँ एक दिस प्रकृति चित्रण होइत अछि, तँ दोसर दिस प्रणय प्रसंग तँ तेसर दिस वर्गवैषम्यक करुण चित्कार।

कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली मे पाँचम दशक धरि यर्थाथवादी स्वर, जकरा कतिपय आलोचक प्रगतिवादी तत्व कहैत छथि, अत्यन्त गौण रूप मे रहल अछि, जत' कतहु प्रकटो भेल अछि ओत' वैचारिक निष्ठाक संग नहि अपितु प्रभावक फैशनक रूप मे अधिक। तें एहन काव्य ओहि युगक निष्प्रभ काव्य थिक। एही वस्तु कें आचार्य रमानाथ झा अपन नवीन काव्य संकलन मे किसुनजीक प्रसंग एहि प्रकारें कहने छथि—'जाहि रचना मे ओ बौद्धिकता कें त्यागि विशुद्ध भावाभिव्यक्तिक भूमि पर अवतरित होइत छथि, से शुद्ध कवित्वक दृष्टियें हिनक उत्कृष्ट रचना होइत अछि।' वस्तुतः ई किसुनजीक नहि ओहि सम्पूर्ण युगक विशेषता छल। हँ, यात्रीजी अवश्य एक टा अपवाद छलाह। किन्तु हुनकहु अपवादी रूप सन् 50 ई.क पश्चाते आकर्षक एवं सशक्त भ' सकल अछि।

किसुनजीक सन् 40 ई. सँ 50 ई. धरिक काव्य किछु एही प्रकारक अछि। एहि युगक हिनक काव्यक भावक कोमलता, कल्पनाक सूक्ष्मता तथा अभिव्यक्ति मसृणता अवश्ये स्पष्ट तथा हृदयग्राही छल।

किसुनजीक काव्य व्यक्तित्वक सभ सँ पैघ विशेषता छल जे ई युग परिवर्तनक संगहि अपन शिल्प परिवर्तन सेहो क' लैत छलाह तथा नवीन युग चेतनाक संग अपना कें पूर्ण अभियोजित कयने चल जाइत छलाह। ई प्रवृत्ति हिनक गतिशीलताक विलक्षण परिचायक थिक।

एहि आधार पर जँ हिनक काव्य विकासक एक टा स्थूल रूपांकन कयल जाय तँ एहि प्रकार कयल जा सकैत अछि—

प्रथम, सन् 40 ई. 50 ई.धरिक दशक मे हिनक काव्यक मुख्य स्वर छल संस्कारवादी स्वर जे सर्वथा स्वाभाविक छल। जकर विवेचन ऊपर भेल अछि। द्वितीय, सन 50 ई. सँ 60 ई.धरिक दशक मे यथार्थवादी स्वर जकरा धोखा सँ, भ्रमवश, मैथिलीक बहुतो आलोचक प्रगतिवादी स्वर कहैत छथि। तृतीय, सन् 60 ई.क पश्चात् काव्यान्दोलन जकरा हम तत्काल समीक्षा सौविध्य लेल अभिव्यंजनावादी काव्य कहैत छी आ जकरा कतिपय आलोचक हिन्दीक देखादेखी अपन मौलिकताक अभाव मे प्रयोगवाद कहैत छथि।

एहि प्रकारें किसुनजीक काव्य विकासक प्रक्रिया संस्कारवादी युग सँ आरम्भ भ'क' यर्थाथवादी युग होइत नवीन अथवा अभिव्यंजनावादी युग धरि पहुँचि गेल। ओ एहि तीनू काव्य युगक संगे अपना अभियोजित करैत युग चेतना कें अपना स्वर मे पचबैत ओकर समर्थ एवं मुखर अभिव्यक्ति दैत गेलाह। युग चिंतनक अभिव्यक्ति कोनो युगक कविक महत्त्वपूर्ण दायित्व होइत अछि। किसुनजी कोनो युग मे अपन दायित्व बोध सँ विमुख नहि भेलाह—ई हिनक शिल्प साफल्यक मूल रहस्य थिक आ जे हिनका विशिष्ट कवि कोटि मे स्थापित क' दैत अछि।

सन् 50 ई. सँ सन 60 ई.धरिक दशक हिनक काव्य विकासक दोसर चरण थिक आ जे मैथिली काव्य परम्पराक यथार्थवादी काव्य काल थिक। एहि युग मे पहिलुक बेर द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी चिंतन परम्पराक अनुकूल वर्ग वैषम्यक चित्रण मैथिली काव्य मे फैशनक रूप मे नहि अपितु अपन स्वाभाविक निष्ठाक रूप मे प्रकट भेल। एहि युगक काव्य मे दलित एवं शोषणक मात्र चित्कार ओ हाहाकारे टाक चित्रण नहि भेल, अपितु आक्रोश एवं हुंकारोक अभिव्यक्ति भेटल। किसुनजीक तत्कालीन काव्य मे इएह युगीन आक्रोश एवं हुंकार मुखर भ' उठल छल, जकर प्रमाण अछि हुनक कविता 'लै उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी' अथवा 'कोसीक बाढ़ि'। जाहि मे ओ कहैत छथि जे आब ने उँचका मोहार रहत आ ने डबरा खत्ता, कोसीक बाढ़ि आबि रहल अछि, सभ कें एक टार क' देत। अवश्ये समतल समान बना देत।

एहि चरणकालक किसुनजीक विभिन्न यथार्थवादी काव्य मे एहने स्वस्थ, प्रखर स्वर मुखर भेल अछि। किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे पछिला संस्कारवादी कोमल काव्यक रचना सर्वथा छोड़ि देल। बीच-बीच मे मसृण भावक स्वानुभूतिक रागात्मक अभिव्यक्ति सेहो होइत रहल, किन्तु निश्चिते रूपें ई स्वर दबि गेल छल।

विभिन्न भाषा साहित्य सँ भिन्न एहि युगक मैथिली काव्यक एक टा विलक्षण विशेषता रहल अछि जे आकाशक कल्पना लोक सँ यथार्थक ठोस धरातल पर उतरल काव्य मे जँ एक दिस माटिक सुगन्धि अछि तँ दोसर दिस नील क्षितिजक सुकुमार सौन्दर्य सेहो।

किसुनजीक तत्कालीन काव्य मे एहने यथार्थवादी प्रवृतिक परिचय भेटैत अछि। हिनक काव्य व्यक्तित्व अपन तेसर ओ अंतिम मोड़ लैत अछि सन् साठि ई.क पश्चात।

सन् साठिक पश्चात् मैथिली मे नवीन काव्यान्दोलनक जन्म भेल जकर उद्देश्य छल समकालीन जनजीवनक अनिश्चितता, आतंक, विवशता, वैषम्य, निराशा एवं कुण्ठाक अति यथार्थवादी अभिव्यक्ति। ई काव्य युग युगक टूटैत मानवीय मूल्यक उद्घोषणाक काव्य छल जाहि मे विचारक तीव्रता, प्रभावक आघात, समस्याक नग्नता तथा संघर्षक चरम चित्रण रहैत अछि। तें ई काव्य रसात्मक, लयात्मक अभिव्यक्ति नहि, अपितु बौद्धिक विचारोत्तेजक उद्घोषणा थिक। एहि काव्य मे प्रतीक विधान, बिम्ब योजना, छन्द विधान सभ मे युगान्तरकारी परिवर्तन आयल। अर्थात नवीन काव्य शैली मे, नवीन कथन भगिमाक संग, नवीन युग चेतनाक अतियथार्थवादी अभिव्यक्ति साम्प्रतिक नवीन काव्य थिक, जकरा हम तत्काल अभिव्यंजनावादी काव्य कहैत छी। एहि नवीन काव्यक दुइ गोट मुख्यधर्म भेल—विद्रोह तथा व्यंग्य।

कहबाक प्रयोजन नहि जे इहो काव्य प्रवृति मैथिली मे देश देशांतरेक थिक। मैथिलीक एहि नवीन काव्य मे जँ एक स्वर अंग्रेजीक टी.एस. इलियट, एजरा पाउन्ड

सँ ल' क' ऐंग्री जेनरेशन तथा अमेरिकाक बीट जेनरेशन धरिक सम्मिलित प्रभावक थिक तँ दोसर दिस हिन्दीक प्रयोगवाद तथा नई कविताक अनुगूंज। मैथिलीक साम्प्रतिक काव्य अपन परम्परागत धरती पर ठाढ़ भ' क' देश देशान्तरक बहैत बसातक सुखद स्पर्श अनुभव कयलक। किसुनजी अपन तेसर काव्य मोड़ पर आबि क' एही अनुभव व्यापक अभिव्यक्ति देलनि—जकर प्रमाण थिक हुनक प्रकाशित कविता संग्रह 'आत्मनेपद' आ 'क्रमशः'। मैथिलीक नवीन काव्य केँ स्वस्थ दिशा-निर्देश देबा मे 'आत्मनेपद' आ 'क्रमशः' केर महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। किसुनजी प्रसंग आचार्य रमानाथ झा अपन नवीन काव्य संकलन मे एहि प्रकार स्वीकार करैत छथि जे आत्मनेपदक ख्यातनामा लेखक रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिलीक प्रौढ़ कवि छथि जे 'मैथिलीक नवीनतम प्रवृत्ति केँ आत्मसात करबा मे ककरहु सँ पाछाँ नहि रहैत छथि। यैह प्रगतिशीलता हिनक काव्य प्रकृतिक विकास विशेषता थिक।' एहि प्रकारक नवीन काव्यक अधिकांश विशेषता सँ युक्त 'नवीन वर्षक चारि प्रतिक्रिया' नामक कविताक किछु पंक्ति उदाहरणार्थ देखल जा सकैत अछि। यथा—

नव वर्षक स्वागत मे
भ' क' चिर सावधान
अस्तित्वादी निष्ठावान
सत्यकाम, सुन्दरैषी, शिव साधक साहित्यकार
संकीर्ण स्वार्थ—सागरक दुस्तर संतरण निर्विकार
नव वर्षक सूर्य केँ
प्रगतिक उद्घोषित शुभ नव मंगल तूर्य केँ
स्वस्तिवाचनक क्रम मे
भाव सुमन छिटैत बजलाह
स्वागत हो नव वर्ष
मानवता आलोक करय अवसान तमः संघर्ष
भरय विश्व जीवन मे निर्मल
सुख शान्तिक शुभ हर्ष
स्वागत हो नव वर्ष।

किसुनजीक आत्मनेपदक विस्तृत विवेचनक लोभ तत्काल भने संवरण क' ली, किन्तु एक बात अन्त मे अवश्य कहि देब जे किसुनजी अपना काव्य मे अपन अनुभूति सम्पदा, भाव गरिमा तथा अभिव्यक्ति वैभवक कारणें निश्चित रूपें अमर रहताह।

स्मृतिसंध्या : 1980

किसुन जी आ मैथिली साहित्य

राज मोहन झा

'आर्यावर्त'क 23 जून'70क अंक मे किसुन जीक मृत्यु पर श्री मणिकान्त मिश्रक एक टा लेख छपलनि अछि जाहि मे किसुन जी केँ मैथिली साहित्य मे प्राचीन तथा नवीनक बीच एक टा मधुर आ सशक्त सेतुक रूप मे स्मरण कयल गेल छनि तथा एहि बात पर चिन्ता व्यक्त कयल गेल अछि जे किसुन जीक गेलाक बाद प्राचीन आ नवीन पीढ़ीक बीच माध्यम बनौनिहार दोसर क्यो तेहन व्यक्ति सम्प्रति नहि देखबा मे अबैत छथि।

एहि विचार पर दू मत नहि भ' सकैत अछि जे किसुन जीक गेला सँ जे शून्य भ' गेल अछि, तकरा भरल नहि जा सकैत अछि। मैथिलीक लेल जे काज किसुन जी क' गेल छथि, से हुनका आ हुनका संग सुपौल केँ मैथिलीक इतिहास मे अन्यतम स्थान सुरक्षित क' दैत छनि। रोग-शय्या पर पड़लो पड़ल ओ मैथिलीक लेल ठोस रचनात्मक कार्य करैत रहैत छलाह। हुनका मोन मे ततेक रास विलक्षण योजना सभ छलनि (आ ओहि योजना सभ पर ओ सक्रिय रूप सँ सोचथि! मात्र कागती योजना तँ मैथिली मे बहुत बनल अछि, बनिते रहैत अछि!), जे हुनक असमय निधन मैथिलीक लेल गम्भीर रूप सँ अपूरणीय क्षति भेल अछि।

किसुन जीक व्यक्तित्व प्राचीन तथा नवीनक बीच सन्तुलन रखने छल, एहि अर्थ मे जे लेखन सँ नव होइतो ओ पुरनाक प्रति कटु होयबाक सीमा धरि उग्र नहि छलाह। जे हुनका एको बेर देखने होयताह, से हुनक मुखमण्डल पर सदिखन व्याप्त रह'वला सौम्यता, शुचिता आ शांतिक संग उग्रताक कोनो सामंजस्य स्थापित नहि क' पौताह। अपना सँ छोटो सँ गप्प करैत काल ओ ततेक विनम्रता आ शालीनता सँ काज लेथि जे दोसर व्यक्ति सहजे लज्जित-संकुचित भ' जाइत छल। एहन स्निग्ध आ मधुर व्यक्ति उचितो रूप सँ उग्र नहि भ' सकैत अछि, अनुचितक तँ बाते जाय दिय'। किसुन जीक ऋषि-व्यक्तित्वक यैह गुण राजकमलो सन उग्र व्यक्ति केँ हुनका

सोझाँ 'आदर्श छात्र'क मुखौटा लगा क' आब' लेल बाध्य करैत छलैक।

मुदा ताहि सँ जँ ई बूझी जे किसुन जीक लेखन कें सेहो प्राचीन आ नवीनक बीच मे कतहु राखल जा सकैत अछि, तँ से सत्य नहि होयत। अपन पहिलुका लेखन सभ कें छोड़ि (जकरा ओ स्वयं नकारि देने छलाह), ओ विशुद्ध रूप सँ नव छलाह आ नवलेखनक बड़का स्तम्भ छलाह। ओना, 'नवलेखन' हमरा बहुत सुविधाजनक शब्द नहि बुझाइत अछि। जे आइ नव अछि, काल्हि पुरान भ' जायत। आ बहुत रास पुरना वस्तु सभ एहन अछि जे सदिखन नव रहत। साहित्य, हमरा जनैत, दुइये तरहक भ' सकैत अछि—नीक आ बेजाय। बहुत पुरना वस्तु सभ ततेक नीक अछि, जाहि पर हमसभ आइयो गर्व करैत छी, आगुओ करैत रहब। आ बहुत रास नव जे लिखल जा रहल अछि, से पढ़ने समयक अपव्यय छोड़ि आर कोनो काज सिद्ध नहि होअय! यात्री जी 'बाबा कहि कहि जाय' वला 'स्टेज' मे आबियो क' हम नहि बुझैत छी, कहियो कनेको पुरान भ' सकैत छथि। मणिपद्म जी पुरानो लोक कथा सभ कें ल' क' जे काज क' रहलाह अछि, से अभिनव अछि। आर तँ जाय दिय', वयस आ रुचि सँ सर्वथा नव कहौनिहार लोक अधिकांश जे एखन लिखि रहल छथि, से दू शताब्दी पहिने लिखबाक चाहैत छलनि! तें, हमरा जनैत, साहित्य मे दुइये टा सार्थक वर्ग भ' सकैत अछि—नीक आ बेजाय, जाहि मे नव आ पुरान, दुनू प्रकारक रचना आबि सकैत अछि।

किसुन जी मैथिली साहित्य मे नवलेखन अर्थात् आधुनिकता-बोधयुक्त लेखनक पक्षधर छलाह। मैथिली मे नवलेखन अथवा आधुनिकता-बोध अथवा भोगल यथार्थक नाम पर कोनो आन्दोलन नहि चलल। साहित्य मे हो अथवा राजनीति मे, हमरा सभक जातिये आन्दोलनक लेल अयोग्य अछि। तथापि साहित्य मे जे तत्व सभ आन-आन भाषा मे नवलेखन आ एहि सँ सम्बन्धित आन-आन आन्दोलन कें जन्म देलकैक अछि, ताहि सँ मैथिली साहित्य असम्पृक्त नहि रहल अछि आ जेना पानि तरेतर सतरंजी कें भिजा दैत छैक तहिना तरेतर ई तत्व सभ मैथिली साहित्य मे प्रवेश क' गेल अछि। परम्परा-प्रेम हमरा सभक जातीय गुण कहल जा सकैत अछि। आ ई बात तँ अनुभव सँ सहज सिद्ध अछि, जे परम्परावादी लेखक कतबो सिंह तोड़ा क' आधुनिक बनबाक चेष्टा करथु, अपन पीढ़ीक छाप नहि मेटा पबैत छथि। ई बात मैथिली साहित्येक सन्दर्भ मे नहि, सभ भाषाक साहित्यक सन्दर्भ मे लागू होइत अछि। तेहन स्थिति मे किसुनजी सन उदाहरण कम भेटत, जे उचित समय पर नहि केवल अपन लेखन कें युगानुकूल एक टा निर्णायक मोड़ देलनि, प्रत्युत् ओहि दिशा मे नेतृत्व करबाक भार योग्यतापूर्वक उठौलनि। मैथिली मे जखन कि ई स्थिति अछि जे समयक संग चलि सकब लेखकक लेल पर्याप्त गर्वक विषय भ'

सकैत अछि, किसुन जीक ई भूमिका मैथिली साहित्यक इतिहास मे निश्चय अपन विशिष्ट स्थान बनाओत।

मैथिली साहित्यक सन्दर्भ मे, मणिकान्त मिश्र जीक लेख सँ ई ध्वनि निकलि सकैत अछि, जेना मैथिली मे नव आ पुरानक दू टा खेमा हो, आ ओहि दुनू मे संवाद नहि होयबाक सीमा धरि कटुता अथवा विरोध हो, आ तें सम्पर्क सूत्रक रूप मे किसुन जी सन एक टा नीक माध्यमक आवश्यकता हो! तँ से मैथिली मे ने ओ स्थिति छैक, आ तें, मने कोनो माध्यमक आवश्यकता छैक। प्रायः सभ भाषाक साहित्य मे एम्हर आबि क' पीढ़ीक संघर्ष प्रतिफलित भेल अछि। एहि सँ आर जे किछु हो, साहित्य-सर्जन कें निश्चित रूपें बल भेटलैक अछि। मैथिली मे जँ से होइत तँ हम एकरा शुभ लक्षण मानितहुँ। मुदा मैथिली साहित्य मे पीढ़ीक विरोध अथवा भिन्नता कहाँ प्रतिफलित भेल अछि? पुरना पीढ़ीक लेखक मे दू प्रकारक लेखक छथि। एक तँ ओ, जे नीक लिखैत छलाह, मुदा आब शेष भ' गेलाह अछि। शेष भ' गेलाह अछि तँ ताहि मे नहि ततेक हर्ज। बरु जे धन्यवादक पात्र भ' सकैत छथि, जे अपन चुप छथि, जबर्दस्ती लिखि-छपि पाठक कें 'बोर' तँ नहि करैत छथिन। दोसर एक टा वर्ग तेहन अछि, जे शेष भैयो गेला पर लिखबा-छपबाक लोभ पर विजय नहि पाबि सकल अछि। हिनक स्थिति ओहि प्रतियोगी सदृश छनि, जे 'रेस' मे बहुत पाछाँ छुटि गेल अछि, तथापि, दर्शक सभक उपहास कें साहसपूर्वक पिबैत, अपना सक्क भरि दौड़ल जा रहल अछि। ई भलें बुझथु जे ई जे लिखि रहलाह अछि सैह मैथिली साहित्य अछि, मुदा मैथिली साहित्य हिनका छोड़ि आगाँ बढ़ि गेल अछि, बढ़ि जायत। नव पीढ़ी मे बहुत रास व्यक्ति छथि, जे वयस आ प्रायः बुद्धि छोड़ि, आर कोन बात मे नव छथि से नहि बुझायत। परन्तु एक टा तेसर वर्ग अछि, जे नव आ पुरान दुनू पीढ़ी सँ अबैत अछि, जे वस्तुतः रचनात्मक कार्य क' रहल अछि। ओ जे लिखि रहल अछि सैह एखनुका मैथिली साहित्य अछि। एहि वर्ग मे कतहु कोनो संघर्ष नहि छैक, कोनो विरोध नहि छैक।

तें हम ई नहि मानैत छी जे मैथिली साहित्य मे पीढ़ीक संघर्ष छैक, नव आ पुरानक कोनो झगड़ा छैक। हँ, संघर्ष छैक कत' तँ विद्यापति अथवा मैथिलीक नाम पर नगर-नगर मे स्थापित सभा-समिति मे, जत' भाषा अथवा साहित्य सँ कतबो दूरक सम्बन्ध राखि क' मैथिलीक कर्णधारक उच्चासन पर पलथी लगाक' बैसल जा सकैत अछि। चारि मास-छौ मास पर कहियो कार्यकारिणी सभाक अध्यक्ष पद सँ भाषण द' दू-चारि टा प्रस्ताव पारित क' वर्ष मे एक बेर नाच-गानक आयोजन क' ई लोकनि बुझैत छथि जे मैथिलीक लेल सर्वस्व द' देल। (सत्य पूछी तँ सर्वस्व तँ भैये गेल। एहि सँ बेसी आर कैये की सकैत छथि।)

एहि वर्ग मे मुख्यत: मैथिलीक अथवा आन विषयक मैथिल प्राध्यापक अबैत छथि जनिका अपन व्यवसायक प्रतिष्ठाक कारणें, एहि तरहक सभा सोसाइटी मे सहजे वरीयता भेटि जाइत छनि। आ जेना अपना पदक बले ओ ई अपेक्षा कर' लगैत छथि जे मैथिली मे प्रकाशित होब 'वला प्रत्येक पोथी किंवा पत्रिका हुनका 'मोफ्त' मे सादर समर्पित कयल जाइनि, तहिना हुनकर ईहो अभिलाषा रहैत छनि, जे मैथिली मे जे कोनो काज होअय से हुनक पूर्व अनुमति ल' क' होअय। जनिका अपना किछु लिखबा-पढ़बाक अवगति नहि रहतनि ओहो आशा रखताह जे पोथीक भूमिका लोक हुनके सँ लिखाबओ।

आ आश्चर्य तँ तखन होइत अछि जखन देखैत छी जे एहि तरहक अपेक्षा रखनिहार व्यक्ति 'मिथिलो मिहिर' नहि पढ़ैत छथि। बहुत गोटे तँ लेबो नहि करैत छथि, जे लैत छथि से ई बूझिक' जे मैथिलीक पत्रिका छैक, लेबाक चाही। माने दया क'। आ ल' क' अपने नहि पढैत छथि, 'आंगन सँ' पढ़ैत छथिन। लेखो-तेखो जँ कहियो छपलनि तँ घरेवालीक नाम सँ। माने, लिखब-पढ़ब वला काज... लाज होइत छनि।

अपना सभक बीच ई पीढ़ी जे अछि, से बूझू जे संघर्ष करबा योग्य अछि। साहित्य मे ई पीढ़ी नहि अछि, आबियो नहि सकैत अछि, बस, बाहरे-बाहर ई लग्गी ल' क' टांग घिचबाक प्रयास मे लागल रहत। एहि पीढ़ी सँ सम्पर्क रखने हमरा सभ केँ कोनो लाभ नहि आ तें कोनो माध्यम अथवा कड़ी तकबाक प्रयोजन नहि। बस, काज करैत जाइ। काजक गप्प पर किसुन जी मोन पड़ि गेलाह, जे अस्वस्थो रहला पर सदिखन नव-नव काज पर सोचैत रहैत छलाह।

भारती मंडन, अंक-14

मैथिली साहित्य आ किसुनजी

राज मोहन झा

(अलग-अलग अवसर पर लिखल एहि लेख मे पछिला लेखक कय टा अंशक दुहराव भेल अछि, मुदा पाठ-प्रवाह कायम रखबाक लेल यथावत प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। —संपादक)

किसुन जीक बारे मे बहुधा ई कहल गेल अछि जे ओ प्राचीन तथा नवीनक बीच एक टा सेतु छलाह, आ कि प्राचीनता आ आधुनिकताक बीच कड़ी छलाह, अथवा हुनक लेखन दू भिन्न युग वा पीढ़ीक मध्य संधियुगक आभास दैत अछि। हमरा जनैत एहन-एहन फतवा किसुन जी आ हुनक लेखनक संग सही न्याय नहि क' पबैत छनि। आवश्यकता एहि बातक अछि जे किसुन जी साहित्य-धाराक जाहि बिन्दु पर ठाढ़ छथि, तकरा सुनिर्दिष्ट क' हुनक स्थान निर्णीत ढंग सँ निरूपित कयल जाय। सेतु वा कड़ी अथवा संधि-युगक बात कयला सँ कतहु सँ ई ध्वनित होइत छैक जे किसुन जी जेना बीच धारा मे ठाढ़ होथि, ने एहि पार दिस ने ओहि पार दिस। हमरा जनैत से बात नहि थिक। किसुन जी निश्चय अपन खास आ विशिष्ट बिन्दु पर ठाढ़ छथि, जे धाराक एहि पार दिस अछि अर्थात् नवीनता, आधुनिकता, प्रगतिशीलता वला पक्ष मे अछि।

एहि सम्बन्ध मे भ्रान्ति प्राय: एक टा एहि कारणें होइत छैक जे किसुन जी अपन लेखनारम्भ कोमल ओ भावुक गीतसभ सँ कयने रहथि। एहि गीत सभक रचनाकाल 1940 सँ 1950 धरि अछि जकरा प्रो. मायानन्द मिश्र, संस्कारवादी स्वरक काव्य कहलनि अछि। परन्तु 1960 सँ जहिया सँ मैथिली कविता मे यथार्थवादी स्वरक संग प्रगतिशील नव काव्य-तत्वसभ प्रवेश कयलक, किसुन जी हपसि क' ओकरा ग्रहण कयलनि। यैह ओ समय अछि जखन ओ अपन पुरना लेखनसभ केँ नकारि देने रहथि आ विशुद्ध रूप मे 'नवलेखन' अर्थात आधुनिक-बोध-युक्त लेखनक पक्षधर भ' गेल रहथि। एकरा कोनो कविक गतिशीलताक एक टा विलक्षण उदाहरणक रूप मे लेल जयबाक चाही। किसुन जीक काव्य-व्यक्तित्वक ई विशिष्टता अछि जे युगानुरूप अपन काव्य केँ विकसित करबा मे हुनक कवि पाछाँ नहि रहैत छल तथा युग चेतनाक

संग अपना केँ पूर्णतः अभियोजित कयने चलैत छल। काव्य व्यक्तित्वक एहि विकासशीलताक किसुन जी एक टा आत्यंतिक उदाहरण छथि।

मैथिली मे कोनो काव्यान्दोलन नहि चलल, कतबो प्रो. मायानन्द मिश्र अपन अभिव्यंजनावाद आ कि सोमदेव अपन सहजतावाद अथवा कीर्त्तिनारायण मिश्र अपन अकवितावादक ढोल पीटथु। साहित्य मे हो अथवा राजनीति मे, हमरासभक जातिए आन्दोलनक हेतु योग्य नहि अछि। तथापि साहित्य मे जाहि तत्त्वसभक आनआन भाषा मे नवलेखन आ एहि सँ सम्बन्धित आन्दोलनसभक द्वारा जन्म भेलैक अछि ताहि सँ हमरो सभक मैथिली साहित्य असम्पृक्त नहि रहल अछि आ जेना पानि तरे-तर सतरंजी केँ भिजा दैत छैक, तेना ई तत्त्वसभ मैथिली-साहित्य मे प्रवेश क' गेल अछि। परम्परा-प्रेम हमरासभक जातीय गुण कहल जा सकैत अछि। आ ई बात अनुभव सँ सहज सिद्ध अछि जे परम्परावादी लेखक कतबो सिंह तोड़ाक' आधुनिक बनबाक चेष्टा करथु, अपन पीढ़ीक छाप नहि मेटा सकैत छथि। ई बात मैथिलिएक संदर्भ मे नहि, सभ भाषाक साहित्यक संदर्भ मे लागू होइत अछि। तेहन स्थिति मे किसुन जी सन उदाहरण कम भेटत जे उचित समय पर नहि केवल अपन लेखन केँ युगानुकूल एक टा निर्णायक मोड़ देलनि, प्रत्युत ओहि दिशा मे नेतृत्व करबाक भार योग्यतापूर्वक उठौलनि। मैथिली मे जखन कि समयक संग चलबे लेखकक लेल पर्याप्त संतोषक विषय भ' सकैत अछि, किसुन जीक ई भूमिका मैथिली साहित्यक इतिहास मे निश्चय अपन विशिष्ट स्थान बनबैत अछि।

किसुन जीक प्रति भ्रान्तिक एक टा और कारण होइत अछि हुनक शैक्षणिक कौलिक पृष्ठभूमि आ आचार। किसुन जी संस्कृतक विद्यार्थी रहलाह, पंडित शिक्षक छलाह, अंगरेजी शिक्षा सँ वंचित रहलाह, पौरोहित्य हिनक कौलिक वृत्ति रहनि, कथा सेहो बाँचथि, ठोप करैत छलाह, प्रतिदिन चानन-फूल ल' घंटी बजा पूजा करैत छलाह, पितर केँ जल दैत छलाह। एहि पृष्ठभूमि आ आचारक संग जे लोकक सामान्य अवधारणा बनैत छैक से एक टा परम्परावादी, दकियानूस आ पुरातनक प्रति अन्ध-श्रद्धालु व्यक्तिक। मुदा की किसुन जी से छलाह ? ई एक टा अद्‌भुत बात जे लागओ, मुदा आचार सँ जहिना ओ नैष्ठिक आ नियमबद्ध छलाह, अपन विचार मे तहिना दृढ़ रूपें आधुनिक आ प्रगतिशील। नवताक पोषक, पक्षधर, उन्नायक आ प्रवक्ता। व्यक्तित्वक ई विलक्षणता कम सँ कम मैथिली साहित्य मे तँ किसुन जी केँ छोड़ि और कतहु नहि भेटत।

मैथिली मे किसुन जी एक टा एहन साहित्यिक व्यक्तित्व भ' गेलाह अछि जे कय दृष्टिएँ विलक्षण कहल जायत आ एहन विलक्षण व्यक्तित्व मैथिली मे ने हुनका सँ पूर्व भेल छल आ ने बाद मे एखन धरि भेल अछि। 'तोहर सदृश एक तोहें माधव'क उक्ति हुनका पर एकदम सटीक बैसैत अछि। आ तेँ ई बात जतेक हुनका बारे मे

अक्षरशः सत्य अछि जे हुनक अभाव सँ जे शून्य भ' गेल अछि, तकरा भरल नहि जा सकैत अछि, ततेक प्रायः आन कोनो व्यक्तिक बारे मे नहि।

मैथिली मे साहित्यिक व्यक्तित्व तँ बड़ पैघ-पैघ भ' गेलाह अछि, परन्तु ई एक टा दुर्योगे कहल जयबाक चाही जे चिन्तक-साहित्यकार अपना ओत' नहिए जकाँ भेल छथि। तकर ई एक टा परिणाम हमरा जनैत भेल अछि जे आन भारतीय भाषाक परिदृश्य मे, समतुल्य साहित्यिक मूल्यवत्ता रहितहु, मैथिली बहुत देखार भ'क' आगाँ नहि आबि सकल अछि। किसुन जीक ध्यान प्रायः एहि अभाव दिस गेल छलनि आ तें ओ मैथिली साहित्य मे नवीन आ आधुनिक मूल्य-बोध केँ परिभाषित-व्याख्यायित करबा दिस प्रवृत्त भेलाह। ओना चिन्तन पक्ष राजकमलक सेहो छलनि, मुदा नव कविताक प्रवक्ता होयबाक बीड़ा किसुने जी उठौलनि। हुनक ई काज मैथिली साहित्य मे हुनका ऐकान्तिक आ अप्रतिम स्थान तँ देयबैते छनि, मैथिली साहित्यो केँ आन भारतीय भाषाक परिदृश्य मे आगाँ आनि ठाढ़ करबाक प्रयास करैत अछि।

ई हम अन्यत्र कहि चुकल छी जे मैथिली मे मोटा-मोटी दू प्रकारक साहित्यकारक कोटि भेल अछि। एक टा ओ जे अपन साहित्यक बलें एक टा अपन व्यक्तित्व बनौलनि आ दोसर ओ जिनक व्यक्तित्वे ततेक उदग्र आ बहुआयामी रहलनि जे हुनक साहित्यक ओ मुखापेक्षी नहि छनि। किसुन जी एहि दोसर प्रकारक कोटि मे अबैत छथि। हुनक समग्र व्यक्तित्व हुनक साहित्यिक व्यक्तित्व सँ कतहु बेसी पैघ आ व्यापक छनि। सहरसा जिलाक सम्पूर्ण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधिक धुरी ओ छलाह आ एहि तरहें व्यक्ति रूप मे ओ संस्था बनि गेल छलाह। हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो अथवा मैथिली साहित्य परिषद, पुस्तकालय आन्दोलन हो वा शिक्षक संघक अधिवेशन, पत्रकार संघक वार्षिक आयोजन हो कि माध्यमिक शिक्षक सम्मेलन, विद्यापति स्मृति पर्व हो अथवा तुलसी जयन्ती, कवि सम्मेलन वा संगीत समारोह—किसुन जी सभतरि नहि केवल सक्रिय रहैत छलाह, अपितु नेतृत्वो प्रदान करैत छलाह। सहरसा जिलाक मैथिली आन्दोलनक अग्रणी रूप मे हुनक अन्यतम स्थान रहनि। साहित्य-सर्जना मे तँ लागल रहिते छलाह, साहित्यकारोक सर्जन मे संलग्न छलाह। प्रो. मायानन्द मिश्र, रामानुग्रह झा आ कतेको नव लेखक हुनके मार्गदर्शन प्राप्त क' यशस्वी भेलाह। कोसीक विभीषिका सँ पीड़ित, अल्प आर्थिक साधन मे वृहत-पारिवारिक दायित्व केँ उघैत अपन चिरसंगी पेटक अल्सर सँ तबाह किसुन जी सामाजिक-साहित्यिक बहुमुखी काज मे एतेक ऊर्जाक संग जे तत्पर रहैत छलाह, से हुनक अद्‌भुत जिजीविषा, कर्मठता आ आत्मबलक प्रमाण अछि। सुपौलक सार्वजनिक जीवन मे हुनक प्रभाव आ प्रतिष्ठा तेहन छल जे प्रशासन पदाधिकारी बिनु हुनक परामर्शक कोनो सार्वजनिक कार्यक आयोजन नहि करैत छलाह।

एहि प्रतिष्ठा आ प्रभावक अछैत किसुन जी मे कतहु सँ कोनो गुरुताक भाव

नहि छलनि। उग्र आ कटु होयबाक बात नवताक पक्षधर होइतहु हुनका मे कतहु नहि छलनि। जे हुनका सँ एको बेर सम्पर्क मे आयल होयताह, से हुनक मुखमंडल पर सदिखन व्याप्त रह'वला सौम्यता, शुचिता आ शान्तिक भाव सँ अभिभूत भेने बिना नहि रहल होयताह। अपना सँ छोटो सँ गप्प करैत काल ओ ततेक विनम्रता आ शालीनता सँ काज लेथि जे दोसर व्यक्ति सहजहि लज्जित-संकुचित भ' जाइत छल। एहन स्निग्ध आ मधुर व्यक्तिक आगाँ दोसर अपना केँ कतबो ओ पैघ होय, छोट अनुभव कर' लेल बाध्य भ' जाइत छल। किसुन जीक ऋषि-व्यक्तित्वक यैह गुण राजकमलो सन उच्छृंखल व्यक्ति केँ हुनका सोझाँ आदर्श छात्रक मुखौटा लगा क' प्रस्तुत होब' लेल बाध्य करैत छल।

भाषा-आन्दोलन हो अथवा साहित्य-चेतना, सुपौल जे मैथिलीक मानचित्र पर अपन अमिट स्थान बना लेने अछि, तकर सोरहन्नी श्रेय किसुन जी केँ छनि। मैथिली आन्दोलन मे जे भूमिका कलकत्ता, पटना वा दरभंगाक रहलैक अछि, ताहि सँ कनेको कम सुपौलक नहि। एखनो जे केदार कानन आ हुनक सहयोगी लोकनिक माध्यमे सुपौल मे साहित्यिक चेतना जाग्रत अछि, तकर उत्स किसुन जी छथि। मैथिलीक लेल जे काज किसुन जी क' गेल छथि, से हुनका संग सुपौल केँ मैथिलीक इतिहास मे अन्यतम स्थान सुरक्षित क' देने अछि। किसुन जीक अथक प्रयासें सुपौल मे मैथिली नव कविता पर जे सेमिनार 1967 मे आयोजित भेल, से एक टा एहन ऐतिहासिक घटना अछि जे पटना, कलकत्ता वा दरभंगा सन मैथिलीक केन्द्र मे संभव नहि भेल। ई किसुन जीक अद्‌भुत संगठनात्मक शक्तिक परिचायक अछि। सुपौल मे 'श्री मिथिला पुस्तकालय'क स्थापना किसुन जीक कर्मठताक फल थिक, जाहि मे ओ पाँच हजार सँ ऊपर पोथीक संग्रह क' लेने छलाह। सुपौल मे 'श्री मैथिली समिति'क संस्थापक सेहो किसुने जी छलाह, जत' साहित्यिक आ सांस्कृतिक आयोजन बराबर होइत रहैत छल। गणतंत्र दिवसक अवसर पर सुपौल मे सार्वजनिक राष्ट्रीय मेला लगयबाक स्वप्न केँ साकार क' नगरक विकासक लेल ओहि मेला सँ भेल आय केँ लगयबाक अद्‌भुत विचार हुनके मस्तिष्कक उपजा छलनि।

ई बात ध्यान देबाक अछि जे पेटक अल्सर सँ गंभीर रूपें आक्रान्त रहितहु किसुन जी एहिसभ सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजनसभ मे निरन्तर सन्नद्ध रहैत छलाह। रोग-शय्या पर पड़लो-पड़ल ओ मैथिलीक लेल ठोस रचनात्मक कार्य सतत करैत रहैत छलाह। हुनका मस्तिष्क मे कतेको रास विलक्षण योजनासभ छलनि आ ओहि योजना सभपर, ओ सक्रिय रूप सँ सोचथि। मात्र कागजी योजना बनब' वला तँ मैथिली मे बहुत गोटे छथि।

किसुन जीक एही प्रवृत्तिक प्रतिफलन भेल 'मैथिलीक नव कविता'क प्रकाशन मे, जकरा कय गोटे मैथिलीक 'तारसप्तक' मानैत छथि आ ओहि आधार पर किसुन

जी केँ मैथिलीक अज्ञेय सिद्ध करबाक प्रयास करैत छथि। एहि प्रकारक तुलना हमरा विचारें ने किसुन जीक प्रति पूरा न्याय क' पबैत छनि आ ने अज्ञेयक प्रति। एतबे मानब पर्याप्त अछि जे मैथिली नव कविता केँ ठाढ़ करबा मे जे योगदान एहि संकलनक रहलैक से साहित्यक इतिहास मे अक्षुण्ण रहत। एहि संकलन केँ किसुन जीक सम्पादन क्षमताक अभूतपूर्व प्रमाणक रूप मे राखल जा सकैत अछि। ओना मैथिली मे 'सौरभ' नामक हस्तलिखित मासिक पत्रिका ओ बहार करब आरंभ कयलनि। तकरा बहुत दिन बाद 'संकल्प' नामक एक टा कथा-त्रैमासिकक योजना ओ बनौने छलाह जकरा ओ अपन जीवन-काल मे नहि निकालि सकलाह। हिन्दी मे स्कूल पत्रिका सँ ल' क' अनेक साहित्यिक पत्रिका यथा, शिक्षक संघक मुख-पत्र 'प्राच्य प्रभा', 'कोशी दर्पण', 'चेतना' आदिक ओ कुशल सम्पादन कयलनि।

किसुन जी प्रारंभ मे हिन्दी मे लिखैत छलाह। पछाति मधुप जीक प्रेरणा सँ मैथिली मे लिख' लगलाह। मुदा मैथिली मे जखन लिख' लगलाह तँ हुनक भाषा पर हिन्दीक चेन्हास नहि छल। ई हुनक अनुपम भाषा-सामर्थ्यक द्योतक अछि। हम ई बात अन्यत्रो कहि चुकल छी जे हरिमोहन झा-यात्री सँ ल' क' ललित-राजकमल धरि मैथिली साहित्य जे यात्रा तय कयलक अछि, ताहि मध्य कय टा महत्त्वपूर्ण बिन्दुसभ अछि जाहि पर मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनिक समुचित ध्यान नहि गेलनि अछि। किसुन जी निश्चय एक टा ओहन बिन्दु छथि।

किसुन जीक व्यक्तित्वक एक टा महान पक्ष अछि जाहि पर प्राय: बहुत गोटेक ध्यान नहि गेलनि अछि। झिंगुर झा हुनक सहपाठी रहथिन, जिनकर कन्याक विवाहक अवसर पर ओ हुनक गाम मलाढ़ गेल छलाह। की भेलैक जे जखन विवाहक सभ इन्तिजाम भ' गेल रहैक आ कन्या केँ विवाहक लेल सजाओल जा चुकल रहैक, एकाएक खबरि अयलैक जे पता नहि कोन कारणें वर-बरियात विवाह हेतु आब' सँ मना क' देलकैक। अनभ्र वज्रपात भ' गेल। किसुन जी ओहि समय आगाँ आबि कहलथिन जे विवाह अवश्य होयत, आ ओ अपन ज्येष्ठ बालक विशो बाबू केँ बजवा वेदी पर बैसा देलथिन। कल्पना कयल जा सकैत अछि जे एहन उच्चादर्शक पालन कोनो साधारण व्यक्ति द्वारा कयल जा सकैत अछि?

किसुन जीक आकस्मिक मृत्यु ओहि समय भेलनि, जखन ओ सर्वाधिक रचनाशील छलाह। ई बात हमरा ओहि अंगरेजी कविक कविता मन पाड़ि दैत अछि जाहि मे एक खेलाड़ीक अपन प्रसिद्धिक शीर्ष पर पहुँचि क' मत्यु केँ प्राप्त करब श्रेयस्कर कहल गेल अछि। मुदा संगहि ई बात कतेक कचोट देब'वला अछि जे किसुन जीक जँ एहि तरहें असामयिक निधन नहि भेल रहितनि तँ मैथिली साहित्य और कतेक श्रीसम्पन्न भेल रहैत!

आरंभ : 7 (जून, 1995)

प्रयोगवादी कवि किसुनजी

गोपालजी झा 'गोपेश'

'आत्मनेपद'क ख्यातनामा लेखक रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिली साहित्यक एक टा एहन विभूति छलाह जे ने केवल वर्तमान मैथिली कविताक क्षेत्र मे प्रयोगवाद आओर नवता दिस प्रवृत्त भेलाह, प्रत्युत् साहित्यक अन्यान्यहु विधा मे अनुभूति एवं अभिव्यक्तिक चमत्कार देखाय विलक्षण भावयित्री एवं कारयित्री प्रतिभाक परिचय देलनि। नव्यकाल बुद्धि वैशिष्टय आओर सामाजिक वैषम्यक काल थिक। आजुक व्यक्तिक सोझाँ छोट-पैघ एतेक रास समस्या बनल रहैत अछि जे निसर्ग सौन्दर्य दिस देखबाक ने तँ ओकरा अवकाश भेटैत छैक आ ने ओहि दिस अपन चिन्ताक बहुलताक कारणें ओ प्रेरिते भ' पबैछ। साहित्यकार सेहो एही समाजक प्राणी थिक। आइ ओकरा सोझाँ प्रकृति-प्रेमक अभिव्यक्ति सँ बढ़ि क' कतोक गुरु-गंभीर समस्या उपस्थित छैक। अस्तु, हम देखैत छी जे युग-जीवनक कुंठा एवं अनास्थाक चित्रण जे किसुनजीक रचना मे भेटैत अछि से थिक युग-चेतनाक प्रतिबिम्बन। मैथिलीक नव कविताक प्रसंग स्वर्गीय प्रो. रमानाथ झाक कथ्य छनि जे 'एम्हर किछु दिन सँ नव कविताक रचना बड़ व्यापक रूपें आरम्भ भेल अछि। थिक ई हिन्दीक प्रभाव ओ हिन्दी समेत मे ई देशान्तर सँ आयल अछि। जहाँ धरि नव विशेषण, नव उपमा, नव उक्ति-भंगिमाक प्रश्न अछि, ई प्रवृत्ति श्लाघ्य अछि। परन्तु ठाम ठाम नव कविता मे बिम्ब वा प्रतीक ततेक सूक्ष्म अथवा विप्रकृष्ट रहैत अछि जे साधारण पाठकक हेतु ओ दुरुह भए जाइत अछि।[1] प्रो. आनन्द मिश्र वर्तमान युग केँ प्रयोगवादक युग कहल अछि। एहि तथ्य केँ ओहो अस्वीकार नहि करैत छथि जे 'देशान्तर मे एक लहरि पहिनहि उठल—ओतए सँ हमरहु देश मे नव कविताक नामे ई लहरि चलल।[2]

जेना कि स्व. रमानाथ झाक आशंका छनि, नव कविताक बिम्ब वा प्रतीक सूक्ष्म अथवा विप्रकृष्ट रहबाक कारणें साधारण पाठकक हेतु बोधगम्य नहि भ' पबैछ।

एहि सम्बन्ध मे इएह कहबाक अछि जे युग-जीवनक कुण्ठा एवं अनास्थाक चित्रण मे किसुन जी द्वारा प्रयुक्त बिम्ब वा प्रतीक नव होयबाक संग-संग सभक बुझबा जोग सेहो होइत अछि। नव उक्ति भंगिमा एवं उपमाक दृष्टि सँ 'मृत्यु'क जे परिभाषा कवि देल अछि से सार्वभौम सत्य दिस संकेत करैछ :

'मृत्यु एक टा शान्तिदायक सत्य जे चिरैता जकाँ तीत बुझाइछ। क्यो पीबय नहि चाहैत अछि, पीबय पड़ैछ सभ केँ मुदा, सभ यंत्रणा, सभ बीमारीक एक मात्र महौषधि सभक परम मित्र कहि नहि कखन, कत' ककरा भेटि जयतैक'[3], जहाँ धरि प्रतीक-विधानक दृष्टि मे नव कविताक मूल्यांकनक प्रश्न अछि, हमरा बुझि पड़ैछ जे नव कविता एहि दुआरे अनिश्चित, उच्छृखंल आओर अस्तव्यस्त लगैछ जे प्रतीक-दृष्टिक दुइ टा माध्यम अछि, जाहि मे सँ एको टा नव कविता मे वांछित रूपेण विद्यमान नहि। प्रतीक-सृष्टिक लेल सर्वप्रथम पुराण एवं प्राचीन वाङमय 'आकर' भ' सकैछ, कारण जे ओकर प्रतीकक संग पाठकक सांस्कृतिक पटलक सुदीर्घ साहचर्यक कारणे समन्वय रहैत अछि। प्रतीक-सृष्टिक दोसर माध्यम ई भ' सकैछ जे नव बिम्ब प्रयोगक पुनरावृत्ति सँ प्रतीकक स्तर प्राप्त करय। जहाँ धरि किसुनजीक प्रतीक विधानक सम्बन्ध अछि, हुनक कविता मे ने कतहु उच्छृंखलता भेटैछ आ ने अस्तव्यस्तता। एकर कारण ई थिक जे प्रतीक-सृष्टिक लेल कवि पुराण एवं प्राचीन वाङमय 'आकर'क कतहु उपेक्षा नहि कयलनि। कवि महाभारत सँ प्रतीक कोना चुनलनि अछि तकर दृष्टान्त देखू :

हे बन्धु,
अहाँ अपना केँ की बुझैत छी?
(आक्रोश नहि, ईर्ष्यामर्ष नहि
अपमान नहि, हीनता-बोध नहि)
जँ साँच गप्प कहि दी
तँ अहाँ अपना केँ सव्यसाची अर्जुन बुझैत छी
महाभारत विजेता, पुरुषार्थी महापुरुष
मुदा बुझा दी ओकर यथार्थ स्वरूप?
ओ केवल निमित्त मात्र छल
स्वतंत्र-व्यक्ति नहि छल
कोनो कुरुक्षेत्रक एक टा माध्यम
कोनो महाभारतक एक टा संज्ञा
ओकर अपन किछु नहि छलैक

जीवनक समस्त साधना आ उपलब्धि,
ककरो इंगितक अधीन (परतंत्र) छलैक।[4]

दोसर बानगी देखू—

आइ कोनो पार्थ केँ नहि छनि व्यामोह
सुनब' नहि पड़तनि कृष्ण केँ गीता
राष्ट्रक प्रत्येक व्यक्ति भेल अछि अर्जुन
कर्तव्यक गांडीव क' रहल सन्धान
सावधान! सावधान![5]

प्रश्न उठैत अछि जे आत्मनिष्ठा ओ दृढ़ताक अभाव मे, जे आजुक युग मे सामान्य थिक, विश्वास कोना प्राप्त भ' सकैछ? वस्तुतः साम्प्रतिक मानव द्विधाविभक्त-व्यक्तित्वक भ' गेल अछि, जखन कि विश्वासक लेल व्यक्तित्वक अखंडता चाही। हमरा जनैत किसुनजीक 'एक टा प्रत्याख्यान' कविताक अंतिम टुकड़ा सँ कविताक उपजीव्य 'विश्वास' पर एक तरहें प्रहार भेल अछि।

वस्तुतः बुद्धिजीवीक परिवेश मे नगर जीवन प्रमुख रूपें आबि गेल अछि। आधुनिकताक विसंगति, भय, संत्रास इत्यादि अनायासहि कविता मे सन्हिआय गेल अछि, जे थिक वर्तमान रचनाशीलताक वैशिष्ट्य। किसुनजीक कविता सभ मे कतोक ठाम आधुनिकताक विसंगति, भय, संत्रास इत्यादिक चित्रण भेटैत अछि। उदाहरणस्वरूप 'निर्वासित अपने देश मे' शीर्षक कविता मे ओ लिखैत छथि—

अहाँक दृष्टि तँ ओझराएल अछि
बाभन, कायस्थ, क्षत्रिय,
भूमिहार आ यादवक
छहरदेवाली मे
मुदा हम छी एत'
छहरदेवाली सभ सँ फराक
हास्यास्पद द्वेषपात्र
अनफिट मनुष्य मात्र
कहि नहि कखन के
हत्या क' देत
नोचि क' खा लेत?[6]

नव काव्य प्रवृत्तिक प्रसंग किसुनजी 'आत्मनेपद'क भूमिका मे स्पष्ट स्वीकार कयने छथि : 'नवीन कविता मे परम्परागत भावुकता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म संवेगात्मकता ओ युगानुरूप अन्तःसंघर्ष जीवनक

परिवर्तित मूल्य आ परिलक्षित यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यक नवीन शैली, काव्य सत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन शैली, बिम्ब योजना—इएह थिक नव काव्य प्रवृत्ति।'

जेना कि हम पहिनहि निवेदित कयलहुँ, कविता मे अनायासहि सन्हिआयल आधुनिकताक विसंगति, भय, संत्रास इत्यादि वर्तमान रचनाशीलताक वैशिष्ट्य थिक। किन्तु नवतावादी एहि वैशिष्ट्य सँ समन्वित होयबाक कारणें नव कविता केँ परम्परा सँ असम्बद्ध वा मुक्त घोषित क' दैत छथि। ओना नवताक सम्बन्ध मे हमर अपन धारणा ई अछि जे जीवन मे वस्तुतः नव किछु नहि होइत अछि। जे उभरि क' सोझाँ अबैत अछि से थिक सनातन। ओकरा नव रूप आओर नव अभिव्यक्तिक संग प्रस्तुत करबे थिक नवीनता। नव वा पुरान, नीक वा बेजाय, एहि तरहक कथा बहुधा भ्रमात्मक होइत अछि। कोनो वस्तु नव होइत अछि वा पुरान—ई थिक कालधर्म। परञ्च कोनो वस्तु नीक होइत अछि वा बेजाय—ई थिक ओकर गुण-धर्म। वस्तुतः नव कविता नव होयबाक कारणे नीक नहि मानल जा सकैछ आओर पुरान कविता पुरान होयबाक कारणे खराब नहि भ' जाइछ। किन्तु सूक्ष्म दृष्टि सँ देखला सन्तां नवतावादी कविता केँ परम्परा सँ मुक्त घोषित करबाक प्रयास निस्सन नहि बुझि पड़ैत अछि। परम्परा थिक ओ वस्तु जकरा सँ असम्बद्ध वा मुक्त घोषित भ' क' नवतावादी कविता मध्य अभिव्यक्त अनुभूति मे माटि-पानिक गन्ध किन्नहुँ नहि रहि सकैत अछि। तें कवि कोनो-ने-कोनो प्रकारें परम्पराक प्रति प्रतिबद्ध रहबे करत। एहि प्रसंग डॉ. जयकान्त मिश्रक कथन सँ हम पूर्णतः सहमत छी जे 'परम्पराक अर्थ प्राचीनता नहि थिक आ ने मात्र प्राचीनता केँ तोड़ने परम्परा भंग भ' जाइत छैक। परम्परा ओ वस्तु थिक जकरा रहने कवि मैथिलीक कवि रहैत अछि। ओ जा धरि मिथिलाक माटिपानि-बसात, मिथिलाभाषा, मिथिलाक लोक, मिथिलाक बनल रहताह, परम्परा नहि टुटतनि, ओ मैथिलीक कवि बनल रहताह।'[7]

किसुनजीक 'खुटेसल' शीर्षक कविता एहि तथ्य केँ प्रमाणित करैत अछि जे परम्पराक प्रति जे कविक प्रतिबद्धता अछि, से सहज नहि थिक—ओ थोपल अछि। हुनक मान्यता छनि जे हमरा सभ केँ अतीत 'हरी' मे ठोकने अछि; हजार वर्ष बितलाक बादहु हमरा सभ निरन्तर चलैत ओही ठाम ठाढ़ छी आओर हमरा लोकनिक अगिला पड़ाव भरिदिन चललाक बाद साँझ मे पुनः ओहीठाम होइछ, जत' हम सभ कोल्हुक बरद जकाँ भोरखन उठल छलहुँ। किसुनजीक दृष्टि मे कविता मनुवख केँ मुक्त करबाक प्रयास अवश्य करैत अछि, किन्तु परम्पराक वृत्त मे 'समन्वयवादी' होयबे मे ओकर गति छैक। तें कवि कहैत छथि :

हम सभ समन्वयवादी छी
लड़बाक अपेक्षें हमरा सभ
बचि जयबाक बाट बनबैत छी
जीवन भरि अतीतक पाउजे करैत छी[8]

परम्पराक प्रति थोपल एहि प्रतिबद्धता मे एहि बात पर बल देल गेल अछि जे हमरालोकनि 'बापक बाप आ तकरा बापक बाप, माने संख्यातीत बापक परम्परा मे जिनिहार लोक थिकहुँ'; संगहि कवि ईहो मानि लेलनि अछि जे एक टा दुर्निवार माया जे सौंसे देश कें अपना आँचर तर झँपने अछि, तें हाँजक हाँज लहाशक संग रहबा मे हमरा सभ कें गौरव-बोध होइत अछि। परम्परा तेना जेकाँ कविक अचेतन मे पैसि क' सम्पूर्ण मानसिकताक संचालन करैत अछि जे हुनका सहज ढंगे अनुभव होइत छनि जे लहाश सभक अनेक अक्षौहिणी हमरा सभक माथ मे प्रेतनृत्य क' रहल अछि आ अपना हथियार सँ हमरा लोकनि कें 'हैड्स-अप' करौने अछि। कविक शब्दावली-प्रयोग एहि दिस संकेत करैत अछि जे समस्त वर्तमान आ भविष्य कें एक टा अजोध अजगर दकचने अछि। हम कहब जे 'अजोध-अजगर' परम्परा नहि थिक तँ दोसर आर की? जखन हमरा अचेतन मे परम्पराक प्रति एतेक विकर्षण अछि, तखन कतेक काल धरि अपन माटि-पानि सँ हम सम्बन्ध बनओने रहब? किसुनजी दुनू बात कहैत छथि। कतहु ओ महाभारतक विजेता आ पुरुषार्थी महापुरुष कें निमित्त मात्र कहि, ओकर स्वतन्त्र व्यक्तित्व फराक क' दैत छथि आ कतहु मानवक स्वतन्त्र व्यक्तित्व कें, वा ओकर वर्तमान आ भविष्य कें, परम्परारूपी अजोध अजगर सँ डँसवा दैत छथि। कविक ई शब्दावली एहि मंतव्यक पुष्टि लेल पर्याप्त अछि :

समस्त वर्तमान आ भविष्य कें
एक टा अजोध अजगर दकचने अछि
अपन चोख बिखाह दाँत
हमरा लोकनिक पीठ मे भोंकने अछि
हमरा लोकनि बान्हल छी
हमरा सभ कें अतीत 'हरी' मे ठोकने अछि।[9]

यदि परम्पराक प्रति कोनो-कोनो कविता मे ओ अपन आकर्षण देखबैत छथि, तँ दोसर दिस पुरान एवं परम्परागत मूल्य कें अपना हेतुक नितान्त अप्रासंगिक बुझि ओ 'प्रतिवादक स्वर'क उद्घोष एहि शब्दें करैत छथि :

हम खोखरि देमय चाहै छी
अहाँ लोकनिक खोल
खाहे लहू-लहुआन भ' जाय

हमर सौंसे देह।
हम देख' चाहै छी
अहाँक नग्न प्लास्टिक पिरामिड रूप
जे चाटुकार इतिहास द्वारा
बलात् हमर पीढ़ीक माथ पर
लादि देल गेल अछि।[10]

वस्तुतः मैथिलीक नव कविता अत्याधुनिक जीवनानुभूति कें स्वायत्त करबा मे समर्थ सिद्ध होइत आयल अछि। जे एहि मे कोनो सन्देह नहि जे भारतीय जन-जीवनक सांस्कृतिक चेतना मैथिलीक नवतावादी अभिव्यक्ति मे बढ़ियाँ जेकाँ पचल अछि। नव कवि लोकनिक लेल भाषा प्रयोगक स्वतन्त्रता अपेक्षणीय बुझि पड़ैछ, कारण जे ओकरा हेतुक आधुनिक जीवन-संदर्भक समस्या एवं परिस्थितिक निदर्शन करब अनिवार्य जेकाँ भ' जाइत छैक। तें कवि लोकनिक काव्य-भाषा मे एतेक प्रतीकक प्रयोग होइत अछि। प्रत्येक शब्दक प्रतीकक ज्ञान प्राप्त करबा लेल तत्सम्बन्धी परिवेशक ज्ञान आवश्यक। किसुनजीक 'आत्मनेपद' मे उल्लिखित वक्तव्य एहि तथ्यक पुष्टि करैत अछि—'...आदिकाल सँ कविता मे बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग होइत आयल अछि; मुदा जाहि प्राचुर्य तथा जाहि लाघव सँ आइकाल्हि नव कविता मे ओकर सन्निवेश भ' रहल अछि, से पहिने नहि छल।' कवि द्वारा स्वयं प्रस्तुत कयल गेल किछु बिम्ब बड़े सुन्दर उतरल अछि। 'जीवन' तथा 'दम्पति' एहि दुहू परिभाषाक उद्धरण द्रष्टव्य अछि :

जीवन

एक टा अपरूप शक्ति
जकरा अयला पर उत्सव-समारोह
चलि गेने सभ छाती पीट' लगैछ
आ रहला पर विवशताक वेदना
एक टा निर्मोही अतिथि।

दम्पति

एक जोड़ चिड़ै
विभिन्न दिशा सँ आबि
कोनो गाछक ठाढ़ि पर
बड़े यत्न सँ खोंता सजबैछ
बिहाड़ि-पानि सँ आशंकित
बानर-बिलाड़ि सँ आतंकित

पाँखि मे दायित्व
आँखि मे छैक कल्पना
चोंच मे दाना, मोन मे अनुराग
धनसन जँ छपकल छै
कतहु कोनो नाग।[11]

किसुनजीक अवदान जे साहित्यक आन विधा मे अछि, तकरा हम अपन प्रस्तुत आलेख मे विषय नहि बनाय, अन्त मे इएह निवेदित करब जे नव भाववोधक जे कविता ओ लिखलनि, ताहि सँ मैथिली-साहित्य-इतिहासक कविता विधाक शिल्प ओ शैलीक मार्ग अवश्य प्रशस्त भेल अछि।

स्मृतिसंध्या : 1980

संदर्भ :

1. नवीन गीत : सं. रमानाथ झा, भूमिका, पृ. 12
2. कविता संग्रह (मैथिली अकादमी, पटना) : प्रो. आनंद मिश्र लिखित भूमिका, पृ. 6
3. मिथिला मिहिर, 3 अगस्त, 69
4. मिथिला मिहिर, 13 अक्टूबर, 1968; एक टा प्रत्याख्यान (कविता) : रामकृष्ण झा 'किसुन'
5. मिथिला मिहिर, 2 जनवरी, 1966 : कालघोष : रामकृष्ण झा 'किसुन'
6. सोनामाटि, फरवरी, 1969
7. परम्परा एवं आधुनिक कविता (चेतना समिति, पटना) : 'परम्पराक परित्याग : साहित्यक अस्तित्वक प्रश्न' शीर्षक डा. जयकान्त मिश्रक लेख, पृ. 10
8. मिथिला मिहिर, 18 फरवरी, 1968 : खुटेसल (कविता) : रामकृष्ण झा 'किसुन'
9. ऐजन, पृ. 7
10. कविता संग्रह (मैथिली अकादमी) : पृ. 129-130
11. मिथिला मिहिर, 3 अगस्त 69 : किछु परिभाषा : रामकृष्ण झा 'किसुन'

किसुन जी, आगि, सुमन-मधुप-अमरक भनसाघरक चूल्हि आओर...

कीर्तिनारायण मिश्र

सरल, सोझ आ निश्छल व्यक्ति सँ बड़ सहजता सँ सम्पर्क स्थापित कैल जा सकैछ अथवा भ' जाइत छैक। ताहू मे जँ ओ व्यक्ति ग्रामीण परिवेश आ संस्कारक हो, सहृदय आ विद्वान हो, छल-छद्म सँ दूर आ मानवीय सम्बन्ध केँ सर्वोपरि बूझ' बला हो, स्नेह श्रद्धा आ आत्मीयता मे डूबल रहैत हो, तखन तँ ओकरा संग मात्र सम्पर्क नहि स्थापित कैल जा सकैछ, अपितु स्वार्थो साधल जा सकैछ, थोड़-बहुत मान-सम्मान द' ओकरा सँ सेवा-टहल सेहो कराओल जा सकैछ। कहबाक अभिप्राय जे नागरिक कुटिलता आ ग्रामीण वंचकताक हाथ मे ओकर सरलता केँ औजार जकाँ व्यवहृत होइत देखल जा सकैछ।

किसुन जीक मादे सोच' काल ई बात कियैक हमरा मोन मे आयल? की हुनक विद्वता, कवि-हृदयता आ आन्तरिक निश्छलता हुनका बुड़बकीक सिमान पर ठाढ़ क' देने छलनि, जतय सँ हुनका केओ केम्हरो पटा-फुसला केँ ल' जा सकैत छल, केहनो काज करबा सकैत छल आ काज निकालि लेलाक बाद 'डिस्पोजेबल पेकिंग' जकाँ हवा मे उड़' लेल छोड़ि द' सकैत छल?

संभवत: हमर एहि विचारक उत्स किसुन जीक किछु समकालीन आ प्राय: समवयसी पंडित-सह-साहित्यकार द्वारा व्यक्त एवं प्रचारित एहि धारणा मे अछि जे—'किसुन जी भसिया गेलाह। काव्य ककहरो केर अवगति नहि राख' बला नवतुरिया आ नवसिखुआ कवि सभक अगुआ बन'क लेल, काव्य-परम्परा मे स्थापित-स्वीकृत भ' गेलाक बादो अपना केँ अग्रणी कहयबाक लेल ओ आधुनिकता, नव कविता, अकविता आदिक नाम पर दिग्भ्रमित आ मूर्तिभंजक कवि सभक संग द' रहल छथि, ओ पथभ्रष्ट भ' गेलाह।'

हमरा जनैत किसुन जी ने बुड़िबक जकाँ सोझ छलाह, जकरा प्रलोभित-प्रभावित कए लोक कोनो काज करबा सकैत छल, आ ने भसिया क' मैथिलीक नवीन काव्य-धारा मे सम्मिलित भेल रहथि। हुनक व्यक्तित्वक निश्छलता-सरलता-सहजता, आत्मानुशीलन एवं सामाजिक-साहित्यिक अध्ययन सँ प्रतिफलित जीवनक सहज विचार अथवा व्यवहार बनि गेल छलनि। इएह गुण कोनो व्यक्ति कें वास्तविक अर्थ मे महान बनबैत छैक। ई गुण प्रतिकूल परिस्थिति, अभाव, रोग आ नानाविध कष्टक मध्यो मृत्युपर्यन्त हुनक संग नहि छोड़लकनि।

सभक लेल सहज-सुलभ रहितो कतेक व्यक्ति द्वारा ओ बुझल गेलाह? खाहे हुनक गाम-घर हो अथवा मैथिली साहित्यक समाज-कतेक व्यक्ति हुनका चीन्हि सकलनि?

जतय धरि मैथिलीक नवीन काव्य-धारा मे भसिया कें हुनक सम्मिलित होयबाक प्रश्न अछि—ई बात बड़ हास्यास्पद लगैत अछि।

संस्कार, परम्परा, अध्ययन आ अध्यापन सँ हुनका संस्कृत-साहित्यक विशाल भंडार प्राप्त भेल रहनि। देश-विदेशक विभिन्न भाषा-साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन ओ करैत रहैत छलाह। हुनका मे सर्जनात्मक प्रतिभा छलनि आ विश्लेषणक अदभुत क्षमता। मैथिल समाज मे ओतेक आदर-सम्मान पाबि अपन समानधर्मा सभ जकाँ आत्मतुष्ट अथवा आत्ममुग्ध रहि सौखिया लेखन करैत रहि सकैत छलाह आ कवि सम्मेलन कें 'पार्ट-टाइम' केरियर बना अपना कें 'ग्लेमेराइज्ड' क' लोकप्रियता आ वाहवाही लूटैत आजीवन प्रसन्न रहि सकैत छलाह। किन्तु, से हुनका स्वीकार नहि छलनि।

समवर्ती सँ बेसी हुनका पूर्ववर्त्ती आ परवर्ती आकृष्ट करैत छलथिन। पूर्ववर्ती यात्री जी अपन समकालीन कवि सभ कें संस्कृत साहित्यक पीठिका पर पद्मासन लगा हिन्दी आ बांग्ला साहित्य सँ प्राण-वायु लैत, पारम्परिक साहित्य-सर्जन कर' लेल छोड़ि, सर्जनाक नव मार्गक अन्वेषण केने छलाह। क्षेत्रीय गंध सँ अनुप्राणित रहितहुँ, हुनका राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मुक्तिकामी जन-आन्दोलन आओर व्यवस्था सँ लड़ैत एवं शोषणक देबाल कें तोड़ैत श्रमजीवी आ सामान्य लोक बेसी प्रभावित करैत छलनि। शुरू-शुरू मे पण्डित-समाज द्वारा उपहासक पात्र बनि गेलाक बादो यात्री जी 'चित्रा'क प्रकाशनक उपरान्त मैथिली साहित्यक लेल आधुनिकताक विशाल स्तम्भ बनि गेलाह।

तहिना किसुन जी कें परवर्ती राजकमल प्रभावित-आकृष्ट कैलथिन। मैथिल समाज आ साहित्य द्वारा निन्दा-कुचर्चाक पात्र बनल रहितहुँ वैचारिक क्रान्ति, देह-दर्शन, निन्न-भूख-नारीक परिक्रमा करैत फोंक आदर्शक नग्न चित्रण करैत

राजकमल नवतुरिया वर्गक 'मसीहा' बनि गेल छलाह।

यात्री जी एवं राजकमलक माँझ छुटि गेल रिक्तता कें भरबाक लेल किसुन जी संवेदनात्मक सेतु बनाब' मे लागि गेलाह।

डॉ. भीमनाथ झाक शब्द मे, 'यात्री अपन चूल्हि आदिये सँ फराक क' लेलनि आ राजकमल-ललित अपन चूल्हि दोसर घर (अंग्रेजी) मे गाड़ि लेलनि किन्तु, किसुनक चूल्हि छलनि गाड़ल मधुप-सुमन-अमरक भनसाघर मे। यात्री-राजकमल जकाँ अपन कौलिक घर मे किसुन कें गारि नहि सुन' पड़लनि, गरदनियाँ नहि भेटलनि अपितु अन्त धरि स्नेह आ आदर भेटैत रहलनि। तें प्राय: नवका घर, मैथिलीक नव कविता मे, हिनक स्वागत तँ भेलनि मुदा यात्री- राजकमल जकाँ कान्ह पर उठा क' हिनक जय-जयकार नहि कैल गेलनि, हिनक हाथ मे झण्डा तँ देल गेलनि मुदा हिनका झण्डा नहि बूझल गेलनि।'

अस्वस्थ परम्पराक विरोध आ नव यथार्थ कें स्वीकार क' नवीन मान-मूल्यक स्थापनाक लेल सदति झण्डा उठायब, झण्डा बनब आ झण्डा गाड़ब आवश्यक नहि होइत छैक। ई काज व्यक्तिगतो स्तर पर अनुभव कें विस्तार द' आ अपन सर्जनात्मक प्रतिभा कें युगानुकूल मोड़ द' कैल जा सकैछ।

किसुन जीक समक्ष बड़का 'चैलेंज' छलनि। यात्री जी आ राजकमल जाहि पारम्परिक काव्य-चिनुआर सँ फराक भ' अपन सर्जनात्मक व्यंजन दोसर चूल्हि पर बनाब' लगलाह, किसुन जी ओहि चिनुआर पर बैसि नानाप्रकारक देशी-विदेशी, नवीन आ स्वास्थ्यप्रद मानसिक खाद्य बनाब' मे लागि गेलाह आ ओकरा आधुनिकता बोधक 'न्युट्रिशन' सँ युक्त कर' लगलाह।

संस्कृतक विशाल आ विश्वव्यापी काव्य-परम्परा पर मुग्ध आ ओकर वैभव आ क्षमता सँ आह्लादित-आतंकित पण्डित-समुदाय कें वाल्मीकि, व्यास, दण्डी, भारवि, भास, शूद्रक, माघ, कालिदासक समक्ष विद्यापति झूस लगैत छलथिन ओहि वर्ग कें हुनक 'कोमलकान्त पदावली' नहि, हुनक पाण्डित्यपूर्ण संस्कृत रचना प्रभावित करैत छलनि। तथापि अपन रचनाक बल पर हुनका लोकप्रियता आ लोक-स्वीकृति भेटलनि आ अन्तत: ओ पण्डितो समाज द्वारा स्वीकार कैल गेलाह। किसुन जीक समक्ष दू टा विकल्प छलनि। सुमन-मधुप वला परम्परात शैली मे संस्कृत-साहित्यक भावधारा मे बहैत तथाकथित उत्कृष्ट आ शाश्वत काव्य-सृजन मे लागल रहब अथवा यात्री-राजकमल जकाँ नव यथार्थ कें स्वीकार क' आधुनिक भाव बोध कें नवीन शैली मे अभिव्यक्त करब।

पूर्व संस्कार आ परम्परागत रूढ़ि कें तोड़ब बड़ कठिन काज होइत छैक, तहिना कठिन होइत छैक आधुनिकताक नाम पर पसरैत अतिवाद कें स्वीकार करब। किसुन

जी व्यक्तिगत चेतना, अनुभव, आत्ममंथनक आधार पर अपन साहित्यिक दायित्व केँ बुझैत मध्यम मार्ग अपनौलनि।

भीमनाथ जी जकरा सुमन-मधुप-अमरक चूल्हि कहैत छथि, मिथिला मे चूल्हि आ भनसाघरक बड़ व्यापक रूढ़िवादी अर्थ छैक। ओ किसुन जीक लेल मात्र 'आगि' रहि गेलनि। पजरैत आगि पर खिच्चड़ि बनाओल जाय आ कि 'पोलाव', रोटी आ कि 'नन', साग आ कि 'करी'-सभ भनसिया पर निर्भर करैत छैक। आगि व्यक्ति-व्यक्ति अथवा वस्तु-वस्तु मे भेद नहि करैत छैक। ओकर उपयोग भानस बनाब' धरि सीमित राखल जाय आ कि ओहि सँ ऊर्जा सेहो प्राप्त कैल जाय, ओकरा ऊकधरि सीमित राखल जाय आ कि समिधा सेहो बना देल जाय—ई उपयोग कर' बना पर निर्भर करैछ।

आगिक धर्म मात्र ताप छैक। ओकर संयोग सँ निर्माण आ नाश दुनू होइत छैक। की हो, ई प्रयोगकर्ता निश्चित करैत अछि।

निष्क्रिय समाज मे आगि छाउर तर मे तोपल रहि जाइत छैक आ लोक अनंतकाल धरि यथास्थिति केँ स्वाभाविक अवस्था बुझैत ठिठुरैत रहि जाइत अछि।

आगि स्वयं उत्पन्न कैल जा सकैछ आ दोसर ठाम सँ माँगि, आनि कतहु तेसर ठाम पजारल जा सकैछ। मिथिला मे माँगि केँ पजार' वला रेबाज बेसी छैक।

यात्री जी आ राजकमल अपन ऊर्जाक लेल आगि स्वयं उत्पन्न कैलनि किन्तु, किसुन जी सुमन-मधुपक भनसाघर सँ ल' आनलनि।

एतय मुख्य प्रश्न ई अछि जे किसुन जी ओहि आगिक उपयोग कोना कयलनि, कतेक दूर धरि पूर्वाग्रह आ परम्पराक व्यामोह सँ दूर रहि ओहि सँ युग-धर्मक निर्वाह कैलनि? ओ मैथिलीक नव कविताक भूमिका मे लिखैत छथि—'ककरा पलखति छैक एहि उद्दाम प्रवाह (आजुक जीवनक अवकाश विहीन दौड़ा-दौड़ी) सँ किछुओ क्षणक हेतु अपना केँ फराक राखि एहि अयथार्थ गप्प (अतीतक भ्रामक आ बाँझ गौरव अथवा सामंती शोभा वा पारम्परिक काव्य रचना) सँ झूमि उठय? सोझाँ मे पसरल छैक जिनगी आ जिनगीक नीक-अधलाह चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण—तकरा सहबाक आ भोगबाक यथार्थता केँ अनठा-फुसिया क' पुरना परंपराक प्राचीन कविलोकनिक भावुकता जर्जर-सड़ल लहास केँ पँजिऔने रहब—कोना संभव छैक आजुक कवि सभक हेतु? तेँ मैथिलीक नव कविता केँ, नव कवि केँ अपन कवि-काव्यक परम्परा सँ कटबाक आ परम्परा केँ काटबाक प्रश्ने निरर्थक थिक...। मैथिलीक नव-कविता एहि दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेस केँ फाड़िक', मिथ्या अवधारणा केँ हटाक' वास्तविकताक दर्शन करबैत अछि...। ओकर (नव कविताक) मापदण्ड आ मानदण्ड नितान्त परिवर्तनशील आ अस्थिर छैक, तेँ परम्पराक पोखरिक

हरियरका-सड़लाहा पानि केँ अवगाहन योग्य नहि बूझि क', ओकरा बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि ओहि मे खसब' चाहैत अछि, जाहि सँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक, से खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल-पालित रोहु-भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ!'

अपना समयक साक्षात्कार आ साक्ष्य प्रस्तुत कर' मे आ युगधर्मक निर्वाह कर' मे किसुन जी अपना पीढ़ी मे सभ सँ आगाँ छलाह। ओ सभ सँ बड़का विद्रोही आ क्रान्तिदर्शी सिद्ध भेलाह। परम्पराक विरोध ओ नवका पीढ़ीक अगुआ बनबाक लेल नहि, आन्तरिक विवशतावश कैने रहथि। परम्पराक गतानुगतिकता, पिष्टप्रेषण-पद्धति, कुण्ठाकीर्ण विचारधारा आदिक एहन घटाटोप छलैक जे ओहि मे नवका पीढ़ी दिग्भ्रमित भ' सकैत छल। किसुन जी केँ साहित्यक गहन अध्ययन छलनि एवं मैथिल मनोभूमि तथा परम्परा केर पर्याप्त ज्ञान। अपन अनुभव, चिन्तन आ अध्ययन सँ ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे 'अयथार्थ गप्प'क आनन्दक लेल उद्दाम प्रवाह ने रुकि सकैत अछि आ ने ओकरा रोकल जा सकैछ (द्रष्टव्य उपर्युक्त उद्धरण)। ओ स्पष्ट शब्द मे अपन पूर्ववर्ती आ तत्कालीन पारम्परिक लेखन केँ 'दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेस' कहैत छथि आ नव कविता केँ ओकरा फाड़ि वास्तविकताक दर्शन कराब' वला प्रयास। ई दुस्साहस कर' वला हुनका पीढ़ी मे कतेक रचनाकार रहथि?

ई दुस्साहस आ बोध हुनका आत्म-मंथन आ आत्म-संघर्ष सँ प्राप्त भेल छलनि। बड़ कठिन छैक पूर्वार्जित ज्ञान, बुद्धि-सम्पदा आ अनुभव सभ केँ अस्वीकार क' देब, सभ केँ एकहि धक्का मे अपना सँ दूर भगा देब आ बीच चौबटिया पर दिगम्बर भ' जायब। किसुन जी सन ताहि समय केर स्थापित-सम्मानित कविक लेल आओर कठिन।

किसुन जीक मनोभूमि प्रारम्भहि सँ भिन्न छलनि। ओ पारम्परिक लेखनक स्थान पर नव लेखन केँ प्रतिष्ठित कर' चाहैत छलाह आ तेँ समतुरिया सँ बेसी नवतुरियाक प्रति साकांक्ष छलाह आ यैह कारण छल जे कोसीक अभिशाप भोगैत सुपौल सन सुदूर देहात मे रहियो क' मैथिली नव लेखन पर, आइ सँ पच्चीस-छब्बीस वर्ष पूर्व, 1967क शुरुआती दिन मे, पहिल विचार-गोष्ठी अथवा सेमिनार आयोजित कैलनि। एहि तरहक दुस्साहस ओहि समय मे, किसुन जी सन दुर्द्धर्ष संकल्पशक्ति बला व्यक्ति क' सकैत छल। गोष्ठीक आयोजन सँ ल' क' दूर-दूर सँ खर्चा द' साहित्यकार सभ केँ बजायब बड़ बेसी खर्चा वला काज छलैक, जकर व्यवस्था सुपौल सन स्थान मे क' लेब कठिन तथापि किसुन सेमिनारक आयोजन नहि, ओहि मे पढ़ल जाइबला 'पेपर' केँ पुस्तकाकार छपयबाक निर्णयो ल' लेलनि। जेना-तेना सुपौलक राष्ट्रीय मेलाक सांस्कृतिक विभाग सँ सहयोगक आश्वासन लेलनि। सहकर्मी आ मित्रवर्ग

कें मदतिक लेल तैयार कैलनि आ अपन व्यक्तिगत प्रभावक उपयोग कर' लगलाह।

ताधरि हम मैथिली मे अत्यल्प लिखने रही। हिन्दीक 'नयी कविता'क कवि, आलोचक आ प्रवक्ताक रूप मे चर्चा मे आबि गेल रही आ 'परिवेश'क सम्पादनक कारण सम्पर्क-विस्तार सेहो भ' गेल छल। किन्तु, मैथिलीक लेल अपरिचित नहि तँ अल्पख्यात अवश्ये छलहुँ। तथापि किसुन जी औपचारिक निमंत्रण-पत्रक संग व्यक्तिगत पत्र लिखि 'सेमिनार मे भाग लए 'पेपर' पढ़बाक आग्रह' कैलनि। अपन योजनाक प्रारूप तैयार कर' मे राजकमलक सहयोग लेलनि—ई बात कतेक बेर लोक सभ कें कहने रहथि। अपन संकल्प कें क्रियान्वित करबा मे ओ कतेक गम्भीर छलाह तकर अन्दाज ओहि सभ कवि कें होयतनि जे 'मैथिली नव कविता' मे संकलित छथि आ जिनका बेर-बेर किसुन जीक पत्र भेटल होइतनि।

सुपौलक सेमिनार मे नवलेखन पर मात्र विचार, चर्चा भेल छल। कविलोकनि दस-दस गोट कविता आ वक्तव्य पठयबाक आश्वासन द' विदा भ' गेलाह। आब ई किसुन जीक दायित्व छलनि, हुनका सभ सँ आन-आन संकलनीय कवि सँ रचना कोना आबय। ओ सभ कें पत्र-पर-पत्र लिख' लगलाह। कतेक मास बीति गेलनि। किछु व्यक्ति कें छोड़ि किनकहु उतारा नहि। एम्हर ओ अस्वस्थ रह' लगलाह आ चिकित्साक लेल बेर-बेर राँची-पटनाक अस्पताल जाइ लगलाह। सभठाम एकहि चिन्ता—पोथी कोना बहरायत। अन्ततः रचना जुटा आ भूमिका लिखि ओ प्रेस कॉपी तैयार क' लेलनि किन्तु, छपय सँ पहिनहि विदा भ' गेलाह। पोथी छपलाक बाद लोक कें ज्ञात भेलै जे किसुन जी केहन ऐतिहासिक काज क' गेलाह आ केहन छलनि हुनक लेखकीय प्रतिभा आ संगठनात्मक क्षमता।

कोनो भाषा मे साहित्यिक विधा केर लेखक कवि कें एतेक शीघ्र मान्यता नहि भेटैत छैक। किसुन जी कें नहि भेटितनि, जँ रोग हुनका संसार छोड़'क लेल बाध्य नहि करितनि। आब जखन ओ विदा भ' गेलाह त' लोकक लेल हुनक प्रशंसा मे स्तुतिगान, बाजब-लिखब, रचनावली बहार करब, श्रेष्ठ आ महान कहब आवश्यक भ' गेलै। हमहुँ अपना कें ओहि वर्ग सँ बाहर नहि बुझैत छी आ हुनका पर अपन संस्मरण, लेख, कविता लिखि कर्त्तव्यक इतिश्री बुझि लैत छी— *'किसुन जी/कोना लागत जँ हम अहाँ कें/पनरह अगस्त अथवा छब्बीस जनवरी जकाँ/स्मरण करी/सौंसे वर्ष/विस्मृति केर धूरा तोपि/एक दिन/झाड़ि कए सुखा कए/आत्मनेपद सँ/चौपहरा पुरश्चरण करी*

अहाँ चौंकब नहि किसुन जी/एहिना होइत छैक/आस्था अधः गमन करैत पाबनि बनि जाइत छैक/आ प्रेम/झण्डा मे बान्हल फूल जकाँ झड़ि जाइत अछि/ओना अहाँ भाग्यवान छी/वर्षक पक्ष-विशेष मे पितर जकाँ स्मरण कैल जाइत छी/ई बात दोसर थिक जे अहाँ कें/कवि सँ समाधि बना देल गेल/आ सभ लिखलाहा कें/शिलालेख मे जड़ा देल गेल

आब अहाँ एहिना दाबल रहि जायब/पाथर कें संवेदनशील बनयबा मे/जिनगी उत्सर्ग कर'बला केर/इएह नियति होइत छैक/अहाँ त' देखि गेल छी/कोना भुवन जी आ राजकमल/प्रस्तरीकृत भ' गेलाह

अहाँक प्रतिमा कें माला पहिरा/लोक सभ कीर्तन मे लागल अछि/किछु कीर्तन करैत अछि/आ किछु मात्र सुनैत अछि/किन्तु, आँखि मूनि सभ केओ मूड़ी डोलबैत अछि/झालि-मजीरा ढोलक केर ताल पर

केहन लगितय किसुन जी अहाँ कें/ई आवयविक संलग्नता/आ अष्टयामी मुद्रा/केहन लगितय/अपन अभूतपूर्व समानधर्मा सभक/ई अभूतपूर्व भक्तिभाव...'

हुनक सुपुत्र केदार कानन अपन पिताक 'संकल्प' कें लोक धरि निष्ठापूर्वक पहुँचा रहल छथि। नेना छथि। हुनका बुझल नहि छनि, हुनक पिताक आदर्श केहन आत्मघाती छलनि!

संकल्प-4 : अप्रील 1994

आत्मनेपद : एक काव्य-संकलन

गोपीकृष्ण दास

एक दिन हम कहलियनि 'किसुन जी, अपनेक एतेक कविता प्रकाशित अछि, परन्तु सभ छिटपुट अछि, ओकरा सभक एक संग्रह प्रकाशित करब आवश्यक अछि।'

किसुन जी स्वीकार कैलनि।

आ किछु दिन बाद किसुन जी कहलनि—'अहाँ कहैत रही ने? हमर कविता-संग्रह प्रकाशित भ' रहल अछि आत्मनेपद।' सहरसा मे मैथिली साहित्य-संस्थानक समारोह मध्य श्री मायानन्द जी घोषणा कैलनि—'ई संस्थान दू कविता संग्रह प्रकाशित क' रहल अछि—आत्मनेपद आ युगान्तर।'

एक सप्ताहक पश्चात् किसुन जी लिखलनि—

> प्रिय गोपी बाबू,
> आत्मनेपद पठा रहल छी, युगान्तर पछाति। चन्दा झा जयन्ती मे अहाँक अनुपस्थिति खटकल। और सब कुशले किने?...
> अहींक, श्री रामकृष्ण

पुस्तक देखि मन बड़ हर्षित भेल। आरम्भ सँ अन्त धरि पुस्तक केँ दू बेरि पढ़ि गेलहुँ। किछु परिचित, किछु अपरिचित, कविताक ई संग्रह अपूर्व बूझि पड़ल। इच्छा भेल श्री किसुन जी केँ धन्यवाद पत्र पठा दियनि, किन्तु लिखा गेल किछु अन्ये वस्तु, किछु तीत किछु मीठ। मने भ' सकैछ हमर आलोचक मत जागि गेल हो।

आत्मनेपदक वाग्द्वार; आत्म निवेदन मे कवि नव कविताक सम्बन्ध मे किछु अपन विचार व्यक्त कैलनि अछि, जे प्राय: नव कविता मे उत्सुकता रखनिहार व्यक्ति केँ दिशा-निर्देश करतनि आ संग्रहक अधिकांश कविता केँ बुझबा मे मदति देतनि। किन्तु आत्मनिवेदनक अन्तर्गत नव कविताक व्याख्या ततेक ने संक्षिप्त अछि जे पाठक केँ संतुष्ट नहि क' सकत। एहि मे जे विचार व्यक्त कयल अछि ओहि पर एखन किछु लिखब अनुचित, कारण जे कवि स्वयं लिखने छथि जे—'मैथिली साहित्य

मे नव कविताक सम्बन्ध मे पर्याप्त आ स्पष्ट चिंतन ने भेल अछि आ ने तकर स्थितिये स्पष्ट भेल अछि।' तें नव कविता की थिक, ओकर अन्तर ओ बाह्य स्वरूप की छैक, एहि विश्लेषण मे नहि पड़ि आत्मनेपदक अध्ययने दिस अग्रसर होयब सामयिक होयत, अस्तु।

आत्मनेपदक अध्ययन सँ स्पष्ट होयत जे कवि बबूरक झोंझ मे बेला फुलैबाक साधना नहि कैलनि अछि, प्रत्युत हिनक काव्यधारा सहज-नि:सृत स्निग्ध शीतल स्रोत जकाँ वाणीक तरलायित आँचर केँ रसक हल्लुक-हल्लुक बुन्न सँ सिक्त करैत अछि। संग्रहक कविता कविक सूक्ष्मानुभूतिक परिचय दैत अछि। दीर्घ समयक अभ्यन्तर लिखल गेल कविता सभक संग्रह हैबाक कारणें आन्तरिक एकत्वक अभाव अवश्य अछि, मुदा विषय, भाव-भूमि, अनुभूति एवं अभिव्यक्तिक तकनीकक विविधता आ सौन्दर्यक प्रति आकर्षण अछि।

मैथिलीक काव्यधारा एक संकीर्ण आवर्तक अन्तराल मे आबद्ध भ' गेल छल, और बहरयबाक कोनो मार्ग नहि पाबि अपने दुर्गन्ध सँ स्वयं छटपटा रहल छल। अपन प्रखर प्रतिभा सँ ओकर अवरोध छिन्न-भिन्न क' जे कवि सभ मैथिली काव्य धारा केँ उन्मुक्त क' ओकरा शत-शत धारा मे प्रवहमान बनौलनि अछि, ओहि परम्परा मे किसुन जीक स्थान महत्त्वपूर्ण छनि।

कविक ई आत्म विश्वास, अत्यन्त सहज ढंग सँ नि:सृत अछि—

हम छी तेज:पुञ्ज,
प्रखर मार्त्तण्ड,
जँ हमरा आक्रान्त करक छह मोह
तँ सम्पाती सदृश
पक्ष सँ हीन
टुट्ठ
अपंग
बन' हित रहह वृतोऽस्मि!

कतेक मार्मिक! लगैत अछि जेना नवयुगक प्रारम्भ भ' गेल। पुरान बंधन शक्तिहीन भ' गेल अछि। नवीन शक्ति केँ ओ रुद्ध नहि क' सकत। ओ प्रवहमान अवश्य हेतै। कवि आइ 'सत्यान्वेषी' बनल छथि।

सत्यान्वेषी शीर्षक कविता नव कविताक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। यदि कहल जाय जे नवीन काव्यधाराक एहि संग्रह मे ई सर्वश्रेष्ठ कविता थिक तँ अत्युक्ति नहि। प्रेरणा, अभियान, विजय एवं लभ्य उप-शीर्षकक अन्तर्गत लिखल ई कविता

मैथिली साहित्य मे एकसरे अछि। मानवजातिक विकासक सम्पूर्ण इतिहास एहि मे समाविष्ट अछि। एहि कविता पर जे किछु लिखल जाय से थोड़ हैत। प्रेरणा मे अभियानोन्मुख मानव विजय प्राप्त करैत अछि आ ओकर लभ्य?

निज चरण चिह्न सँ सृष्टिक क्रम इतिहास बना
बढ़ि चलल मनुज सत्यक अन्वेषण मे तत्पर
बनि गेल जकर ई वेद पुराण स्मृति अनन्त
उपनिषद आदि
अछि जकर गतिक रचना ज्वलंत
तन सँ क्षयिष्णु, मन सँ ओ मानव अविनश्वर
ओ सत्यान्वेषी मनुज कि जे अछि अमर-प्राण
द्यावा पृथिवी मे सब सँ महती महीयान
दै रहल सृष्टि केँ असत् मरण सँ क्रमिक त्राण
अधुनापर्यन्त न भेल सत्य उपलब्धपूर्ण
नहि भेल असत्यक एखनहुँ धरि ई शिलाचूर्ण
बढ़ि रहल शिखा सम ज्ञान वर्ति लै मनुज-दीप
क्रमशः विनष्ट कै जटिल असत्यक अन्धकार
सत्यक सुस्थापित करय विश्व मे शिव सुन्दर,
इन्द्रियातीत आलोक रश्मि केँ निर्विकार

हमरा बुझने आत्मनेपदक 'सत्यान्वेषी' कविक काव्य-सम्पत्तिक सर्वश्रेष्ठ रत्न थिक। ई कविता पाबि वस्तुतः मैथिली गौरवान्वित भेल अछि।

अनुभूतिक तीव्रता एवं अभिव्यक्तिक सरलता कोनो कवि अथवा लेखकक परम साधना थिक। किसुन जी एहि प्रसंग सिद्ध साधक छथि। 'अत्यन्त भावुक, स्थिर एवं एकान्त चिंतनक प्रेमीक विविध रूपक कविता वर्तमान मैथिलीक विभिन्न प्रकारक काव्यधाराक प्रतिनिधित्व करैछ। सामाजिक विषमता सँ क्षुब्ध, राष्ट्रीयता आ सांस्कृतिक चेतना सँ उदबुद्ध तथा भाषा एवं साहित्यक परम उत्थानक भावना सँ ओत-प्रोत किसुन जी मैथिलीक परम कोमल-कवि छथि।' 'भादवक साँझ आ हम' मे कविक कोमल भावाभिव्यक्ति देखू—

एखन दूर गन्तव्य
जा रहल छी, गुम सुम हम
ओम्हर भरल अछि मेघ
एम्हर आतुर अन्तरतम
कोन विरहिणिक नोर भरल अछि

घास पात पर
आबि रहल संदेश ककर
तीतल बसात पर?

'एक राति : एक गीत' तँ आरो कोमल करुण भ' गेल अछि-

आँखि मूनि छी पड़ल सेज पर
कछमछ करइछ देह
मोन पड़ल अछि सजनि,
अहँक पछिला सब प्रणय-सिनेह
होइछ आइ सब लोक लाज-तजि
हमहूँ गाबी गीत
हमर प्राण अछि आतुर
बिछुड़ल हमर स्नेह संगीत।

संग्रह मे वर्णनात्मक मुदा विचार सम्पन्न किछु कविता नव ढंग सँ लिखल गेल अछि जे निश्चये उत्तम अछि, जेना कोसीक बाढ़ि, तथापि, जयति जय गणतंत्र, विद्यापति-स्मृति-दिवस आदि।

नव शैली, नव विचार ओ विश्लेषण सँ लिखल कतोक कविता संग्रहक श्रेष्ठ वस्तु थिक, यथा—एक साँझ एक अनुभूति, ई उदास साँझ, हे अपरिचिते, आबहु तँ आउ, एक पत्र : एक एप्रोच, आदि।

एक एप्रोचक एक अंश एना अछि :

प्रियतमे
नहि-नहि
डार्लिंग
पहुँचत ई पत्र
हाउ डू यू डू?
अहीं सन हू बहू
बौआइत अछि हमरो मन
अनेरे अन्यत्र।
आ ई दोसर बात जे विरहक किछु थाह अछि
एप्रोचक 'डिस' मे
एटैचमेंटक 'कप'
आ ठंढा सन भेल
अहँक ब्यूटीक 'चाह' अछि।

प्रस्तुत पद मे एक अद्भुत बिम्ब-विधान अछि। जीवनक विषमता आ विवशताक जे चित्र उपस्थित अछि, सर्वथा श्लाघ्य :

जाड़ मास...
किछु ऊन किनै लै कहने छली
अपन साड़ी लै नहि किछु चिन्ता
(अपना लय नहि छनि सेहन्ता)
फाटल छै तँ रहौ मुदा
बच्चा केँ होइ छै साँझ प्रात केँ जाड़
एक टा स्वेटर चाही।

किसुनजीक काव्यक विशेषताक विशद अध्ययन अन्यत्र करब। एखन एतावन्मात्र कहब उचित जे रामकृष्ण झा 'किसुन' वर्तमान मैथिली साहित्यक श्रेष्ठ कवि ओ नव कविता आ नवीन स्वरक अग्रदूत छथि। हिनक आत्मनेपद मैथिली साहित्यक भंडारक एक अनुपम उपलब्धि थिक जे एक नवयुग केँ प्रारम्भ करबाक बहुत किछु श्रेय प्राप्त क' सकैछ।

वैदेही : जनवरी 1964

विद्रोह आ अपराजेयताक कवि किसुनजी

जीवकांत

कवि रामकृष्ण झा 'किसुन'क नाम मैथिली नव कविता मे बहुत सम्मानित अछि। नव कविता जाहि सभ अभिव्यक्तिक कारणें परम्परित कविता सँ अपन फराक व्यक्तित्व बना सकल, से सभ अभिव्यक्ति हुनक कविता मे अछि आ बहुत फड़िछायल रूप मे अछि। तें किसुनजी नव कविताक एक प्रमुख हस्ताक्षर मे गनल जाइत छथि, आ गौरवपूर्वक गनल जाइत छथि।

मैथिली मे एक गोट विवाद छैक जे नव कविता कोन कवि सँ शुरू होइत अछि। ई विवाद बड़ उत्थर जकाँ लगैत अछि जखन प्रत्येक प्रमुख कवि ई श्रेय अपनहि लेब' लगैत छथि। एहेन प्रत्येक दाबी हास्यास्पद आ उकठाह लगैत अछि, कारण जे ओकर खण्डन करब अथवा समर्थन करब, दुनू बात आर उत्थर आ उपराँझ जकाँ बुझाय लगैत छैक।

नव कविताक अनेक प्रवर्तक लोकनि मे किसुनजी सेहो छथि। मुदा, वैह प्रवर्तक छथि, सेहो नहि मानल जाय सकैत अछि। ई मानल जाय सकैत अछि जे एक्के संग अनेक कवि एहि विधा मे रचना कयलनि आ एकरा मैथिली मे एक गोट विधाक रूप मे मान्य करयबा मे सफल भेलाह, तें ओ लोकनि सामूहिक रूपें एकर प्रवर्तक मानल जाथि। तें प्रवर्तनक श्रेय कोनो एक व्यक्ति केँ, खाहे ओ कतबो यशस्वी होथि, आ हुनक योगदान कतबो महत्त्वपूर्ण होअय, नहि देल जयबाक चाही।

ओना नव कविताक प्रवर्तन अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भेल। संसारक सभ देश मे आ सभ भाषा मे द्वितीय विश्वयुद्धक पछाति कविताक परम्परित शैली आ कथ्य केँ अस्वीकार क' देल गेल। नवका कथ्य जाहि तरहें अभिव्यक्त कयल जा सकैत छल, से नव कविताक नाम सँ अभिहित भेल। फ्रांस मे कविताक कथ्य आ शैली पर बहुत बेसी खण्डन-मंडन होइत छल। ताही सँ अंगरेजी भाषाक कविता प्रभावित भेल आ अंगरेजीक लसढ़ि सँ भारतक प्रत्येक भाषा प्रभावित भेल जाहि मे मैथिलीयो कविता एकरा आह्लादपूर्वक ग्रहण कयलक।

मैथिली मे नव कविताक प्रवर्तक किसुनजी छलाह वा नहि, ई बात बहुत महत्त्वपूर्ण नहि अछि। महत्त्वपूर्ण अछि जे नव कविताक प्रवर्तन मे किसुनजी एक गोट सशक्त कवि जकाँ सम्मिलित भेलाह।

किसुनजी जाहि समय मे लिखब शुरू कयलनि, ताहि समय मे कविताक विषय बहुत रूढ़ छल। हुनक आरंभिक रचना सभ परम्परित विषय आ शिल्प ल' क' आयल जे स्वाभाविक छल। एहि मे थोड़ेक कविता देशप्रेम सम्बन्धी छल जे स्वतन्त्रता आन्दोलनक उतारीक रूप मे छल। थोड़ेक कविता फूल, मेघ, बर्खा, अन्हरिया-इजोड़िया पर छल जे परम्परित कविताक अनेक विषय मे एक महत्त्वपूर्ण विषय छल। हिनक कविता सभ मे स्त्री सौंदर्य पर थोड़ेक रचना सेहो छल। स्त्री अपन प्रीतिक संकेत टा करैत छैक, जे परम्परित भारत मे बड़ पैघ अपराध आ तें बड़ विरल छल, सेहो सभ किसुनजीक कविता मे छल।

नव कविता जे आब बुढ़ा रहल अछि, ताहू मे ई विषय सभ धोखाधोखी आबि जाइत अछि। कवि लोकनि एकरा सचेत भ' क' नहि आब' देब' चाहैत छथि, तथापि ई सभ बात आन बातक संग सन्हिआ क' आबि जाइत छैक। तकर कारण अछि जे परम्परित कविता लोकक दिमाग कैं ततेक बेसी प्रभावित कयने छैक, साधारण लोकक संग विद्रोही कवियोक दिमाग पर ओकर चेन्ह छैक। किछु युवा कवि जेना हरे कृष्ण झा ओकरा पुरना कविताक 'हैंग ओभर' (उतारी अथवा खुमार) कहैत छथि जे कालक संग स्वयं समाप्त भ' जयतैक। से उतारी किसुनजीक आरंभिक रचना सभ मे छनि, आ से स्वाभाविको अछि।

नव कविता कैं मैथिली पाठकक अधिकांश कहियो स्वीकार नहि कयलक। स्वीकार एहि अर्थ मे नहि कयलक जे ओ ओकरा महत्त्वहीन मानैत छल, बरू एहि अर्थ मे स्वीकार नहि कयलक जे मैथिली पाठक कैं ओकर अर्थ नहि लगैत छलैक अथवा ई कविता गद्य जकाँ लगैत छलैक।

मैथिलीक अधिकांश पाठक तुक आ छन्द कैं पसिन्न करैत छलाह, मुदा परम्परावादी शैली मे लिखल जाइत कविता मे हुनका किछु टटका नहि लगैत छलनि। अरुआयल खाद्य कैं जेना घोंटल जाइछ, से मैथिली पाठक पुरना ढंगक कविता कैं बरदास्त करैत रहलाह। तकरा पुरना ढंगक कवि लोकनि नव कविता पर अपन विजय बुझैत रहलाह आ अपन बहुत रास ऊर्जाक अपव्यय नव कविता कैं गारि-सराप देबा मे लगौलनि।

ई बहुत आश्चर्यक विषय थिक जे जखन सौंसे भारत मे सभ भाषा मे छन्दोबद्ध कविता लिखब एकदम बन्न भ' गेल छलैक, मैथिली मे थोड़ेक प्रतिष्ठित कवि छन्दोबद्ध रचना करैत रहलाह आ अव्याहत रूपें करैत रहलाह, आ ओ आश्चर्यजनक रूपें आगुओ करैत रहताह।

मैथिलीक पाठक एक दिस नव कविताक बोधगम्य रचना सभ कैं आदर देलक, तँ दोसर दिस पुरनो ढंगक कविता कैं आदर दैत रहल। पाठक लोकनिक ई रुचि बड़ झगड़-लगाओन सिद्ध भेल। आन भाषा मे परम्परित कविता स्वत: आसन खाली क' विस्मृतिक अन्हार मे बिला गेल। मुदा मैथिली मे नव कविता पुरना कविताक संग बहुत बेसी सौतिनियाँ डाह कैं भोगलक। कोनो भाषा मे एतबा पैघ काल धरि कविता विधाक मध्य सत्ता-संघर्ष नहि चलल। एखनो लगैत अछि जे एक्के टा आसन पर दुनू विधा कष्टपूर्वक बैसल अछि आ आसन कैं सोलहन्नी दफानबा लेल एक दोसरा कैं बिठुआ काटि रहल अछि।

किसुनजी नव कविताक खेमा सँ पुरना कविता कैं बड़ बेसी डेंगौलनि। पुरना कवि सभ जतबा जे आरोप लगबैत छलाह आ नव कविता कैं सराप द' भस्म कर' चाहैत छलाह, तकर जवाब कोनो-ने-कोनो रूप मे सभ विद्रोही कवि देलनि, मुदा किसुनजीक जवाब बड़ आक्रामक आ बड़ देखार छल।

किसुन रचनावली तीन खंड मे मैथिली अकादमी (पटना) छपलक अछि, जाहि मे एक खंड कविता-खंड अछि आ जकर नामकरण 'क्रमश:' सेहो अछि। एहि मे किसुनजीक समस्त उपलब्ध कविता संकलित अछि।

पुरना शैलीक कविताक विरोध मे ओकर अर्थहीनताक विरोध मे, ओकरा नष्ट क' देबा लेल नव कविताक क्रोध आ युयुत्साक रूप मे किसुनजीक अनेक कविता उपलब्ध अछि। एहि कविता सभ मे विद्रोही पीढ़ीक आक्रामक रूखि बड़ देखार अछि। एक ठाम ओ कहैत छथि—

अहाँक मस्तिष्क पर
अनेक वर्ष धरि पड़ैत रहल अछि
काव्यशास्त्रक हथौड़ा
ततेक पिटा गेल अछि
जे शुद्ध बोध पिचा गेल अछि,
पचकि गेल अछि
ओ पुरना प्रेत अहाँक घेंट
दबौने अछि

ओही कविता मे ओ अत्यन्त आक्रामक होइत, एहि सत्ता-संघर्ष कैं देव-असुर-संग्रामक रूप मे देखैत, एहि युद्धक निर्णायक स्वरूपक घोषणा करैत छथि। ओ कहैत छथि जे परम्परित कविता कैं विद्रोही कवि लोकनि माटि मे मिला देताह। ओही कविता मे ओ कहैत छथि—

यथास्थिति कैं बनौने
रखबाक आग्रही

दैत्य सभ केँ नमस्कार
लिय' जागि गेल अछि
शेष नागक
शय्या सँ क्रोधोत्थित
मधुसूदन।

नव कविता विद्रोहक, असहमतिक आ अस्वीकारक कविता थिक। ई नवता नव मूल्य आ नव प्रणालीक श्रीगणेशक कविता थिक। दुनू स्थिति मे आक्रामकता एकर सहज धर्म भेल। किसुनजीक कविता मे आक्रामकता बहुत तिखगर छल। उदाहरण लेल थोड़ेक आर पाँती देखल जाय सकैत अछि—

हम खोखरि देब' चाहैत छी
अहाँ लोकनिक खोल
खाहे लहु-लहुआन भ' जाय
हमर सौंसे देह

औद्योगीकरणक कारणें समाज मे परिवर्तन भ' रहल अछि। किताब, पत्रिका, स्कूल, कालेज पहिलुका अपेक्षा सुलभ भेल अछि। संचारक साधन विकसित भेला सँ फैशन संसारक एक कोन सँ दोसर कोन धरि शीघ्रे पसरि जाइत अछि। जन-रंजन आ जन-शिक्षणक माध्यमक रूप मे सिनेमा बहुत प्रभावशाली सिद्ध भेल अछि।

पुरना आ नवका संस्कार बहुत बेसी मिझरायल अछि, आ बड़ घोर मट्ठा भ' गेल अछि। ने पुरने मे सभ टा नीक छैक आ ने नवके मे सभ टा अघलाह छैक बहुत पहिने कवि कालिदास ई बात कहने छलाह। एकर उनटो कही, तँ सेहो ठीक छैक जे ने पुरने मे सभ टा बेजाय छैक आ ने नवके मे सभ टा नीक छैक। लोक, मुदा, अन्ध-विश्वास आ अन्ध-अनुकरणक कारणें नवका आ पुरना सभ केँ एकट्ठा क' रहल अछि। दुनूक बीच मे समन्वय आ बेरायब आ बीछब जरूरी छैक। से नहि भ' रहल अछि आ ने से जल्दी होयत। नव कविता एहू बात केँ अस्वीकार करैत अछि। कवि किसुनजी एकरा एना कहैत छथि—

जत' अल्ट्रामाडर्न ड्रेसवाली
अनेको धी-पुतोहु
पीपर मे पानि ढारि सेकेंड शो
सिनेमा जाइछ

परम्परा धीरे-धीरे विकसित होइत अछि आ फेर धीरे-धीरे स्वतः विघटित होइत अछि। जाही कारणें एक समय मे विकास होइत छैक, ताही कारण सँ ओहि मे विघटनो होइत छैक। तें परम्पराक प्रति विद्रोह सँ भरल नव कविता अपन कथ्य केँ फड़िछा क' राखि सकल। परम्परा मुदा कोनो कविता-आन्दोलन सँ बेसी दीर्घजीवी होइत अछि।

परम्परा पर कविता लिखलहुँ आ परम्परा समाप्त भ' गेल, तेहेन बात नहि छैक। तें परम्परा केँ अपराजेय मानि लेब, सेहो अगुताइ मे लेल गेल निष्कर्ष आ मिथ्या-निष्कर्ष थिक। परम्पराक बनल रहब आ टूटब कोनो पैघ बात नहि थिकैक, पैघ बात ई थिकैक जे कविता एकर की करैत अछि? विरोध करैत अछि? वा एकरा आगाँ आत्म-समर्पण क' दैत अछि? नव कविता जें कि विद्रोह आ अस्वीकारक कविता छल, ओ अपन सम्पूर्ण शक्ति सँ परम्पराक अस्वीकार करैत अछि। कवि किसुन जी परम्पराक विशालताक अनुभव करैत ओकर विरोध करैत छथि—

समस्त वर्तमान आ भविष्य केँ
एक टा अजोध अजगर दकचने
अछि
अपन चोख बिखाह दाँत
हमरा लोकनिक पीठ मे भोंकने
अछि
हमरा लोकनि बान्हल छी
हमरा सभ केँ अतीत 'हरी' मे
ठोकने अछि

आजुक कविता मनुक्खक मुक्तिक प्रयास थिकैक। ई कविता प्रत्येक प्रकारक शोषण सँ मुक्ति लेल समर्पित अछि। लोक पहिनहुँ स्वार्थी छल, आइ ओकर स्वार्थ बढ़बे कयल अछि। धर्मक नाम पर, देशक नाम पर, कानूनक नाम पर आदमी केँ न्याय सँ वंचित कयल जाइत छैक। कविता तें व्यापक अर्थ मे 'सेक्युलर' अर्थात् धर्म-निरपेक्ष, राष्ट्र-निरपेक्ष, आ प्रत्येक प्रकारक युद्धोन्माद सँ निरपेक्ष भ' गेल अछि।

कहियो लगैत अछि जे राष्ट्रक आ धर्मक सीमा टूटि गेल अछि, मुदा कहियो धर्म आ राष्ट्र, राजनैतिक मतवाद आ पूर्वाग्रह मध्यकालीन बर्बरता केँ टपि जाइछ। कविता सभ शोषणक साधन आ मनुक्ख आ मनुक्खक बीच बनाओल गेल देबाल सँ असहमत अछि आ ओकर विरोध करैत अछि।

आजादी भेटलाक दस-पन्द्रह बर्खक भीतर देश मे स्वार्थान्ध लोक सभ जाति वाद केँ स्वार्थ-साधना लेल देबालक रूप मे ठाढ़ क' देलक। कवि रामकृष्ण झा 'किसुन' एहि सँ एहि प्रकारें असहमत छलाह—

हम यैह छी एत्त'
ओमहर कत्त' तकइ छी?
हम छी असुरक्षित
उपेक्षित जगह मे
अहाँक दृष्टि तँ ओझरायल अछि

बाभन, कायस्थ, क्षत्रिय, भूमिहार
आ यादवक छहरदेवाली मे
मुदा हम छी एत्त'
छहरदेवाली सभ सँ फराक
हास्यास्पद
द्वेषपात्र...

किसुनजी मानैत छथि जे आदमी हजार ढंग सँ अपन स्वार्थ-साधन मे लागल अछि आ तें ओ सदिखन रंग-रंगक मुखड़ा (मुखौटा) बना क' लोकक शोषण क' रहल अछि। मुखड़ा लगौने लोक ऊँच-ऊँच आसन पर बैसल अछि आ अपन आदेश पर समाज केँ हाँकि रहल अछि। एहि तरहें खाँटी लोक पयबाक आशा जे कविता करैत छल, ताहि मे ओ निराश भेल अछि। एहि पाखण्डक विरोध कविता कयलक अछि।

नाना प्रकारक शोषणमूलक पाखण्डक विरोध मे कवि किसुन कहैत छथि—

मनुक्खक लगौने अछि
सब केओ नकाब
होइतहि ने अछि भरिसक
मनुक्ख कतहु आब
जौं कतहु भेटि जाय
बन्धु! अत्र-तत्र
तँ हमरा लीखि देब
जल्दी सँ पत्र!

मुदा नव कविता मानैत अछि जे मनुक्ख मे ओकर स्वाभाविक धर्म, मनुष्यता बड़ प्रबल छैक। सभ काल मे परिस्थिति सभ ओकरा दूषित कलुषित करैत छैक, मुदा ओ फेर अपन शुद्ध रूप मे प्रकट होइत अछि। यैह कारण थिक जे समाज आइयो जीवित अछि। शोषण आ अन्यायक बादो लोक लड़ैत अछि आ विजयी होइत अछि। मनुक्ख आदि काल सँ संघर्षरत रहल अछि। बेर-बेर ओ हारैत-सन लगैत अछि, मुदा ओ प्रत्येक खेप जीति जाइत अछि। तें मनुक्ख केँ पराजित करब सोझ नहि छैक। मनुक्ख केँ दबाओल जा सकैछ, ओकरा तोड़ल नहि जा सकैछ। मनुक्ख अन्ततोगत्वा अपराजेय अछि।

मनुक्खक अपराजेयताक घोषणा करैत किसुनजी कहैत छथि—

जिनगीक आगि मे
मृत्यु जरि गेल
के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?

माटिपानि : 1984

कवि किसुनक स्वर परिवेश

रमानन्द झा रमण

साहित्य मे परिवेशक अभिव्यक्ति परिवेशक तीव्रता जनित कलाकारक मन: स्थितिक प्रतिफलन थिक। एहि प्रतिफलन मे मन:स्थितिक चारि रूपक अभिव्यंजना देखल जा सकैछ। प्रथम मन:स्थिति मे कलाकार समस्त जागतिक विषय वस्तु केँ अवास्तविक मानि, कोनो सुखद जगतक कल्पना मे रमल रहबाक चेष्टा करैछ। दोसर मन:स्थितिक कलाकार जगतक सामान्य केँ मानि, ओकर ऊपरी रूप देखि हँसैछ, ओहि पर व्यंग्य करैछ। तेसर मन:स्थितिक कवि समाजक विकृति एवं विडम्बनाक दुखद अनुभूति सँ व्याकुल भ' ओहि मे हेरायल सत्य शिव सुन्दर तकबाक प्रयास करैछ। आ चारिम मन: स्थितिक कलाकार सामाजिक वास्तविकता केँ बुझि, ओकर जड़ता केँ तोड़ि, एक नवीन मानवीय समाजक रचना हेतु क्रान्तिकारी प्रेरणा दैछ। कलाकारक आस्था एहि निर्माणोन्मुख ध्वंस मे तथा सामाजिक जीवनक विकासशीलता मे निहित रहैछ।

जीवन एवं यथार्थक प्रति यथास्थितिवादी, समन्वयवादी एवं क्रान्तिकारी दृष्टिकोण सम्भव अछि। परिवेश आ यथास्थिति केँ स्वीकारि, वर्णित विषय मे कलाकार प्रत्येक स्थिति केँ यथावत् अभिव्यंजित करबाक चेष्टा कयने रहैछ। समन्वयवादी कलाकार व्यतीत जागरूकता एवं सम्भावित अथवा परिवर्तित संचेतनाक समन्वयक प्रति साकांक्षा रहैछ। ने ओ प्राचीन परिपाटीक त्याग क' सकैछ आ ने नवीन परिपाटीक अवहेलने। तखन, ओ समन्वय सँ सुधारात्मक भ' जाइछ। परिवेशक परिवर्तनक आकांक्षी, जागरूक कलाकारक वैचारिक स्तर, जीवन मूल्य बोध, साहित्यिक मानदण्ड आदि मे परम्पराक जड़ताक प्रति अविश्वासक प्रबल हिलकोर वर्तमान रहैछ। ओ शल्य चिकित्सक जकाँ रोगक निदान तेज छुरीक धार सँ चाहैछ, वैद्यजीक चूर्ण सँ नहि। एहि विभाजनक दृष्टि सँ रामकृष्ण झा 'किसुन'क रचना तृतीय कोटि मे अबैछ।

देश-विभाजनक उपरान्त अस्थिर राजनीतिक वितानक नीचा जनसेवाक नामे स्वार्थी, धन-पद लोलुप तथाकथित राज नायकक आडम्बरपूर्ण उद्‌घाटन भाषणक प्रतिगामी प्रभाव, योजना असफलता, बेकारी, भुखमरी, समस्या, संत्रस्त जनताक विषाद, कुण्ठा, असन्तोषक प्रबल स्वर किसुनक पाँती-पाँती मे, शब्द-शब्द मे गुंजित अछि।

प्रगतिशील कलाकार अपन परिवेशक विकृति एवं विसंगतिक सूक्ष्म अवलोकन क' ओकर ऊपरका खोल खीचि, असली रूप देखबाक प्रयास करैछ। ऊपरका खोल अनेक प्रकारक नकली इजोत सँ चमकैत रहैछ तखन असली आ नकली रूप केँ फराक करबा मे दिक्कत भ' जाइछ। आ इएह स्थिति कवि किसुन देखैत छथि स्वतन्त्रताक बाद, नव राष्ट्रक निर्माणक समस्त सम्भावना केँ सुविधाभोगी, स्वार्थी, धन-पदलोलुप राजनीतिकक हाथें खकसियाह होइत। ई सुविधाभोगी आ स्वार्थी अपन करनी केँ झँपबा लेल मनबैत छथि गांधीजीक संवत्सरी, सर्वोदयक मेला, खद्धरक प्रदर्शनी आ अहिंसाक जयन्ती। भारतीयताक संग, विश्व-बन्धुत्वक गप्प सेहो छँटैत छथि। परंच, कविक तेज दृष्टि देखि लैछ ओहि प्रपंच केँ, हुनक हबोढकारक मर्म केँ बुझि लैछ। अपन ओजस्वी शब्द-जाल मे गीता-कुरान, बाइबिलक उद्धरण देनिहार राजनीतिज्ञक घर मे कवि देखैत छथि 'बुद्धक पितरिया प्रतिमा, चिनिया माटिक गांधी, मोमक ईसा मसीह केँ सजावटिक उपादानक रूप मे ड्राइंग रूम मे राखल मकड़ाक जाल मे फँसल, हिचकैत।

गीता-कुरान बाइबिल
सभ फ्यूज बल्ब जकाँ
एक टा मकड़ाक जाल लागल कोन मे
पड़ल पड़ल हिचकैत छैक।

सुविधाभोगी राजनेताक चक्रचालि मे पिसाइत जनताक विश्वास आ आस्था कड़कड़ा क' टूटि रहल छैक, समस्त आशा, आकांक्षा बिला रहल छैक। एहना-स्थिति मे जीवन खेपब दुर्वह भ' गेल अछि। सालक प्रत्येक दिन बिखाह साँप जकाँ फुफकार कटैत सोझाँ मे ठाढ़ छैक। समस्त पीढ़ी अगिनवाण सँ बेधा गेल अछि। एही विवशताक स्थिति मे कवि अपना केँ असहाय पबैत छथि। कउखन कान्ह पर एक जहाजक बोझ उठौने छथि, तँ कउखन योजनाक सूक्ति केँ जुगता क' सोझरबैत छथि, आ कउखन सुरुजक चक्का देखिते मदारीक बानर भ' डमरूक बोल पर नचैत छथि। कवि चाहैछ अपन सचेतन परिवेश केँ ओहि फरदलाली परिवेश सँ फराक राखी, ओकर चाक्-चिक्य आ बनावटी रूपसज्जा एवं जाली आचरण सँ अपना केँ कात राखी। अपन समस्त पीढ़ी केँ कात राखी, परंच ओहि मायाजाल मे किछु

क्षणक लेल हेरा जाइछ। अस्तित्वविहीन भ' जाइछ। आ साँझ मे जुलूस अबिते चुपचाप कुर्ता पहीरि, चट्टी सरियबैत भीड़ मे मिझरा जाइछ—

अपन मौलिक एकाकीपन सँ
किन्हुँ ने चूकब
बाजब ने भूकब
मुदा, साँझ होइते सभ टा बिसरि गेल
हमर निर्णय मरि गेल
जुलूसक अबिते
चुपचाप कुर्ता पहीरि
चप्पल सरियबैत
भीड़ मे मिझरा गेलहुँ।

मुदा, कवि तत्काल वास्तविक स्थिति सँ अवगत भ' अपन क्लीवता पर विजय पाबि जाइछ। अपना मे शक्ति आ साहसक भंडार देखि, आत्मविश्वास जगैछ। संघर्षक मोनि मे जीवनक नाह चकभाउर दैछ मुदा मनसुबाक हिलकोर उठबैत जीवनक प्रत्येक कंटकित मोड़ पर ओ आगू बढ़बाक प्रेरणा दैछ। जाहि सँ कविक असफलता केर प्रत्येक श्वास मे दीपित जीवन आस्था अछि। आ, ई 'दीपित जीवन आस्था' देखैत अछि 'मृत्युक अन्हार सँ बहराइत इजोत' केँ। मृत्युक अन्हार सँ बहराइत इजोतक कारणें वर्तमान पीढ़ी परम्परावादक जड़ता सँ लड़ि रहल अछि। जे विचार, जीवन-प्रणाली, सामाजिक व्यवस्था, अथवा मूल्य-बोध आधुनिक जीवन आ आधुनिक परिवेश मे खपबा मे असमर्थ अछि, जाहि मूल्य मे घीसल-पीटल शिलालेख जकाँ अस्पष्टता छैक, धूमिलता छैक, जाहि शब्द कोष मे अर्थहीन शब्दक संग्रह अछि, जे मार्ग एहि युगक लोक केँ उचित घर धरि पहुँचयबा मे असमर्थ अछि तथापि ओहि जड़ता सँ ग्रस्त अछि, तकरा कवि देख' नहि चाहैछ। ओकर अस्तित्वो केँ बर्दास्त नहि क' सकैछ। ओ परम्परा पोषित विचार, धारणा, मान्यताक आवृत्तिक झोंझ मे नुकायल प्रवंचना सँ परिचित भ' गेल छथि। पैघ-पैघ घोषणाक दस्तावेज, शान्ति, प्रेम, समाजवाद आ लोकतन्त्रक परिभाषा केँ बन्द कोठली मे कुहरैत देखैत छथि। तें एहि नकली रूप केँ लहू-लहुआन भेलो पर खोखरि देबा लेल प्रतिबद्ध छथि—

हम खोखरि देब' चाहैत छी
अहाँ लोकनिक खोल
खाहे लहु लहुआन भ' जाय
हमर सौंसे देह।

कविवर किसुनक मत छनि—साहित्यक मैदान मे बहुत दिन सँ शामियाना तानल

अछि, तकर आब कोर सड़ि गेल अछि। माटि मे गड़ल ओकर खुट्टा आ ओकरा तान'वला बाँस कोकनि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि, ओहि मे लागल झाड़फानूस सभ झड़ि-झखड़ि गेल अछि। तें, कविता आब नहि चाहैछ जे किओ ओकरा रामनामी चद्दरि ओढाय, बुर्का पहिराय, कीया मे बन्द कयने रहैक। ओ नहि चाहैछ, अनका भरोसें चमकैत चन्द्रमाक खोल पहीरि, पराश्रिता रही। नहि चाहैछ एकतारा ल' संन्यासिनीक जीवन व्यतीत करी। मात्र चाहैछ, मानव जीवन सरिताक संग अविच्छिन्न प्रवाह—

आब हमरा नहि सोहाइत अछि
झँपने रहू प्राण हमर
कीया मे अहाँ लोकनि
मुदा, अमरलत्ती आब
गाछ-गाछ पसरत
जड़ि दिस ससरत।'

कविताक अमरलत्ती जकाँ पसरला सँ, कविता मे मानवीय संवेदनाक स्वर, जागरणक स्वर, विद्रोह आ आक्रोशक स्वर आबि गेल अछि। शेष शय्या सँ क्रोधोत्थित सृजनैषी मधुसूदन जागि गेल छथि। जे उदयाचलक शिखर सँ पूर्वाग्रह त्यागि, आँखि-खोलि, तन्त्र-मन्त्र हटाय, नव्य काव्य-स्वर ऋचा सुनबा लेल आह्वान क' रहल छथि। जनिक स्वर एक व्यक्तिक नहि, समस्त मानव जातिक थिक। जे अपन अस्मिता सँ शतशत सम्पृक्त अछि, जाहि मे समस्त पीढ़ीक आशा-आकांक्षा, जीवन-मूल्य बोध आ आस्था एवं विश्वास सन्निहित छैक—

सुन नवीन ऋचा
उदयाचलक शिखरपरक
नव्य काव्य स्वर
जे केवल हमरहि नहि,
समस्त विश्वक थिक।

मिथिला मिहिर : 28 जून 1970

लक्ष्य-लक्षण ग्रंथ निर्माता : किसुन

रमानंद झा 'रमण'

रामकृष्ण झा 'किसुन' (1 जनवरी 1923-15 जून 1970)क काव्य-यात्रा कें मायानन्द मिश्र तीन चरण मे विभाजित कयल अछि—संस्कारवादी (1940 सँ 50ई.), यथार्थवादी-प्रयोगवादी (1950 सँ 60) तथा 1960 सँ अभिव्यंजनावादी ('स्मृति संध्या')। किन्तु , किसुनक काव्य-यात्रा कें तीन चरण मे नहि बाँटि हम दू विकास चरण मे बाँटब विशेष वैज्ञानिक मानैत छी। पहिल विकास चरण थिक परम्परावादी तथा दोसर विकास चरणक कविता भेल नव कविता। नव कविताक अंतर्गत ओ समस्त काव्य प्रवृत्ति समटा जाइछ, जकरा मायानन्द मिश्र यथार्थवादी प्रगतिवादी तथा अभिव्यंजनावादी कविताक रूप मे परिगणित करैत छथि। एहि ठाम किसुनक एहने कविताक प्रसंग चर्चा अछि जे नव कविताक सीमा मे अबैछ।

किसुनक काव्य यात्रा सँ ई स्पष्ट अछि जे ओ परम्परावादी कविता लिखैत छलाह तथा जखन युगीन संवेदना आ युगीन यथार्थ कें स्वर देबा मे ओकरा अक्षम पाओल तँ नव कविताक क्षेत्र मे उतरि अयलाह। तें नव कविताक प्रति किसुनक दृष्टि स्फीत छल। नव कविताक प्रवृत्ति आ संवेदनाक झलक हिनक रचना मे अछि। ओना आर स्पष्ट होयबा लेल कहल जा सकैछ जे रामकृष्ण झा किसुन एके संग मैथिली नव कविताक लक्ष्य आ लक्षण ग्रंथक निर्माण कयल। एहि दिशा मे हिनक प्रथम प्रयास थिक 'आत्मनेपद' कविता संग्रह। एहि कविता संग्रहक भूमिका मे नव कविताक प्रवृत्ति या प्रकृति कें स्पष्ट करबाक दिशा मे प्रयास कयल। मैथिली नव कविता कें वृहत्तर आयाम आ स्थायित्व प्रदान करबाक दिशा मे हिनक महत्त्वपूर्ण आ स्फीत दृष्टिक परिचायक थिक, सोलह टा नव कविक कविताक संकलन, 'मैथिली नव कविता'क प्रकाशन। एहि कविता संग्रहक 'आमुख'क एक-एक शब्द, नव कविताक स्थापना सूत्र सदृश अछि। एकर अतिरिक्त नव कविताक पुरोधाक रूप मे समय-समय पर ओ नव कविताक प्रवृति आ प्रकृतिक विश्लेषण-विवेचन करैत रहलाह।

किसुनक पूर्वार्द्धक रचनाक आधार पर डॉ. श्रीश 'किसुन' केँ मूलतः भावुक गीतकार मानल अछि। मुदा उत्तरार्द्धक कविताक आधार पर नवीन मैथिली काव्यक पुरोधा सेहो घोषित करैत लिखल अछि—'किसुन जी मूलतः भावुक गीतकार छथि। 'आत्मनेपद' मे संकलित वा अन्यत्रो प्रकाशित हिनक गीत मे अद्भुत सहज भावुक सरलता भेटैत अछि। 'वसन्तागम' मे जाहि स्वाभाविक अनुभूतिक संग ओ वसन्तक वर्णन कयने छथि से अभूतपूर्व अछि। मुदा 1960क बाद प्रयोगवादक जे लहरि चलल ताहि मे ई आकण्ठ डूबि गेलाह। एहू कोटिक रचना हिनक नीक होइत छनि। मुदा, प्रयोगवादक बौद्धिकताक स्थान पर सहानुभूतिपूर्ण भावुकताक स्थिति हिनक नवीन रीतिक रचनहु मे स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। (मैथिली साहित्यक इतिहास) प्रो.शंकर कुमार झा 'किसुन' केँ दू स्तर पर कार्यशील देखैत छथि। एक दिस हिनक कविता मे सम-सामयिक बोध आ यथार्थक अभिव्यक्ति पबैत छथि तँ दोसर दिस नव कविता लेखनक हार्दिक समर्थन करैत सेहो देखैत छथि। अत्याधुनिक नव कविता किंवा अकविता मे दुरुहता, अनास्था, अर्थापति आ कतौ-कतौ अश्लीलता आदि जे दुर्गुण आबि गेलैक अछि, ताहि सँ ई साफ बाँचल छथि एवं ओहि मे स्वाभाविकता, अनुभूतिक यथावत प्रस्तुतीकरण, आडम्बरहीनता तथा वर्तमान दुरावस्थाक प्रति विद्रोह आदि विशेषता छैक, तकर हार्दिक समर्थक आ पूर्ण प्रचारक छथि। (कविता कलाप)

परम्पराक जड़ताक विरोध किसुनक कविताक मूल स्वर थिक। जे परम्परा, व्यवस्था अथवा नियम कानून वर्तमान युगक लेल उपादेय नहि रहि गेल अछि, तकर ओ विरोध करैत छथि। हिनक ई विरोध रचनात्मक अछि, केवल विरोध लेल नहि। एहि प्रसंग किसुनक स्पष्ट मान्यता अछि—'ओकर (परम्पराक) मापदण्ड आ मानदण्ड नितान्त परिवर्तनशील आ अस्थिर छैक, तें परम्पराक पोखरिक हरियरका सड़लाहा पानि केँ अवगाहन योग्य नहि बुझि क' बहा देब' चाहैत अछि।' किसुनक एहि स्थापना वाक्य सँ इहो स्पष्ट होइछ जे परम्परा कोनो जड़ अथवा स्थिर वस्तु वा मान्यता नहि थिक। ओ विकासशील होइछ। जखन कोनो मान्यता अपन सार्थकता आ समसामयिक परिवेश मे औचित्य गमा लैछ, तँ ओ स्वतः पाछू छूटि जाइछ। एहि प्रकारें किसुनक परम्परा-विरोध परम्परावादक विरोध थिक। तें ई विरोध केवल विरोध लेल नहि, रचनात्मक अछि। आयल जड़ता केँ तोड़ि गति देबा लेल अछि। पोखरिक हरियरका सड़लाहा पानि केँ बहा क' टटका पानि खसयबाक यैह तात्पर्य अछि। पोखरिक हरियरका पानिक संग किछु पोसल रोहु भुन्ना केँ बाहर भ' जयबाक शंका तँ रहिते छैक। तथापि टटका पानिक आवश्यकता एक-आध पोसल पालित रोहु भुन्नाक चिन्ता कम क' दैत अछि। यैह मनःस्थिति थिक जखन कवि कविता

केँ विद्रोह करैत देखैछ। यैह स्थिति थिक जखन कविता गीत आ भजनक रामनामा चादरि आ एकतारा सँ मुक्ति चाहैछ। अबला आ पराश्रिताक जीवन सँ प्रयाण करैछ। (कविताक विद्रोह) नवका रूप सजबैछ।

कवि अनुभव करैछ जे लोक-जीवन पोखरिक सड़लाहा पानि जकाँ जमकल छैक। हजार-हजार वर्ष पूर्वक मूल्य केँ वर्त्तमान युगक काम्य मानि बैसल अछि। एहि सँ लोकक जीवन परिवर्तित परिवेश मे अनफिट भ' गेलैक अछि। युगचेतनाक अनुरूप मूल्य आ मान्यताक अनुसन्धान नहि क' सकबाक कारणें कोल्हुक बरद जकाँ एकहि ठाम घुमैत रहि जाइछ। साँझ सँ भोर धरि चलैत रहलो पर ओही ठाम रहैछ जत' सँ भोरखन विदा भेल छल। (एक टा असमाप्त कविता : खुटेसल) विगत चेतना केँ वर्तमान जीवनक चेतना मानि, प्रचारित-प्रसारित क' अपन काज सुतारबाक लेल एक टा वर्ग सक्रिय अछि। अतीतक पाउज करैत ओ चेतना शून्य समूहक बीच अपन वर्चस्वक व्याख्यान करैछ। एहि वर्ग केँ चतरैत देखि कवि आहत होइछ। किन्तु, साहस बटोरि प्रगतिगामी मूल्यक प्रतिकार लेल तत्पर भ' जाइछ। अपन लाभक चिन्ता छोड़ि अतीतोन्मुखी व्यक्तिक खोल फाड़बा लेल कवि लोक चेतना जगबैछ—

हम खोखरि देम' चाहैत छी अहाँ लोकनिक खोल
खाहे लहु-लुहान भ' जाय हमर सौंसे देह।
हम देखय चाहैत छी
अहाँक नग्न प्लास्टिक पिरामिड रूप
जे चाटुकार इतिहासकार द्वारा
बलात हमर पीढ़ीक माथ पर लादि देल गेल अछि।

किसुनक एहि कविता (प्रतिवाद स्वर)क स्वर केँ सोमदेव वैयक्तिक मानल अछि। चाटुकार इतिहासकार आ अतीतजीवीक खोल केँ चिर्रीचोंत करबाक किसुनक आह्वान आ तत्परता केँ सोमदेव नाराबाजी कहैत छथि। 'जतय जतय आधुनिक कविता मे निर्वैयक्तिकता नहि भेटैत अछि, कविता साफ नाराबाजी बुझना जाइछ। अहाँ केर अभिव्यंजना अपनहि महोमहो'। (आधुनिक कविता एकर प्रेषणीयताक समस्या, चेतना समिति) मुदा, जेना सोमदेव किसुनक कविता 'प्रतिवादक स्वर' केँ वैयक्तिक आलाप मानैत छथि, वस्तुस्थिति से नहि अछि। ने तँ एहि कविताक स्वर वैयक्तिक अपलाप थिक आ ने नाराबाजी कविता। ओही व्यवस्था अथवा स्थितिक खोल फाड़बा लेल तत्पर छथि जे वर्तमान युगक माथ पर नौ मोनक बोझ लादि प्रगतिक मार्ग छेकि लेने अछि। ई जड़ता कोनो एक व्यक्ति केँ नहि, अपितु समस्त पीढ़ी केँ अतीतक हरी मे ठोकि देने अछि। तें, संख्यातीत बापक परम्परा केँ जीवित रखबा लेल तत्पर व्यवस्थाक खोल केँ चिर्रीचोंत करबाक किसुनक तत्परता एक

व्यक्तिक नहि, अपितु ओहि समस्त व्यक्ति अथवा पीढ़ीक थिक जे अन्याय, अनीति आ अनाचारक विरोध करैछ। शब्दक बोन मे अर्थक अल्हुआ भरबाक प्रक्रिया सँ मोहाविष्ट, यथास्थितिक आग्रही दैत्य केँ मारबा लेल प्रस्तुत शेषशय्या सँ जागल क्रोधोत्थित सृजनैषी मधुसूदनक ई चेतौनी थिक, कोनो एक व्यक्तिक आलाप नहि।

सुखमय आ तनातनीहीन जीवनक कल्पना अतीतक विषय बनि गेल अछि। वर्तमान जीवन-प्रक्रिया मे समायल अन्तर्विरोध आ जटिलता लोकक चिंतनधारा केँ गछारि लेने अछि। अपनहि चिन्ता सँ सदिखन आक्रांत रहैछ। दोसरक प्रसंग किछुओ सोचब अथवा जानब बूताक बाहरक भ' गेलैक अछि। एक वर्षक प्रत्येक दिन एक टा अजोध विषधरक सदृश काटि रहल छैक। काटि-काटि अस्मिता केँ खकसियाह क' रहल छैक। एहि पीढ़ीक समस्त आशा-आकांक्षा आ संभावना पर कारिख पोति देने अछि। आशाक सूर्य करिया तुराइ मे लटपटा गेल अछि।

आशाक सूर्य केँ करिया तुराइ मे लट-पटा क' रखबा लेल एक सँ अधिक तत्त्व अपन सक्रियता प्रमाणित क' रहल अछि। एक दिस भाषण केँ शक्ति रस जकाँ ग्रहण काराओल जाइछ, कर्जखोर आश्वासनक वर्षा मे तीताओल जाइछ, बनावटी इजोतक महिमा देखाओल जाइछ, लोक केँ कोला कोला मे बाँटि देखबाक आदति लगाओल जाइछ तँ दोसर दिस सांघातिक अस्त्र शस्त्रक अमोघ अस्तित्व केँ नाश करबा पर अछि। निर्माता केँ भस्मीभूत करक हित भस्मासुर बनि विज्ञान दौगल आबि रहल अछि। (आत्मनेपद) एकर फल भेलैक अछि जे वर्तमान पीढ़ी भयाक्रांत अछि। अगिला क्षण पर विश्वास नहि छैक। लहाश सभक अनेक अक्षौहिणी वर्तमान पीढ़ीक माथ मे प्रेतनृत्य क' रहल अछि। एहि सँ लोक मृत्युन्मुखी भ' गेल अछि। मृत्युबोध सँ अभिभूत आ संभावनाविहीन लोक विषक पुड़िया ताकि रहल अछि। छतक कड़ी मे बन्हबा लेल तौनी तथा तीन महलाक छत पर सँ कुदबा लेल सुविधा ताकि रहल अछि। (पीढ़ीक शीतयुद्ध)

सामाजिक मूल्यक विघटन, वैयक्तिक मूल्यक अवमूल्यन तथा शहरीकरण एवं उद्योगीकरणजन्य जनमल अंतर्विरोध आ जटिलता सँ लोकक बीच युग-युग सँ बहैत स्नेहक सरिता सुखा गेलैक अछि। जखन कि लोक देखबय चाहैछ जे हम बड्ड सामाजिक आ अपन कक्ष मे बन्द रहि, वैश्विक चेतनाक एक अत्यन्त सक्रिय अंग थिकहुँ। एहि सँ अंतर्विरोध आओरो बढ़ैत गेल अछि। लोक मे बढ़ैत एहि अंतर्विरोध केँ किसुन चीन्हि, स्वर दैछ—

ई दुलार सिनेहक कथा एक टा विशाल दैत्य
अपन दुर्दान्त मुट्ठी मे कसने अछि
आब इतिहास टा मे भेटत ई शब्द

ई युग थिक तप्पत वर्तमानक
जकरा उपर मे छैक लावा फरही
अन्तर मे बरकैत छक अग्निस्रोत।

ऊपर मे लावा फरही तथा अन्तर मे बरकैत अग्नि स्रोतक वहन करितो वर्तमान पीढ़ी एक टा विलक्षणता रखने अछि जाहि सँ ओकरा मे विश्वजनीनताक भाव कमश: प्रबल होम' लगलैक अछि। कतबो राजनीतिज्ञ सभ सिखबैछ, किन्तु कविक चेतना समष्टिवादी होइत रहलैक अछि। लोक केँ वर्ण, जाति या भौगोलिक आधार-पर चिन्हबाक शिक्षा देल जाइछ मुदा जे किछु वर्ग एहनो काज मे लागल अछि जाहि सँ मानव-मानव एक समान बुझल जाय। एक समान मानल जाय। यैह युग धर्म थिक। एकरहि अन्वेषण आ पल्लवन संकटापन्न वर्तमान युग केँ त्राण देबाक क्षमता रखैछ। एहि युगधर्मक प्रसंग किसुन विचार व्यक्त करैत छथि जे 'मानव मात्रक एहि सुविकसित आ उदार एक पारिवारिक स्थितिक परिवेश मे अपन-अपन विशिष्ट रूपाकृतिक अछैतो चिन्तन साम्य, मूल्यमानक सर्वमान्य एकरूपताक खोज, नव कविक लेल युगधर्म थिक।' एहि यगधर्म सँ प्रतिकूल आ संकटापन्न स्थितियो मे आस्थाक टेमी जरैत छैक। जे मनुक्ख केँ मरबा सँ बचबैत छैक। झुल-झुल बूढ़ आ अतीतकाल बसक चक्का तर पीचा क' छहोछित्त भ' जाइत छैक। मृत्युक अन्हार सँ इजोत बहराइत छैक। रातिक करिया तुराइ केँ चौपेतिक' प्राची प्रात: स्नान क' अबैत छैक।

नव कविताक शिल्पक प्रसंग किसुनक स्पष्ट मान्यता अछि जे नव कविलोकनि अपन भोगल यथार्थक अनुभूति लेल शब्द केँ नव अर्थवत्ता देबाक हेतु प्रतिबद्ध छथि। किन्तु, एकर तात्पर्य ई नहि अछि जे नव कविता लेल शिल्पे साधन थिक। शिल्प तँ साधन थिक जकर आश्रय ल' नव कवि अपन केन्द्रीभूत युगीन संवेदना केँ स्वर दैछ। आ तें जेना कि डॉ. श्रीश राजकमलक कविताक चर्चा करैत नव कविता मे चौंकयबाक प्रवृत्ति विशेष रूपें पबैत छथि, से स्थिति नहि अछि। अपितु, युगानुरूप आपातत: वास्तविक नव विधाक अनुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदि केँ नव कविता मे साधन मानल गेल अछि, से किसुनक स्पष्ट मान्यते नहि प्रतिपादनो अछि।

मिथिला मिहिर : 1 जनवरी 1984

नव कविताक खेबनिहार : किसुनजी

अग्निपुष्प

'नव कविताक स्रष्टा लोकनि जे शैली ग्रहण कयलनि अछि ओहि मे चमत्कारपूर्ण नवीनता अछि। सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट करौनिहार विशेषता थिक ओकर मूर्त चित्र सभक योजना आ विषयक प्रति नवीन दृष्टि। ओना त' अपना आदिकाल सँ कविता मे बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग होइत आयल अछि, मुदा जाहि प्राचुर्य तथा जाहि लाघव सँ आइ-काल्हि नव कविता मे ओकर सन्निवेश भ' रहल अछि से पहिने नहि छल। शब्द योजनाक सम्बन्ध मे मितव्ययिता एकर दोसर विशेषता थिक। भरतीक शब्द, अनावश्यक विशेषण तथा अगबे संगीतमयताक दृष्टि सँ प्रयुक्त पदावली सँ अपना काव्य कें मुक्त राखब नव कविताक रचना पद्धति भ' गेल अछि।'

'आत्मनेपद'क एहि वक्तव्यक संगहि एकर समस्त आत्मनिवेदन कें मैथिली नव कविताक पहिल घोषणा-पत्र कहल जयबाक चाही, कारण जे एहि सँ पूर्व 'भुवन भारती', 'चित्रा' आ कि 'स्वरगंधा' मे नव कविता भेटैत अछि मुदा नव कविताक मादे ई स्थापना नहि भेटैत अछि। 'चित्रा' कें प्रकाशित करैत एकर नव काव्य-धारा कें डा. जयकान्त मिश्र परिभाषित करबाक चेष्टा नहि कयलनि, जखन कि 'चित्रा' कें मैथिली नव कविताक प्रस्थान बिन्दु—गंगोत्री मानल जाइत अछि। सम्भवत: नव कविताक प्रति हुनक अवधारणा स्पष्ट नहि छलनि आ तें नव कविताक सम्बन्ध मे कोनो मान्यता स्थापित नहि क' मात्र एक टा प्रकाशक जकाँ चित्रा कें परसि दैत छथि। एहि कविताक पृष्ठभूमि आ प्रवृत्ति कें एकर प्रयोग आ शिल्प शैली कें पहिल इतिहासकार होइतहुँ जयकान्त बाबू 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे सेहो रेखांकित नहि क' पबैत छथि। यात्रीजी सेहो अपन कविता आ नव कविताक मादे किछु नहि कहलनि अछि चित्रा मे।

एकर विपरीत बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क समग्र कविता संग्रह 'भुवन भारती'क सम्पादक डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' भुवनजीक जीवन-संघर्षक प्रभाव हुनका

रचना मे देखैत कहैत छथि—'हिनक प्रगतिवादी रचना मे करुणाक संग जे आशावादी दृढ़ता तथा स्वाभिमानक झलक भेटैत अछि तकर इएह कारण अछि।' स्वयं भुवनजी अपन पहिल कविता संग्रह 'आषाढ़'क भूमिका मे नव काव्य-धाराक दृढ़तापूर्वक पक्षधर नहि बुझना जाइत छथि अपितु ओ विवशतावश किंवा प्रयोग करबाक उद्देश्य सँ नव काव्य-शिल्प कें अंगीकार करैत बुझाइत छथि। हुनक कहब अछि—'आइ-काल्हि नव्य-प्रवाह। छन्दक बन्धन उठि गेल। अलंकार भार भेल। रस तँ बरबस सर्वत्र व्याप्ते जकाँ। लक्षणा विलक्षणा भेलि। ध्वनि अन्तर्ध्वनित। रीति अनरीति, गुण अवगुण। सभठाम स्वच्छन्दताक ताण्डव। सर्वत्र 'स्वान्त: सुखाय'क घनघोष। कविता सभ तरहें विविध 'वाद' ग्रस्त। दू अक्षर शुद्ध-अशुद्ध लिखबा मे जे समर्थ, तनिके कवि बनबाक स्पृहा। जतहिँ तुक सँ तुकक अनमेल भेल, सैह कविता। गंगा उलटल बहैत छथि। हमहूँ यदि ताहि मे हाथ धोइत छी, त' अपराधी कोना भेलहुँ?'

आषाढ़क एहि वक्तव्य कें सुविधानुसार कपचिक' श्रीशजी अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे मात्र दू टा वाक्यक आधार पर—'आइ-काल्हि नव्य प्रवाह। छन्दक बंधन उठि गेल...' भुवन जी कें नव काव्य प्रवृत्तिक सब सँ पहिने चिन्हनाहरक रूप मे प्रतिष्ठापित करैत कहैत छथि जे भुवनजी 'स्वानुभूतिपूर्ण रागताल सँ मुक्त नवीन गीत काव्य कें रचनात्मक, संग-संग सैद्धान्तिको स्तर पर प्रतिष्ठित कयल तथा पाछाँ प्रगतिवादक सेहो प्रवर्तक भेलाह। आचार्य रमानाथ झा सेहो भुवनजीक सम्बन्ध मे कहने छथि, 'हमरा साहित्य मे नवता इएह आनल ओ प्रगतिवादक इएह प्रवर्तक थिकाह।'

भुवनजीक 'युगवाणी', 'युवक' आदि कविता कें, जकर शिल्प, शब्द, बिम्ब-विधान प्राचीन अछि, नवयुगक, नववाणीक आ नवचेतनाक प्रतीक मानल जा सकैत अछि, मुदा आषाढ़क भूमिकाक आधार पर नव काव्यक किंवा प्रगतिवादक प्रवर्तक भुवनजी कें मानबा मे असौकर्य बुझि पड़ैत अछि, कारण एहि मे नव काव्य चेतनाक दर्शनक नितान्त अभाव अछि। नव काव्य चेतनाक दर्शन सब सँ पहिने 'आत्मनेपद' आ 'मैथिलीक नव कविता'क भूमिके मे भेटैत अछि।

आत्मनेपद सँ पूर्व आ चित्राक बाद 'स्वरगंधा'। स्वरगंधाक भूमिका मे राजकमल कहैत छथि—'यात्रीजी बड़ व्यथित भए कहलनि—मैथिली मे एखनउँ पचास बर्ख पूर्वहि जकाँ कविता लिखल जा रहल अछि।' अन्य भाषाक समक्ष मैथिली कविताक संदर्भ मे यात्रीजीक व्यथा कें स्वरगंधाक समस्त कविता अपन सम्पूर्ण सामर्थ्य सँ तिरोहित करबाक दिशा मे अग्रसर होइत अछि, मुदा मैथिलीक नव काव्य-धाराक सम्बन्ध मे राजकमलजी एतबे कहैत छथि—'हमरा विचारें कविताक लेल ई आवश्यक नइँ अछि जे छन्द, लय, गीतात्मकता, प्रसार-विधि, यति-प्रणाली कें मान्यता देले जाए।

कविताक लेल एक्के वस्तु आवश्यक अछि—शब्द।...छन्द योजना कविताक शृंगार मात्र थिक, आभूषण मात्र थिक आ कविताक वस्त्र थिक शब्द।'

राजकमल जीक एहि स्थापना सँ नव कविताक मात्र स्वरूप पर किछु प्रकाश पड़ैत अछि, मुदा नव कविताक अन्तर्वस्तु अंधकारे मे रहि जाइत अछि आ स्वरगंधाक समस्त भूमिका कविताक सम्बन्ध मे राजकमलजीक स्वानुभूत स्वीकारोक्तिक सीमा नहि नांघि पबैत अछि। नव कविताक सैद्धान्तिक स्वरूप 'आषाढ़' सँ 'स्वरगंधा' धरिक यात्रा मे अपरिभाषिते रहि जाइत अछि। नव कविताक स्वरूप ओ अन्तर्वस्तु जखन कि प्रतिपादित नहि भेल छल एकरा परिभाषित करबाक चेष्टा किसुनजी आत्मनेपदक भूमिका मे एहि रूप मे करैत छथि—'...सूक्ष्म संवेदनात्मकता आ युगानुरूप अन्त:संघर्ष, जीवनक परिवर्तित मूल्य आ परिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत नवीन (पैटर्न) शैली, काव्य-सत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन बिम्ब-योजना, यैह थिक नव काव्य-प्रवृत्ति।' नव कविताक सम्बन्ध मे किसुनजीक सैद्धान्तिक पृष्ठपोषण 'मैथिलीक नव कविता'क भूमिका मे आर फरिच्छ आ आक्रामक भ' जाइत अछि। नव कविताक समाजार्थिक दृष्टि जे किसुनजी सत्ता ओ पूँजीक संकेन्द्रणक रूप मे देखि पबैत छथि से किसुनजीक पूर्ववर्तीक कोन कथा बहुत दूर धरि परवर्ती कवि, समालोचक मे सेहो नहि लक्षित होइत अछि।

एहि शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे अंग्रेजी कविताक स्वरूप ओ मूल्य स्थापनाक जे आत्म व वाह्य संघर्ष टी. एस. इलियट केँ कर' पड़ल छलनि सैह अथक संघर्ष मैथिली नव कविताक लेल किसुनजी केँ जीवन पर्यन्त करय पड़लनि। निश्चित रूप सँ इलियटक रचना-संसार आ किसुनजीक काव्य-भूमि पृथक रहितहुँ एकहि टा वैश्वीकृत दर्शन अछि तथा अपन-अपन नवीन काव्य-धाराक मान्यता लेल एकहि रंग संघर्ष अछि। कोनो कवि केँ अपन समकालीन कविताक मूल्य-स्थापनाक लेल एहिना बेर-बेर परम्परावादी कविता आ तत्सम्बन्धी स्थापित मूल्यक विपरीत वेग मे कविताक नाह खेब' लेल समर्थ रूप सँ समालोचनाक पतवार ल' क' उतर' पड़ैत छैक। किसुनजी नव कविताक एहने खेबनिहार छथि।

एकरे स्वाभाविक प्रतिफलन थिक 'मैथिलीक नव कविता', जाहि मे नव कविताक वैचारिक पृष्ठभूमिक प्रतिपादनक संगहि नव काव्य-धाराक तत्कालीन सोलह टा कविक कविता केँ संग्रहीत कय नव कविताक सम्मिलित स्वरक ध्वज गाड़ल गेल अछि। एहि संग्रह केँ मैथिलीक पहिल 'तारसप्तक' कही त' अतिशयोक्ति नहि होयत। तेँ मैथिली नव कविताक आदि पुरुषक श्रेणी मे हम भुवनजी, यात्रीजी, किरणजी आ राजकमलजी केँ ठाढ़ क' सकैत छी, मुदा मैथिली नव कविताक एकहि संग प्रवर्तक आ प्रवक्ता रामकृष्ण झा 'किसुन' निर्विवाद रूप सँ मानल जयताह।

प्रगतिशीलता किसुनजीक काव्य-प्रवृत्तिक विकासक विशेषता मानैत आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि-'जाहि रचना मे बौद्धिकता केँ त्यागि विशुद्ध भावाभिव्यक्तिक भूमि पर (किसुनजी) अवतरित होइत छथि से शुद्ध कवित्वक दृष्टिएँ हिनक उत्कृष्ट रचना होइत अछि। 'वसन्तागम' शीर्षक कविता हिनक तेहने रचना थिक, जाहि मध्य भावानुभूतिक रागात्मक स्वाभाविकता तथा भाषाशिल्पक सुलभ, सरस ओ मधुर गतिशीलता हृदय केँ मुग्ध क' दैत अछि।' देखल जाय 'वसन्तागम'क अन्तिम दू पाँती आ 'कोसीक बाढ़ि'क अंश—

अनाहूत प्रणय-प्यास जागल अनन्त / सरिपहुँ अलि आबि गेल भरिसक वसन्त। (वसन्तागम)

ऊँच-ऊँच जतेक अछि / सब नीच बनि जेतैक / नीच अछि खत्ता की डाबर / भरत सब टा / ऊँच ओ बनि जैत / हैत सब टा एकरंग समभूमि!' (कोसीक बाढ़ि)

'बौद्धिकता' आ 'विशुद्ध भावाभिव्यक्ति' केँ दू टा परस्पर विरोधी ध्रुव पर बाँटिक' किसुनजीक कविता केँ आचार्य गुनैत छथि आ हुनका 'वसन्तागम' मे भावानुभूतिक रागात्मकताक स्वाभाविकता परिलक्षित होइत छनि। दोसर दिस 'कोसीक बाढ़ि' सदृश कविता संभवत: आचार्य केँ बौद्धिकतापूर्ण बुझि पड़ल होयतनि। एहि तरहक बौद्धिकतापूर्ण कविता विचारधारात्मक कविता अछि, जे विषमताक विरुद्ध समताक दर्शन केँ बाढ़िक प्रतीक सँ सम्पूर्ण कविता मे कलात्मक रूप मे प्रतिष्ठित करैत अछि। 'वसन्तागम' सन कतेको कविता किसुन सेहो लिखलनि, मुदा एहन कविता जयदेव सँ जयधारी धरि लिखाइत रहल अछि, तेँ 'वसन्तागम' सन कविता केँ मैथिली कविताक विकास-यात्रा मे, प्रगतिशील आ कि नव कविताक पाँती मे नहि गनल जा सकैत अछि। एहन कविता केँ 'उत्कृष्ट रचना' मानब सम्भवत: 'कोसीक बाढ़ि', 'युग सन्देश', 'दीक्षा', 'समाधान', 'जयति जय गणतन्त्र', 'सत्यान्वेषी' आदि कविताक दर्शन केँ आचार्य द्वारा नकारब बुझना जाइत अछि।

कोनो एक कालखण्ड मे एकहि कवि द्वारा विभिन्न भावबोधक कविता लिखल जाइत अछि। किसुनजीक सेहो कतेको कविता मे अद्‌भुत प्रकृति-चित्र आ नैसर्गिक प्रेम अपन स्थान बनौने अछि, मुदा कोनो कविक ओकर विकासमान विचारधारा केँ प्रतिबिम्बित कर' बला रचना केँ रेखांकित कयल जयबाक चाही आ एहने रचना सँ ओकर क्रमिक विकासक मूल्यांकन सम्भव भ' पबैत छैक। अन्यथा कोनो रचना केँ टेबि क' अपन आदिम आस्वाद केँ सन्तुष्ट मात्र कयल जा सकैत अछि। एहिना एकहि कालखण्डक कविता 'सुधि-सागर मे' (1960) तथा 'उपलब्धि' (1962) अछि।

चान कालिमा युक्त / पूर्णिमो मे रहैत अछि / मुदा होइछै सभ केँ / अनुपम सुख ज्योत्स्ना सँ / यद्यपि जीवन असत् अचिर / क्षणजीवी दुखमय / मुदा चिन्तन

सुखक / अन्यतम साधन शाश्वत' (उपलब्धि)। जीवनक द्वन्द्वात्मक रूप एहि छोट सन कविताक मूल आत्मा अछि। चानक कालिमा आ ज्योत्स्नाक द्वन्द्व, अचिर आ शाश्वत द्वंद्व। एहि द्वन्द्वक मध्य संघर्ष प्रगति आ सामाजिक विकासक मार्ग प्रशस्त करैत अछि। एक दिस ई कविता द्वन्द्वात्मक भौतिकवादक दर्शन केँ नव शिल्प केँ काव्यात्मक रूप सँ प्रस्तुत करैत अछि तँ दोसर दिस—'संकेतें शिर हिला-हिला क' फदकय गाछक पात/पवन पसारय नहुँ-नहुँ मन मे प्रणय-रहस्यक बात' (सुधि-सागर मे)। पुरान शिल्पक ई कविता अन्य भावभूमि पर ठाढ़ करैत अछि।

एकहि कालखंडक ई दुनू रचना कविक रचना-प्रक्रियाक द्वंद्व दिस संकेत करैत अछि। एहि काव्यगत द्वन्द्व केँ कविक शिल्पगत ओ वैचारिक संक्रमणकालक रूप मे चिह्नित कयल जयबाक चाही। एहिना 'आक्रामक स्वर' (1970), 'आजुक उत्तर' (1970), 'प्रतिवादक स्वर' (1966) आ 'अव्यक्त प्रणय' (1967) आदि एक्के कालखंडक कविता मे द्वन्द्व चलैत रहैत अछि—किसुनजीक समस्त विकासमान रचना-प्रक्रिया मे आ ई विकास कतहु शिल्पगत त' कतहु विचारधारात्मक अछि।

प्रो. मायानन्द मिश्र किसुनजीक कविता केँ तीन कालखंड मे आ तीन स्वर मे बँटैत छथि। सन् 40 ई. सँ 50 ई. धरिक कविता केँ संस्कारवादी स्वरक कविता, सन् 50 ई. सँ 60 ई. धरिक कविता केँ यथार्थवादी स्वरक कविता तथा सन् 60 ई. सँ 70 धरिक कविता केँ ओ अभिव्यंजनावादी काव्य कहैत छथि।

किसुनजीक समग्र काव्य संकलन 'क्रमश:' मे संकलित कविता 'शिशु सँ' (1945) आ 'स्वातन्त्र्य गीत' (1950)क शिल्प केँ छोड़ि एकरा संस्कारवादी आ कि परम्परावादी कविता नहि कहल जा सकैत अछि। एहि स्वर केँ ओ सर्वथा स्वाभाविक मानैत कविताक शब्द, शिल्प, बिम्ब आ कि विचार संस्कारयुक्त आ कि संस्कारग्रस्त अछि ओ नहि फड़िछाबैत छथि। मैथिली कविताक संस्कार / परम्पराक किसुनजी धरि अबैत-अबैत दू टा धारा भ' गेल छलैक —'प्रतिपदा' आ 'चित्रा'क धारा। मायानन्द जी जकरा संस्कारवादी स्वरक कविता कहैत छथि तकरा किसुनजीक काव्य-चेतना, शिल्प आ विचारक दृष्टिएँ संक्रमणकालीन कविता कहल जयबाक चाही। कोनो विकासमान विचार युक्त काव्य-धाराक कतेको संक्रमण काल होइत छैक। मूलभूत विचार नहियो बदलला पर समग्र काव्य पर कतेको संक्रमणकालीन प्रभाव देखल जा सकैत छैक।

...प्राप्त भेल अछि आइ पुन: / हमरा निज विस्मृत पूर्व महत्ता / संस्थापित भय गेल आइ पुनि / अपन देश पर अपने सत्ता / ...(स्वातंत्र्य गीत)। स्वतंत्रताक एहि उल्लास सँ 1962 धरि अबैत-अबैत 'जयति जय गणतंत्र' मे कवि केँ एहि स्वतंत्रता सँ मोहभंग भ' जाइत अछि। काव्य-यात्राक क्रम मे एहि विकासक दिशाक मीमांसा

कयला पर काव्य-स्वरक तारतम्य आ विचार सघनता केँ काव्यात्मक अभिव्यक्ति मे फड़िछाओल जा सकैत अछि। मायानंदजी यथार्थवाद बनाम प्रगतिवाद आ अंतत: स्वघोषित अभिव्यंजनावादक सैद्धांतिक निरूपण मे किसुनजीक कविता केँ ओझरा दैत छथि।

सन् 50 ई. सँ सन् 60 ई. धरिक दशक केँ मैथिली काव्य परम्पराक यथार्थवादी काव्य-काल कहैत यथार्थवादक परिभाषा करैत ओ कहैत छथि जे—'एहि युग मे पहिलुक बेर द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी चिन्तन-परम्पराक अनुकूल वर्ग वैषम्यक चित्रण मैथिली काव्य मे फैशनक रूप मे नहि अपितु अपन स्वाभाविक निष्ठाक रूप मे प्रकट भेल।' यूरोपक रिनेसॉन्स (पुनर्जागरण)क प्रभाव बहुत बाद मे भारतक क्षेत्र विशेष मे देखल गेल। दयानन्द सरस्वती, राम मोहन राय आदि एही पुनर्जागरणक प्रतीक छथि। दर्शनक स्तर पर एहि पुनर्जागरणक आत्मा मानवतावाद अछि। उन्नैसम शताब्दीक मध्य मे साहित्यक क्षेत्र मे एकरे विकास यथार्थवाद (रियलिज्म)क रूप मे भेल, जे मानवक व्यक्तित्व केँ यथार्थक संग बहुकोणीय सम्बन्धक रूप मे देखैत अछि। तत्कालीन बहुतो प्रगतिशील लेखन मे ई तत्व देखल गेल। बाल्जाक, डिकेन्स, टॉल्सटॉय एकरे प्रतीक छथि। भारत मे प्रेमचन्द आ शरदचन्द्र एही दर्शनक संवाहक छथि। मैथिली साहित्य मे सीताराम झाक कतिपय कविता आ 'घसल अठन्नी' सेहो एकरे छाड़नि थिक। अतन्त: यथार्थवादक प्रतिफलन मानवतावादे होइत बुझि पड़ैत अछि, जे यथास्थितिवाद केँ तोड़बाक दर्शन नहि अछि; जखन कि द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दर्शन एहि सँ संघर्षक दर्शन थिक, प्रगतिक चिन्तन थिक।

मायानन्दजी नवीन युग-चेतनाक 'अतियथार्थवादी' अभिव्यक्ति केँ, जकर मुख्य धर्म विद्रोह तथा व्यंग्य कहलनि अछि, अभिव्यंजनावादी काव्य मानैत आत्मनेपद केँ सेहो अही मे सम्मिलित क' देलनि अछि। जँ यथार्थवाद यथास्थितिवाद केँ तोड़बाक दर्शन नहि भ' सकैत अछि तँ अतियथार्थवादक दर्शन अचानक विद्रोहक दर्शन कोना भ' जायत? मायानन्दजीक एहि काल आ स्वर विभाजन सँ भुवनजीक 'युगवाणी' आ 'चित्रा'क समस्त कविता संस्कारवादी कविताक कोटि मे खसि पड़त आ किसुनजी निरपेक्ष आ निहिलिस्ट कविक रूप मे, जखन कि ओ—'लै उद्दाम-प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी / जीर्ण-शीर्ण जिंजीर कड़कि क' टूटि गेल अछि।...' (युग-सन्देश)क कवि छथि।

किसुनजीक समकालीन 'दू शरीर एक प्राण' अमरजी किसुनजी केँ 'एक सिद्धहस्त, समतावादी प्रगतिशील कवि' मानैत छथि, संगहि 'यात्रीजीक प्रभाव केँ उघैत' मानैत छथि। किसुन जी निश्चित रूप सँ चित्राक प्रगतिशील धारा सँ प्रभावित कवि छथि आ एकरा ओ अपन शिल्प, शैली सँ विकसित कयलनि। यात्रीजीक

प्रगतिशील विचार ओ शिल्प हिनक प्रस्थान-बिन्दु छल, मुदा यात्रीजीक शैली भिन्न छल, जे किसुनजीक कविता 'इज्जति कोन पदार्थ?' मे देखबा मे अबैत अछि। किसुनजीक सम्बन्ध मे आचार आ विचारक तादात्म्य पर अमरजी प्रश्न करैत छथि—'आचार सँ भिन्न रहितहुँ कि कोनो विचार केँ क्यो पूर्णतः आत्मसात क' सकैत अछि।' एकर उत्तर सेहो ओ द' देलनि अछि - 'आचार मे बिनु परिवर्तन भेने ओहि विचार केँ क्यो आत्मसात नहि क' पबैत अछि। तें किसुनजी विचार सँ समतावादी होइतहुँ कम्यूनिस्ट नहि भ' सकैत छलाह।' निश्चित रूप सँ किसुनजी प्रगतिशील छलाह, समतावादी छलाह, मुदा यात्रीजी जकाँ कम्यूनिस्ट नहि छलाह।

काव्यक विचारधारात्मक विवेचनाक संकट तखने उपस्थित भ' जाइत छैक जखन समालोचक 'प्रगतिशील' आ कम्यूनिस्ट दुनू केँ एक्के निहाई पर परखबाक भ्रमपूर्ण चेष्टा करैत छथि। किसुनजीक सम्बन्ध मे सम्यक विवेचनाक यैह संकट अमरजीक सोझाँ ठाढ़ छनि। यात्रीजी सँ मात्र किसुनजी केँ नहि अपितु भुवनजी आ हरिमोहन झा सँ केदार कानन धरि केँ पृथक कयने बिना प्रगतिशील आ कम्यूनिस्ट रचनाकारक अन्तर नहि कयल जा सकैत अछि। आचार-विचार एहिना घोर-मट्ठा होइत रहत। कम्यूनिस्ट प्रगतिशील होइते अछि, मुदा प्रगतिशील कम्यूनिस्टो हेबे करय, नहि देखल जाइत अछि। अमरजीक मूल्यांकनक अनुसार जँ किसुनजी पर 'प्रगतिशीलता थोपल' अछि त' मान' पड़त जे 'प्रगतिशील बनबाक लोभ मे संस्कारक विरुद्ध लेखन' होइत रहल अछि आ मैथिलीक समस्त प्रगतिशील लेखन स्वाभाविक नहि, थोपल अछि।

'ज्योति-याचना'क मात्र एक टा पाँती—'देवि, हमर अछि यैह याचना, देल जाओ वरदान' केँ उद्धृत कय किसुन जी केँ 'स्मार्त्त' नहि प्रमाणित कयल जा सकैत अछि, जखन कि अही कविताक निष्कर्ष देखल जाय-'बल, साहस, पौरुष आ यौवन / जागय, हो सृष्टिक पुनः सृजन / हो वर्ण-वर्ग विद्वेष नष्ट / कवि गाबि सकय ई स्वर नूतन / ...'। किसुनजीक ई आरम्भिक कविता थिक। एकर वैचारिक विकास 'दीक्षा' मे देखल जा सकैत अछि—'पदगत छह तोरा लै अशेष अवनी-अम्बर / जे पुण्यक बदला स्वर्ग दैछ से व्यापारी / बनिया ईश्वर नहि दानी अछि, छह व्यर्थ त्रस्त / थिक भाग्यवाद हारल असाहसिक तर्क जाल / तों सर्वशक्ति सम्पन्न करह निज पथ प्रशस्त।' किसुनजीक ई प्रगतिशीलता अमरजीक मतें थोपल प्रगतिशीलता थिक, जखन कि ई किसुनजीक क्रमिक वैचारिक, शिल्पगत ओ भाषागत विकास-यात्रा थिक आ अही रूप मे किसुनजीक समग्र काव्य-व्यक्तित्वक मूल्यांकन कयल जयबाक चाही।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

क्रमशः कवि किसुनजी केँ चिन्हैत...

अशोक

भाइ साहेब (राज मोहन झा)क समाद आएल। किसुनजीक कविता पर लिखबा लेल। हाथ-पैर सुन्न हुअ' लागल। सोचलहुँ चाकरीक झंझटि सभहक बहाना बना टारि देबनि। विद्यापति भवन मे भेंट भ' गेलाह। तगादा केलनि। कविता संग्रह नहि हेबाक चर्च केलहुँ। कहुना बात टरि जाय। कहियो समीक्षा आदि नहि लिखने छी। किछु कविता-कथा केहनो लीखि लेनाइ एक बात, मुदा समीक्षा, आलोचना...बाप रे! भाइ साहेब दोसरे दिन किसुनजीक मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित कविता संग्रह पठा देलनि। ताहि पर सँ जबर्दस्त आदेश...। कोनो उपाय नहि रहल। पोथी उनटा-पुनटा क' देखलहुँ। किछु कविता सभ पढ़लहुँ। ओकर रचना-काल आदि देखलहुँ। कविक मृत्युक तिथि पर नजरि गेल। 'क्रमशः' मे संग्रहीत कविक कविता सभ पढ़ैत गेलहुँ। किसुनजी केँ चिन्हैत गेलहुँ। अप्पन सन बुझाइत गेलाह।

'क्रमशः' मे पं. रामकृष्ण झा 'किसुन'क 1945 ई. सँ मई 1970 ई. धरिक कविता संग्रहीत अछि। किछु कविताक रचना-काल नहि देल अछि। परन्तु अधिकांश रचनाक रचना-काल अथवा प्रकाशन तिथि अथवा दुनू लिखल अछि। रचना-कालक हिसाबें देखला पर ई स्पष्ट होइत अछि जे 1960 ई. सँ पूर्वक मात्र चारि टा कविता 'क्रमशः' मे संग्रहीत अछि। मोटामोटी किसुनजी 1960 ई. सँ मई 1970 ई. धरि कविता लिखलाह। ताहू मे बेसी कविता 1965 ई.क बादहिक अछि। किसुनजीक देहावसान भेल 15 जून 1970 ई.केँ। रचनाकाल आ देहावसानक पृष्ठभूमि मे किसुनजीक काव्य-यात्रा केँ देखैत, कविता केँ पढ़ैत आ कवि किसुन केँ चिन्हैत मोन आ मस्तिष्क व्याकुल होइए। सोचबा-विचारबाक लेल विवश करैत अछि।

पहिल कविता जे 'क्रमशः' मे भेटैत अछि ओ थिक 1945 ई. क लिखल कविता 'शिशु सँ।' किसुनजी ओहि कविता मे शिशु केँ सम्बोधित करैत शिशुक मोहक मूर्त्तिक रचना मे विधिक व्यापार केँ सुसफल भेल कहैत छथि। शिशुक माध्यमे प्रकृति केँ

निहारैत छथि। शिशु केँ सम्बोधन करैत कौतुकवश शिशु जकाँ आँखि पसारि सृष्टि केँ देखैत छथि। 1950 ई. मे लिखल स्वातंत्र्य गीतक माध्यमे स्वतंत्रता प्राप्तिक उल्लास मे भारतीय स्वातंत्र्यक अभिनन्दन करैत छथि। हुनक मस्तिष्क उन्नत होइत छनि। मुदा 1957 ई. मे लिखल तेसर कविता मे सभ टा उल्लास बिला जाइत छनि। नोकरी नहि भेटबाक कारणें पढ़ब-लिखब व्यर्थ बुझाइत छनि। माइक मोतियाबिन्दक इलाज लेल, पत्नी आ बच्चाक दबाइ लेल, अपन फाटल जूता बदलबाक लेल पाइक महत्ता बुझाइत छनि। कहैत छथि, 'पाइ थिक सभक पितामह...'। ककरो भातिज, भागिन, सरबेटा नहि रहबाक कारणें नोकरियो नहि पबैत छथि। मुदा निराशा केँ आशा मानैत जीवित रहबाक लेल प्रयत्न प्रारम्भ करैत छथि। 1958 ई. मे लिखल चारिम कविता मे देवता-दानवक प्रकृति आ प्रवृत्ति पर गप्प करैत असमंजस मे पड़ि जाइत छथि। देवताक चरित्र स्खलनक परिणाम सोचि चिन्तित होइत छथि। एवं प्रकारें साठि ईसवी सँ पूर्वक चारू कविताक माध्यमे किसुनजी शिशु जकाँ आँखि पसारि सृष्टि केँ देखैत छथि। सद्यः प्राप्त स्वतंत्रताक गीत गबैत छथि। आर्थिक अभाव भोगैत, अनेक इन्टरभ्यू देलाक उपरान्तो नोकरी नहि पबैत, निराशा केँ आशा मानैत जीवित रहबाक लेल प्रयत्न प्रारम्भ करैत छथि। मुदा नीक लोक (देवता)क चरित्र स्खलनक परिणाम सोचि चिन्तित होयब सेहो प्रारम्भ करैत छथि। कहि सकैत छी जे कवि किसुन अपन यात्रा निजी आ सामूहिक चिन्ताक संग असमंजस मे प्रारम्भ करैत छथि। मुदा आशा हुनक शक्ति ओ सम्बल छनि।

उन्नैस सए साठि ईसवी सँ पैंसठि धरिक कविता मे किसुनजी कतहु प्रवासी मन मे सहसा स्मृतिक संस्पर्श द्वारा प्रणय रहस्यक गीरह खोलैत छथि तँ कतहु क्षणजीवी दुखमय, मुदा चिरन्तन-सुखक अन्यतम साधन शाश्वत जीवनक गीत गबैत छथि। कखनहुँ कोनो अपरिचिता केँ विश्व मे सभ सँ बेसी परिचित मान' लगैत छथि तँ कखनहुँ कोनो क्षणक जीवन आ जीवनक क्षण केँ आत्मोपलब्धि मानि आह्लादित होइत छथि। स्मृतिक दंश केँ सहैत, वर्तमान केँ भोगैत, प्रकृति आ प्रेयसी केँ निहारैत कवि किसुन एहि काल मे युद्धक विभीषिका आ विज्ञानक आतंकक सेहो गप्प करैत छथि। जागरण गीत गबैत छथि। उद्घोष करैत छथि! आह्वान करैत छथि। देशक रक्षा मे शत्रु दर्प चूर्ण करैबला सपूतक आरती उतारैत छथि। कालघोष कए लोक केँ सावधान करैत छथि। सैनिकक पत्र सुनबैत छथि। ई बात सभ स्वाभाविक रूपें होइए कारण एहि काल विशेष मे देश चीन आ पाकिस्तान संग युद्ध करैत अछि। कोनो देशभक्त आ संवेदनशील मनुक्ख जकाँ सृजनधर्मी किसुन जी अपन कविताक माध्यमे देश आ जनता केँ सम्बोधित करैत छथि। मुदा एकर संगहि एहि काल विशेषक कविता मे ओ पैघ लोकक एक आधुनिक शब्द चित्र सेहो प्रस्तुत करैत छथि जाहि मे

तथाकथित पैघ लोकक प्रति हुनक घृणा, क्षोभ आ वितृष्णा तीव्र व्यंगक संग प्रतिबिम्बित भेल अछि। ओ कहैत छथि :

बूझय मे निस्सन छथि, बिनु बूझल फोंक छथि
खोल छनि मनुक्खक, आ प्रच्छन्न जोंक छथि।

(पैघ लोक)

एही काल विशेष मे 'दू टा नव कविता'क शीर्षक सँ रोजनामचा तथा रीतिकालीन आ प्रीतिकालीन प्रेम प्रस्तुत करैत छथि। रीतिकालीन आ प्रीतिकालीन प्रेम मे कंचका आ पकलाहा कोइलाक गुण वर्णनक संग कांच उमेर आ परिपक्व बएस मे अन्तर केँ स्वाभाविक मानल गेल अछि। रोजनामचा मे अपन घरक चिरइ, भुल्ली बिलाड़ि, गृहस्वामिनी, नेनाक गप्प आ बगेड़ीक नोन हरदि मिला क' तरबाक वर्णनक संग शोणित पीबैत मोस (मच्छड़)केँ ठामहि थापड़ मारि पिस्ता क' देबाक तथा 'सरबे केँ खूब छका देबाक' आत्मतुष्टि बखानल गेल अछि। एकरा नव कविता कहब विशेष रूपें द्रष्टव्य अछि। लगैए नव रीतिएँ कविता लिखैतो किसुनजी ओहि समय धरि नव कविता केँ सम्पूर्ण अर्थवत्ताक संग ग्राह्य नहि केने छलाह। इहो भ' सकए नव कविता केँ अपना लेल बोधगम्य मानितो पाठक लेल दुर्बोध मानैत छलाह। नव कविता लेल जे आस्था बाद मे जगलनि से ओहि समय मे नहि रहनि। भ' सकैए एक मैथिल रहबाक कारणें बदलैत रीति रेवाज, मानसिकता, अतीतक प्रति मोह भंग, आधुनिकता (अंग्रेजिया चालि)केँ ओ नव मानैत छल होयताह। ई सामान्य मैथिल (मैथिल ब्राह्मण)क प्रवृत्ति छल वा एखनो किछु अंश मे अछिए जे ओ सभ गड़बड़ीक लेल अंग्रेजिया चालि (आधुनिकता) केँ दोषी मानैए तें ओकर खिधांश करैत अछि। कदाचित एही मानसिकताक कारणें आधुनिक अथवा नव कविताक सेहो खिधांश होइए। मुदा ई असमंजस किसुनजी केँ लगले हटि गेलनि आ ओ नवताक प्रखर पक्षधर भ' गेलाह।

एही काल विशेषक कविता मे दू टा कविता जे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ बेछप अछि से थिक—'कोसीक बाढ़ि' आ 'इज्जति कोन पदार्थ?' किसुनजी एहि दुनू कविता मे क्रमशः मिथिलाक शोक कोसीक बाढ़ि सँ होइत पराभव आ मैथिल ब्राह्मणक छद्म इज्जति (प्रतिष्ठा) सँ होइत पराभव दिस इशारा केलनि अछि। एहि प्रकारें किसुनजी क्षेत्र विशेष (मिथिला)क आ जाति विशेष (मैथिल ब्राह्मण)क पराभव पर लोकक ध्यान आकृष्ट केलनि जे हुनक कविताक मूल प्रवृत्तिक बेछप तत्त्व थिक।

पैंसठिक बादक कविता मे जिनगी आ मनुक्ख प्रकृतिक संग किसुनजीक कविताक लक्ष्य बनल अछि। 'हम' सेहो हुलकी मार' लागल अछि। ई सभ हुनका

विचलित ओ विकसित दुनू करैए। 'अयला नहि जीवन-सिंगार' आ 'बरिसातक भोर, साँझ आ राति' देखैत-गबैत कवि 'जिनगी थिक टिकट ट्रामक' आ 'जिनगी थिक नव कविता' कह' लगैत छथि। मुदा आस्था आश्चर्यजनक रूप सँ बनल रहैत छनि। यैह आस्था यात्राक सार्थकता लेल मूल सम्बल अछि। कवि किसुन मानैत छथि जे मोनक अन्हार केँ मरबाक छैक आ असफलताक प्रत्येक श्वास मे दीपित जीवन-आस्था अछि। मुदा जीवन मे मनुक्ख सँ ततेक चोट पहुँचल छनि जे वास्तविक मनुक्खक खोज मे बौआए लगैत छथि :

होहतहिँ ने अछि भरिसक मनुक्ख कतहु आब
जौं कतहु भेटि जाय/बन्धु! अत्र-तत्र
तँ हमरा लीखि देब/जल्दी सँ पत्र

मुदा मनुक्खक प्रति आस्था तैयो खतम नहि होइत छनि। यैह प्रबल आस्था 'जिनगीक आगि मे मृत्यु जरि गेल, के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?' कहबा पर विवश क' दैत छनि। आस्थाक सम्बल आ प्रेमक भरोस किसुनजी केँ क्षणिक विचलन सँ सभ दिन दूर हटबैत रहलनि। अपन अस्मिता तक केँ ओ प्रेमहि मे सन्निहित मानैत छलाह। प्रेमे हुनकर परिचिति छलनि। मुदा ई प्रेम कहियो हुनका मोहग्रस्त नहि हुअ' देलकनि। जँ क्षण भरि लेल कखनहुँ मोहग्रस्त होइतहुँ छथि त 'ज्ञान' हुनका तुरन्ते उबारि लैत छनि। तें प्रकृति, प्रेयसी, अतीत, पुरना चालि, मनुक्ख सभ सँ प्रेम करितो कवि किसुन कखनहुँ मोहग्रस्त नहि होइत छथि। बूझि जाइत छथि जे 'हमरा सभ केँ अतीत हरी मे ठोकने' अछि। बुझि जाइत छथि जे 'सेठ सुरुजमल करैत अछि व्यापार। करिक्का चादरि पर छिड़िया क' रेजकी गनैछ सगर राति।' क्रमशः क्षणिक मोहग्रस्ततो मोह भंग मे परिणत हुअ' लगैत छनि। मोह भंग भेला सँ आक्रोश उपजैत छनि। तखन हुनकर कविता विद्रोह करबा पर उतारू भ' जाइत अछि। नव मूल्यक अनुसंधान कर' लगैत अछि। नव, नवता, नवीन सभ टा एक्कहि बेर हुनका लग उद्भासित, उद्घाटित भ' उठैत छनि। अर्थवान भ' जाइए। संगहि वृद्ध, जर्जर, क्लीव-युगक नपुंसक आक्रोश केँ ओ नीक जकाँ चीन्हि जाइत छथि। हुनका 'शत्रु' देखार हुअ' लगैत छनि आ 'मित्र' चिन्हार भ' जाइत छनि :

जत' अन्हारक आतंक बैसल-बैसल मोछ पिजबैछ
आ इजोतक पातर-छितर पियरायल किरण सभ
सोंगर लगौल, भखरलहा घरक चिनुआर पर
चुपचाप लड़ैत अछि देशक भविष्य सँ
अर्द्ध-गौर, अर्द्ध श्याम, हम्मर ई गाम
नीक लगैछ हमरा ई कसबानुमा गाम।

मित्र-शत्रुक परिचयक संग किसुनजी केँ अपन 'परिचय' सेहो स्पष्ट भ' जाइत छनि। इहो कहल जा सकैए जे पहिने अपन परिचय स्पष्ट भ' गेला पर मित्र-शत्रुक परिचय सेहो स्पष्ट भ' जाइत छनि। सभ प्रकाशित भ' गेला पर, स्पष्ट भ' गेला पर प्रतिवादक स्वर उभरि अबैए। कोनो बनाबटी बात, बसात, बनाबटी इजोतक प्रति आक्रोश सँ भरि उठैत छथि। ओ इहो बुझि जाइत छथि जे 'शब्दक बोरा मे अर्थक अल्हुआ भरबाक प्रक्रिया सँ के मोहाविष्ट छी।' तें हुनकर स्वर आक्रामक भ' जाइए। आब ओ पुरना केँ माफ करबाक लेल तैयार नहि छथि। मुदा किसुन जी ई नहि बूझि पबैत छथि जे जाहि क्षण हुनक स्वर आक्रामक भ' उठल अछि, ओ 'नवता'क पूर्ण पक्षधर भ' गेल छथि, ओही क्षण 'ठरल' मृत्युक चांगुर हुनका गछारि लेबाक लेल पैर मारने बढ़ि रहलए। ओ पुरान वस्त्र उतारि नव वस्त्र पहीरि लैत छथि। ई मैथिली कविताक दुर्भाग्य थिक जे जहिया अपन जातीय संस्कार सँ पूर्णतया मुक्त भ' किसुनजी अपन सार्थक यात्राक बल पर सीना तानि क' अपन 'व्यक्ति' केँ ठाढ़ करैत छथि, तकर किछुए दिनक बाद हुनक मृत्यु भ' जाइत अछि। किसुनक कविता मे जे किछु 'नीक' अछि, अर्थवान अछि, सार्थक ओ आक्रामक अछि से हुनक 'व्यक्ति'क अछि, मुदा एहि 'व्यक्ति' केँ पएबा मे अफसोस जे किसुनजी केँ समय लागि गेलनि। ई समय लगबाक कारण निश्चित रूप सँ हुनक 'जाति' छलनि, परिवेश छलनि, संस्कार छलनि। जहिया ओ एहि सँ मुक्त भेलाह, लगभग ताही समय जीवन मुक्त सेहो भ' गेलाह।

क्रमशः कवि किसुनजी केँ चिन्हैत हमरा लगैए जे प्रतिवाद, आक्रोश ओ आक्रमणक संग प्रेम, आशा ओ आस्था आ अपन परिचय कतेक महत्त्वपूर्ण अछि, सार्थक अछि। एहि लेल थोड़ अथवा अधिक जीवन कोनो माने नहि रखैत अछि। एही सोच आ विचारक संग हमरा इहो लगैए जे कवि किसुनजी केँ चीन्हब अपन पूर्वज केँ चीन्हब थिक...।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक कविता आ हुनक कविताक विश्वास

नारायणजी

किसुनजी केँ बूझब, किसुनजीक मूलरूप सँ कविता केँ बूझब थिक। ओहि कविता केँ जे परम्परागत शैली सँ मुक्त भ' नव कविताक रूप धारण कयलक, नव कविताक आधार केँ ठोस आ विश्वसनीय बनओलक।

किसुनजीक कविताक रूपान्तरण सहज अभिव्यक्तिक स्वीकार छल, एक तरहें छन्द केँ नकारब छल। आ वर्तमान मे जे किछु घटित भ' रहल अछि, तकरा एक टा व्यक्ति भोगक रूप मे वाणी देब छल। एहि लेल दैनिक जीवनक व्यवहृत शब्द सभक द्वारा कविताक आत्मा आ अभिव्यक्ति केँ जन-साधारणक अत्यन्त लगीच करब छल।

किसुनजीक कविताक ई रूपान्तरण मैथिलीक पारम्परिक कविताक प्रति द्रोह नहि छल आ नहि पारम्परिक कविताक बन्न कपाट पर प्रहारक पहिल चोट छल। कविताक क्षितिज पर क्रान्तिकारी परिवर्तन आन कतेको आधुनिक भारतीय भाषाक कविता मे आरम्भ छल। मैथिली कविता परिवर्तनक एहि हवा सँ बाँचल नहि छल। बदलैत समयक संग ओकरो आत्मा आ शरीर नव हवाक स्पर्श सँ पुलकित छल। आ परम्परागत शैली सँ सर्वथा फूट मैथिली मे नवीन शिल्प-शैली आ भाव-बोधक कविता लिखा रहल छल। किसुनजीक कविता मैथिली मे लिखल जाइत नव शिल्प-शैलीक कविताक पातर धार मे वैयक्तिक जीवनानुभव सँ रस-ग्रहण क' ओहि मे मिज्झर हैब थिक, ओकरा व्यापक आ प्रखर करब थिक।

कोनो कवि मे अपना केँ बदलबाक अर्थात परिवर्तनक ई प्रक्रिया राता राती पूर्ण नहि भ' जाइत अछि। एहि लेल कवि केँ, अपना केँ, अपन विचार आ आस्था केँ निरन्तर तोड़' पड़ैत छनि। जत' ओ रहैत छथि ओहि मानस-लोक सँ, शब्द आ बिम्ब आ कथ्य सँ, समस्त दृश्य आ अन्तर्जगत सँ, ओकर घटना आ गति केँ देखबाक बद्धमूल धारणा सँ। आ कहब अनुचित नहि हैत जे पारम्परिक कविता लिखनिहार

किसुनजी अपना केँ परम्परित मैथिली कविता सँ तोड़ने रहथि—कविताक छन्द सँ, वाक्य-विन्याम आ शब्द सँ, राग-ताल-लय सँ, संस्कृत साहित्यक उपमा-उपमेय (जकर मैथिली कविता मे बाहुल्य छल) आ पठित अभिव्यक्ति आ अभ्यास सँ किसुनजी तकरा तोड़लनि। तें किसुनजीक 'शिशु सँ' शीर्षक छन्दबद्ध कविता जकर रचना-वर्ष 1945 थिक, सँ 'तथापि' शीर्षक छन्दमुक्त कविता, जकर रचना-वर्ष 1957 थिक, धरि आब' मे थोड़ समय नहि लगलनि। आ एहि लेल किसुनजी अपन सांवेदनिक विश्वास केँ थोड़ श्रमें परिपक्व आ दृढ़ नहि कयने होयताह। मुदा ताहि सँ बेसी ध्यान देबाक बात थिक जे कोनो कविक कविताक यथेष्ट अन्तर्आग्रह की थिक? आ ओ कवि अन्ततः चाहैत की छथि? एहि प्रसंग अंग्रेजीक प्रसिद्ध कवि आ आलोचक टी. एस. एलियट 'रेलिजन एण्ड लिटरेचर'क सम्बन्ध मे विचार करैत कहने छनि—'कवि लेल सभ सँ पैघ समस्या अपन भावना केँ व्यवस्थित करब होइत अछि। जेहन आस्था हुनका चाहियनि, ओहि लेल उपयुक्त बौद्धिक स्वीकृति तँ अबेर-सबेर भेटिये जाइत छनि।'

से, मैथिली मे लिखल जाइत नवीन शिल्प-शैलीक कविताक धार मे किसुनजीक मिज्झर हैब आरम्भ मे कोनो पैघ घटना आ स्वर तँ नहि लागल, मुदा किसुनजी अपन तीव्र जीवन-तापक बल पर, अपन भावना केँ एहि रूपें अनुशासित क' नव प्रवाह मे मिज्झर भ' गेलाह, जे कालान्तर मे यात्री वा राजकमलक नहि मात्र समानान्तर बूझल जाय लगलाह, अपितु 'नव'क बेरि-बेरि उद्घोषित आग्रह आ विश्लेषणक कारणें नव कविताक वस्तुतः प्रवर्त्तक भ' गेलाह।

किसुनजी मैथिली कविताक प्रवाहक बीच रहि, प्रवाह केँ उत्प्रेरित करैत नव कविताक प्रवक्ताक रूप मे जे समक्ष अबैत छथि, तकर कारण थिक जे जखन मैथिली कविता मे यात्रीजीक मार्क्सवादी विचार आ राजकमल चौधरीक मुख्य रूप सँ फ्रायडीय अनुचिन्तनक आवाहन पराकाष्ठा पर छल, किसुनजी मैथिली कविता केँ शुद्ध भारतीय कविताक रूप मे विकसित आ आरोपित करबा पर तत्परतापूर्वक लागल छलाह। तें हुनक कविताक मूल-स्वर एक टा मनुक्खक सामयिक-भोग आ विसंगतिक संग अनका सँ फूट-प्रेम, स्वतंत्रता आ जीवन छल।

यात्रीजीक कविताक मूल-धारा राजनीतिक-चेतना छल आ राजकमल चौधरीक मनुक्खक काम-लिप्सा। जन साधारण धरि पहुँचबा मे बहुतरास फड़िच्छ बाट मे सँ अपना-अपना तरहक ई दुनू अवश्य एक टा बाट छल, संपूर्ण रस्ता नहि छल। किसुनजी जन साधारण केँ संपूर्णता मे छूबाक क्रम मे ओकर सांस्कृतिक मिथक केँ सेहो छूबाक प्रयास कयलनि, जकरा केंद्र मे एक टा मनुक्खक पारिवेशिक भोग आ सार्वजनिक संकटक चिंता अछि :

आबि रहलै बाढ़ि; अछि उद्दाम कोशिक धार
बचि सकत नहि एहि सँ
डिहबार बाबा केर उँचका थान
वा कि गहवर सलहेसक
आ रामदासक अखरहा
वा डीह राजा साहेबक

मानल जाइत अछि जे आधुनिक हैब बदलैत परिस्थिति आ समय केँ साकांक्ष भ' चीन्हब थिक, ओकर पूर्ण तटस्थ भ' पर्यवेक्षण करब थिक, ओहि स्थिति केँ भोगब थिक। वा ओहि नव स्थिति भोग सँ रस-ग्रहण क' एक तरहें संस्कारी हैब थिक। संस्कार ग्रहणक एहि तीव्र अनुक्रिया मे किसुनजी अपन कविता मे मनुक्खक दैनिक जीवनक जटिलता आ फिरीशानीक रेखांकन अद्भुत सहजता संग कयलनि अछि, जे नहि मात्र जीवन्त लगैत अछि, अपितु जीवन-सत्य थिक। किसुनजी अपन गौरवशाली सांस्कृतिक-साहित्यिक मिथक माध्यमे एक टा नोकरी-पेशा पुरुषक दाम्पत्य जीवनक खीन होइत समय-सुख केँ आ हुनक आत्मपीड़न केँ एतेक कुशलता सँ अभिव्यक्ति देलनि अछि, जे देखबा योग्य थिक। आजुक मैथिली कविता मे कविलोकनि जत' अपन कथ्य केँ यथासंभव अभिव्यक्ति देबा लेल पाश्चात्य साहित्यक पात्रसभ केँ —'मेकबेथ' आ 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस'क पात्रसभ केँ अपना कविता मे नि:संकोच स्वीकारैत देखबा मे अबैत छथि, ओतहि किसुनजी सँ सिखबाक थिक जे ओ कोना संपूर्ण रूप सँ नहि मात्र अपन पौराणिक सांस्कृतिक पात्रसभक माध्यम सँ अपन कथ्य केँ सहज अभिव्यक्ति दैत छथि, अपितु मैथिली नव कविता केँ भारतीय कविताक गौरवशाली परंपरा सँ अविछिन्न सेहो करैत छथि—

सहि-सहि क' जीवन-अभिमन्यु लेल पराभूत
इच्छाक उत्तरा विधवा भ' गेलि
आ भविष्यक परीक्षित गर्भस्थ औना रहल
दु:शासन-जीविकाक हाथें सखि दौपदीक
चीर जकाँ, विरहक दिन बढ़ले अछि जा रहल

किसुनजी जखन मैथिली कविताक क्षितिज मे अनुभवक नव-नव जीवन-रंग घोरबा मे लागल छलाह, भारतीय राजनैतिक पटल पर, सचेत जनताक मानसपटल पर नेहरूवाद अपन उत्कर्ष पर छल। नेहरूवाद गांधीजीक संघर्ष नीतिक प्रतिफल आ विस्तार छल। गांधीजीक संघर्ष-नीति जे अंग्रेज प्रशासन आ गुलामीक विरुद्ध छल, मात्र भारतीय द्वारा भारतीय लेल अर्जित स्वतंत्रता आ संघर्ष पर बल दैत छल, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आ प्रासंगिक छल। कारण, ओहि मे भारतीय सपना, संगठन

आ आस्थाक विकास छल। तें भारतक स्वतंत्रता लेल गांधीवाद महत्त्वपूर्ण छल। भारतक स्वतंत्रताक बाद गांधीजीक विचार-क्षितिज केँ अपेक्षित व्यापक करैत नेहरूवादक मानब रहैक जे विश्व-परिदृश्य मे जे किछु नव आ नीक अछि, भारतीयताक समुचित विकास लेल तकरा ग्रहण करक अछि। जकर स्पष्ट अर्थ छल जे जे किछु अपनो जर्जर आ अधलाह अछि, तकरा त्यागक अछि। भारतीय जन-मानसक विचार सरणि पर सजग कवि किसुनजी नहि मात्र कविता लेल कतहु-ने-कतहु छन्द केँ त्यागने रहथि, नव शिल्प आ बोधक कविता केँ स्वीकारने रहथि, अपितु नवताक आग्रही किसुनजी अपना कविता मे निधोख भ' प्रचुर अंग्रेजी शब्दसभ (ओकर भारतीयकरण सेहो) क व्यवहार कयने छथि। जेना—'डब्लू. टी.', 'वेलफेयर', 'आलवेज फुल माइन्ड', 'एप्रोच', 'अन्तिमेत्थम्' इत्यादि, जे काव्य-भाषा केँ नव स्फूर्ति दैत अछि।

किसुनजीक कविता मे भारतक ओहि राजनैतिक स्वतंत्रताक प्रति हर्ष अछि, जे एहि ठामक जनता संघर्षक बल पर पओने रहय—

उर-उर मे अछि नव स्फूर्ति आ
नव विश्वास, भावना नूतन
प्राप्त भेल अछि आइ पुन:
हमरा स्वतंत्र तन, मन ओ जीवन

मुदा किसुनजी केँ स्वतंत्रताक बाद लागल रहनि जे जन साधारणक समुचित विकास लेल भेटल स्वतंत्रता पूर्ण स्वतंत्रता नहि छल। कविक दृष्टि मे से तखनहि सम्भव छल जखन भाषा आ सांस्कृतिक क्षेत्रक आधार पर जनताक सांस्कृतिक सम्पदाक रक्षा आ विकास लेल, नागरिक केँ आर्थिक-राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त होनि। आ ताहि लेल कवि अपन मातृभूमिक 'आह्वान' करैत छथि। कारण, जे स्वतंत्रता एहिठामक जनता कष्ट आ संघर्ष सँ अर्जित कयलक, से भाइ-भातिजवाद मे बदलि गेल। आ जन सामान्य सम्भावित लाभ सँ वंचित रहि गेल। सभ केँ रोजगार देबाक जे सब्जबाग देखाओल गेल छल, गणतंत्रक जे ढोल बजाओल गेल छल, से कवि केँ छल बुझयलनि। एहि व्यवस्था मे एक टा बेरोजगारक दुश्चिन्ता केँ कवि आत्मभोगक रूप मे कहैत छथि :

हम नहि छी भातिज, भागिन, सरबेटा ककरो
जकरा बल सँ गणतंत्रक युग मे
पबैत अछि लोक नोकरी

मुदा किसुनजीक ओ कविता थोड़ महत्त्वपूर्ण नहि अछि, जाहि मे प्रकृति अपन सम्पूर्ण उद्दीपन संग उपस्थित अछि। आ परिवर्तनक ओहि घटना-सत्य केँ प्रकट करैत

अछि, जाहि मे परिवर्तन सँ पूर्व परिवर्तनक स्वर-संकेत अनुगुँजित होइत अछि :
सरिपहुँ अलि आबि गेल भरिसक वसंत/बाजि उठल गाछी मे कोकिल ई बात

मुदा किसुनजीक सम्पूर्ण कविताक सुस्पष्ट अन्तर्धारा आ दिशा नवताक आमंत्रण आ प्रबल स्थापना थिक। एहि लेल हुनका अतीत बाधक बूझि पड़त छनि- 'हमरालोकनि बान्हल छी/ हमरासभ केँ अतीत 'हरी' मे ठोकने अछि।' आ जीर्णक नष्ट होयबा सँ किसुनजी संतुष्टिक अनुभव करैत छथि —'झर' लागल पीतवर्ण / पुरनासभ बात।' कारण हुनका विश्वास छनि—'पुरानक बाद अबैत अछि नव मंगल रूप।'

आ किसुनजीक यैह ओ आग्रह आ दृष्टि-सम्पन्नता थिक जे किसुनजी केँ अपन पीढ़ी मे नहि मात्र आन कविलोकनि सँ विशिष्ट बनबैत अछि, अपितु मैथिली कविताक समय आ सत्य केँ दिग्भ्रमित होयबा सँ बचबैत अछि।

किसुनजी अपना कविता मे नव आग्रह आ स्थापना लेल सामाजिक इकाइ मनुक्ख केँ अनिवार्य मानैत छथि। हुनका मनुक्खक प्रति दृढ़ आस्था छनि आ ओकर अदम्य जिजीविषाक प्रति अद्भुत विश्वास। हुनका कविता मे मनुक्खक मृत्यु अथवा पराजय लेल कतहु कोनो स्थान नहि अछि :

जिनगीक आगि मे मृत्यु जरि गेल
के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?

किसुनजीक मनुक्ख संकटक प्रत्येक मोर्चा लेल, अपना दीपित आस्थाक बल पर लड़बा लेल प्रस्तुत अछि। किसुनजीक नजरि मे मनुक्ख जड़ नहि अछि। ओकरा मे लड़बाक आ नव स्थापनाक अद्भुत क्षमता आ बल अछि। आ किसुनजीक कविता मे मनुक्खक प्रति यैह अपराजेयता आ विश्वास मैथिली कविता केँ कथ्यक स्तर पर एक टा स्वरूप ठाढ़ करबा मे हुनक प्रासंगिकता आ अनिवार्यता केँ प्रकट करैत अछि, हुनका महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

कवि किसुन : कविताक समकालीनता

तारानंद वियोगी

कवि किसुनक कविता वस्तुतः शांत-सुस्थिर जलतल पर उठल झुटकीक किछु गंभीर कंपन थिक जे अपन उद्गमस्थल सँ बहरा निरंतर बढ़ैत आ छितराइत जाइत अछि। एहि कंपनक कतेको स्वरूप छैक—कतेको स्वर जे कि जलतल जकाँ कवि-हृदयक विशालता आ सर्वांगीणता केँ इंगित करैछ।

कवि किसुनक कतोक कविता नव आ पुरान शैलीक कड़ी (लिंक) आ कतोक विशुद्ध नव कविता स्वीकारल गेल अछि, जे औचित्यपूर्ण कहल जयबाक चाही। ई तँ नियति थिक जे आगाँ बढ़'वला प्रत्येक व्यक्ति केँ पहिने पुरान बाट पर चलैत ओकरा नांघ' पड़ैत छैक। से किसुन जी कयलनि। तखन, विभिन्न आलोचकक विचार केँ दृष्टिपथ पर राखि जँ सोचल जाय तँ किछु तर्क भ्रामक सेहो बुझना जाइछ।

डॉ. राधाकृष्ण चौधरी अपन शोधपूर्ण ग्रंथ 'ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर' मे किसुनक प्रति जे विचार रखलनि अछि, से देखी। ओ अपन ग्रंथ मे लिखैत छथि— 'किसुन जी वाज ए लिंक बिटविन दि ओल्ड एण्ड दी न्यू एण्ड हि एक्टेज एज ए ब्रिज।' एत' एक गोट बात घोर अतिवादी बुझना जाइछ। सोचबाक ई अछि जे किसुन जीक संपूर्ण कविता साहित्य की मात्र 'ओल्ड' आ 'न्यू' केर 'लिंक' मात्र थिक? की ओहि मे सँ एक्को टा कविता संपूर्णतः 'न्यू' नहि छैक? ई तँ जरूर अछि जे हुनक प्रारंभिक कविता 'ओल्ड' सँ 'न्यू' दिसका यात्रा तय कयलक अछि। हँ... जँ हुनक व्यक्तित्व पर लेखक ई बात लिखने होथि तखन तँ उचित भैयो सकैत छल। किसुनक व्यक्तित्व (कृतित्व नहि) तँ संपूर्णतः 'ओल्ड' आ 'न्यू' केर 'लिंक' छल। मुदा लेखक केँ लिटरेचरक 'सर्वे' करब अभीष्ट छनि, कविविशेषक व्यक्तित्व मात्रेक नहि। किसुनक प्रारंभिक कविता सभक मादे निस्संदेह ई तर्क उचित अछि मुदा, एहि मे सर्वांगीणता नहि छैक, से मान' पड़त।

किसुनक उत्तरवर्त्ती नव कविता-साहित्य निश्चय नव कविताक शुद्ध आ

परिष्कृत रूप अछि आ समकालीन कविताक आधार-शिला।

किसुन जीक अधिकांश कविता महत्त्वपूर्ण अछि। ओत' कविमानसक निरपेक्ष (एब्सोल्यूट) होयबाक कोनो सवाले नहि। कवि अपन चारूकातक वातावरणक प्रति नितांत सजग अछि, कविक ई सजगता कविता केँ 'नव'त्व प्रदान करैछ जत' ई कहल जाइछ जे कवि मे आ ओकर कविता मे कोनो वास्तविक अंतर नहि। मानव मात्रक प्रति सापेक्षता, जे कि आजुक कविताक मुख्य स्वर थिक—निस्संदेह किसुन जीक काव्य मे पदे-पदे व्याप्त अछि—

एक एक शब्द
अर्थ
एक एक अक्षर
रुदन हास्य गान केर
एक एक स्वर
समाज आ कि व्यक्ति
खाहे ओ अस्वीकृति
खाहे स्वीकार
बनि गेल सार्वजनीन
विश्वक सम्पत्ति
जिनगीक आगि मे
मृत्यु जरि गेल
के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?

समकालीन कविता मे जाहि कुंठा, निराशा आ विसंगतिक स्वर उठाओल जा रहल अछि, तकर प्रारंभ मे निश्चय किसुन जीक योगदान छनि। किसुन जी आ हुनक समकालीन आधुनिक अनेक कविलोकनि कविता केँ जे रेशमी परिधान (आधुनिक निवस्त्र) देलनि, से की आइयो नहि अछि? किसुन जीक (कोसीक बाढ़ि) क पाँती—

'ऊँच-ऊँच जतेक अछि/सभ नीच बनि जेतैक। नीच अछि खत्ता कि डाबर/भरत सभ टा/ऊँच ओ बनि जैत/हैत सब टा एकरंग समभूमि/ऊँच नीचक भेद नहि किन्नहु रहत-जे ऊँच अछि, पहिने कटनिया मे कटत आ नीचे सभ केँ, ऊँच होमक सुलभ भ' जेतै सहज अधिकार।'

आधुनिकताक गुलाबी रंग मे रंगल किसुनक कविता जत' एक दिस राजकमलक 'स्वप्न-कविता' जकाँ रूप धरैत अछि, ओतहि अन्यत्र यात्रीक 'प्रगतिवाद'क सेहो कर्णधार बुझाइत अछि।

रमानाथ बाबू किसुन जीक कविता केँ जत' एक दिस सांगीतिक (म्यूजिकल) आवरण पर बौद्धिक आ भावजन्य अभिव्यक्ति कहलनि अछि, ओतहि हिनक कविताक मूल स्वर कुंठा आ अनास्था केँ स्वीकारलनि अछि। उपर्युक्त तर्क पर किनकहु आपत्ति नहि भ' सकैत छनि।

कवि श्री कीर्त्तिनारायण मिश्र सेहो किसुनक कविता केँ 'आधुनिकताक परिप्रेक्ष्य मे कतिपय नवीन काव्यतत्त्व सँ संयुक्त नव कविताक विकसित रूप' स्वीकारलनि अछि, सेहो अनर्गल नहि।

कैक बेर हमरा लगैत अछि जे किसुनक कविता संकुल (काम्प्लेक्स) आ सघन (कम्पेक्ट) मानवीयताक कैक गोट भिन्न-भिन्न चित्र थिक, जे कखनो तँ सर्पाकार कुंडलि मारि क' अनास्थाक चरण केँ फुँकारि दैत अछि आ कखनो सिंह जकाँ गरजि क' परंपराक सियार केँ मैदान छोड़ि भागि जयबा लेल बाध्य कर' लगैत अछि। किसुनक प्रारंभिक कविता सभ मे विरोधाभास अछि अवश्य, मुदा जँ-जँ ओ बढ़ैत गेलाह अछि, हुनक अंतरक कवि संदेह आ विरोधाभास केँ मेटौने चल गेल अछि।

नव कविताक संप्रेषणीयता पर किछु गोटे द्वारा जे आरोप लगाओल जाइत छैक आ तकरा समाधानक लेल आ कविता-साहित्य मे स्थानीयतावादक (लोकलिज्म) जे आंदोलन चलि रहलैक अछि, तकर प्रारंभिक व्याख्याता यात्री जीक पश्चात प्रायः किसुने जी छथि। किसुन जीक नवतावादक प्रति अव्यक्त अप्रतिम स्नेह आइ प्रत्येक नवकवि लेल अनुकार्य थिक।

मिथिला मिहिर : 7 जून 1981

मध्यवर्गीय व्यामोह सँ टकराइत कविता

गौरीनाथ

सभ काल मे समसामयिक संदर्भ सँ कविताक जुड़ाव रहल अछि। भने शाश्वत-सिद्धिक परम्परा मे कविताक अपन एक टा अलग इतिहास रहल अछि आ कालातीत सेहो भेल अछि। मुदा, वर्तमान सँ मुठभेड़ कविता आ आलोचना दुनूक प्रणेता करैत रहलाह अछि। एखन कविता अपना समय सँ सीधा साक्षात्कार करैत वर्तमान मे जे घटित भ' रहल अछि, ओहि सँ टकराइत अछि। एहि सँ बिंब बदलल अछि, कथ्य केर महत्त्व बढ़ल अछि आ तें कविता समकालीनताक संग सोद्देश्यता प्राप्त क' रहल अछि। मुदा, चिंताक गप्प जे एखन धरि मैथिली मे दृष्टिसम्पन्न आलोचना तेना विकसित नहि भ' सकल अछि। एखन जे आलोचना लिखा रहल अछि, तकर बहुलांश ने तँ छात्रोपयोगी अछि आ ने प्रबुद्ध पाठकोपयोगी। मैथिली आलोचनाक कोनो स्वरूप आ सिद्धांत हमरा एखन धरि बुझबा मे नहि आयल अछि। ई हमर अल्पज्ञता भ' सेहो सकैत अछि।

किसुनजीक कविता पर एक साधारण पाठकक रूप मे विनम्रतापूर्वक किछु बात करबा सँ पूर्व किसुनजीक समय मे देशक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य आ ओहि समयक मैथिली कविताक प्रवृत्ति पर एक नजरि देब हमरा आवश्यक बुझना जाइछ।

किसुनजीक प्राय: अधिकांश कविता 1960 सँ 70क बीचक लिखल गेल अछि। एकर अतिरिक्त 'क्रमश:' (किसुन रचनावली, कविता खण्ड) क अनुसार 1960 सँ पूर्वक 45, 50, 57 आ 58 मे प्रकाशित एक-एक (कुल चारि गोट) कविता अछि। मोटामोटी राजनीतिक आजादीक बाद सँ 70 धरिक कांग्रेसी जनतंत्रक शासन काल, किसुनजीक काव्य-रचना-काल रहल अछि। एहि कालक परिचय स्वयं कवि एहि तरहें देने छथि—'स्वातंत्र्य-संग्रामक समय मे लोक केँ जे एक टा 'सब्ज-बाग' देखाओल गेल छलैक, जन-मानस मे भविष्यक सम्भावना मे जे स्वरूपोन्मेष भेल छलैक, से सब अप्रत्याशित रूपें समाप्त भ' गेलैक।... स्वतंत्रताक संगहि देशक

विभाजन, रक्तपात आ हिंसाक धमगज्जर नग्न-नृत्य तथा जातीयता, प्रांतीयता, साम्प्रदायिकता आदिक अ'ढ़ मे एकठाम सत्ता आ पूँजीक केन्द्रीकरण भेला सँ धनिक औरो बेसी धनिक आ गरीब औरो बेसी गरीब होइत गेल। भयंकर महँगी, दमतोड़ मूल्यवृद्धि आ आन देशक भीख पर आश्रित रहबाक विवशता एहि देशक लोक केँ युद्धक विभीषिकाक अपेक्षा अधिक कष्टकर भेलैक अछि। सार्वभौम-सत्तासम्पन्न-लोकतंत्रात्मक गणराज्यक (एहने आकर्षक आ ललितगर शब्द सँ अलंकृत) एहि देश मे पंचवर्षीय योजनाक जे मोह-जाल पसारल गेल, तकर पारिणामक अनुशीलन स्पष्ट करैछ जे ओकर यत्किंचितो लाभ भाइ-भतीजावादक मुनहर मे अटकि गेल आ समाजक अधिकाधिक व्यक्ति यथास्थितिक व्यामोह मे कुहरि रहल अछि; एखनो ओकर रोजी-रोटीक समस्या ओहने भयंकर अछि।'

एहि क्रूर समय मे तत्कालीन मैथिली कविताक परिदृश्य पर हस्तक्षेप (प्रतिपक्षीक रूप मे) कर' बला कवि मे पहिल यात्रीजी छलाह। मैथिली कविताक जे पुरान-परम्परा नमरल चलि आबि रहल छल, तै सँ अलग हटि यात्रीजी सामान्य जन-जीवनक शोषणक विरुद्ध संघर्षक नवीन स्वर देलनि। कविता केँ जमीन आ जन सँ जोड़लनि। मुदा, पुरना-परम्परा सँ जुड़ल भाववादी, कलावादी आ रूमानी कविताक दौर समाप्त नहि भेल छल। कविता मे भिन्न-भिन्न अर्थ मे विभिन्न रूपक शब्द-क्रीड़ा आ रूपवादक कलाकारिता चलिये रहल छल। एतबे नहि, ओकर प्रासंगिकता आ ओहि पर उत्पन्न समसामयिकताक खतरा पर गोष्ठी सेमिनार मे चिन्ता व्यक्त क' मुर्दा मे प्राण फुकबाक प्रयत्न लगातार कयल जाइत छल। कुल मिलाक' मैथिली कविताक ई संक्रमण काल छल।

एहने समय मे पं. रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिली काव्य लेखन मे उभरैत छथि। मुदा, यात्रीजी जकाँ तेहन नव तेवरक संग सहसा आगाँ नहि अयलाह—वैयक्तिक, मानवतावादी आ राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-परम्परा सँ संपृक्त भ' हिन्दीक छायावादोत्तर काव्य-धाराक तर्ज पर किसुनजी कविता लिखब प्रारम्भ कयलनि जे भाषा आ संस्कार दुनू तरहें सुमन-मधुपक संस्कृत-परम्पराक निर्वाह एक सीमा धरि करैत अछि। प्रारम्भिक दौर मे लिखल किसुनजीक अधिकांश कविता एही कोटि मे अबैत अछि।

राष्ट्रीयताक भावना सँ ओतप्रोत कविता सभ मे 'स्वातंत्र्य-गीत', 'जागरणगीत', 'उद्घोष', 'आह्वान' आ 'ओहि सपूतक करय आरती' प्रमुख अछि जाहि मे स्तुति, जागृति आ ललकार केर भाव उभरैत अछि। 'स्वातंत्र्य गीत' मे कविक हृदयक उत्साह आ प्रसन्नता छलकि क' शिवाजी, महाराणा प्रताप सँ ल' गांधी, नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, बल्लभ भाई पटेल आदिक गौरव गाथा सुनबैत अछि आ नव जनतंत्रक तथा

राजनीतिक स्वतंत्रताक अभिनन्दन करैत अछि—

आउ करी हम भारतीय स्वातंत्र्यक
सब अभिनन्दन शत-शत
सब विधि सभ भय जाइ अपन
देशक पुनि चिर अभ्युन्नति मे रत
आइ हमर अछि मस्तक उन्नत

(स्वातंत्र्य-गीत)

एहि तरहक कविता नइँ मात्र गांधीवादक बल्कि तत्कालीन सत्ताक समर्थन सेहो करैत अछि। जवाहरलाल नेहरूक प्रति 'श्रद्धाञ्जलि' मे जे अतिशयोक्ति आ भावनात्मक प्रवाह अभिव्यक्त भेल अछि; ई कविक एहि विचार केँ पुष्ट करैत अछि—

ओ गणतंत्रक अध्वर्यु विश्वशान्तिक गायक
ओ मानवताक स्वरूप भारतक कर्णधार
गांधीवादक भास्वर तेजोमय शुभ प्रतीक
ओ जन-गण-मन सम्राट, महामानव, उदार

(श्रद्धांजलि)

कांग्रेसी जनतंत्र आ ओकर सत्ताक सूत्रधारक प्रति कविक ई उद्‌गार कवि केँ पूँजीवादी सत्ताक विरुद्ध सहजे नहि जा दैत छनि। हँ, हुनक सजग दृष्टि एकर संधान मे जरूर लागल रहैत अछि।

शुरुआती दौरक लिखल किसुनजीक शृंगार आ प्रेम विषयक दर्जनाधिक कविता आधुनिक संदर्भक संग विद्यापति-परम्पराक विकास मे योग दैत अछि। एहि तरहक कविता सभ मे फूल-पात, भ्रमर-कोकिल, मधु-मकरन्द, यौवन-रस-धार, मधुर अधर, स्निग्ध गाल, कामातुर रोमांचित देह, प्रणय-प्यास आदिक प्रयोग सँ सहजहिं कविता रूमानी भ' गेल अछि। 'सुधि-सागर मे', 'सब अहींक थिक', 'एक राति : एक गीत', 'असम्भाव्य', 'वसंत-गान', 'उमड़ि रहल मेघ-छन्द', 'आबि गेल छथि पाहुन नवल वसंत', 'अयला नहि जीवन-सिंगार', 'गीत', 'बरिसातक भोर, साँझ, राति' आदि कविताक लक्षित-व्यंजित-भाव दैहिक-सुखक वर्णन धरि सीमित रहितहुँ उदार जीवन-दृष्टिक परिचय दैत अछि। कवि लिखैत छथि जे बरिसातक भोर, साँझ आ राति तीनू काल प्रणय-इच्छा जगैत अछि, 'आमक कल किसलय मे कोइलीक' कूकि पर 'मंजरीक कोबर मे यौवनक मधुर रस धार बरसय लगैछ', बादल केँ उमड़ैत देखि देह रोमांचित भ' जाइत अछि आ 'प्रणय-तरु' खिलि जाइत अछि, वसंतागमन पर प्रकृतिक समस्त अपादान देह सोहरेबा मे व्यस्त भ' जाइत अछि आ जाड़ तथा ग्रीष्मक राति प्रियतमाक वियोग मे जल बिनु मछली जकाँ तपैत आ

पछिला प्रणय-स्नेहक स्मरण करैत बीतैत अछि—एहि सुकुमार मनोभाव केँ चित्रित करैत कवि किसुनजी किछु अभिनव शब्द सभक प्रयोग कयलनि अछि। जीवन-राग सँ भरल हिनक शृंगार-प्रेम विषयक किछु कविताक पाँति देखल जा सकैछ—

कलिक अनावृत्त यौवन पर अछि अलिकुल भेल बेहाल
सरस-समीर सुरभि सँ उन्मद भेल द' रहल ताल
संकेतें शिर हिला-हिलाक' फदकय गाछक पात
पवन पसारय नहुँ-नहुँ मन मे प्रणय-रहस्यक बात

(सुधि-सागर मे)

आँखि मूनि छी पड़ल सेज पर
कछमछ करइछ देह
मोन पड़ल अछि जनि
अहँक पछिला सब प्रणय-सिनेह

(एक राति : एक गीत)

सिहरि उठल रोम-रोम पाबि मधुर स्पर्श
जन-मन मे गूँजि उठल मधुपक नव हर्ष
अनाहूत प्रणय-प्यास जागल अनन्त
सरिपहुँ अलि, आबि गेल भरिसक वसंत

(वसंत-गान)

आमक मंजर गंधें संकुल
सुमन-सुमन पर अलिगण आकुल
रोमांचित तन मदनें व्याकुल
खन उन्मन खन मगन-मगन मन
प्रकृति-प्रियाक देखि आलिंगन
नयन-नयन मे उमड़ल अछि
यौवन-रस-धार अनन्त।

(आबि गेल छथि पाहुन नवल वसंत)

फूजल घन-कुन्तल अछि
जंगल मे मंगल अछि
कामातुर चंचलाक छन-छन रस रंगल अछि
बरिसय मधु-श्रावणीक मधु-रस मन माँझ
बरिसातक साँझ।

(बरिसातक भोर, साँझ, राति...)

समयान्तराल मे किसुनजी प्रयोगवादक रस्ता सँ धीरे-धीरे 'नव कविता' दिस

प्रवृत्त होइत गेलाह आ तकर प्रवक्ता सेहो भेलाह। एकर पाछाँ ओहि कालक सामाजिक राजनीतिक माहौल सँ उत्पन्न भयंकर जनाक्रोश आ ओहि जनाक्रोशक प्रतिफल स्वरूप हिन्दी कविता मे आयल वैचारिक परिवर्तन छल जकर प्रभाव मैथिली कविता पर सेहो पड़लै। यात्रीक अतिरिक्त नव सम्भावनाक तलाश करैत राजकमल चौधरी मानवीय जन-मूल्यक पड़ताल आ जन-मूल्यक संघर्ष लेल बाट बनैबाक बात कहैत छथि। राजकमलक कविता मे सामान्य-जनक संघर्ष आ पीड़ा नव सम्भावनाक पड़ताल करैत राजनीतिशास्त्र आ अर्थशास्त्र के पार करैत मनक गह्वर धरि पैसैत अछि। ओ वस्तु केँ नव रूप दैत अछि आ एहि नव वस्तु एवं एकर मूल्य केँ चिन्हबाक प्रयास करैत अछि। मैथिली कविताक एहि काल-खंड मे यात्री आ राजकमलक प्रभा-मंडल एतेक दीप्त छल जे स्वाभाविक रूपें हिनका लोकनिक स्पष्ट प्रभाव मैथिली कविता पर पड़ल। परवर्ती रचनाकारक पैघ समूह हिनका लोकनिक विचारक अनुगमन कयलनि। यात्री-राजकमलक समकालीन किसुनजी पर सेहो ई प्रभाव पड़ल। किसुनजी केँ पहिने सँ चलि अबैत परम्परागत संस्कारक निस्सारता बुझाय लागल छलनि आ देश-काल एवं अपना चारू कात पसरल सामाजिक समस्या सभ बेचैन कर' लगलनि। जकर प्रतिफल भेल नव कविता दिस किसुनजीक प्रवृत्त होयब। किसुनजीक एहि प्रवृत्ति पर प्रो. रमानाथ झाक कथन अछि—'ई एम्हर प्रयोगवादी वा नव कविताक रचना दिस विशेष प्रवृत्त भेल छथि। आओर युग-जीवनक कुण्ठा एवं अनास्थाक चित्रण कयने छथि। वैयक्तिक ओ नवीन बिम्ब तथा प्रतीक ग्रहण कय। 'स्मृति', 'चौरचनक चान' तथा 'नव वर्षक चारि प्रतिक्रिया' तेहने रचना थिक।'

मुदा, एहि वैचारिक विकास आ परिवर्तन-क्रम मे किसुनजीक कोनो निश्चित मंजिल भने तय नहि छल, मुदा हुनक झुकाव नव कविता दिस भेलनि। ई फराक जे नव कविताक कोनो इच्छित मंजिल स्पष्ट नहि छल, तें ओ सब कतहु पहुँचि नहि सकलाह। एहिठाम पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क प्रश्न विचारणीय अछि—'आरंभे सँ ई (किसुनजी) श्री यात्री सँ प्रभावित रहलाह। क्रमशः श्री यात्रीक साहित्यिक प्रभाव ओ विचार-धारा सेहो हिनका शिल्प केँ बिनु प्रभावित कयने नहि रहलनि, परन्तु एहिठाम एक टा विषय विचारणीय अछि जे आचार सँ भिन्न रहितहुँ कोनो विचार केँ क्यो पूर्णतः आत्मसात् क' सकैत अछि?' आ आगाँ एकर उत्तर सेहो अमरजी दैत छथि, 'विचार सँ अत्याधुनिक ओ प्रगतिशील होइतो श्री यात्री जकाँ आचारक दृष्टिएँ प्राचीनता अथवा बद्धमूल संस्कार सँ पिण्ड नहि छोड़ा सकलाह।'

यथार्थतः किसुनजी प्रारम्भ मे एक टा प्रबुद्ध कांग्रेसी विचारक लगैत छथि। जरैत खेत-खरिहान, भूख सँ बिलबिलाइत किसान-मजदूरक पसेनाक गंध आ तमतमाइत आँखिक लाली सँ किसुनजी अपरिचित नहि छलाह, मुदा शोषण आ बलात्कारक

पक्ष मे ठाढ़ जनतंत्रक षड्यन्त्र सँ अनभिज्ञ लगै छथि। गांधीवाद मे आस्था आ नेहरूक प्रति मोह छलनि। डॉ. राजेंद्र प्रसादक राष्ट्रवादी सोच सँ अनभिज्ञ जेना लगै छथि। तें तमाम वैचारिक परिवर्तनक बावजूद अन्ततः एक असंतुष्ट-सुधारवादी कांग्रेसी सँ बेसी प्रगतिशील नहि भ' सकलाह। फर्क अछि, तँ ईमानदारी मे। आ इएह 'फर्क' कवि किसुनजी केँ एक सामान्य कांग्रेसी सँ ऊपर उठबैत अछि। आ कविता मे ओ आ हुनक पीढ़ी नव डेग उठबै लेल प्रेरित होइत अछि। एत' देशक नाम आयल 'सैनिकक पत्र' मे कविक अनुरोध देखल जा सकैछ—

भरल रहय कारखाना, भरल रहय खान
भरल रहय घर-आंगन, खेत आ खरिहान
बनि जाय सब तरहें आत्मनिर्भर देश
करइ जाइ सब केओ मिलि यत्न ई विशेष

की यत्न कयल जाय? कोना कयल जाय? पहिने ई जनतंत्र आ व्यवस्था संदेहमुक्त अछि? एहि तरहक प्रश्न सँ कवि नहि जुझैत छथि वा ओहि समय धरि ई सवाल हुनका सभक कल्पने मे नहि अबैत छनि। एहि तरहक प्रश्न सँ टकराइत छथि राजकमल चौधरी—'हमरा सभ केँ आब शामिल नहि रहबाक अछि / एहि धरती सँ आदमी केँ सदाक लेल खत्म करक साजिश मे' आ एहि जनतंत्रक प्रति विरोध प्रकट करैत छथि। यातनाक विरुद्ध मुँह खोलबाक जे आवश्यकता हिन्दी कवि धूमिल कयलनि, ओहि दिस ई संकेत अछि। मुदा, किसुनजीक वैचारिक पहुँच तमाम असन्तुष्टिक बावजूद कांग्रेसक घोषणा पत्र सँ कनेके आगाँ बढ़ैत अछि। एकरे परिणाम थिक जे कवि व्यवस्था सँ विलग भ' प्रतिपक्ष मे नहि ठाढ़ भ' पबैत अछि।

एहि क्रम मे कविताक मादे किसुनजीक वक्तव्य केँ नजर-अंदाज नहि कयल जयबाक चाही। ओना किसुनजीक पहिल आग्रह छनि, 'कविता केँ कोनो आन्दोलन वा कवि-वक्तव्यक आधार पर नहि ओकरा कवितहिक आधार पर बुझबाक आग्रह अनुरोध हम करब।' मुदा, हुनका वक्तव्य सँ हुनक वैचारिकता केँ बुझबाक प्रयत्न क' रहल छी। हुनकर वक्तव्यक किछु पाँति द्रष्टव्य अछि—

'सत्य सँ बेसी आसक्ति अछि, तें असत्यहु केँ सत्य बनाक' लिखैत छी, ई हमर सहज प्रवृत्ति भ' गेल अछि।'

'हम व्यक्तिगत रूप सँ अपना केँ अभिव्यक्त करबाक सब सँ उत्तम एवं सुलभ कोटिक आ बेसी सशक्त 'माध्यम' कविता केँ बुझैत छी, तें कविता हमरा अपनो सन्तुष्टिक सर्वाधिक प्रिय साधन थिक।'

'देश बदलैत छैक, काल बदलैत छैक आ पात्र बदलैत रहैत छैक, तें दृष्टिबोध आ तें कविताक बहिरंगक संगहि बहुत दूर धरि अन्तरंगो बदलैत छैक।'

निश्चित रूप सँ किसुनजी परिवर्तनक गत्यात्मकता केँ स्वीकारैत छथि। ओ नव आ सार्थक के आग्रही सेहो छथि। मुदा, अन्ततः मध्यवर्गीय व्यामोह सँ टकराइत, लहुलूहान होइतो, मुक्त नहि भ' पबैत छथि आ 'अहूँ जीबू, हमरो जीब' दीय'क भावनाक पार नहि जा पबैत छथि।

नव कविताक नाम सँ ख्यात सामाजिक-राजनीतिक समस्या सँ सम्बद्ध किसुनजीक किछु प्रतिनिधि कविता पर अलग सँ विचार कयल जयबाक अनिवार्यता बुझाइत अछि। एहि कोटिक कविता मे प्रमुख अछि—'कोसीक बाढ़ि', 'खुटेसल', 'अनुत्तरित', 'जय-लिप्सा', 'एक टा सामयिक कविता', 'एक टा प्रत्याख्यान', 'निर्वासित अपने देश मे', 'आत्मकथ्य', 'आवृत्ति आवृत्ति', 'एक टा भावुक क्षण आ एक टा यथार्थ', 'प्रतिवादक स्वर', 'पीढ़ीक शीतयुद्ध', 'आजुक उत्तर', 'आक्रामक स्वर', 'खिस्सा-पिहानी' आदि। एहि मे 'कोसीक बाढ़ि' केँ अपवाद छोड़ि (जे 60 मे प्रकाशित भेल अछि) शेष कविता प्रायः 68क बादक अछि। एहि सँ एक स्पष्ट वैचारिक परिवर्तनक रेखा खिचायल अछि। ई कविता जीवन आ जमीन सँ, अपन समय-समाज आ ओकर समस्या सभ सँ जुड़बाक दिस अग्रसर भेल अछि आ तें बेसी महत्त्वपूर्ण सेहो भेल अछि।

'कोसीक बाढ़ि' कविताक बहुत रास आलोचक 'क्रांतिकारी' कविताक रूप मे मूल्यांकन कयलनि अछि। यथार्थ रूप मे ई साम्यवादी विचारक निकट पहुँचैत अछि—'हैत सब टा एक रंग समभूमि / ऊँच-नीचक भेद नहि किन्नहु रहत / जे ऊँच अछि / पहिने कटनियाँ मे कटत / आ नीच सभ केँ / ऊँच होमक / सुलभ भ' जयतै सहज अधिकार।' मुदा, एहि बातक सोझरायल सूत्र नहि भेटैत अछि जे कोना सुलभ भ' जयतै सहज अधिकार? एहि लेल कोनो जन-संघर्ष आकि जन-क्रांतिक संकेत नहि अछि।'आबि रहलै बाढ़ि; अछि उद्दाम कोशिक धार।' माने प्रकृति जे करय। मनुष्यक शक्ति सँ बेसी प्रकृति पर भरोस छनि।'ड्योढ़ी, हवेली, अस्तबल' हथिसार / बाभनक घर हो / कि डोम दुसाध गोंढिक तुच्छ खोपड़ि / पानि सब केँ क' देतै एक टार / आबि रहलै बाढ़ि, अछि उद्दाम कोशिक धार' मे एक टा उम्मेदक संग कवि-आकांक्षा निश्चये सोझाँ अबैत अछि। भने एकरा कविक प्रकृतिवादी रुझान मानल जाय, मुदा जनताक मुक्तिक प्रश्न कविक भीतर प्रमुख स्थान बना लेने अछि।

रूढ़िग्रस्त पुरना परम्परा जे कोकनि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि आ जकर मूल्य किछु नहि रहि गेल अछि—सड़ल-गलल आदर्शक विकृत रूप मे जे हमरा सामने कूड़ाक ढेर जकाँ अछि; तकर विरोध करैत कवि 'परम्पराक जंगल तोड़ि / नवका फसिल केँ पटबैत' अछि आ नव-स्वरक स्वागत मे ठाढ़ होइत अछि। 'विश्लेषण' आ 'अ-विरोध' शीर्षक कविता सँ निःसृत कविक ई विचार अलग

महत्त्व रखैत अछि। एहि तरहक विचार केँ पल्लवित करैत प्रायः दर्जन भरि उल्लेखनीय कवितासभ कवि किसुनजी लिखलनि अछि। ई कविता सब कविक पहिचान आ महत्त्वक शिलालेख जकाँ सब दिन स्मरण कयल जायत। एहि क्रम मे हिनक किछु कविताक पाँति द्रष्टव्य अछि—

रूढ़िग्रस्त दुरभिसंधिक / मुइल मूल्यवान
कोकनल घुनलग्गू छै पुरना प्रमाण
युग तँ कइये रहल / नव मूल्यक अनुसन्धान।

(विश्लेषण)

एतेकरास फालतू शब्द
जकरा सभक अर्थ
कोनो घसल-टूटल शिलालेख जकाँ अस्पष्ट अछि
हमरा ओ शब्दकोश नहि दिय'

(आवृत्ति... आवृत्ति)

यथास्थितिक आग्रही दैत्य सभक लेल
लिय' जागि गेल / शेष शय्या सँ क्रोधोत्थित
सृजनैषी मधुसूदन
... ...
उदयाचलक शिखर पर
नव-काव्य-स्वर
... ...
अतीत केँ देल गेल
आलोकित, ऊर्जस्वल, आजुक उत्तर।

(आजुक उत्तर)

उपर्युक्त भाव केँ पुष्ट करैत 'खिस्सा-पिहानी' मे कवि परम्परा रूपी एक उखड़ि गेल गाछक कथा कहैत छथि। ई गाछ अतिवृद्ध, जर्जर छल। डारि सभ मे कठपिल्लु, घोड़न लुधकल छल आ टुस्सी सभ मे बाँझी आ कोंकराहा। जे अपना छाहरि मे दोसरा केँ बढ़' नहि देब' चाहैत छल आ गामक बैसाख नहाबय बाली सभ जकरा जड़ि मे पानि ढारि अपन मनकामना रखैत छलि। ओहि गाछक विरोध मे कवि किसुनजी कहैत छथि—

नवका छौंड़ा सम ढेलमौस चलबैत छल
कोनो फुनगी केँ निशाना बनबैत छल
वृद्ध जरद्गव केँ कनबैत छल

उखड़ि गेल पुरना से गाछ / बिहाड़िये छल जोरगर
उखड़ल अछि तइयो जड़ि छैक लगले
तें पारू कोदारि / खूनि दियौक चकरगर कें चौर
चलाउ कुड़हरि / काटू एकर मुसरा
जे हँटय ई ढेंग / जमीन हो साफ
पुरना कें आब कहू के करतैक माफ?

(खिस्सा-पिहानी)

सक्रिय राजनीतिक मादे कविक भीतर कतहु द्वन्द्व अछि, कतहु उलझाव, कतहु स्पष्ट रूप सँ भागीदारी, तँ कतहु स्पष्ट विरोध। ई द्वंद्व आ ओहि सँ संघर्ष कविक स्वाभाविक विकास क्रम देखबैत अछि। 'आत्मकथ्य' मे सूति क' उठिते शपथ खयलाक बावजूद कविवर साँझ होइते सभ टा बिसरि क' अपन निर्णय कें मारि दैत छथि आ 'जुलूसक अबिते / चुपचाप कुरता पहीरि / चप्पल सरियबैत / भीड़ मे मिझरा गेलहुँ' लिखैत छथि, तँ हमरा सभ कें उत्साह होइत अछि आ ई उत्साह 'प्रतिवादक स्वर' मे जखन कवि कहैत छथि 'हम नहि होम' देब / एहि समस्त संसार कें / पागलखाना बनयबाक / दुरभिसंधि कें सफल' तँ आओर बढ़ि जाइत अछि। 'हफीमी निन्दक अमृत / मर्फियाक शान्ति / फुसियाहा स्वप्न-लोक / कर्जखोर आश्वासन / बनावटी इजोत'क विरोध करैत कविक आक्रामक स्वर जनसंघर्षक पक्ष मे जाइत अछि।

मुदा 'निर्वासित अपने देश मे' जखन कवि कहैत छथि—'आ अहाँ कें भीड़ चाही / देश-सेवा लेल एक टा पार्टी चाही / हम छी स्वतंत्र / अहाँ कें कोनो तंत्र चाही / नारा चाही, मंत्र चाही / अहाँ कें चाही अप्पन कोनो वाद / कोनो परिवेश / हे भगवान, / हमर तखन कोन देश?' तँ हमरा सन पाठक सोच मे पड़ि जाइत अछि। अलबत्त गप्प जे कवि एक दिस सक्रिय राजनीति मे भागीदारी, पुरना परम्पराक विरोध आ परिवर्तनक इच्छा रखैत छथि; आ दोसर दिस 'निखालिस व्यक्ति' लेल किएक एतेक चिन्तित छथि? संगहि 'एक टा सामयिक कविता' मे कवि किसुनजी 'कुमारिक पवित्रता' आ 'बरिसाति पूजनिहारि नव-विवाहिताक सिनेह'क चर्च करैत छथि, तँ सोचबाक लेल बाध्य होमय पड़ैत अछि जे कुमारिक कोन पवित्रता होइत छैक? कुमारिपन समाप्त भेलाक बाद की ओ अपवित्र भ' जाइत अछि? 'बरिसाति पुजनिहारि नव-विवाहिताक सिनेह' आ आम स्त्रीक सिनेह मे कोन फर्क अछि? की एक मजदूरिनक सिनेह अपवित्र होइत अछि? एहन कतोक शब्द अछि, जेना 'विश्लेषण' शीर्षक कविता मे एक टा शब्द अबैत अछि—'विधवा मान्यता।' इहो एक टा प्रश्न ठाढ़ करैत अछि जे की कवि विधवा कें शोषित-पीड़ित, निस्सहाय-

अबलाक रूप मे सदाक लेल स्थापित कर' चाहैत छथि? ओना हमर समाज एखनो ओतेक प्रगतिशील नहि भेल अछि, जते कवि किसुनजी छलाह। मुदा किसुनजी जहिना स्वयं 'नव' केर आग्रही छलाह, तहिना अपना सँ बाद अबैवला लोक लेल हुनक ई संदेश छल जे अहाँ नव-नव प्रश्न ठाढ़ करी आ तें हम ई सब लिखबाक साहस कयलहुँ।

किछु विरोधाभास, किछु उलझाव आ अस्पष्टता, मध्यवर्गीय व्यामोह सँ निर्मुक्ति आदिक बावजूद कविक भीतर नव मूल्यक तलाश लेल कोनो-ने-कोनो रूप मे, कतहु-ने-कतहु छटपटाहटि बेसी भेटैत छै। निषेध मे विकास आ विकास मे निषेध अन्तर्निहित अछि—सेहो कवि कें ज्ञात भ' जाइत छनि। एकरे प्रमाण थिक 'खुटेसल' मे व्यक्त परम्परा सँ मुक्तिक पीड़ा। परम्पराक जकड़न सँ त्रस्त, युग-युग सँ प्रताड़ित होइतहुँ 'एक टा दुर्निवार माया'क आँचर तर एक टा पैघ समूह फँसल अछि आ ओकरा 'हाँजक-हाँज लहाशक संग रहबा मे / गौरव-बोध होइत अछि।' मुदा, दुखद गप्प तँ ई जे हमरा सब अतीतक 'हरी' सँ मुक्तिक लेल प्रतिरोध तेना नहि क' पबैत छी जेना हेबाक चाही! जखन कि 'समस्त वर्तमान आ भविष्य कें / एक टा अजोध अजगर दकचने अछि।' कवि किसुनजीक जे प्रतिरोधी स्वर विभिन्न कविता सभ मे उभरल अछि—'खुटेसल' कविता सम्पूर्ण रूप सँ तकर प्रतिनिधित्व करैत अछि! एतय किसुनजी यथार्थ कें उघारि क' राखि देलनि अछि—

कोल्हूक बड़द जकाँ
हम सभ समन्वयवादी छी
लड़बाक अपेक्षें हमरा सभ
बचि जएबाक बाट बनबैत छी
जीवन भरि अतीतक पाउजे करैत छी
हमरा लोकनि
बापक बाप आ तकरा बापक बाप
माने संख्यातीत बापक परम्परा मे
जीबैत छी

आरंभ : 7 (जून, 1995) मे प्रकाशित आलेखक परिवर्द्धित रूप

विद्रोहक बिगुल फूंकैत कवि किसुन जी

रमण कुमार सिंह

नेनपने सँ हमरा साहित्य पढ़बाक ललक छल। तँ हम कोनो पोथी उठाय कें पढ़य लागैत छलहुँ। छठा-सतमा मे पढ़ैत होयब, संभवत: तखने हमरा नौमा-दसमा के एक टा टेक्स्टबुक हाथ लागल—गद्य-पद्य संग्रह। ई पोथी मैथिली मे छल। ओहि मे रामकृष्ण झा 'किसुन' केर परिचय संग एक टा कविता 'खुटेसल' संग्रहीत छल। परिचय मे लिखल छल, जे ओ सुपौले के छथि। अपना इलाका, अपना गाम-घरक लोक के कोनो पोथी मे नाम छपल देखला सँ कतेक सुखद अनुभूति होइत छैक, से अपनहुँ सभ जनैत होयब आ तेहने सन सुखद अनुभूति हमरो भेल छल। यैह छल हमर किसुन जी सँ पहिल परिचय। बाद मे जखन केदार कानन जी सँ संपर्क भेल आ ई बुझलहुँ जे ओ किसुन जीक संतान छथिन, तखन तँ खुशीक ओर-छोर नहि रहल। बाद मे जखन मैथिली साहित्य सँ जुड़लहुँ, त' किसुन जीक साहित्य कें पढ़बाक अवसर भेटल आ तखन किसुन जीक साहित्यिक महत्ता आ मैथिली साहित्य, खास क' मैथिली कविता मे हुनक कालजयी योगदानक मादे विस्तृत जानकारी भेटल।

आधुनिक मैथिली साहित्यक किछु महत्त्वपूर्ण नाम पर जखन विचार कयल जायत, तँ निश्चित रूप सँ रामकृष्ण झा 'किसुन' कें आदरक संग मोन पाड़ल जायत। किसुन जीक कवि व्यक्तित्व एहन अछि, जे युगीन चेतना, आदर्श आ सामान्य जन-जीवनक सरोकार कें ओ अपन काव्य सरोकार बनौलनि आ मैथिली मे नव कविताक प्रमुख प्रवक्ता बनि अभरलाह। किसुन जी जाहि काल मे मैथिली साहित्यक सृजन क्षेत्र मे प्रवेश कयलनि, ओ समय मैथिलीक अस्तित्व रक्षाक लेल संघर्ष आ मैथिली साहित्यक समृद्धि लेल निर्माणक क्षण छल। किसुन जीक कविता पर विचार करैत हमरा हुनक काव्य व्यक्तित्वक विकासक तीन चरण परिलक्षित होइत अछि। पहिल चरण मे ओ संस्कारवादी आ आदर्शवादी कविताक सृजन कयलनि, तत्पश्चात ओ यथार्थवादी काव्य रचना करय लगलाह आ बाद मे नव कविताक मुखर प्रवक्ता बनि

गेलाह। युगीन चेतना आ आम लोकक जनजीवन सँ सरोकार हुनक काव्यक परम ध्येय सदिखन रहलनि। मैथिलीक नवीन काव्यधारा कें दिशा निर्देश देबा मे हुनक काव्य पोथी—'आत्मनेपद' आ 'क्रमश:' केर भूमिका कें अनेक वरिष्ठ लेखक-आलोचकगण स्वीकार कयने छथि।

किसुन जी मैथिलीक नव कविता कें मैथिली साहित्य मे स्थापित कयलनि, ओना तँ भुवन भारती (भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'), चित्रा (वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री') आ स्वरगंधा (राजकमल चौधरी) मे सेहो नव कविता भेटैत अछि, मुदा नव कविताक नव काव्य-चेतनाक दर्शन आत्मनेपद (किसुन जी)क भूमिका आ 'मैथिलीक नव कविता'क भूमिका मे परिलक्षित होइत अछि।

आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि, जे 'मैथिली साहित्य मे नवता भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आनलनि आ इएह प्रगतिवादक प्रवर्तक थिकाह।' मुदा ध्यान देबाक बात अछि जे भुवन जीक कविताक शब्द, शिल्प, बिम्ब विधान प्राचीन अछि, किछु कविता कें जरूर नववाणी, नवयुग आ नवचेतनाक प्रतीक मानल जा सकैत अछि, मुदा हुनक संग्रह 'आषाढ़' केर भूमिका कें देखल जाय, तँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे ओहि मे नव काव्य चेतनाक दर्शनक अभाव अछि। 'चित्रा' कें मैथिलीक नव कविता केर प्रस्थान बिंदु अवश्य मानल जा सकैत अछि, किंतु नहि त' ओकर प्रकाशन कयनिहार डॉ. जयकांत मिश्र ओहि मे नव कविता कें परिभाषित कयने छथि आ नहि यात्री जी स्वयं नव कविताक कोनो अवधारणा प्रस्तुत कयलनि अछि। राजकमल चौधरी अपन संग्रह 'स्वरगंधा' मे अवश्य नव कविताक स्वरूप पर किछु प्रकाश देने छथि, मुदा नव कविताक अंतर्वस्तु केर मादे ओहो कोनो स्पष्ट अवधारणा प्रस्तुत नहि कयलनि अछि। स्वरगंधा के मादे राजकमल चौधरी कहैत छथि—'हमरा विचारें कविताक लेल आवश्यक नहि अछि जे छंद, लय, गीतात्मकता, प्रसार-विधि, यति-प्रणाली कें मान्यता देले जाए। कविताक लेल एक्के वस्तु आवश्यक अछि—शब्द। ...छंद योजना कविताक शृंगार मात्र थिक, आभूषण मात्र थिक आ कविताक वस्त्र थिक शब्द।'[1]

किसुन जी अपन काव्य संग्रह 'आत्मनेपद' मे जाहि ढंगे नव कविताक सैद्धांतिक रूपक स्थापना कयलनि, से आइयो कवि सभ लेल एक टा जरूरी पाठ अछि, जे भर्तीक शब्द, बिना जरूरति अनावश्यक विशेषण सँ कविता कें बोझिल बना दैत छथि। हुनक वक्तव्य पर ध्यान देल जाय—

'नव कविताक स्रष्टा लोकनि जे शैली ग्रहण कयलनि अछि, ओहि मे चमत्कारपूर्ण नवीनता अछि। सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट करौनिहार विशेषता थिक ओकर मूर्त चित्र सभक योजना आ विषयक प्रति नवीन दृष्टि। ओना तँ अपना

आदिकाल सँ कविता मे बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग होइत आयल अछि, मुदा जाहि प्राचुर्य तथा जाहि लाघव सँ आइ-काल्हि नव कविता मे ओकर सन्निवेश भ' रहल अछि से पहिने नहि छल। शब्द योजनाक संबंध मे मितव्ययिता एकर दोसर विशेषता थिक। भर्तीक शब्द, अनावश्यक विशेषण तथा अगबे संगीतमयताक दृष्टि सँ प्रयुक्त पदावली सँ अपना कथ्य केँ मुक्त राखब नव कविता रचना पद्धति भ' गेल अछि।'[12]

नव कविताक स्वरूप व अंतर्वस्तु, दुनू केँ किसुन जी 'आत्मनेपद' केर भूमिका मे स्पष्ट कयने छथि—'सूक्ष्म संवेदनात्मक आ युगानुरूप अंत: संघर्ष, जीवनक परिवर्तित मूल्य आ पारिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत नवीन (पैटर्न) शैली, काव्य सत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्ति हेतु संप्रेषणक नवीन बिम्ब योजना, यैह थिक नव काव्य प्रवृत्ति।'[13]

किसुन जीक मादे कहल जाइत रहल अछि, जे ओ प्राचीन आ नवीनक बीच एक टा सेतु छलाह, प्राचीनता आ आधुनिकताक बीच एक टा कड़ी छलाह, आदि-आदि। एहन कहबाक पाछु कदाचित ई कारण रहल होयत, जे किसुन जी अपन लेखनक शुरुआत कोमल आ भावपूर्ण गीत सँ कयने रहथि। फेर जखन यथार्थवादी काव्यधाराक दौर आयल, तँ किसुन जी ओकर प्रगतिशीलता केँ अंगीकार कयलनि। संभवत: यैह ओ क्षण रहल होयत, जखन ओ अपन समस्त पछिला लेखन केँ निरस्त क' देने रहथि आ आधुनिक बोध सँ युक्त नवलेखन मे प्रवृत्त भ' गेल रहथि। ई हुनक काव्य-व्यक्तित्वक गतिशीलताक परिचायक थिक। कहबाक तात्पर्य जे हुनक कवि कोनो खाम्ह पकड़ि केँ ठहरल नहि छल, अपितु सदिखन युग सत्य केँ अंगीकार करैत अपन काव्य-व्यक्तित्वक विकास आ विस्तार करैत रहल। यैह कारण अछि, जे किसुन जीक कविता जतबा हुनका समय मे प्रासंगिक छल, ओतबे आइयो प्रासंगिक अछि आ बुझाइत अछि जेना आइये लिखल गेल हो—'अहाँक दृष्टि तँ ओझराएल अछि/बाभन, कायस्थ, क्षत्रिय/भूमिहार आ यादवक/छहरदेवाली मे/मुदा हम छी एत'/छहरदेवाली सभ सँ फराक/हास्यास्पद द्वेषपात्र/अनफिट मनुष्य मात्र/कहि नहि कखन के/हत्या क' देत/नोचि के खा लेत।'[14]

जातिवाद आइयो भारतीय समाजक एक टा कटु यथार्थ थिक, जेकर छहरदेवाली मे हम सभ घेरायल छी। जातिगत हिंसाक एक टा पैघ इतिहास अपना देश मे रहल अछि, जे आइयो निरंतर जारी अछि। एहि कविता केँ पढ़ैत एक्को रत्ती नहि बुझाइत अछि, जे हम सभ 1969 के कविता पढ़ि रहल छी, जखन कि कोसी-कमला मे कतेक रास पानि बहि गेल अछि, कतेक पीढ़ी खतम भ' गेल आ कतेक नव पीढ़ी जन्म लेलक। मुदा जातिक घेराबंदी एखनो हमरा सभ केँ गछारने अछि।

जे आलोचक लोकनि हुनका प्राचीनता आ नवीनताक मध्य सेतु मानैत छथि,

हुनका किसुनक जीक काव्य गंतव्य पर ध्यान देबाक चाही। प्राचीनता आ परंपरागत मूल्य बोध केँ ओ अपन कविता मे नितांत अप्रासंगिक बतबैत प्रतिवादक स्वर केँ गूंजित करैत कहैत छथि—'हम खोखरि देमय चाहै छी/अहाँ लोकनिक खोल/खाहे लहू-लहुआन भ' जाय/हमर सौंसे देह।/हम देख' चाहै छी/अहाँक नग्न प्लास्टिक पिरामिड रूप/जे चाटूकार इतिहास द्वारा/बलात हमरा पीढ़ीक माथ पर/लादि देल गेल अछि।'[15]

किसुन जी जखन नव कविताक अभियान चलौलनि, तँ हुनका परंपरावादी कवि सभ सँ बहुतो विरोध सहय पड़लनि। मुदा ओ अपन विद्रोही तेवर बनौने रहलाह आ मैथिली कविताक जमकल-ठहरल पानि केँ हिलकोरैत रहलाह। क्रमश: (पृष्ठ 157) मे संकलित हुनक कविताक ई अंश देखल जा सकैए—'यथास्थिति केँ बनौने/रखबाक आग्रही/दैत्य सभ केँ नमस्कार/लिय' जागि गेल अछि/शेष नागक/शय्या सँ क्रोधोत्थित/मधुसूदन।'[16]

किसुन जी देखैत छलाह जे लोक अनेक तरहक स्वार्थ मे फँसल अछि आ किसिम-किसिम के मुखौटा पहिरि लोकक शोषण मे लागल अछि। एहन नकाबपोश लोक समाज मे ऊँच-ऊँच आसन पर बैसल अछि आ अपना तरहें समाज केँ हाँकि रहल अछि। एहि पाखंडक विरोध करैत किसुन जी कहैत छथि—'मनुक्खक लगौने अछि/सब केओ नकाब/होइतहि नै अछि भरिसक/मनुक्ख कतहु आब/जौं कतौ भेटि जाय/बंधु! अत्र-तत्र/तँ हमरा लीख देब/जल्दी सँ पत्र।'[17]

मैथिली साहित्य आ विशेष रूप सँ मैथिली कविताक रेशा-रेशा केँ चिन्हैबला कवि किसुन जी मैथिली नव कविताक भूमिका मे कहैत छथि जे, 'साहित्यक मैदान मे बहुत दिन सँ जे शमियाना तनल अछि, तकर आब कोर सड़ि गेल अछि। माटि मे गड़ल ओकर खुट्टा आ ओकरा तान' बला बाँस कोकनि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि, ओहि मे लागल झाड़फानूस सभ सड़ि गेल अछि।' तँ मैथिली नव कविता आब कीया मे बन्न नहि रहय चाहैत अछि—'आब हमरा नहि सोहाइत अछि/झंपने रहू प्राण हमर/कीया मे अहाँ लोकनि।'

हुनका नव युगक नव स्वर आ नव चेतना पर भरोस छनि, तँ ओ लिखैत छथि—'सुनु नवीन ऋचा/उदयाचलक शिखर परक/नव्य काव्य स्वर/जे केवल हमरहि नहि/समस्त विश्वक थिक।'

तथाकथित पैघ लोक पर व्यंग्य करैत ओ कहैत छथि—'बूझय मे निस्सन छथि/बिनु बूझल फोंक छथि/खोल छन्हि मनुक्खक/आ प्रच्छन्न जोंक छथि।'

(क्रमश:, कविता-पैघ लोक)

किसुन जी 'युग संदेश' प्रसारित करैत नव कविताक क्षेत्र मे पदार्पण करैत छथि

आ कहैत छथि—'लै उद्याम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी, जीर्ण-शीर्ण जिंजीर कड़कि क' टूटि गेल अछि...।' किसुन जीक मित्र आ हुनक समकालीन चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' केर आरोप छनि जे, किसुन जी समतावादी प्रगतिशील कवि छथि, मुदा ओ यात्री जीक प्रभाव केँ उघैत छथि। कहबाक जरूरत नहि बुझाइत अछि जे किसुन जी आ यात्री जी, दुनू कवि केर काव्य-शिल्प भिन्न-भिन्न छनि। एक समय मे की एक सँ अधिक प्रगतिशील आ समतावादी कवि नहि भ' सकैत छथि आ जौं भेलाह तँ की हुनका सभ केँ एक-दोसराक विचार केँ परस्पर उघब कहल जायत? काव्य-विषय आ काव्य-निष्पति एक भेलाक बादो हुनका सभ मे पार्थक्य देखल जा सकैत अछि, आ से दू कविक काव्य-भाषा आ काव्य-शिल्प सँ स्पष्ट होइत अछि। यात्री जी आ किसुन जी, दुनूक कविताक निष्पक्ष आ सचेत दृष्टिएँ अध्ययन केला सँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि।

सब केँ बूझल हेतनि जे हिंदीक कवि महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला केर एक टा प्रसिद्ध गीत अछि—'वर दे वीणावादिनी वर दे।' एहि कविता मे ओ लिखैत छथि—'काट अंध-उर के बंधन-स्तर / बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर; / कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर / जगमग जग कर दे! / नव गति, नव लय, ताल-छंद नव / नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव; / नव नभ के नव विहग-वृंद को / नव पर, नव स्वर दे!' दोसर दिस कविवर किसुन जी ज्योति याचना मे लिखैत छथि—'देवि हमर यैह याचना, देल जाओ वरदान।' आगाँ एहि कविताक काव्य-गंतव्य दिस बढ़ैत किसुन जी कहैत छथि—'बल, साहस, पौरुष आ यौवन / जागय हो सृष्टिक पुनः सृजन / हो वर्ण-वर्ग विद्वेष नष्ट/ कवि गाबि सकय ई नूतन स्वर।' देखल जा सकैए, जे दू भाषाक कवि अपन-अपन प्रगतिशील काव्य-यात्राक क्रम मे समतावादी समाजक कल्पना करैत नवताक आग्रही छथि। संयोग देखू जे हिंदी मे नई कविता आ मुक्त छंद कविता के सब सँ पैघ पैरोकार निराला छलाह आ मैथिली मे नव कविताक एकमात्र प्रबल प्रवक्ता किसुन जी छथि। एना मे के कहि सकैत अछि जे कवि किसुन जी संस्कारवादी कवि छथि आ हुनक प्रगतिशीलता थोपल छनि। वैचारिक पूर्वाग्रह के चश्मा पहिरि जौं केओ किसुनजीक कविता पर गप करताह, तँ हुनका सँ एहन तरहक भ्रम पसरब असंभव नहि।

कवि किसुन जीक मैथिली साहित्य मे अवदान तँ निस्संदेह अतुलनीय अछिए, हुनक व्यक्तित्व सेहो मैथिली साहित्य आ समाज लेल बेस उपकारी रहल। हुनक व्यक्तित्व उदार आ बहुआयामी रहनि। संपूर्ण कोसी परिक्षेत्रक मैथिली साहित्यक गतिविधिक ओ केंद्र छलाह आ नेतृत्वकारी भूमिका निमाहैत छलाह। कोसी क्षेत्रक गाम-गाम मे ओ पुस्तकालय आंदोलन चलौलनि, विद्यापति समारोह सभक आयोजन

कयलनि, सुपौल मे गणतंत्र दिवसक अवसर पर राष्ट्रीय मेलाक आयोजन शुरू करबौलनि आ ताहि अवसर पर कवि सम्मेलनक परंपरा शुरू करबौलनि (हालाँकि आब राष्ट्रीय मेला के ओ सांस्कृतिक स्वरूप नष्ट भ' चुकल अछि आ कवि सम्मेलनक त' कोनो चर्चो नहि होइत अछि)। एक बेर तँ कहाँदन ओ सुपौल मे एहन कवि सम्मेलनक आयोजन कयने छलाह, जाहि मे श्रोतागण टिकट ल' क' काव्य पाठ सुनय लेल गेल छलाह आ बहुत रास लोक केँ टिकट नहि भेटलनि, तँ ओ सभ बाहर मे ठाढ़ भ' क' काव्य-पाठ सुनलनि। एहन विलक्षण कवि सम्मेलन केर आयोजन कोनो भारतीय भाषाक साहित्य मे दुर्लभ अछि। कतेको नव कवि केँ ओ मार्गदर्शन सेहो कयलनि, जे बाद मे मैथिली साहित्यक प्रमुख स्तंभ बनि अभरलाह। 1967 मे मैथिलीक नव कविता पर सेमिनार तँ मैथिली साहित्यक इतिहासक अविस्मरणीय घटना बनि गेल अछि। आइ सुपौल आ कोसी क्षेत्र मे जे मैथिली साहित्यक लौ जागृत अछि, तकर पाछू हुनके प्रेरणा आ कृतित्वक पुण्य अछि आ तें सुपौल एखनो मैथिली साहित्यक एक टा प्रमुख सृजनात्मक केंद्र बनल अछि।

संदर्भ

1. राजकमल चौधरी, स्वरगंधा, भूमिका
2. रामकृष्ण झा किसुन, आत्मनेपद, भूमिका
3. रामकृष्ण झा किसुन, आत्मनेपद, भूमिका
4. निर्वासित अपने देश मे-शीर्षक कविता, मिथिला मिहिर, 3 अगस्त, 1969
5. खुटेसल (कविता), मिथिला मिहिर, 18 फरवरी, 1968
6. क्रमशः, रामकृष्ण झा किसुन, पृष्ठ-157
7. क्रमशः, रामकृष्ण झा किसुन, पृष्ठ-81

किसुनजीक कथा संसार

रमाकांत मिश्र

किसुनजी, वयसें, ललित आ राजकमल सँ जेठ रहितहुँ कथा लेखनक दष्टिएँ, हुनके सभक समकालीन छलाह। ई तीनू कथाकार, पचास आ साठि—दू दशकक अभ्यन्तर अपन कथा लिखलनि। किन्तु कथा ल' क' किसुनजी ओहि कालखण्ड मे आ बादहुँ, ख्याति प्राप्त नहि भ' सकलाह। ललित आ राजकमल कथा विधा केँ कथ्य आ शिल्पक प्रतिभा सँ आच्छादित केने रहलाह। हिनका लोकनि सँ पूर्व केँ दशक धरि, मुस्की सँ ठहाका धरि, व्यंग्यक हींग सँ छौंकल अपन गल्पव्यंजन सँ हरिमोहन बाबू मैथिली पाठकक जीभ सँ पानि खसबैत रहल छलथिन। एहि कालखण्डक दू टा आरो कथाकार उल्लेखनीय। पहिल छथि मनमोहन झा आ दोसर उमानाथ झा। मनमोहन बाबूक 'अश्रुकण' मैथिली पाठकक मन केँ, बांग्लाक शरद रवीन्द्र जकाँ, भावुकता सँ भरि देने छल। उमानाथ बाबू अपन संकलन 'रेखाचित्र'क माध्यमे मैथिलीक औसत सँ ऊपर पाठकक ध्यान पाश्चात्य कथा-शैली सँ प्रभावित अपन कथा सभ सँ आकर्षित केने छलाह। तकर बादक मैथिली कथाक युग छल ललित-राजकमल आ मायानन्दक। एकर ई अर्थ नहि जे एहि कालखण्ड मे आन केओ कथा नहि लिखलनि। अनेको लिखलनि आ अपन एक वा दू कथाक माध्यमे पाठकक ध्यान सेहो आकृष्ट केलनि। किसुनजी, ओही अनेक मे सँ एक छलाह। मन नहि पड़ैछ जे हुनक कोनो कथा, मनमोहन झाक ('अश्रुकण') शब्द मे...'कोनो कामातुरा युवती जकाँ... पाठकक गर्दनि केँ अपन भावुक बाँहि सँ बलात आवेष्टित कए'...लेने हो।

'स्वयंवर' संग्रहक प्रथम तीन कथा क्रमश: 'जीवनक मूल्य' (1954) 'रहस्य' (1956) आ 'प्रेम नित्य थिक' (1957) संरचनाक दृष्टि सँ बचकानी छैक। प्रथम कथा, 'जीवनक मूल्य' मे कथानक तकबाक औनाहटि छैक। विषय छैक, 'प्लॉट' नहि छैक। कथावाचक हाट पर पान कीन' जाइत छथि आ दू टा गरीबक नेना केँ

सड़क पर सँ झिल्ली-कचरीक टुकड़ी सभ बीछि क' खाइत देखैत छथि। मन करुणा विगलित भ' जाइत छनि। यात्रीक कविता मन पड़ि जाइत छनि। बस इएह अछि 'कथा'। विषय छैक, कथा नहि छैक। हाटक एक टा परिदृश्य, एक टा प्रतिक्रिया।

दोसर कथा अछि 'रहस्य जे 'बाराह क्षेत्र'क यात्राक वर्णन अछि। गामघरक लोकक दल। एक टा बंसीवादक संग भ' जाइत छैक। के थिक ई बंसीवादक—कोनो दस्यु वा देवता—इएह थिक 'रहस्य'। लेखक प्राय: एक टा रहस्य-रोमांचक कथा लिख' चाहलनि। रहस्य तँ छैक, रोमांच नहि होइत छैक। तकर बादक 1957क कथा अछि 'प्रेम नित्य थिक' जाहि मे एक टा किशोरी, कथावाचक केँ अनुराग आ प्रेम मे अन्तर बुझबैत छनि। कथा मे पत्र-शैलीक प्रयोग छैक। कथ्यक निष्पत्ति भाषण मे छैक, कथानक मे नहि। 1960 क 'संकल्पक आधार' मे कथानकक एक टा छोट-क्षीण रूप उखरलैक अछि। विषय छैक आ तकरा लेल तकर वस्तुसाक्ष्य कथानक मे छैक। पिसिऔत प्रेम-विवाह केलथिन। पति-पत्नी मे बहसा-बहसी सुनि नवयुवक, ममिऔत, निष्कर्ष निकाललनि जे विवाहोपरान्त सभ प्रेम कलह मे परिवर्त्तित भ' जाइत छैक। पश्चात, जखन आंगन जाइत छथि तँ पति पत्नीक बीचक स्नेह सम्बन्धक साक्ष्य पर ममिऔत अपन विचार बदलि लैत छथि। मन मे स्त्री-पुरुषक प्रेमक प्रसंगक एक टा सकारात्मक संकल्पक आधार जन्म लैत छनि। बड़ क्षीण सन कथा, बड़ छोट जिज्ञासा, बड़ छोट उत्तर।

ओहिना अछि ओही वर्षक 'जीवनक असौकर्य'। देशक बँटबाराक बहुत बादो धरि रेलगाड़ी मे रिफ्यूजी युवती सभ केँ गीत-गाबि-गाबि भीख मँगैत देखने हैबै। कथावाचक सेहो देखलथिन। ट्रेन मे लोक सभ कटाक्ष करैत छलैक जे दिन मे भीख मँगैत अछि आ राति मे देह बेचैत अछि। कथावाचक केँ ई टिप्पणी अमानवीय लगैत छनि आ ओकरा सभक 'जीवनक असौकर्य' दिस ध्यान जाइत छनि। कथा एक टा विषय पर मानवीय प्रतिक्रिया मात्र अछि। कथ्य मे कोनो 'काट' नहि छैक, कोनो कथानक नहि छैक। कथाकार मे संरचना-बोधक अभाव छनि। लेख आ कथाक बीचक कोनो वस्तु अछि ई।

तकर बादक वर्षक (1961) 'पुरान पत्र आ टटका बात'क विषय छैक 'काटर'। एक टा कथानक सेहो गढ़ल गेल छैक किन्तु निष्पत्ति बिन्दु पर आबि क' कथाक प्रभाव बड़ क्षीण आ प्रभावहीन छैक। रेलवे प्लेटफॉर्म पर एक टा सुन्दर युवती सँ कथावाचकक आँखि चारि भ' जाइत छनि। रेलक डिब्बा मे ओकरा सँ गप्प करैत छथि। गरीब माता-पिता एक टा विधुर आ अधवयसू किरानी सँ एहि कन्याक विवाह कराब' ल' जा रहल छलाह। युवक विवाहक आश्वासन दैत छथिन किन्तु कन्याक पिता सँ कहैत छथि जे हुनक पिता सँ गप्प करथि। अन्त मे एक टा पत्रक उल्लेख

छैक जाहि सँ सूचना निर्गत होइत छैक जे युवकक पिता व्यवस्थाक माँग क' देलथिन आ तें विवाह नहि भेलैक।

'काटर' विषय पर दोसर कथा अछि 1962क 'सुभद्राक डायरी'। पहिल कथा मे पत्रात्मक शैली छैक तँ एहि मे 'डायरी'क। कन्या, सुभद्रा, अपन डायरी लिखैत अछि आ विवाह मे पिताक परेशानी सँ आत्महत्या क' लैत अछि आ जाहि युवक सँ ओकर विवाद होम'वला छलैक से, अन्त मे ओहि डायरी केँ प्राप्त क' कथाकार केँ कथा लिखबाक लेल द' दैत अछि। ई युवक आजन्म कुमार रहबाक व्रत ल' लैत अछि आ काटरक विरुद्ध आन्दोलन करबाक संकल्प सेहो।

1961क 'एक अंक तीन दृश्य'क कथा छैक गरीब-धनिकक बीचक भयंकर व्यवधान जकरा सुविधाक हेतु तीन टा दृश्य मे बाँटि क' देखौल गेलैक अछि। एक टा 'प्रभावशालिनी महिला' अपन बेटी 'बेबी' क बर्थडे पार्टी पर अतिथि सभक आगाँ दही-रसगुल्लाक पथार लगा दैत छथि। दृश्य बदलैत छैक आ अहाँ पटनाक जमाल रोड मे छी। कथाकार रिक्शा पर छथि। एक टा भिखमंगाक लाश सड़क पर पिचायल पड़ल छैक। ई भेल दृश्य दू। दृश्य तीन मे रिक्शाबला सड़क छाप एक टा ढाबा सँ दू आनाक भात कीनि क' खाइत अछि, मात्र भात, दालि नहि। रसगुल्ला-पनितोआक कोन कथा। इएह अछि कथाक तीन टा दृश्य। अंक एक्के टा छैक—समाज मे गरीब आ धनिकक बीचक भयंकर व्यवधान। एकरा 'केमरा' शैली कहि सकैत छी। एहि मे अन्तर्भेद देखौल गेलैक अछि जकरा कथा बुझी तँ बेस, नहि बूझी तँ बेस। कथ्यक उद्घाटनक लेल कथा-सूत्र मे गाँथल कोनो कथानकक उपयोग नहि केने पाठक कोनो रहस्यक उद्घाटनक सुख सँ वंचित रहि जाइत अछि।

1661क 'मासान्त' मे श्लेषजन्य व्यंग्य छैक। कोनो मुफस्सिल नगरक एक टा टुटपुजिया पत्रकार केँ मासान्त केहन आर्थिक कष्ट दैत छैक ताहि विषय पर ई एक टा छोट-छीन सुघड़ कथा छैक। कथ्यक लेल एहि मे उपयुक्त कथानक छैक। एक-दू दृष्टान्तक आधार पर कथ्यक निष्पत्ति सटीक आ प्रभावशाली छैक। 'मंगनी पर चंगनी आ तैपर दँतखिसरी' जे कहबी छैक तकरा नीक जकाँ निखारल गेलैक अछि।

तकर बाद कथा छैक 'ताँगावाला'। जन-मजदूर मे सेहो अहाँ केँ नैतिकता भेटत। ई जँ बुझि लेने होइ जे सर्वहारा वर्गक सभ केओ उचक्के आ ठग होइत छैक तँ से नहि। उदाहरणक लेल सुनू एक टा ताँगावलाक कथा। दस वर्ष पूर्व एक टा परिचित 'सवारी'क पत्नीक सोनाक गहना दाबि लेने रहैक ई ताँगाबला। कथावाचक ओहि 'सवारी'क मित्र छथि जिनका दस वर्षक पश्चातहु ताँगाबला चीन्हि जाइत अछि आ ओ गहना लौटा दैत अछि। ताँगाबलाक एहि ईमानदारी, ओकर एहि अकस्मात हृदय परिवर्तनक पर्याप्त कारण एहि कथा मे उपलब्ध नहि छैक। कथाक अनेरे विस्तार

क' देल गेल छैक। मानव हृदयक कोनो तन्तु एहि कथा केँ पढ़ि क' झंकृत नहि होइत छैक।

'अन्हार आ इजोत' मे कथ्य ई जे शहर अन्हार आ गाम इजोत अर्थात् अनेक कपट आ कलुषता सँ भरल शहरक जिनगी केँ अन्हारे बूझी। ओकर तुलना मे कथाक मुख्य नारी पात्र गामक जिनगी केँ मनक निर्मलता आ सहज सौजन्यक कारणें इजोत सँ भरल बुझैत अछि। एहि कथा मे एक टा कथानक छैक किंतु दृष्टांत सबल नहि छैक तथापि कथा पठनीय छैक।

'स्वयंवर' एहि संग्रहक शीर्षक कथा अछि आ एहि मे एक टा कथानक छैक जाहि मे प्रारंभ, मध्य आ अंत सेहो छैक। विषय छैक भारतीय आचार-विचारक विपरीत पाश्चात्य आचार-व्यवहारक नकलक अस्वीकृति। एक टा कॉलेज गामिनी मैथिल ललना केँ अपन सभ्यता आ संस्कृति पर गौरव छनि आ से ओ बड़ नाटकीय स्थिति मे पाश्चात्य आचार-विचार सँ प्रभावित अपना लेल चुनल वर केँ अस्वीकार क' दोसर वर चुनि लैत छथि। कथा मे कथानक छैक, एक टा सहज गति छैक, बहुत अंश धरि प्रतीति छैक। मुदा कन्या आ वरक इंटरव्यू केँ जतेक रोचक हेबाक चाही ओतेक रोचक नहि बना सकलाह अछि कथाकार। भावी वर केँ कने कार्टून जकाँ प्रस्तुत कयल गेल छैक। कथा मे एक टा कथानक, तकर विकास आ एक टा शीर्ष बिंदु छैक आ ताहि दृष्टि सँ ई एक टा 'क्लासिकल' प्रकारक कथा छैक। तकर सभ अवयव कथा मे स्पष्टता सँ देखार छैक। कथा पढ़ि क' एक टा पूर्णताक बोध तँ होइत छैक मुदा कोनो नवीनताक बोध नहि।

एकर बादक कथा 'कन्डोलेन्स' अपन व्यंग्य-विद्रूप, करुणा, सहजता आ वस्तुनिष्ठ नाटकीय उपस्थापन सँ मोहित करैत अछि। एक टा गरीब मैथिल कायस्थ परिवारक युवक केँ निःसंतान पित्ती-पितिआइन पालि-पोसि आ पढ़ा-लिखा क' केन्द्रीय सरकारक बड़का अफसर बना दैत छथि। किंतु हुनकर मरबाक खबरि पर भातिज एक टा 'कन्डोलेन्स' मात्र पठा दैत छनि। अपन अफसरीक ठाठ बाट मे भातिज अपन जड़ि केँ जाहि हृदयहीनता सँ बिसरि जाइत अछि तकरा एहि छोट-छीन कथा मे, बड़ कलात्मक निरपेक्षता सँ प्रस्तुत कयल गेलैक अछि। कथा अपन प्रस्तुति सँ पाठकक मन पर अविस्मरणीय प्रभाव छोड़ैत छैक। किसुनजीक ई कथा बड़ सफल भेल छनि।

किसुनजीक एहने रोचक कथा छनि 'मुक्ति'। एहू कथा मे एक टा पूर्ण विकसित कथानकक प्रस्तुति छैक। कथा-वस्तु तँ बुझू जे एक टा उपन्यास मे नीक जकाँ अँटौल जा सकैत छलैक। मुख्य स्त्री पात्र, गौरीक चरित्रक प्रस्तुति आ विकास बड़ कलात्मक रूपें भेलैक अछि। गोपाल बाबूक पहिल पत्नी पाँच वर्षक रमेश केँ

छोड़ि क' मरि जाइत छनि। एक-दू वर्षक उपरांत दोस्त महीम, विधवा बहिन आ स्वयं रमेशक जिद्द पर गोपाल बाबू दोसर विवाह क' लैत छथि। प्रत्यक्ष कारण ई जे रमेश केँ 'माय' चाहिअनि। गौरीक कोरा मे स्त्रीगण-समाज रमेश केँ बैसा दैत छैक आ गौरी ताही दिन सँ अपन सभ मातृत्व रमेश केँ द' दैत अछि। साधारणतया सतमायक छवि एक टा निष्ठुर नारीक छवि होइत छैक किंतु, गौरी एकर अपवाद सिद्ध होइत छथि आ जाहि ममता सँ रमेश केँ पोसैत छथि से असाधारण तँ अवश्य किंतु, कथा-वस्तुक मनोवैज्ञानिक भूमि पर स्वाभाविक आ मार्मिक छैक। गौरी, गोपाल बाबू मे अपन पिताक छवि देखैत अछि आ तेँ हुनका सँ पत्नी-भावेँ नहि जुड़ि पबैत अछि। ओ रमेशक माय मात्र भ' क' रहि जाइत अछि। रमेशक प्रति ममता आ पतिक प्रति पिता-भावक ग्रन्थि सँ उत्पन्न कुंठा केँ कथाकार किसुन जी बड़ कलात्मक रूपेँ अभिव्यंजित केलनि अछि। सतौत रमेशक प्रति गौरीक स्नेहक अतिरेक, ओकर मृत्यु सँ विक्षिप्त भ' जायब आ गोपाल बाबूक गौरी आ रमेश दुनू सँ मुक्तिक कथा बड़ सहज, बड़ कलात्मक आ बड़ मार्मिक अछि। गोपाल बाबू द्वारा सुग्गाक पिंजरा केँ खोलि देबाक 'मुक्ति-प्रतीक' पर कथाक समाप्ति छैक। अपन पहिल पत्नीक फोटो टाँगब इत्यादि ओहि प्रभाव केँ कने कम क' देलकैक अछि। ई कथा किसुनजीक सभ सँ नीक कथा कहल जा सकैत अछि।

एकर बादक कथा 'प्रतिशोधक संतोष' सेहो एक टा सफल कथा अछि। ई कथा 'काली' नामक एक टा एहन नारीक कथा अछि जे यथेष्ट रूपेँ दान-दहेज नहि अनबाक करणेँ अपन क्रूर पति द्वारा प्रताड़ित होइत अछि आ पति सँ लड़बाक संकल्प क' लैत अछि। कथा मे एहि संकल्पक अभिधानक मनोवैज्ञानिक अभिव्यंजना बड़ प्रभावशाली आ नाटकीय रूपेँ भेलैक अछि। कालीक बुतेँ कप-प्लेट टूटि जाइत छैक आ पति ओकरा पर जूता फेकैत छैक। एहि सँ पूर्वहुँ ओ प्रताड़ित भ' चुकल छलि। एहि अपमान केँ काली सहन नहि क' पबैत अछि आ एक टा छोट शिशु केँ सूतल छोड़ि घर छोड़ि दैत अछि। जयबा काल पतिक नामे एक टा पत्र लिखि जाइत अछि जे ओकरा ताकब व्यर्थ हेतैक। स्टेशन चल अबैत अछि। गाड़ी नहि छैक। प्लेटफार्म पर एक टा युवती केँ एकसरे बैसल देखि क' एक टा रिक्शाबला ओकरा दिस अर्थपूर्ण दृष्टिएँ तकैत छैक। आ तखनहि कालीक 'काली' जाग्रत भ' जाइत छैक आ सम्पूर्ण पुरुष जातिक विरुद्ध ओकर क्रोध उबलि उठैत छैक। तकर बाद ओ रिक्शा पर चढ़ैत अछि आ दुब्बर-पातर रिक्शाबला केँ जोर सँ पैडिल मार' कहैत छैक। भरि बाट ओकरा फज्झति करैत छैक। जोर सँ हाँक, आओर जोर सँ हाँक। मने रिक्शाबलाक रूप मे ओकरा अपन पतिक भान होइत छैक आ ओकरा बलहुँ प्रताड़ित करैत आ ओकर दुब्बर देह सँ टप-टप चुबैत घाम

देखि ओकरा एक टा संतोषक अनुभव होइत छैक। मन मे अत्याचार नहि सहबाक आ पलायन नहि करबाक संकल्प जन्म लैत छैक आ ओ सबल आ निर्भय मने अपन बासा लौटि जाइत अछि।

एहि कथाक भाव भूमि मुख्य रूपेँ मनोज्ञानिक आ प्रतीकात्मक छैक आ एहि मे प्रारम्भ सँ अन्त धरि, संरचनाक कसाव आ भावक घनत्व छैक। छोट रहितहुँ कथा बेस प्रभावी भेल अछि।

'जय-पराजय'क कथा-भार पुन: 'काटर' छैक। इंजीनियरिंग मे पढ़ैत बेटा अपन तमसाह बापक परबाहि नहि करैत अपन विवाह अपनहि ठीक क' लैत अछि बिना दान-दहेज केँ। मुदा कथा मे कोनो कलात्मकता नहि छैक।

'एक टा मन:स्थिति'क विषय मनोवैज्ञानिक छैक मुदा 'प्रतिशोधक संतोष'क तुलना मे ई कथा ओतेक प्रभावी नहि छैक। पत्नी पति पर सन्देह कर' लागल छैक। ओकरा विश्वास भ' गेलैक अछि जे बगलवाली कठमस्त युवतीक प्रति पति केँ आसक्ति भ' गेल छैक आ तकर कारण ओ अपना मे आकर्षणक अभाव मे तकैत अछि। दूरक छत सँ एक टा युवक एकरा अँखिअबैत रहैत छलैक आ ताहि कारणेँ ओहि दिसुका खिड़की बन्द केने रहैत छलि। आइ मुदा ओ जाँच' चाहैत अछि जे ओकर सौन्दर्य मे पहिलुक आकर्षण छैक वा नहि आ से ओ खिडकी केँ खोलि क' ठाढ़ भ' जाइत अछि। अन्त मे शक दूर भ' जाइत छैक। कथा केँ अनेरे विस्तार कए देल गेल छैक।

1966क 'संस्कारक मोह' मे प्रतिपाद्य विषय छिड़िआयल छैक। कलकत्ताक शहरी जीवनक कठिनता आ कुत्सितताक अनेक दृश्य केँ कथा मे ठूसि देल गेल छैक। एक टा मैथिल ललना पाश्चात्य रहन-सहन केँ अपनौने अछि किन्तु तैओ ओकरा अपन संस्कारक प्रति मोह छैक। संरचनाक दृष्टि सँ ई कथा सफल नहि कहल जा सकैत अछि।

एहिना छैक 'तृप्ति-बोध', संरचनाक दृष्टि सँ भसिआयल, बहसल। पति-पत्नीक बीचक स्नेह-सम्बन्ध एकर विषय छैक। बजार मे पत्नी देखैत छैक जे एक टा मनसा, एक टा माउगक डाँड़ मे हाथ देने अपन दुलार केँ प्रदर्शित क' रहल अछि तँ ओकरो होइत छैक जे हमरो प्रति हमर पति एहने किछु किएक ने करैत अछि। आ से अन्हार सड़क पर पति जखन ओही मनसाक नकल करैत अपनहुँ अधवयसू पत्नीक डाँड़ मे हाथ दैत छैक तँ पत्नी केँ एक टा तृप्तिक बोध होइत छैक। कथाक गति-मति आ विषय मनोवैज्ञानिक छैक किन्तु ताहि भावक कथा-रूप अनावश्यक भूमिका आ वर्णन सँ लदि देल गेल छैक।

'इन्टरभ्यू' मे राँची पागलखानाक किछु पागल सभक 'इन्टरभ्यू' अछि। जाहि

युवती सँ रमेश केँ प्रेम छलैक तकरा ओकर पित्ती व्याहि अनलथिन। आ रमेश पागल भ' गेल आ राँची पागलखाना पहुँचा देल गेल। किन्तु कथा मे रमेशक पागलखाना पहुँचब जतेक महत्त्वक नहि छैक ततेक महत्त्वक छैक पागलखानाक बंगाली, मद्रासी, पंजाबी पागल सभक अपनहि भाषा मे डायलॉग बाजब। कथा भार स्पष्ट नहि छैक आ प्रभाव सेहो बड़े पनिसोह छैक।

'आत्मदंशक वेदना' एक टा बचकानी प्रेम-कथा अछि। एहि मे समगोत्र विवाह हो की नहि ताहि समस्या केँ विषय बनाओल गेलैक अछि।

'स्थिति आजुक जिनगीक' संग्रहक सभ सँ कमजोर कथा अछि। एहू कथाक भाव-भूमि मनोवैज्ञानिक छैक किन्तु एकर विषय आ अभिव्यंजना क्षीण आ अस्पष्ट छैक। अपन मित्रक युवती पत्नी केँ देखि नायकक मन मे कामोद्दीपन होइत छनि आ ओ दौड़ि क' अपन पत्नी लग चल अबैत छथि। मुदा सूतल पत्नी हिनक वासना केँ शिथिल क' दैत छनि आ ओ पत्नीक नाम ल' क' चिचिआ उठैत छथि। कथाकार जाहि मनोनैज्ञानिक भाव केँ कथा मे दर्शाब' चाहलनि से भाव खूब स्पष्ट नहि भ' पबैत छैक आ कथा निष्पत्ति बिन्दु पर आबि एक टा कुहेलिका बनि क' रहि जाइत छैक।

एतेक अवश्य जे किसुनजी किछु मनोनैज्ञानिक भाव-भूमिक कथा, जेना— 'मुक्ति', 'प्रतिशोधक संतोष', 'एक टा मन:स्थिति' आ 'तृप्तिबोध' केँ पढ़ि ई प्रतीत होइत अछि जे जो एहि प्रकारक मनोविश्लेषणात्मक कथा उच्च कलात्मक वस्तुनिष्ठता सँ लिखि सकैत छलाह। हिनक प्रारम्भिक कथा सभ, एखुनका समयक तुलना मे शिल्प आ शैलीक दृष्टिएँ पुरान आ कने बीझ लागल सन लगैत छैक जे स्वाभाविके।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक कथा सभक मादे...

जीवकांत

किसुनजीक कथा सभ पर विचार करबा काल किछु पुरान बिसरल बात सभ मोन पड़ि जायब स्वाभाविक अछि।

भारतक स्वतंत्रता एक पैघ घटना थिक। मैथिली साहित्य मे, विशेषत: मैथिली कथा-साहित्य मे, सन् पचासक बाद एक गोट पैघ अंगैठी-मोड़क अनुभव कयल गेल। कथाक जमीन सहसा बहुत बेसी उर्वर भ' गेल। घनेरो कथाकार अपना प्रतिभाशाली बुद्धि सँ मैथिली कथा केँ समृद्ध कर' मे लागि गेलाह। ललित, सोमदेव, राजकमल, मायानंद, धीरेंद्र इत्यादि अनेक कथाकार मैथिली कथा केँ स्तरीयता प्रदान कयलनि।

मैथिली कथा साहित्यक इतिहास पुरान अछि। परंतु मैथिली कथा आने साहित्यिक विधा जकाँ कात-करोट सँ कयल गेल एकाकी प्रयास जकाँ मुँहदुब्बर छल। एहि समय मे आबि क' मैथिली कथा, साहित्यक आन विधाक तुलना मे बड़ वेगवान, बलवान, आ संगोरल काज सन भ' गेल।

एहि समय धरि विश्वविद्यालय सभ मे जेरक जेर मैथिल छात्र लोकनि अध्ययन कर' लगलाह। पाश्चात्य ढंगक शिक्षा-प्रणाली सहसा बहुत लोकप्रिय भ' गेल। प्रत्येक गाम मे बी.ए., एम.ए. लोक होब' लागल। एहि सँ पूर्व उच्च विश्वविद्यालयी शिक्षा अनेक कारणवश थोड़ लोकक उपलब्धि छल।

शिक्षाक प्रचार-प्रसार बहुत बेसी लाभप्रद सिद्ध भेल। मैथिली लेल अनुराग बढ़ल। मैथिलीक मान्यता लेल औनाहटि बढ़ल। मैथिली मे पाठकवर्ग बढ़ल। मैथिली मे लेखक लोकनिक संख्या मे आशातीत वृद्धि भेल।

विश्वविद्यालयी शिक्षा आइयो अपना अन्तस् मे पश्चिम युरोपीय प्रभाव जोगौने अछि। भारतीय परंपरा आ साहित्य ओहि मे विजातीय वस्तु जकाँ अबैत अछि। अंग्रेजी भाषा आ साहित्य लेल आदर अनायास उत्पन्न भ' जाइछ। अंग्रेजी सिखलाक

बाद रूस, जापान, फ्रांस आ आनो आन देशक साहित्य अंग्रेजी भाषाक माध्यम सँ निकट भ' जाइत छैक। अंग्रेजी बहुत चिन्हार आ आह्लादक भ' जाइत छैक आ संस्कृत बहुत अनचिन्हार आ मथदुक्खीक कारण बुझाय लगैत छैक।

एकसठिक दशक मे एक टा मोहावरा बहुत प्रचलित भेल छल—'माटि-पानिक कथा'। बहुत आलोचक मान' लागल छलाह जे मैथिली मे जे कथा लिखल जा रहल अछि, तकर भाषा तँ मैथिली अछि, मुदा कथाक आत्मा दूरागत अछि। कथाकारक दृष्टिकोण, चिंतन आ निष्कर्ष बाहरी आ पूर्व निर्धारित अछि। यद्यपि मैथिली कथा अपना ढंग सँ आगाँ बढ़ैत आ पसरैत गेल, मुदा कथा कें एकर नोंछाड़ बेसी काल लगैत रहलैक जे ओकरा अपन माटि-पानि कें नहि बिसरबाक चाही।

कथा-कविता मे युरोप मे बहुत रास सैद्धांतिक (एकेदमिक) बहस होइत रहल अछि, जाहि मे हेबनि मे फ्रांस प्रायः बहुत आगाँ अछि। संसारक सभ देशक साहित्य एहि बहस सभ सँ प्रभावित होइत रहल अछि। मैथिली साहित्यो एकर अपवाद नहि रहल अछि। मैथिली कथा आइयो विदेशी सैद्धांतिक वाद सभक निङहेस अपना माथ पर टोपी आ मुरेठा जकाँ पहिरैत-उतारैत रहैत अछि। कहियो मैथिली कथा वामपंथी भ' जाइत अछि, कहियो उग्र वामपंथी। कहियो मैथिली कथा नारी-नरक मध्य आकर्षण कें बंधनहीन बनाब' चाहैत अछि आ पहिने सँ प्रचलित सामाजिक रूढ़ि सभ कें तोड़बा लेल दुनू हाथ मे कत्ता उठा लैत अछि। विचार कयला पर आइयो ई बात बुझाइत अछि जे अधिकांश साहित्यिक वाद सभ एखन धरि परिपक्व नहि भेल अछि। जनता, विशेषतः मैथिल जनता धरि ओकर प्रवेश नहि भेलैक अछि। भारतीय जनता अपन प्रयोगशाला मे एहि बाद सभक गुण-दोष भजारि क' ओकरा अंगीकार नहि कयलक अछि। आइयो ई वाद सभ विश्वविद्यालयी कक्षा सँ आ मध्यवर्गक साक्षर परिवार सँ बहार भ' क' गामक जन-बोनिहार धरि नहि पहुँचल अछि।

किसुनजी पुरान सांस्कृतिक परंपराक उत्तराधिकारी छथि, मुदा समाजक लेल नीक प्रत्येक नवका बातक स्वागत कर' चाहैत छथि। एहि अर्थ मे ओ प्रगतिशील छथि। मुदा प्रत्येक सैद्धांतिक वादक ओ अंध-भक्त आ अंध-समर्थक नहि छथि।

जत' कतहु ओ नवका बसात कें रोगाह देखैत छथि, तत' ओ असहमत होइत छथि आ अपन असहमति कें ओ स्पष्ट रूपें रेखांकित करैत छथि। सन् 61 मे लिखल अपन कथा 'पुरान पत्र या टटका बात' मे बहुत बलपूर्वक ओ कहैत छथि—

'अपन उत्पादनक धरातल कें विकृत क' की केयो आगाँ बढ़ि सकैत अछि? मनुष्य जानि-बुझि क' अपना पर बंधनक नियंत्रण लेने अछि। बंधन, हँ-हँ, हम एकरा बंधने मानैत छिऐक। मुदा, ई ओकर शांतिक हेतु आर प्रजनन-शक्ति कें

जीवित रखबाक हेतु आवश्यक अछि—अनिवार्य अछि। मनुष्य बर्बर-युग कें पार क' सभ्य आ सभ्यताक उपासक बनल आगाँ बढ़ल जा रहल अछि। किंतु, विनय, हम पुछैत छियहु जे अपन उद्दाम वासनाक शिकार बनल, अपना चारू कातक कलुष ओ अविश्वासक वातावरण पसारि क' की सरिपहुँ सभ्यताक आडंबर रचि क' आदिम युगक असभ्य आ जंगली मनुष्य हमरालोकनि नहि बनल जा रहल छी? डारविनक अनुसार जत' सँ विकास भेल छल, की पुनः ताहि दिस मनुष्य प्रत्यावर्तित नहि भ' रहल अछि?'

किसुनजीक भाषा आश्चर्यजनक रूपें नवजागरणक एहि उजाहि मे विकृत आ कृत्रिम नहि भेलनि। सहज भाषा जे बाहर-भीतर सँ अनायास अर्थ दैत अछि से भाषा किसुनजी अपन कथा सभ मे कहियो ने छोड़लनि। एक ठाम सँ हुनक कथाक भाषाक अनायास प्रवाह दिस ध्यान आकृष्ट करबा लेल किछु पाँती उठबैत छी—

'कनेक दूर गेल होयब कि हमरालोकनिक बामा कात किदन हुमड़लैक। चिड़ै चुनमुन्नी सब चें-चें कर' लागल। प्रायः बाघ हुमड़ल छल। सब गोटे चिंतित। आब की होयत? कोम्हर पड़ा क' जायब? बचबाक कोनो उपाय नहि, दहिना कात सहजहि कतेक बाँस गहीड़ मे नदी बहैत छल जे देखला सँ पयर मे झुनझुनी भर' लगैत छल। आगाँक परिस्थिति आर अधिक भयंकर। जेना पहाड़क माथ पर ठाढ़ रही आ साठि-सत्तरि हाथ नीचाँ मे सुखायल पहाड़ी नदी छल। ढरकाह जकाँ। ढलुआह पहाड़ रहितैक तखन तँ कोनो बात नहि, मुदा छलैक जेलक देबाल जकाँ सोझ कटान। सभक प्राण मे अदंक समा गेल।' ('रहस्य')

वर-कनियाँक विवाह मे टाका समा गेल अछि। सरकारी कानून आ प्रचार एकरा रोकबा मे असमर्थ अछि। हेबनि मे संसद मे गृहराज्यमंत्री बजलाह अछि जे नवकनियाँक मृत्युक कानूनी जाँच होयत। यद्यपि सन् साठिक आस-पास वैवाहिक समस्या पर ततेक अधिक लिखल गेल जे मैथिली कथा-साहित्य मे वैवाहिक समस्या एक गोट संकट जकाँ लाग' लागल छल आ जोर-शोर सँ ई प्रयास कयल गेल जे मैथिली मे आब एहि विषय पर नहि लिखल जयबाक चाही। किसुनजी सेहो वैवाहिक समस्या पर अनेक कथा सफलतापूर्वक लिखने छथि आ व्यवस्था-काटर पर, समाजक धन-लोलुपता पर बेस प्रहार कयने छथि। 'पुरान पत्र आ टटका बात' मे ओ कहैत छथि—'की समाजक एहि पद्धति कें बदलबाक हेतु, टाका-व्यवस्थाक एहि दुर्दान्त राक्षसक दाँत तोड़बाक हेतु प्रत्येक युवक कें विद्रोह नहि करक चाही?'

दोसर ठाम 'सुभद्राक डायरी' मे ओ कहैत छथि—'होइत अछि जे एहि पुरुष-समाज पर एक्के बेर किएक ने भयंकर वज्र खसि पड़ैत छैक जे स्त्रीगणक ई दुर्गंजन

क' रहल अछि। जँ हमर बुतें होइत तँ हम भयंकर अभिशाप द' क' एहन क्रूर आ वधिक पुरुष-जातिक, जकर पितृसत्ताक समाज की-की ने अनर्थ क' रहल अछि, सौंसे पृथ्वी पर सँ सर्वनाश क' दितिऐक।'

तेसर ठाम 'प्रतिशोधक संतोष' कथा मे कथानायिका काली अनुभव करैत अछि जे 'ओकरा भेलैक जे जँ पुरुषक सवारी वला कोनो ताँगा होइत, जाहि मे पुरुष केँ लगाम लगा क' दौड़ाओल जइतैक, तँ ओ ओहि पर चढ़ि क' लगाम पकड़ि खूब कोड़ा चलबैत।'

'मुक्ति' कथा मे गौरी एक निर्दोष आ निष्पाप बाला अछि जे काटरेक कारणें अनमेल विवाहक ऐंठ खाइत अछि। यौन रूपें जड़ (फ्रिजिड) भ' जाइत अछि। कतबो परिचर्या कयलाक बाद जखन दिवंगता सौतिनिक संतान मरि जाइत छैक, तँ ओ बताहि भ' जाइत अछि। कथा बहुत बेसी आलोड़ित करैत अछि। एहि मे गौरीक मौन बहुत बेसी आक्रामक शब्द सभ सँ अधिक प्रभावोत्पादक अछि।

आधुनिक जीवनक एक कुरूपता थिक जमौड़ा। लोक एक दिस चरित्रहीन भेल अछि। साधारणो प्रलोभन लोक केँ डोलमाल क' दैत छैक। दू गोट प्रलोभन बलवत्तर अछि—पाइक लोभ आ अवैध स्त्री-पुरुषक दैहिक उपभोग। ई प्रलोभन लोक केँ निर्बल बनबैत छैक। दोसर दिस आधुनिक जीवनक दोसर कुरूपता थिक 'थैंकलेस' भ' जायब, कृतघ्न भ' जायब। 'कंडोलेंस' कथा मे एहि बात पर सार्थक ध्यान देआओल गेल अछि।

'मासान्त' कथा मे निम्न मध्यमवर्गीय लोकक आदर्शवादी उधिआन आ आर्थिक क्षयक नीक चित्रण भेल अछि। एहि कथाक अंतिम पाँती सभ देखल जा सकैत अछि—'यादवो सँ बेसी करुणा आ दयनीय भेल महेंद्र ओकर बात सुनि भावहीन नेत्रें अपन कोठली, लरकलहा खाट, पालिस उड़ल सूटकेस, चनकलहा शीशाक गिलास, कारी भेल लालटेम आ ताहू सँ बेसी धुआँयल यादवक मुँह दिस चुपचाप ताक' लागल।'

किसुनजी केँ मनुक्खक भद्रता मे अगाध आस्था छनि। ओ कोनो हालति मे मनुक्खक मनुष्यता केँ झूस आ स्खलित होब' वला वस्तु नहि मानैत छथि। 'रहस्य'क वंशीवादक जे डकैत होयबाक प्रचार आ शंकाक कारण थिक, अंत मे हजारो तीर्थयात्रीक प्राणरक्षक सिद्ध होइत अछि। 'ताँगावाला' कथाक ताँगावाला जे कथारंभ मे उचक्का होयबाक आभास दैत अछि, कथा-समाप्ति धरि जाइत-जाइत अत्यंत श्रेष्ठ चरित्र-वत्ता प्रमाणित क' जाइत अछि।

रामकृष्ण झा 'किसुन' मानवीय करुणाक फूही सँ अपन कथा केँ रम्य आ श्रेष्ठ बना दैत छथि। 'जीवनक मूल्य', 'जीवनक असौकर्य', 'मुक्ति' आदि अनेक

कथा अछि जे मानवीय करुणा सँ ओत-प्रोत अछि।

किसुनजी नीके कयलनि जे ओ अपना समय मे प्रचलित कोनो वादक खुट्टा मे अपना केँ नहि खुटेसलनि। तें हुनक कथासाहित्य श्रेष्ठ आ सार्वकालिक कथासाहित्यक रूप मे देखार भेल अछि। अपना समकालीन सभक बीच ओ बीछल आ बेरायल छथि। अपना समकालीन सभ मे ओ सभ सँ जेठ छलाह। अपना आँखिक देखल अछि जे हुनक समकालीन लेखक लोकनि विवादास्पद होयबाक रूप सँ जतेक चर्चित भेल होथि, ओ लोकनि किसुनजीक वरीयता, सदाशयता आ औदात्यक समक्ष सदा नतमस्तक छलाह।

पंडित-पुत्र आ अपनहुँ पंडित होइतो ओ आश्चर्यजनक सहनशीलता आ नव मूल्यक ग्रहणशीलताक हेतु हमेशा मोन राखल जयताह। हुनक समकालीन किछु पंडित मैथिली रचनाकार लोकनि नवताक प्रति सामान्यत: असहिष्णु आ विशेषत: ओकर वहिष्कारक पैघ पक्षधर छथि।

किसुनजीक आकस्मिक निधन सँ हुनक प्रतिभाशाली लेखन सँ मैथिल जनता वंचित रहि गेल। मरबा सँ पूर्व हुनक रचनात्मक ऊर्जा विस्तृत आ सघन भेल जाइत छल। ओ अपन चरम रचनात्मक उन्मेषक क्षण मे अकस्मात् दिवंगत भ' गेलाह। हुनक रचना सभ छिड़िआयल छल। परम प्रसन्नताक विषय थिक जे ओ राइ-छित्ती भेल रचना सभ हुनक सहस्रो प्रशंसक-पाठक लोकनि केँ एक ठाम भेटि जयतनि आ जे ओकर आस्वादन तथा मूल्यांकनक उचित अवसर प्रदान करत।

मैथिली अकादमी पत्रिका : 1982

किसुनजीक कथाकार

उदयचन्द्र झा 'विनोद'

किसुनजी पण्डित होइतहुँ प्रगतिशील छलाह। ओ मानैत छलाह जे युग नवतेक थिकैक आ तें नव लेखनक सिद्धान्त-विवेचन मे रत रहैत छलाह। ओ रूढ़िभंजक आ नियामक छलाह। ओ परम्पराक भित्ति पर नव महल ठाढ़ करबाक काज मे आजीवन लागल रहैत छलाह। अज्ञेयक 'तार सप्तक' जकाँ ओ नव कविताक एक वाहिनी कैं आगाँ अनबाक लेल योजनाबद्ध ढंग सँ काज कयलनि। 'प्रचोदयात्'क माध्यमे नव कथाकार, नवतुरिया मंडलक कथा सभक प्रेरक भेलाह। यात्रीजीक 'नवतुरिए आबओ आगाँ'क सिद्धान्तक ओ अपना जीवन मे पालन कयलनि।

हिनक कथाकार मध्यवर्गीय जीवनक कथा कहैत छल। जोर मानवीय पक्ष पर छलनि। हिनक परिवेश ग्रामीण छलनि आ कलकत्ता, राँची, गया आ पटनो मे जा हिनक दृष्टि मनुक्खक ताकहेर मे रहैत छल। घर मे उसिनाइत गृहिणी, दहेजक वेदी पर होम होइत बाला, गयाक सड़क पर दौड़ैत तांगावाला, प्रतिशोधक आगि मे धहधह जरैत महिलाक शिकार रिक्शाबला, मोदिआइनिक थारी सँ खसल झिल्ली कैं उठबैत भुखायल छौंडा हिनक दृष्टि पर छलनि आ निर्बलक अड़हुल-सन लाल मुँह आ नोर मे डूबल आँखि हिनका सीदित करैत छलनि।

किसुनजी परिवर्तन चाहैत छलाह। हुनक विश्वास छलनि जे स्थिति बदलतैक। ओ तकर जोगार मे रहैत छलाह। बजार बनैत जा रहल परिवेश मे ओ सतत मनुक्खक संधान मे रहैत छलाह। हिनक कथा 'तांगावाला'क कन्हाइ कैं उदाहरणस्वरूप देखल जा सकैत अछि जे गया स्टेशन पर रिक्शावाला सँ झगड़ाक' अपना तांगा पर कथानायक कैं बैसबैत छनि, अपना डेरा ल' जाइत छनि, आ बारह वर्षक पूर्वक परिचयक आधार पर स्वागत-सत्कार करैत छनि। गया सँ चलबा काल कन्हाइ एक जोड़ा 'इयरिंग' पकड़ा, जे हिनक मित्र-पत्नीक आइ सँ बारह वर्ष पहिने ताँगा पर छुटि गेल छलनि, सत्ययुगक कन्हाइ बनि जाइत छनि।

हिनक कथा सभक नारी-पात्र पाथरक मुरूत नहि अछि। काली अपन पति जीवकान्त (प्रतिशोधक सन्तोष) सँ तंग भ' एक टा दोसर पुरुष रिक्शावाला कैं अनेरे रौद मे दौड़ा-दौड़ा प्रतिशोध लैत अछि। 'स्वयंवर'क दीप्ति विवाह लेल इन्टरभ्यू लेब' आयल उद्धत राजीव कैं अस्वीकार क' दैत अछि। 'सुभद्राक डायरी' नारी-चेतनाक लेल बेस चर्चित रहल अछि।

किसुनजी रोमांटिक लोक छलाह। नारी पात्रक संग रमब हिनका पसिन्न छलनि। 'संस्कारक मोह'क एयर होस्टेस संग कलकत्ता मे पहिल भेटक वर्णन एहि प्रसंग देखल जा सकैत अछि : 'ओहि दिन जैक्सन लेनक पिक्चर इम्पोरियम मे मदन बाबू सँ भेंट नहि भेल तँ कैनिंग स्ट्रीटक चौधरी ब्रदर्स मे जाइत छलहुँ तँ देखलियैक जे एक टा स्लीवलेस कसल-कसल ब्लाउज आ कसल-तनल आधुनिक ड्रेस मे सुसज्जित एक मुक्तोदरा अत्याधुनिका युवती आकर्षक पोज सँ सिकरेट पिबैत पिक्चर इम्पोरियम सँ बहरा रहलि अछि। प्रसाधनपूर्ण मुँह, कारी-कारी केश-राशि, बेश कटगर नाक, लाललाल ठोर आ पैघ-पैघ आँखि, पातर, नाम, सघन एवं कारी भौंह, एक हाथ मे चमकैत चेन, चेन मे घड़ी आ दोसर हाथ निराभरण, गरदनि मे चकमक करैत पाथरक सुन्दर सन माला, ललाट पर साधना कट केशक छिड़िआयल सन किछु लट।'

एक टा आर उदाहरणस्वरूप 'स्थिति आजुक जिनगीक' मित्र विमलकान्तक पत्नीक वर्णन मनोजक दृष्टि मे देखल जा सकैत अछि : 'कोठली सँ भनसाघर जाइत कालक विमलक पत्नीक पीठ, पीठपरक साड़ी, साड़ी तरक एकजुट्टी कयल केश, तकरा छोरक ठीक नीचा मे (चलैत कालक) दू भाग मे विभाजित उधकैत असाधारण नितम्ब सहसा क्षण भरिक हेतु चमकि उठलैक।

मनोज चोट्टे उठि अपन डेरा जाइत अछि आ पत्नी मीनाक्षी कैं पड़ल देखि ओकरा मे रोग जन्म लैत छैक। जँ मीना ओकर पत्नी नहि रहितैक, ओकरा स्वाद लागल नहि रहितैक तँ अवश्ये चूमि लैत।'

छोट-छोट बात, दैनन्दिन मे घटित साधारण सनक घटना, राग-विराग, जय-पराजयक विलक्षण अभिव्यक्ति देलनि किसुनजी। हिनक नारी भोग्या नहि, अपितु अपन स्वतन्त्र सत्ताक प्रति सतत साकांक्ष अछि। 'एक टा मन:स्थिति'क हेमा कैं अपन सत्ताक अस्वीकार असह्य बुझना जाइत छैक। विद्रोहक धुआँ ओकरा मोन कैं औना दैत छैक। ओकरा अपन सामनेबला मकानक पंजाबक शरणार्थी आर. के. तुली मोन पड़ैत छैक जे आरम्भ मे बहुत दिन धरि अपन तृषित नजरि सँ खेहारैत रहल छलैक। अपन पतिक अचला मे आसक्तिक विरोध मे ओ तुली दिस तैयार होइत अछि। मुदा एतहि कथाकार उपस्थित भ' जाइत छथि। पति मदनक नाम आयल एक पत्र हेमाक भ्रमक निवारण क' दैत अछि।

मर्यादाक सीमा-रेखाक उल्लंघन किसुनजी कैं स्वीकार नहि छलनि। हिनक एक

कथा अछि 'प्रेम नित्य थिक'। दाम्पत्य-जीवनक विलक्षण कथा कहैत अछि 'संकल्पक आधार'। शशिधर सन गम्भीर आ मनस्वी तथा पूर्णिमा सन मृदु, अल्ट्रा मोडर्न सुन्नरि पति-पत्नी आपस मे लड़ैत अछि मुदा दुहूक मध्य अंकुरित प्रेमक स्रोत नहि सुखाइत अछि। दृश्य देखि देबू विस्मित भ' जाइत अछि, विमुग्ध। इएह झगड़ा थिकैक? तखन सिनेह ककरा कही? प्रेमक ई रूप आजन्म कुमार रहबाक देबूक संकल्प केँ डोला क' राखि दैत अछि।

'आत्मदंशक वेदना'क महालक्ष्मी, ममता-मधु-माहुरक प्रतिमूर्ति नारी हिनक सीता थिकथिन। 'मुक्ति'क गौरी अपन ममत्व मे बताहि भ' जाइत छथि। 'अन्हार आ इजोत'क अनुराधा अपन बांझ होयबाक दंश सँ आहत भ' औनाइत छथि। 'एक अंक तीन दृश्य'क देवीजी आधुनिक परिवेशक सफलताक गुर जानयबाली आधुनिका छथि। किसुनजीक पात्र सभ निरन्तर जीवन जगत मे अबैत परिवर्तनक प्रतिनिधि लगैत अछि। सातम दशक मे हिनक अधिकांश कथा लिखल गेल आ कोनो सजग अध्येता तत्कालीन स्थितिक प्रतिबिम्ब हिनक रचना सभ मे ताकि सकैत छथि। विचार आ संस्कृति मे अबैत विकृतिक हिनक च-तू क' पता छलनि आ हिनक रचना-जगत कतहु सँ बन्द नहि लागत। हँ, ई बात अछि जे तत्कालीन राजनीति सँ संपृक्त रचना हिनका मे स्पष्टतया नहिएँ जकाँ भेटत। मुदा जहाँ धरि सामाजिक सरोकारक कथा अछि तँ से एहिठाम प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध अछि।

पारिवारिक स्थिति, जीवनक असौकर्य, जय-पराजय, सम्बन्धक टूटब, राग-विराग, उलहन-उपराग, हिनका कथा मे विद्यमान अछि आ उपस्थित अछि रचनाकारक ई चिन्ता जे मानव कतहु एहि भीड़ मे हेरा ने जाय। एहि प्रसंग हिनक प्रायः अन्तिम कथा 'स्थिति आजुक जिनगीक'क अन्तिम अंश कथ्य केँ फरिछा दैत अछि : 'ओ आजुक जीवन-संघर्ष...युग वैषम्य...सभ किछु मे कृत्रिमता... मिलाबटि...दू-दू बच्चाक मायक समयान्तराल...सहवास आ सहस्थितिक नैरन्तर्य...सदति बनल रह'बला मानसिक तनाव...कुण्ठा...प्रतिक्षणक एक टा अतिरिक्त सतर्कता...व्यवहार, जीवनक रंग-बिरंग खोलक अनिवार्यता...आरो किदन-कहाँदन, सभ मे पिसा क' चूर-चूर भेल, थाकल-ठेहिआयल मोन केँ अपना सँ फराक फेकि क' एक बेर खूब ऊष्मा आवेग सँ मीना केँ शुद्ध प्रेम कर' चाहैत छल। ओ ई सामर्थ्य पयबा लेल व्याकुल भ' उठल। ओ एक टा अतिरिक्त प्रयत्न क' जोर सँ चिचिया उठल 'मी ऽऽऽ...ना ऽऽऽ...।'

अपन परिवेशगत सीमा मे किसुनजी अदना लोकक जीवनक प्रामाणिक कथा बड़ विलक्षण शैली मे कहल अछि।

आरंभ : 7 (जून, 1996)

किसुनजीक कथा : सामाजिक सरोकारक गाथा

सुकान्त सोम

पंडित रामकृष्ण झा 'किसुन'क प्रथम मैथिली कविताक प्रकाशन 1945 ई. मे भेल रहनि। एकर नौ वर्ष बाद हुनक पहिल कथा 'वैदेही'क सितम्बर 1654 ई.क अंक मे छपलनि। कवि किसुन प्रौढ़ भेलाक बादे कथाकार किसुनक जन्म भेल आ हुनक ई कथा यात्रा 1669 ई. धरि चलैत रहल। हुनक अन्तिम कथा 'मिथिला मिहिर'क 14 सितम्बर, 1969 ई.क अंक मे प्रकाशित भेल रहय। कथाकार किसुनक पन्द्रह वर्षक एहि कथा-यात्राक भूमि कोन रहलनि किंवा हुनक कथा पात्र कोन संसार केँ सिरजैत रहल किंवा एहि यात्राक कोन-कोन आ केहन-केहन पड़ाव रहलैक, एहि सभक प्रति जिज्ञासा सहज पाठकीय उत्सुकता थिक। वस्तुतः ई आइयो आकलनक विषय अछि जे मैथिलो काव्य-संसार केँ अपन पीठार-रंग सँ ढौर'-रंग' बला एहि काव्य पुरुषक कथा जगत मे कोन तरहक उपस्थिति रहल।

प्रौढ़ कवि किसुन मैथिली कथा जगत मे 'जीवनक मूल्य' कथा सँ प्रवेश कएलनि आ 'स्थिति आजुक जिनगी' सँ एहि यात्राक अन्त कयल। हुनक बाइस गोट कथा छनि। ओना सामान्यतः बाइस टा कथा कोनो बड़ पैघ सम्पदा नहि होइछ जकरा आधार पर कथाकारक आकलन कएल जाए। मुदा, मैथिली संसार मे ई संख्या कोनो छुछुन्न सम्पत्तियो नहि मानल जाए जत' एखन धरि अल्प लेखनो पर सहज स्वीकृतिक ठोस परम्परा रहलैए। ओहुना, एतबो कथा सम्पत्तिक आधार पर पैघ कथा-संसारक सृजन असम्भव तँ नहि अछि। मुदा, ई बात एहि पर निर्भर करैत अछि जे कथाकार उपलब्ध सामाजिक परिवेशक कोन तत्त्व केँ सृजनक आधार बनबैत अपन कथा संसार आ कथा पात्रक निर्माण करैत अछि। उज्जर दप-दप पीठार पर कोन रंगक टीपकारी करैत अछि। कथा निर्माणक यैह प्रक्रिया आ एकर परिणति ओकरा सृजन परम्परा सँ जोड़ैत छैक।

ओना तँ 'जीवनक मूल्य' किसुनजीक पहिल कथा छनि। मुदा, हुनक

कथाकारक मुखर अभिव्यक्ति 'संकल्पक आधार' कथा मे भेटैए। 1960 ई. मे 'अभिव्यंजना' मे प्रकाशित एहि कथा केँ, किसुन कथा साहित्यक मूल आधार मानल जा सकैए। ओना 'वैदेही' (अप्रैल 1957) मे प्रकाशित 'प्रेम नित्य थिक' केँ ताहि समय मे नीक जकाँ पढ़ल गेल होएत। परञ्च, ओहि कथा केँ किशोर मानसक कोमल तन्तुक सनातनी अभिव्यक्तिए टा मानल जा सकैए। 'संकल्पक आधार' केँ एहि तरहक कोनो फार्मूला मे नहि बान्हल जा सकैछ। एक टा सामान्य भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार आ ओकर राग-विराग सँ परिपूर्ण ई कथा सहज प्रवाह आ विस्तारक लेल स्मरण कएल जाइत अछि! यैह ओ कथा थिक जकरा मे किसुनजीक कथा लेखनक सभ तन्तु अछि। किसुनजी सहज मानवीय सम्बन्धक कथाकार थिकाह। ओ व्यक्तिक सत्‌गुण मे भरोस रखैत छथि आ हुनक सामाजिक सरोकारक यैह मूल घटक छनि। जँ से नहि रहैत तँ चन्द्रकिशोर बाबू (सुभद्राक डायरी) सुभद्राक ओत' किए जइतथि आ ओकर पिता केँ अपने पिता जकाँ किए मानितथि? कन्याक साक्षात्कार लेल अपन मित्र संगे गेल दिवाकर (स्वयंवर)केँ किए कष्ट होइतनि? गौरी (मुक्ति) अपन सतौतक निर्जीव देह केँ कसकसाक' किए पकड़ितथि आ 'स्तब्ध, पाषाण, भावशून्य' किए होइतथि? कथाकार किसुनक मूल चिन्ता व्यक्तिक गरिमाक रक्षा रहलनि। ओ अपन कोनो पात्र केँ पराजित होइत नहि देखलनि से 'मासान्त'क महेन्द्र किंवा 'आत्मदंशनक वेदना'क नायक हो किंवा 'तृप्ति-बोध'क कमला! मानवीय गरिमाक रक्षाक उत्तम कथा थिक 'जय-पराजय'। पुत्रक इच्छा केँ अपना तरहें स्वीकार करैत रामदेव बाबू हारैत-हारैत जीति जाइत छथि।

किसुनजीक कथाकार अपन डेढ़ दशकक यात्रा मे काटर आ एहने वैवाहिक समस्या सँ सीधा-सीधी लड़ैत अछि। काटरक कारणें उच्चवर्गीय मैथिलक टुटैत सामाजिक तन्तुक पहिचान किसुनजी केँ मैथिलीक बहुतो सिद्धहस्त ओ प्रवीण कथाकार सँ बेसी नीक रहनि। एतबे नहि, हुनक मानब छनि जे एहि समस्याक समाधान यैह समाज करत, कोनो देवदूतक अवतरण एहि लेल नहि हेतैक। 'सुभद्राक डायरी', 'स्वयंवर', 'जय-पराजय', 'पुरान पत्र आ टटका बात' आदि एकर नीक उदाहरण थिक। ई अनायास नहि जे वैवाहिक समस्या सँ सीधा-सीधी लड़ैत किसुनक कथा सभ मे हुनक कथाकारक सभ टा वैशिष्ट्य समाहित अछि। एकरा बाद जँ हुनक वैशिष्ट्य देखैक हो तँ 'संकल्पक आधार' आ तृप्ति बोध' सन कथा मे ताकल जा सकैए जे खाँटी पारिवारिक आ दाम्पत्यक राग-विराग केँ विशुद्ध मैथिल जकाँ अभिव्यक्ति करैत अछि। मुदा, किसुनजी जखन-जखन एहि सँ फराक हैबाक चेष्टा कएलनि, ओ सफल नहि भ' सकलाह। एहना स्थिति मे ओ खाहे कथा केँ सम्हारि नहि सकलाह, खाहे प्रस्तुति मे कतहु ताजगी नहि आनि सकलाह। एकर सभ सँ

उपयुक्त उदाहरण 'कंडोलेंस', 'स्थिति आजुक जिनगीक', 'प्रतिशोधक सन्तोष' आदि कथा थिक।

कथाकार किसुनक काल खण्ड भारतीय समाजक लेल बड़ महत्त्वपूर्ण छलैक। एहि उप महाद्वीपक कतोक उथल-पुथलक साक्षी ई काल खण्ड अछि। उप महाद्वीपक अन्य कतोक महत्त्वपूर्ण घटनाक बीज एही काल खण्ड मे छीटल गेल छल। हुनक कथाकारक जहिया जन्म भेल तहिया एहि उप महाद्वीपक सम्पूर्ण वयस्क आबादी पहिल बेर अपन राजनीतिक-आर्थिक नियतिक निर्धारणक हेतु सब सँ पैघ जनतांत्रिक अधिकार—मताधिकारक उपयोग क' चुकल छल आ जहिया हुनक कलम बन्द भेलनि तहिया एहि भूखण्डक आबादी जनतांत्रिक व्यवस्थाक नव उत्तराधिकारीक अपन इच्छाक अभिव्यक्ति क' चुकल छल। अर्थात् ई देश व्यापक पैमाना पर गैर कांग्रेसवादक स्वाद चीखि चुकल रहै। बिहार मे सेहो ई प्रयोग भ' चुकल छल। ऐतिहासिक बाढ़ि 1966-67क अभूतपूर्व अकाल केँ बिहार भोगि चुकल छल। 1954 सँ 1967 धरिक कतोक महत्त्वपूर्ण छात्र आन्दोलनक गवाह मिथिला आ बिहार अवसरवादी राजनीतिक नेतृत्वक पीड़ा भोगि लेने रहै। समाजक निर्णायक घटकक रूप मे धनतंत्रक उदय भ' चुकल छल आ बाहुबली वर्गक उदय भ' रहल छलैक। संयुक्त परिवार व्यवस्थाक तन्तु सभ छहोछित्त भ' फाटि रहल छल। गाम सँ शिक्षित-अर्द्ध-शिक्षित आ अशिक्षित युवा वर्ग चुट्टीक रेखा जकाँ नगर-महानगर दिस दौड़ लगाब' लागल छल। पारम्परिक ग्रामीण सामाजिक प्रणालीक बदला व्यवसायी नागर मानसिकता अपन जाल पसारने जा रहल छल। कृषि संस्कारक तन्तु तेजी सँ कमजोर होम' लगलै। आ गाम सँ बाजार बनल सुपौल सन मिथिलाक अनेक पीठ नागर संस्कारक नमूना बन' लागल। रेलवे स्टेशन आ बाजार सभ मे रमजानीक ताँगा नहि रिक्शाक प्रचुरता आ माँग लगातार बढ़ैत जाइत छलैक। आ एहि सभ कथूक संग-संग आभिजात्य मैथिलक विवाह संस्थान केँ काटर तथा तत्सम्बन्धी समस्या बेसी सँ बेसी गछारने जा रहल छल। उच्चवर्गीय मैथिलक ई संकट किसुनजीक कथाकारक जन्म सँ पहिनहि सँ सुरसाक मुँह जकाँ अपन आकार बढ़ौने जा रहल छल। सामाजिक स्तर पर एहि राजनीतिक-आर्थिक आ सांस्कृतिक परिघटनाक संगहि मैथिलीक कथा सेहो अपन पुरान केंचुल केँ उतारि नव जमीन आ नव फलक ग्रहण क' रहल छल। 1950-60क दशक मे ललित-राजकमल-मायानन्द आ तकर बादक दशक मे जीवकान्त-राजमोहन-प्रभास अपन सनगर उपस्थिति दर्ज क' चुकल छलाह। पहिल त्रिगुट उपलब्धि साबित भ' चुकल रहै आ दोसर केँ उपलब्धिक दर्जा भेटि रहल रहैक। सुभाषचन्द्र यादवक पीढ़ी सेहो हुलकी मार' लागल रहै। एहि दुनू दशकक कथाकारक संग-संग किसुनजीक समवयसी कथाकार लोकनि सेहो सक्रिय छलाह।

ई ओ कालखण्ड छल जाहि मे मैथिली कथा अपन वस्तु ओ भंगिमा मे आधुनिक भारतीय भाषाक कथाक समानान्तर स्वयं केँ ठाढ़ क' रहल छल।

समाज आ साहित्यक यैह काल-खण्ड किसुनजीक रहनि। मुदा अपन कविता मे सदैव नव भावभूमि केँ तकनिहार किसुनजीक कथा मे कोसीक बाढ़ि सँ झमारल उजड़ल-उपटल कोसीक हाक व्यथा नहि आबि सकल। रौदीक मारल खेतिहरक ललाट पर चुहचुहाइत पसेनाक बुन्न सेहो नहि अछि। मनिऑर्डरक किंवा कलकतिया पेटीक प्रतीक्षा मे मुँहथरि लग ठाढ़ मैथिल परिवार सेहो नहि अछि। पश्चिम या पूरबक कोनो महानगर मे गेल सुपौलक कोनो बेरोजगार युवकक संघर्ष सेहो नहि अछि। टुटल संयुक्त परिवारक अतीत मोह सँ पीड़ित कोनो बूढ़ मैथिलानीक व्यथा-कथा नहि अछि। मुदा हुनक कथा मे काटर व्यवस्थाक दंश सँ आत्महत्या केनिहार सुभद्रा छथि। एहि समस्या सँ लड़ैत चन्द्रकिशोर बाबू किंवा निरंजन छथि। सहज दाम्पत्यक राग-विराग सँ भरल शशिधर आ पूर्णिमा छथि, कमला आ महेश छथि। मानवीय सतगुण ओ मानवीय गरिमाक रक्षाक लेल संघर्षरत नायक सभ आ एहि सँ जन्म लैत सामाजिक सरोकारक गाथा किसुनजीक कथा मे अछि।

किसुनजीक कथा यात्राक यैह सीमा ओ उपलब्धि थिक। हुनक काल-खंडक सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक परिघटना आ सांस्कृतिक ओ साहित्यिक परिदृश्यक मध्य किसुनजीक कथा कतोक दृष्टिएँ छुछुन्न अछि। कतौक कसौटी पर हुनक कथा तत्कालीन मानवीय संकट सँ बड़ दूर ठाढ़ अछि। मुदा किसुनजीक कथाकार बड़ पैघ सामाजिक संकट-काटर ओ अन्य वैवाहिक समस्या सँ बारम्बार सीधा-सीधी टकराइत अछि। एही ल' क' चकभाउर दैत अछि आ एहि संघर्षक सोद्देश्य कथा कहैत अछि। भारतीय समाज केँ ई संकट आरो बेसी गछारने जा रहल अछि। आ एहि संकट सँ संघर्षक प्रत्येक पड़ाव पर किसुनजी अपनत्व सँ भरल चिन्तातुर अभिभावक जकाँ ठाढ़ छथि। आ एही लेल—मात्र एतबे टा लेल—किसुन जीक कथा ओ कथाकार आइयो प्रासंगिक अछि।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

रामकृष्ण झा 'किसुन'क कथा

कुणाल

सत् आ असत्क विवेक कखनो तेहन सोझ आ सरल नै होइ छै जकरा ठाँहि-पठाँहि वा दू टूक कहि आ मानि लेल जाय। कारण, जे सत्य कखनो निरपेक्ष नै होइए। ओकर समय, व्यक्ति आ परिवेश सापेक्षता अवश्यम्भावी छै। अतएव कोनो वस्तुक विवेचन मे एहि सबहक भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भ' जाइ छै। फलतः, व्यापक जीवन जगत सँ निरपेक्ष, निर्लिप्त आ मतलब-मुक्त भ' क' कैल गेल काज व्यक्तिवाचक सँ बेसी भैए नै सकैए। एकर अतिरिक्त, रचनाक सन्दर्भ मे, साहित्य सृजनक जे वास्तविक जीवन भूमि होइ छै से पाठक तक आबि क' परिस्थिति, प्रतिक्रिया, बाह्य एवं अन्तः जीवनक सम्बन्धक चालनि सब सँ छनाछना क' बेसीकाल नितांत वैयक्तिक भावबोध सँ जुड़ि जाइ छै। परन्तु आलोचनाक लेल व्यापक भावबोधक सघनता आ गहराइ अत्यन्त आवश्यक हेबाक चाही। तखने सम्भव छै जे आलोच्य रचनाक तुलना समवर्ती, परवर्त्ती अन्य रचना सब सँ होइ। विभिन्न समय पर चल' बला ट्रेंड एवं सामयिक सत्य सब सँ ओकरा जाँचल-परखल जाय। एहि लेल भाषा आ देश-कालक सीमा सँ सेहो मुक्त भेल जा सकैए अथवा मुक्त भ' जेबाक चाही। एकरा लेल समय आ स्थान चाहबे टा करी। से तँ अछि ने (सम्पादक सँ सत्यापित करबाओल जा सकैए)। एहना मे रामकृष्ण झा 'किसुन'क कथा पर जे किछु आगाँ कहल जायत तकरा एक टा पाठक इकाईक आब्जर्वेशन रचना-विशेषक एप्रीसिएशन बुझबाक प्रयासे मानल जाय।

कथाक सत्य, जीवनक सत्य सँ अनुप्राणित होइए। वास्तव मे घटल कोनो घटना ओकर रचनाक सत्य भ' सकै छै। इहो भ' सकै छै जे ओकर सम्पूर्ण कथानक वस्तुतः 'भोगल' यथार्थ केँ निरूपित करैत हो। परन्तु कथा रिपोर्ताज तँ अछि नै। ओ अखबारी विवरण सँ आगाँ किछु होइए। ओ वर्णित घटनाक सत्यताक दावा सप्रमाण उपस्थित नै करैए। अतएव कथा मे वर्णित सत्य, कथाक सत्य भेल ने कि जीवनक। इएह

ओ बिन्दु अछि जत' ओ अखबार सँ फराक भ' क' विशिष्टता दिस प्रस्थान करैए। एहिठाम सँ हम रचना-विधान, रचना-प्रक्रिया, शिल्प आ विचारधाराक बात कर' लगैत छी।

हमरा जनैत कथा, सम्बन्धक (सब तरहक) स्पाइन पर विवरणक (अन्त: आ बाह्य) रिचनेस सँ आकार ग्रहण करैए जकर उद्देश्य होइ छै पाठक केँ ओहिठाम केन्द्रित केनाइ जे कथाक उत्स छै, केन्द्र छै। ठेठ शब्द मे एकरा थीम कहल जाइए। इएह थीम रचनाकारक विचारधारा, ओकर मूल्य आ संवेदनाक सापेक्षता केँ रेखांकित करैए। एहि थीम, बॉडी आ स्पाइनक संरचनात्मक विधानक संग लगै छै शब्द - विन्यास आ वाक्य-विन्यासक निजी शिल्प जे कथा केँ रोचक बनबैत, पहिने पूरा पढ़बाक लेल आ बाद मे सोचबाक लेल विवश करै छै। सब सँ अन्त मे भले कहि रहल छी परन्तु कथू सँ कम नै होइ छै सांस्कृतिक विशिष्टताक योगदान। ई योगदान कथा केँ संस्कृति-विशेषक कथा बनबैए। तखन ओ कथा कतबो भाषान्तर उपरान्तो अपन मौलिक संस्कृति विशेषक कथा बनल रहि सकैए।

'स्वयंवर' मे 1654 सँ 1969 ई. धरिक किसुनजीक बाइसो कथा मे सँ ठीक आधा स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि। ई सम्बन्ध, कामेतर, प्लेटोनिक, सेंटीमेंटल, रूमानी, सेंसुअल, सेक्सुअल, ह्यूमेन, इनह्यूमेन, बारबेरिज्म तकक यात्रा करैए। परन्तु एहि सब मे सँ 'मुक्ति' (1964), 'प्रतिशोधक सन्तोष' (1965), आ 'तृप्ति बोध' (1967) के अतिरिक्त बाकी कथा सब थीमक प्रति वैचारिक संशय तथा बॉडीक थिननेस सँ पीड़ित बुझाइए। हमरा जनैत एकर कारण छै अतिभावुकता आ रूमानियतक ओवर डोज। 'प्रेम नित्य थिक' (1957)क प्रेम 'लव विथ नेक्स्ट डोर नेबर' जकाँ होइतो जमीनी कम आ वायवीय बेसी अछि। एत' 'प्रेम' ने कोनो तेहन संकट उत्पन्न करैए आ ने ओ चरित्र मे कोनो विशिष्टताक समावेश करबैए। पत्र-मित्र जकाँ ई आ किछु भावुक बात सब क' क' निष्कर्ष राखि दैए-प्रेम नित्य थिक। (आ कि प्रेम मनुष्यक भृत्य थिक?)

'संकल्पक आधार' (1960) कथा वाचकक 'विवाह नै करबाक संकल्प केँ तोड़बाक लेल रचित बुझाइ छैक। परन्तु ई संकल्प कैले किए गेल? एत' कथा मौन अछि। हमरा हिसाबे इएह छै स्पाइन आ बॉडीक थिननेस। पति-पत्नीक बीच आरोप-प्रत्यारोपक विस्फोट कोनो बात पर, बात-बात पर आ बेसी काल बेबात पर होइते रहै छै। एकर कारण की? उत्तर कखनो सहज आ सर्वमान्य नै रहलैए। तैयो उत्तर तँ ताकल जेबाक चाही। भ' सकैए असमान एनाटोमी, साइकोलोजी एवं जीवन-दृष्टिक दुआरे ई झंझ-मंझ दुनू केँ रिलैक्स करैत होइ आ जीवन मे एक टा गति बना क' राख' मे सहायक होइत होइ। एक दोसरा पर आरोप प्रत्यारोपक बरखा

सँ ओ प्रेमक प्रदर्शन करैत हो। तखन एक टा वा अनेक फैक्टर भ' सकै छै जे दुनू केँ अन्ततः सन्तुलित करैत हो। परन्तु कथा एहि सब सँ निरपेक्ष रहैत सोझे विवाह नै करबाक संकल्पक आधार केँ घुसका दैए। जहिना ई आधार बनल रहय, तहिना टुटियो गेल।

एक टा मन:स्थिति (1966) मे नारीक दृष्टि सँ स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध केँ देखल गेलैए। एहि मे एक टा 'ओ' सेहो छै। इएह 'ओ' ओहि मन:स्थितिक निर्माण करैए जे स्त्री केँ अपना पतिक लेल 'मदन नामक व्यक्ति'क शीर्षक देबाक मनोदशा मे अनै छै। एहि तरहे एक टा चरित्र बनै छै जे बिना तर्क वा प्रमाणक कसौटी पर कसनहि निर्णय लैए—पति सँ घृणा करबाक आ अन्त मे एक टा पत्र पढ़िक' घृणा सँ मुक्त भ' जेबाक। एहि मे कहबाक की छै? स्त्री ओहिना निर्णय करैए? एत' हमरा एक टा प्रहसन मोन पड़ि रहलए। ओइ मे राजा लग एक स्त्री कोनो बेतुका फरियाद करै छै। राजा पुछै छै जे स्त्री केँ माथ नै होइ छै की? दरबारी जवाब दै छै जे होइ तँ छै मुदा मात्र जूड़ा बनेबाक लेल। इहो कथा ओहि प्रहसनक मूलाधार सँ संपृक्त बुझाइए।

इन्टरव्यू (1968) आ आत्मदंशक वेदना (1968) प्रेम-कथा हेबाक आभास दैत मात्र प्रलाप करैए। इन्टरव्यूक रतीश पागल भ' गेल किएक तँ ओकर संयोगिता केँ ओकर पित्तीए बियाहि लेलकै। कोना आ किए केँ हड़बड़ी मे सलटबैत कथा पागलखाना मे चारि-पाँच टा पागलक सॉलिलिक्यू मे मनोयोग पूर्वक बाझि जाइए। किए? हमरा लगैए-पागलखानाक वातावरण निर्मितिक लेल। मुदा कथा तँ रतीशक विडम्बना केँ केन्द्र मे रखने छल। से राखले रहल आ कथा पागल सबहक प्रलाप सँ सतही मनोरंजन देब' पर लागि गेल। आत्मदंशक वेदनाक नायक पागल तँ नहि भेल मुदा बाट वैह धेने अछि किएक तँ ओकर प्रेमिका समगोत्री भ' गेलै। तखन? तखन की? नायक छटपटा रहलाह अछि। एहन सन जे प्रेम कर' सँ पहिने गोत्र किए ने पुछि लेलक अथवा मैथिल ब्राह्मण भ' क' किए जनमल जत' विवाह मे गोत्रक महत्त्व देल जाइ छै। भ' सकै छल जे नायक विवाह करबाक निर्णय क' लैत। मुदा से कोना सम्भव छै। एक तँ ओ विद्यार्थी अछि दोसर स्वतन्त्र निर्णयक आत्म विश्वास कत' सँ अनैत! परन्तु कथाक उद्देश्य एहि मे सँ कोनो तथ्य केँ सोझाँ रखबाक नै बुझाइ छै। गोत्र मिलि गेलै, नायक आत्मदंशक पीड़ा सँ ग्रस्त भ' गेल। बस!

स्पाइनक सन्दर्भ मे उपरोक्त कथा सब सँ फराक छै 'स्थिति आजुक जिनगीक' (1969)। एहि मे नायक मित्र-पत्नीक पृष्ठ भाग देखि काम-संतप्त भ' उठैए। डेरा पहुँचैए। सुतलि पत्नी मे नख शिख वर्णनक किछु लक्षण सब मिलै छै। पहिल स्टेप (चुम्बन) दिस बढ़ैए। आह! गुमसरानि गंध! बस! आरम्भ भ' जाइए प्रलाप आ

मात्र प्रलाप। परन्तु अन्हार-इजोत, स्वयंवर, मुक्ति आ तृप्तिबोधक नायिका सब 'नीक' स्त्री सब अछि। पद्मिनी, हंसिनी सनक किछु। अन्हार-इजोत (1962) मे एक टा मन:स्थिति बला भूमिका कने हेर-फेरक संग नायक कें भेटै छै जे अपन सुशीला स्त्रीक अछैतो तथाकथित रूप सँ 'ओ' दिस आकृष्ट होइए आ अपना घर मे ओही 'ओ'क पति कें देखि क' सन्देहक बिख मे माति जाइए। तुरन्त सन्देहक निवारण सेहो होइ छै आ 'स्वामीक उदार आ विशाल वक्ष पर माथा टेकि' पत्नी आश्वस्त भ' जाइए। छै ने अजीब बात? बिना किछु बुझनहि-सुझनहि सन्देहाविष्ट होब' बला 'उदार' आ 'विशाल' जे व्यक्ति मित्र-पत्नीक देह-गंध मे मति रहल हो ओकरो स्वर 'भीजल' भ' सकै छै जे ओ 'सम्बन्धक' निरर्थकता-बोध सँ आप्लावित भ' जाय। परन्तु कथा एत' तक जेबा सँ परहेज करैए। पति आपस आबि क' छाती मे सटा लेलकै। पत्नीक लेल एहि सँ बेसी आर की भ' सकै छै?

स्वयंवर (1963) पढ़ैत काल अनायासे तन्त्रनाथ झाक एकांकी 'घटक पराभव' मोन पड़ि आएल। ओना दुनूक डिटेल मे बहुत फर्क छै। मुदा एक टा बात समान, जे दुनू लेखक सम्भावित व'र-कनिञाक इन्टरव्यू सँ जेना भड़कैत होथि। अतएव इन्टरव्यूक आग्रही व'र कें अपदस्थ करब आवश्यक। बुझ' मे नै अबै छै जे एक टा मेधावी छात्र मात्र यूरोपियन जीवन पद्धति सँ प्रभावित भेने उदण्ड सेहो भ' जाइए। यूरोपियन जीवन-पद्धति मे सेहो शिष्टाचारक खास भूमिका होइ छै। 'प्रपोज' कर' काल ओ भारतीय दृष्टिकोण सँ नाटकीय तँ लागि सकैए मुदा उदण्ड नै। एहना मे राजीवक उटपटांग व्यवहार सहज नै सायास बुझाइत छैक। ओना कथाक प्रति समस्त उत्सुकता दिवाकरक प्रवेशे सँ समाप्त भ' जाइ छै। एक तरहें ई कथा भारतीय आचार-व्यवहारक ओकालति करैए मुदा ताहि लेल जे कंट्रास्टक निर्माण होइ छै से सहज कम आ फार्मूलाबद्ध बेसी छै।

सतमायक मिथकक फार्मेट मे मानव-सम्बन्धक जटिलताक जाँच-पड़तालक कथा अछि मुक्ति (1964)। माएक लेल व्याकुल अबोध रमेश, गोपाल बाबूक उक्ति कें अन्तिम सत्य मानि लेनिहारि गौरी आ अतृप्त दैहिक सुख कें गीताक श्लोक सँ बिसरबाक प्रयास केनिहार गोपाल बाबू, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सँ प्रत्यक्षत: अनभिज्ञ गोपाल बाबूक बाल-विधवा बहिन आ पारम्परिक सामाजिक परिवेश, समतल भावें आगाँ बढ़ैत एक टा प्रश्न बनि क' ठाढ़ होइए। मुक्ति ककर? हमरा जनैत मात्र रमेशक। ओना प्रछन्न भावें भेल महासमर मे रिसिभिंग एण्ड पर रमेशक अतिरिक्त गौरी सेहो अछि। गोपाल बाबू तँ बड़ सहज भावें पुरनका दाढ़ी ओढ़ि 'वैराग'क चद्दरि मे नुका जाइ छथि। एहि तरहें पुरुषक छद्म वा नारीक सहनशीलताक सीमा, दुनू एहि कथा मे उजागर होइए। मुदा प्रतिशोधक संतोष (1965) मे ई सीमा टुटैत छैक आ

स्त्री बताहि नै होइए। ओ निर्णय करैए! स्त्री-पुरुषक बाह्य अराजकता कें अन्त दिस प्रस्थान करबैत ई कथा 'हिंसाक विरुद्ध हिंसा'क स्थापना करैए। स्त्री आब मात्र रिसिभिंग एंड पर नै रहत। आब जे अराजकता उत्पन्न हेतै ताहि मे पारी बराबर खेलाएल जाएत। मोनक धरातल पर बदलैत समीकरण, स्त्रीक (पीड़ितक) आंतरिक मजबूरी आ पुरुष (पीड़क) क खोखलापन कें उद्धार करबा मे कथा नि:संकोच अछि। सन्दर्भित पुस्तक मे संकलित, स्त्री-पुरुष सम्बन्धक स्पाइन बला किसुनजीक अन्तिम कथा तृप्ति बोध (1967) मनोयोगपूर्वक एक टा आदर्शक चित्र उपस्थित करैए। एहन आदर्श जे इश्क भ' उठय। कथाक बॉडी अपना डिटेल सँ सन्तुष्ट करै छै। परिवर्तन सहज भावें अबै छै तथा विकास अपन सन्तुलन बनौने रहै छै। ट्रेजेडी-कामेडी सँ ऊपर भ' आदर्श जीवनक रंग सँ रंगल ई कथा शुद्ध प्रेम आ विश्वासक बात करैए, समानता आ सन्तुलनक बात करैए।

सामान्य जन-जीवन कें केन्द्र मे राखि लीखल गेल कथा सब अछि 'जीवनक असौकर्य' (1960), 'संस्कारक मोह' (1966), 'एक अंक तीन दृश्य' (1961), 'मासान्त' (1961) आ 'ताँगाबला' (1962)। 'जीवनक असौकर्य' तीन टा रिफ्युजी छौंड़ीक सन्दर्भ मे जड़ि सँ फराक होइत लोक, अभाव आ दैन्य सँ लड़बाक जिजीविषा आ बदलैत जीवन मूल्यक बात कर' चाहैए जे भाग्यवादी तेवरक उपस्थिति सँ सतही हेबाक संग विश्व मानवीय दृष्टि सँ निरपेक्ष अछि। 'मासान्त' मे वेतनभोगी समुदायक अन्तिम सप्ताहक 'पैंच माँगो अभियान'क रिपोर्टिंग अछि। कथाक पाँचो चरित्र विकासक अपन सीमा मे आलसी, उदास, नकली आ वर्मा कें छोड़ि क' जीवनहीन अछि। 'एक अंक तीन दृश्य', उच्चवर्गक महत्वाकांक्षा, कथनी-करनीक अन्तर, भूखक दैन्य मे झमारल श्रमजीवी, भूख सँ मरैत लाचारक कंट्रास्ट उभारबाक भावुक कथा अछि। कथानकक थिननेस, विचारक संशय आ भावुकता भरल दृष्टिकोण, निकृष्ट असमानताक यथार्थ कें टोयबाक प्रयासो सँ विरत करैत छैक। फलत: कथाक निष्कर्ष एक टा भावुक क्षण जकाँ 'पास'क' जाइ छै। एहिना 'संस्कारक मोह', महानगर मे बसल मध्यवित्त लोकक बदलैत आचार-व्यवहार कें कनखिया क' देखबा सँ अगुता क' एक टा आधुनिकाक अपना परिवारक वृद्धक प्रति चिन्ता आ मोह पर जा क' टिकि जाइए। फलत: दुनू मे सँ एक्को टा बात जड़ि नै पकड़ैत छैक। 'ताँगाबाला' एक टा आदर्श श्रमजीवीक व्यक्ति-चित्र अछि। आवेशी, कर्तव्यनिष्ठ, वाचाल, जीवन सँ भरल आ सुच्चा। कथा आरम्भ सँ ल' क' अन्त धरि एक टा उत्सुकता बनौने रहै छै आ अन्त अयला पर कतहु सँ निराश नै करै छैक! कत्तहु ने कत्तहु बाँचल मूल्यक विश्वास दियबै छैक आ सब टा बात अपेक्षित विस्तार एवं विश्लेषणक संग विश्वासपूर्वक कहैत

छैक। दहेज आ ओकर कुपरिणाम केँ केन्द्र मे राखि क' लीखल गेल कथा अछि 'पुरान पत्र आ टटका बात' (1961) तथा 'सुभद्राक डायरी' (1962)। दहेज, समकालीन भारतीय समाज, खास क' उच्च जातिक मैथिलक (आब बाँकियो जाति एहि सँ ग्रस्त भ' रहलए) लेल प्राणघातक भेल जा रहलैए। सब गोटे ई बात बजैत छी आ मुद्रा स्फीतिक संग दहेजक राशियो बढ़ल जा रहलए। साहित्य मे एहि पर लिखलो गेलए। कथा कविता-नाटक। परन्तु सामान्यतः एत' प्रयास रहलैए करुणा जगेबाक। एहि विषय पर गम्भीरतापूर्वक तथ्यपरक बात नहिए जकाँ भेलैए। भावुकता सँ भरल घड़ियाली नोर सँ तर्पण क' क' इतिश्री। इहो कथा अपवाद नै अछि। वस्तुतः ई कथा नै, सोप ओपेराक शॉट-डिवीजन अछि। नायिकाक विवाह एक टा वयसाहु किरानी सँ होब' बला छै। आरोपित 'बतहपनी'क रोमांसक मारल नायक आशा आ विश्वास जगाबै छै। परन्तु ओकर पिता दहेजक 'रकम' पर अड़ि गेलै। नायक पत्र मे विद्रोह करबाक बात क' क' (सम्भवतः) अगिलका बतहपनी मे लागि गेल। कथाक ई प्लॉट एहने अयथार्थ, अगंभीर आ अबढंग दृष्टिकोण मे फँसि क' कत्तहु नै पहुँचैए। 'सुभद्राक डायरी' जावत तक डायरी छै तावत तक एक शिक्षिता, विवाह योग्य नायिकाक सोच, चिन्ता, भावना आ पीड़ाक अंकन मे अपना उद्देश्य पर टिकल रहैए। मुदा अन्त मे चन्द्रकिशोर जी, न्यायिक दण्डाधिकारी, आजन्म कुमारव्रतीक प्रवेश सब किछु केँ धो-पोछि दैत छैक। सम्भवतः कथाकार ओकरा झुट्टा आ फोंक हेबाक आरोप सँ बचाब' चाहैत छथि। किए? सुभद्राक लेल एकर कोनो महत्त्व छैक? सुभद्रा जाहि मनःस्थिति मे जीबि रहल छल ताहि सँ चन्द्रकिशोर केँ कोनो मतलब नै छल। ओ आरोपित आदर्श आ मर्यादाक अपन सिमान मे सुरक्षित छल आ एखन 'कुमारव्रती' भ' क' अछि। कोष्ठकक ई विवरण अन्ततः फोकस सुभद्रा पर सँ हटा क' चन्द्रकिशोर पर अनैत सुभद्राक आत्मदाह केँ डाइल्यूट करैत छैक!

संग्रहक आरम्भिक कथा 'जीवनक मूल्य' (1954) आ 'रहस्य' (1956) केँ कथाक आइडिया वा सिनॉप्सिस कहल जेबाक चाही। जीवनक मूल्य, ग्रामीण हाटक चित्र बनबैए आ रहस्य कोनो पराभौतिक, दैवी शक्ति पर विश्वास दियैबाक प्रयास करैए।

'जय-पराजय' (1966) आ 'कंडोलेंस' (1962) बदलैत मानव-सम्बन्धक कथा अछि। जय-पराजयक दबंग बाप, पुत्रक स्वतंत्र निर्णय केँ कने नाटकीयताक संग सहर्ष मानि लैए। अन्ततः एकरा परिवर्तनक पक्षधरता मानल जा सकैए। परन्तु जाहि हड़बड़ी सँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचल गेल छै से ई मानक लेल जबर्दस्ती करैत छैक जे पीढ़ीगत वैचारिक द्वन्द्व कोनो तेहन बात नै छै। पुत्र निर्णय क' क' देखओ

ने, पिता झट द' ओकरा मानि लेतै, भले ओ बात-बात पर बन्दूक बहार क' लेब' बला किए ने हो।

जखन लोक सीढ़ी पर पैर द' क' ऊपर चढ़ैए तँ ओकरा ओ सीढ़ी बड़ अप्पन, बड़ आप्त आ आवश्यक बुझाइत छैक। ऊपर चढ़ि गेलाक बाद ओ सीढ़ी केँ अपना संगे नै ल' जाइए ओ फेर दोसर सीढ़ी तकैए आ आर 'ऊपर' चढ़' लगैए। एहि तरहें क्रमशः ओकरा जमीन आ ओइ पर राखल सीढ़ी सँ कोनो मतलब नै रहि जाइ छै। ओ एक टा दोसर व्यवस्था, दोसर संस्कृतिक लोक भ' जाइए जकर अपन दाव-पेंच, माया-जाल आ ग्लैमर छै। ओहि सँ ओ मुक्त नै हैत। खोंचारनिहार किछु क' लेथु। ओकरा अपना जड़ि सँ कोनो मतलब नै छै। ओ पित्ती (पिता वा केओ आनो भ' सकैए)क मृत्यु पर कंडोलेंसक तार पठा क' 'प्रेमिका' सँ भेंट कर' लेल शान सँ विदा भ' जाइए। 'कंडोलेंस' एक टा केरियरिस्टक बहन्ने पर्याप्त सघनता सँ नितान्त वैयक्तिक स्वार्थ लोलुपता एवं संवेदनहीनताक कथा कहैए जे पूर्ण आ विश्वसनीय दुनू छैक।

किसुनजीक कथा पढ़ैत काल हमरा लगातार ई लगैत रहल जे ओ परिवेश आ व्यक्तिक बाह्य शब्द-चित्र बनेबा मे माहिर छथि। जीवनक मूल्य मे हाट, कथावाचक, इआर आ झिल्ली लुझैत भाय-बहिन। रहस्य मे यात्रा, ओकर समूह आ बाँसुरीवादक, मासान्त मे महेन्द्रक डेरा, प्रतिशोधक संतोष मे रिक्शावला...। एहिना सांस्कृतिक विशिष्टताक इमेज, जे कथा सभ केँ मैथिलीक कथा बनबैए, यत्र-तत्र सुगमता सँ आ सहज भावें प्रयुक्त भेल अछि। एहि सबहक संग हमरा लगैत रहल जे किसुनजी मूलतः भाववादी रचनाकार छथि, रूमानियत सँ सर्जनाक आवेग ग्रहण कएनिहार।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

रचनात्मक अवधानक जरब सँ बचितो

हरे कृष्ण झा

किसुनजीक कथाकर्मक मूल मे 'जीवनक असौकर्य' आ 'जीवन मूल्य'क चिन्ता अछि। हुनकर कथा सभ हुनकर चिन्ताक वास्तविक हेबाक साक्ष्य दैत अछि। हुनकर संवेदना मे बेसी किछु बनोतरी नहि लगैत अछि। जाहि अनुभव सँ हुनकर कथा सभ फुटैत छनि से खाहे बहुत गाढ़ आ गहींर, तप्त आ तीव्र नहि हो, ओहि मे फूसिफटक आ भाभट नहि जकाँ बुझा पड़ैत अछि। हुनकर मूल्य-दृष्टि प्रगतिशील छनि; आ हुनकर कथा सभक रंग-ढंग ठेठ मैथिल छनि। मुदा ई सभक अछैतो किसुनजीक कथाकर्म बेसी काल सार्थक होइत-होइत रहि जाइत छनि। आ जखन सार्थक होइतहु छनि तँ खूब उजिया नहि पबैत छनि, कलात्मक निखार आ दीप्ति नहि प्राप्त क' पबैत छनि; सृजनात्मक आभा आ ऊर्जा सँ आविष्ट नहि भ' पबैत छनि। तइयो किसुनजी दू तरहें मैथिलीक बेस महत्त्वपूर्ण कथाकार भ' जाइत छथि। ओ निछच्छ मैथिल कथाकर्मक उर्वर सम्भावना-भूमि तैयार करैत छथि; आ ओ मैथिल स्त्रीक गंजन केँ वेदनापूर्ण चिन्ता सँ अहियबैत ओकर मुक्तिक लेल हस्तक्षेप करैत छथि।

किसुनजीक कथा-संसार मैथिल जीवनधारा सँ बहरायल अछि। हुनकर कथा सभक अधिकांश स्थिति, घटना आ चरित्र मे तथा हुनकर भाषिक रचाव मे खाँटी मैथिलपन अछि। मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक साँच सँ हुनकर कथालोक केँ रूप-रंग भेटल छैक। ओतुक्का जीवन-व्यापार जाहि भाषा मे चलैत अछि तकर कथन-भंगिमा, संभाषण शैली, लयगति आ नाद-प्रवाह तथा ओहि मे प्रचलित आख्यान-विधिक अनेक तत्त्व, ओकर छवि छटाक अनेक रंग, हुनकर कथा कर्म मे समाएल अछि। आ ई सभ किछु मिलिजुलि क' हुनकर कथा सभ केँ अंचल-विशिष्ट प्रामाणिकता दैत अछि, मिथिलाक माटि पानिक जीवंत संस्पर्श दैत अछि।

किसुनजीक रचनात्मक चिन्ता, जेना कि ऊपर कहल गेल, वास्तविक छनि। आ बेस सार्थक सेहो छनि। मैथिल मनुष्यक अस्तित्व केँ जे किछु गछाड़ने छैक,

सकपंज केने छैक, ताहि मे सँ बहुत किछु हुनकर सृजनात्मक चेतना केँ गहने छनि। तँ हुनकर अधिकांश रचनाक उद्देश्य सार्थक आ प्रासंगिक छनि। मुदा एना लगैत अछि जे बेसी काल हुनकर चिन्ता बौद्धिक-वैचारिक स्तरे पर रहि जाइत छनि; संवेदना मे समा नहि पबैत छनि; मानसिक संरचनाक आवयविक तत्त्व नहि बनि पबैत छनि। आ तँ हुनकर चिन्ता कथाक वितान आ विधान मे सहज रूपें व्याप्त नहि रहैत छनि। हुनकर अधिकांश कथाक शीर्षक सँ ल' क' अंत तक जे सपाट आ अखरा, उत्थर आ एकहरा, सरलीकृत आ जोड़ल-जाड़ल लगैत अछि तकर एक टा प्रमुख कारण ई बुझाइत अछि। जीवनानुभव सँ निकसल चिन्ता खाहे कतबो वास्तविक किएक ने हो, रचना मे ओ संवेदनाक सहरजमीने पर 'वास्तविक' होइत अछि; रचनाक सामग्री बनल अनुभवक रचावक मार्फते ओ 'असली' होइत अछि।

किसुनजीक मूल्य-बोध आ हुनकर सृजनात्मक चिन्ताक ई प्रकृति एक दोसर सँ प्रभावित अछि। जाहि मूल्य-पद्धति सँ मनुक्खक जीवन खियाइत, बिझाइत आ मिझाइत अछि; जे मूल्य-पद्धति सभ तरहें मनुक्खक बान्हछेक आ दुर्गंजन कर' बला समाज-व्यवस्था केँ समर्थन आ सम्बल दैत छैक; बौद्धिक स्तर पर, सचेतन स्तर पर, ओकर विरोध, निषेध वा त्याग करब एक बात थिक। आ अपन संवेदना आ मानस केँ, अपन समस्त जीवन-बोध केँ, ओहि सँ निर्मुक्त करब फराक बात थिक। आ फेर तहिना, जाहि मूल्य-पद्धति सँ मनुक्खक जीवन सभ तरहें भरल-पुरल, उन्मुक्त आ सृजनशील बनैत अछि; जे मूल्य-पद्धति मनुक्खक उन्मोचन, उन्नयन आ गरिमाक प्रतिष्ठा करए बला समाज-व्यवस्था केँ, ओकरा रचबाक प्रयास केँ, समर्थन आ सम्बल दैत छैक; वैचारिक स्तर पर, सचेतन स्तर पर, ओकरा स्वीकार करब, समर्थन देब, अपना लेब एक बात थिक। आ अपन संवेदना मे ओकरा अंगेजब, अपन मानसक निर्मिति मे ओकरा समाहित क' लेब, अपन समस्त जीवन-बोध मे पचा लेब आ अपन जीवन-गति मे ओकरा चरितार्थ करब फराक बात थिक। कहबा मे ई बात जतेक सोझ आ सरल लगैत अछि जीबाक प्रक्रिया मे ओतबैक जटिल आ कठिन होइत अछि। संस्कार मे निगूढ़ रूपें अंतर्हित कएक टा जीवन-मूल्य आ सचेतन प्रयास सँ अर्जित कएक टा जीवन-मूल्य मे बहुत तीव्र अंतर्विरोध रहैत अछि आ तँ दुनू मे बहुत जटिल आ विकट द्वंद्व चलैत रहैत अछि। मूल्यक ई द्वंद्व काफी दीर्घकालिक आ यन्त्रणाप्रद होइत अछि आ एहि सँ निस्तार सरल आ सहज नहि होइत अछि। नवीन मूल्य-बोधक उन्मेष एही संघर्ष सँ होइत अछि। चूँकि रचनाकर्म अंततः जीवनक समर्थन आ सम्पोषण करए बला मूल्यक पक्ष लैत अछि आ एहन नबका मूल्यक सृजन सेहो करैत अछि, तँ मूल्यक ई द्वंद्व रचनाक मर्मस्थल बनैत अछि, ओकर प्राण-तत्त्व बनैत अछि। निःसंदेह, रचनाकार केँ एहि लेल काफी जरब

उठब' पड़त छैक। मुदा इएह जरब थिक जे रचना मे तेज आ टान अनैत छैक, ओकरा अर्थक ऊर्जा सँ आविष्ट करैत छैक आ कलात्मक वैभव दैत छैक। वस्तुतः इएह जरब थिक जे रचना केँ सभ तरहें सार्थक बनेबाक लेल अपेक्षित सृजनात्मक अवधान केँ जन्म दैत छैक आ ओकरा टनने रहैत छैक।

किसुनजी ई जरब बेसी नहि उठबैत लगैत छथि। आ तेँ हुनकर कथाकर्म मे सृजनात्मक अवधान बहुत कम देखबा मे अबैत अछि। हुनकर बेसी कथा स्वतःस्फूर्त हेबाक आभास दैत अछि। सभ तरहें साधल, समधानल आ गतानल नहि लगैत अछि। स्थिति, घटना आ चरित्रक सजीव उद्भावना करबा मे समर्थ होइतहुँ किसुनजी एहि सभक निस्सन आ सान्द्र एकान्विति मे बहुत कम सफल होइत छथि। आ नतीजा जे प्रायः समस्या सभक सरल आ उत्थर समाधान सोझाँ अबैत अछि। जीवनक स्थिति सभ एकायामी रूप मे उपस्थित भ' सोझराएल जाइत अछि। कथा सभ अपन प्रस्थान बिन्दु सँ तर्क संगतिक संग आगू बढ़ैत तार्किक निष्पत्ति तक नहि पहुँचैत अछि। द्वंद्व सभ तुरत तिरोभूत होइत अछि; यथार्थ-निष्ठ बहुआयामीपनक संग विकट आ कड़गर रूप मे घटित नहि होइत अछि। आ एहि सभक तह मे मूल्यक जे संघर्ष चलैत रहैत छैक से धरगर भ'क' जगजगार नहि होइत अछि। आ अंततः मूल्यक साँच पर कोनो से जरब नहि पड़ैत अछि आ प्रतिगामी मूल्य सभ पर कठोर आघात नहि पहुँचैत अछि। कथाक भीतरक दुनियाक यथार्थ झमारल जेबा सँ बचि जाइत अछि। आ कथा सभ पाठकक संवेदनाक आ अंततः वस्तुगत यथार्थक, गतिविधि मे प्रभावी हस्तक्षेपक निमित्त नहि बनि पबैत अछि।

असल मे छैक की तेँ अर्जित मूल्य-बोध निस्सन तखनहि बनैत अछि जखन व्यापक यथार्थक अपन उत्स-भूमि सँ ओ जुटल रहैत अछि। एहि लेल निरन्तर मूलगामी मानसिक-आन्तरिक संघर्ष अपेक्षित होइत छैक। एही संघर्षक मन्द रहबाक कारणें प्रायः किसुनजीक सवेदना मे व्यापकता थोड़ छनि। ई दू तरहें सोझाँ अबैत अछि। पहिल तेँ ई जे हुनकर बेसी कथा सभ मे जीवनक जे स्थिति, समस्या आ प्रश्न प्रस्तुत होइत अछि से स्थानीकृत भ'क', वृहत्तर यथार्थ सँ कटि क'। यथार्थक विभिन्न आयामक, विभिन्न स्तर परहक, विभिन्न पक्षक तत्त्व सभ जे एक दोसर सँ गाँथल रहैत छैक; आ ताहि सँ जे तन्तुजाल निर्मित होइत छैक; आ जकर प्रकट कि प्रच्छन्न परिणति कोनो स्थिति आ समस्या होइत छैक; ओकरा माँझ मे ओहि स्थिति आ समस्या केँ राखि क' ओ देखि-गुनि नहि पबैत छथि। एहि सँ यथार्थक अंतर्ग्रथित जटिलताक तिरस्कार होइत अछि आ कोनो स्थिति आ समस्याक असली प्रकृति फरिछा क' सोझाँ नहि अबैत अछि। कथा मे बेसी काल एकर परिणति सरलीकरण मे आ कखनहुँ क' अतिसरलीकरण मे होइत अछि। दोसर ई जे

सामाजिक-आर्थिक संरचनाक बहुत कम अंतर्विरोध आ विसंगति हुनकर संवेदना केँ प्रभावित करैत छनि, मथैत छनि। किसुनजीक जीवन जाहि इलाका मे बितलनि से सभ तरहें घोर पछुआएल, जड़ियाएल वा दैन्यग्रस्त रहल अछि। कोसीक मारल ओतुक्का लोक काहरि कटैत रहल अछि। किसुनजीक रचनाकाल (54 सँ 69) वर्तमान व्यवस्था सँ आशाक टुटबाक, मोहक भंग हेबाक, कष्टक बढ़बाक आ संगहि मूलगामी परिवर्तनक राजनीतिक प्रयासक काल रहल अछि। समाज मे अनेक स्तर पर विक्षोभ आ प्रतिरोध भेल अछि। मुदा एकर सभक दबाव किसुनजीक संवेदना पर बहुत कम पड़ल अछि। एहि सभ केँ ल'क' ओ कम लिखलनि अछि आ जे लिखबो केलनि अछि से कोनो खास सशक्त नहि अछि। ई सभ किछु हुनकर रचनात्मक चेतनाक कतबहि मे रहल अछि।

किसुनजी मे रचनात्मक अवधानक कमी सभ सँ बेसी केन्द्रीय स्तर पर देखबा मे अबैत अछि, जीवनानुभवक सृजनानुभव मे बदलबाक स्तर पर। जीबाक क्रम मे भेल अनुभवक प्रति जागृत हएब, सतर्क हएब; फेर ओकरा सँ अपना केँ फराक करब, दूर हटाएब; फेर वस्तुपरक आ निर्वैयक्तिक निरपेक्षताक संग ओकरा अहियाएब; फेर ओकरा व्यापक यथार्थक तन्तु रचावक बीच मे जाक' ओकर असलियत केँ बेकछाएब-बिटियाएब; सुदीर्घ मनन-मंथन सँ ओकर सत्य-मर्म केँ गहब; आ तखन रचना मे ओकरा अंगेजने अपन कथ्य केँ पुष्ट आ निस्सन बनेबाक लेल तथा ओकर कलात्मक मूर्तनक लेल मूल अनुभव मे संशोधन-परिवर्धन करब— एहि प्रक्रिया मे जेबाक जरब किसुनजी बड़ कम उठबैत लगैत छथि। एहि लेल बहुत धैर्य, स्थैर्य आ अनुशासित एकाग्रताक संग अपन अनुभवक अवगाहन अपेक्षित होइत छैक। मुदा एहि सँ रचनाक केन्द्रीय अर्थ-मर्म एकदम साफ झलक' लगैत छैक आ रचनाकर्म ओकरा मूर्त करबा पर संकेन्द्रित भ' जाइत छैक तथा ओहि सँ सदति नियंत्रित बनल रहैत छैक। एकर अभाव मे किसुनजीक अधिकांश कथाक आशय आ केन्द्रीय प्रयोजन साफ नहि भ' पबैत छनि; ओ झिलमिलाइते टा छनि, स्फटिक जकाँ स्पष्ट नहि होइत छनि। आ ताहि सँ हुनका कथा कहबा मे, कथाक विधान करबा मे, असौकर्य भ' जाइत छनि। हुनकर आख्यान कएक तरहें ठमकल आ उकडू भ' जाइत छनि; सहज, सीटल आ गतिमान नहि भ' पबैत छनि। कथाक विभिन्न तत्त्व सभ छिटकल आ छिड़ियाएल रहैत छनि; कसल-गसल आ एकजुट नहि रहैत छनि। कथा मे अपन लक्ष्य पर केन्द्रित गति नहि रहैत छनि। आ परिणामतः कथा अपन अर्थ केँ उद्भासित करैत गहन प्रभाव नहि छोड़ि पबैत छनि।

किसुनजीक कथाकर्मक एक टा विशेषता अछि हुनकर यथार्थनिष्ठ विवरणपरकता। हुनका मे बहुत सूक्ष्म निरीक्षणक क्षमता छनि। ओ कोनो स्थिति,

घटनाक आ चरित्रक मनोभाव, हावभाव तथा चेष्टा आ व्यापारक छोट सँ छोट ब्यौरा केँ, ओकर एक एक रेहा केँ, बहुत मेंही ढंग सँ बिटियाक' पकड़ैत छथि। आ ओकरा एकदम ठीक-ठीक परिशुद्ध परिमार्जनक संग व्यक्त करैत छथि। एहि मे ओ अपेक्षित अनुशासन देखबैत छथि। मुदा फेर एत्तहु पर्याप्त सृजनात्मक सतर्कताक कमी सँ बेसी काल हुनका सँ एक टा त्रुटि होइत छनि। ओ ब्यौरा सभक प्रस्तुति मे चयनक विवेक नहि देखबैत छथि। मात्र प्रातिनिधिक आ कारगर ब्यौरा सभ केँ सोझाँ अनबाक बदला मे ओकर अमार लगा दैत छथि। एहि सँ कथा अनेरे नमरैत आ पसरैत अछि, ओझराइत आ भसियाइत अछि तथा पठनीयता बाधित होइत अछि। तइयो वस्तुगत यथार्थक प्रत्यक्ष तानीभरनी केँ हुनकर संवेदना जेना गहिया क' पकड़ैत अछि से प्रशंसनीय अछि।

आख्यानक जे विधि किसुनजी अपनबैत छथि ताहि मे वर्णन, विवरण आ टिप्पणीक बहुलता अछि। वृत्तान्त आ प्रत्यक्ष संवाद अपेक्षाकृत कम अछि। एहि सँ हुनकर कथा मंथर वा विलम्बित होइत अछि। ओकर त्वरा आ आवेग कम होइत छैक। एहि सँ पाठकक ध्यान पर कथाक पकड़ शिथिल होइत छैक। प्राय: किसुनजीक परिवेशक कालक गति आ ताहि सँ उत्पन्न हुनकर काल-बोधक कारणें एना होइत हो। वृत्तान्त आ प्रत्यक्ष संवाद सँ कथा मे गति अबैत छैक, कथाक अवयव सभ नाट्यकृत होइत छैक। मुदा एहि दुनूक पर्याप्त कौशल रखितो ओ एकरा सभक उपयोग कम करैत छथि। दोखरा टिप्पणी, खाहे ओ कथावाचक करैत हो अथवा ओकरा व्याजें कथाकार करैत हो अथवा कथाकार अपनहि ठाँइ-पठाँइ करैत हो, कथा केँ क्षति पहुँचबैत छैक। एहि सँ कथा स्थूल होइत अछि आ ओकर प्रभाव क्षीण होइत छैक। बिना कोनो बाहरी टीका-टिप्पणीक कथाक आशय यदि ओकर रचाव मे व्याप्त होइत छैक तँ ओकरा मे वस्तुगत सत्यक गुणवत्ता आ प्रामाणिकता अबैत छैक। आ ओ बेसी गहींर आ सशक्त प्रभाव छोड़बा मे समर्थ होइत अछि।

किसुनजीक कथाकर्मक एक टा आर विशेषता ई अछि जे हुनका मे रूपक प्रति मोह तँ नहिये छनि, कोनो अतिरिक्त आग्रहो नहि छनि। एम्हर साहित्य मे तत्त्वक बदला मे रूपक आग्रह, अर्थ-सृष्टिक बदला मे शिल्पक चमत्कारक आग्रह, बढ़ैत गेल अछि। मुदा किसुनजी मे बिना कोनो झाड़फानुस कि टोहटहंकारक, सादा ओ सोझ ढंगें, सरल आ निष्कपट भावें, निर्व्याज आ निराडम्बर भ' क', कथा कहबाक प्रवृत्ति छनि। ओ खाली शिल्पक वैचित्र्य, वैशिष्ट्य आ अभिनवपन सँ चौंकेबाक कि चोन्हियेबाक लेल शिल्पक अजगुत आ अनूप युक्ति सभ गढ़बाक आ अजमेबाक फेर मे बहुत कम रहैत छथि। कथ्यक खगताक मोताबिक ओ कथा कहबाक युक्ति अपनबैत छथि। डायरी कि पत्राचारक युक्ति ओना हुनका समय मे कोनो से नवीन

नहि छल, मुदा ओकरो सभक ओ सार्थक उपयोग केने छथि। एक टा न'ब युक्तिक प्रयोग जे ओ 'जीवनक मूल्य' मे हाटक वातावरणक सृष्टिक लेल आ आनो ठाम केने छथि से अछि : दृश्य आ श्रव्य विवरणक सत्वर गुम्फन। आख्यानक क्रम मे वर्णन, वृत्तान्त आ संवाद काफी वेग सँ एक दोसरा सँ गँथाइत चलि जाइत अछि जाहि सँ वातावरणक आ कोनो संश्लिष्ट स्थितिक सशक्त सृष्टि होइत अछि। एम्हर एकर चलन बढ़ैत गेल अछि किएक तँ एहि सँ कथा मे त्वरा आ लाघव अबैत छैक।

अपन सभ टा त्रुटि अछैत किसुनजी मैथिली कथा साहित्य केँ कएक टा नीक कथा देलनि अछि, जाहि मे बेसी स्त्री पर लिखल गेल अछि। वस्तुत: स्त्री पर लिखल किछु कथा मैथिली साहित्य मे हुनकर महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। मैथिल स्त्रीक अस्तित्वक अनेक आयाम केँ किसुनजी दुर्लभ व्यथा आ चिन्ताक संग अहिया आ बेकछा क' प्रस्तुत केलनि अछि। ओकर दुखक ओर-छोर मार्मिक रूपें हुनकर कथा सभ मे व्यंजित भेल अछि। अपना जनैत ओ काफी गम्भीरता सँ ओकर दुर्गतिक प्रतिवाद मे आ प्रतिकारक निमित्त कथा सभ लिखलनि अछि। किछु कथा तँ वास्तव मे पाठकक संवेदना केँ झमार' बला अछि। एक टा जिनिस जकाँ स्त्रीक देहक उपयोग आ उपभोग करैत ओकर जीवनक आन सभ पक्षक पुरुष कोनो निषेधक हद तक तिरस्कार करैत अछि से बेर-बेर हुनकर कथा सभ मे सोझाँ अबैत अछि। आ हुनकर स्त्री चरित्र सभ केवल दुर्गंजन भोगिते टा नहि अछि; सब किछु सहिते टा नहि चलि जाइत अछि; ओ प्रतिवाद आ प्रतिरोध सेहो करैत अछि; ओकर दुर्वह यंत्रणा मे सँ विद्रोहक चिनगी सेहो फुटैत अछि; ओ थोड़-बहुत आक्रामको होइत अछि; ओ आफन तोड़ैत अछि आ संस्कारक अन्हरजाली केँ फाड़बाक प्रबल प्रयास करैत अछि। मुदा फेर एतहु किसुनजीक 'संस्कारक मोह' सँ ओझराएल मूल्य-बोधक कारण आ पर्याप्त अवधानक अभावक कारण हुनकर बेसी चरित्र तार्किक परिणति तक नहि पहुँचि पबैत अछि।

असल मे किसुनजीक संग दिक्कत ई छनि जे एक दिस तँ ओ स्त्रीक स्वतंत्र सत्ता केँ तथा पुरुष आ स्त्रीक समानता केँ मूल्यक रूप मे सचेतन स्तर पर स्वीकार करैत छथि; आ दोसर दिस स्त्री पर सभ तरहें पुरुषक आधिपत्य केँ कायम राख' बला मूल्य-व्यवस्था केँ पूरा-पूरी तोड़बाक पर्याप्त नैतिक साहस नहि आनि पबैत छथि; ओहि मूल्य-व्यवस्था सँ प्रसूत आ पोषित संस्कार सभक निगूढ़ गछाड़ सँ अवचेतन स्तर पर कतहु-ने-कतहु ओकर रक्षाक आग्रह जकाँ सेहो रखैत छथि। नतीजा ई होइत अछि जे स्त्रीक मादे हुनकर मूल्य-दृष्टि निर्णीत नहि भ' पबैत अछि; तह मे ओ थतमत मे पड़ले जकाँ रहि जाइत छथि। तँ सचेतन स्तर पर सकारल मूल्यक अनुरूप ओ अपन स्त्री चरित्रक उद्भावना तँ करैत छथि मुदा फेर ओही मूल्य सँ

प्रसूत तर्कक अनुरूप ओकर विकास करबा मे समर्थ नहि होइत छथि। कतहु-ने-कतहु ओ चुकि जाइत छथि आ बात केँ खरियारि क' निपटेनहि बिना कथा केँ उसारि दैत छथि। बेसी काल बात बनैत-बनैत रहि जाइत अछि आ कथा खिन्न क' दैत अछि।

किसुनजीक दू टा तेजस्वी स्त्री चरित्र अछि दीप्ति आ काली। ई दुनू हुनकर सभ सँ आगू बढ़ल चरित्र अछि। एकर सभक सृजन सर्वाधिक दोष रहित अछि। 'स्वयंवर'क दीप्ति सम्पन्न घरक धखछुट्टू, गम्भीर आ शहरी परिष्कार वाली कन्या अछि। 'पाश्चात्य आ भारतीय सिद्धान्त एवं दृष्टिकोणक समन्वय मिथिलाक वातावरण आ परिवेशक अनुकूल करब' ओकरा 'पसिन्न' छैक। ई ओकर 'व्यक्तिगत रुचि मात्र' छैक। एहि लेल ओकरा कोनो 'दुराग्रह' नहि छैक। अपन विवाहक प्रसंग मे ओ वर-पक्षक 'छद्मक आवरणयुक्त रीति', अर्थात् 'आदर्श विवाहक दोहाइ आ एतेक पढ़ला-लिखलाक बादो केवल कन्या होयबाक कारणें अपन मूल्यहीनता, तकर क्षतिपूर्तिक हेतु पन्द्रह हजार टाकाक अप्रत्यक्ष माँग आ ताहू सभ सँ बेसी राजीवक ई घोर अविश्वास', माने ओकर इन्टरव्यू लेबाक वरक प्रस्ताव केँ ओ 'सहज रूपें स्वीकार' नहि क' पबैत अछि; ओ अपमानित अनुभव करैत अछि, क्षुब्ध आ कटु-तिक्त भ' जाइत अछि। मुदा जखन पिता कि माता एहि कथाक संबंध मे ओकर विचार पुछबबैत छथिन तँ 'दीप्ति यद्यपि बड़ सोझराएल मस्तिष्कक शिक्षित कन्या छलि मुदा अपना संबंध मे एहि तरहें स्वयं निर्णय करक एहि अद्भुत अवसर पर किछु नहि बाजि, 'जे बाबूजी लोकनिक इच्छा होनि' से कहि तटस्थ भावें मौन रहि गेलि। ...फेर क्रमश: किछु दिन बितैत-बितैत दीप्ति इंगलैंड जएबाक इच्छा रखनिहार व्यक्तिक संग ओकर महत्वाकांक्षी दृष्टिकोणक कारणें विवाह करबा मे कोनो आपत्ति वा विरोध नहि प्रकट कएने छलि आ ने विवाहक पूर्व भेटे करबा मे।' आ जखन उत्थर अंगरेजिया चालि आ अमर्यादित आचरणवला वर राजीव अपन ममियौत दिवाकरक संग जा क' अनर्गल आ हास्यास्पद ढंग सँ ओकर इन्टरव्यू लेबय लगैत छथिन तँ 'दीप्ति उग्र भ' उठलि, शिष्टता पालन असह्य भ' गेलैक।' सौम्य, शालीन आ गम्भीर दिवाकरक प्रति ओकरा दुर्निवार आकर्षण होइत छैक आ ओ हुनका सँ सीधा संवाद करैत अछि तथा प्रच्छन्न आ मर्यादित ढंगे विवाहक प्रसंग उठबैत हुनका स्वयं वरैत अछि। परिवार ओकर निर्णय केँ सहर्ष स्वीकार करैत अछि।

कथाक उद्धृत अंश सभक तन्तु सँ ओकर अर्थ निर्मित होइत अछि। एहि सभ सँ स्पष्ट अछि जे एक सीमा तक वास्तवनिष्ठ संयमक संग दीप्तिक चरित्र विकसित भेल अछि। दीप्तिक मानसिक-आन्तरिक बनावट तथा स्थिति-परिस्थितिक मादे जे सूचना कथा दैत अछि ताहि मे आ ओकर आचरण मे संगति अछि। ओकर अपन

भीतरक अंतर्विरोध आ परिवेशक संग अंतर्विरोध केँ कथा काफी सन्तुलित ढंग सँ समेटने आगू बढ़ैत अछि। एहि सँ ओकर चरित्र विश्वसनीय बनैत अछि। राजीव पर ओकर उग्र, मुदा मर्यादित आक्रमण काफी समधानि क' विकसित कएल गेल अछि। ओ दुनूक बीचक घात-प्रतिघात सँ सृजित तनाव सँ स्वाभाविक रूपें फूटल लगैत अछि; ओकर चरित्रक तार्किक परिणति बुझाइत अछि; कोनो तरहें आरोपित अथवा अचानक घटित नहि लगैत अछि। एत' तक तँ ठीक अछि। कथा मे अर्थ सँ तनतनाइत एक टा शिखर बिन्दु सृजित होइत अछि। मुदा एकर बाद किसुनजी चुकि जाइत छथि। विवाहक प्रसंग मे, कथावार्ताक पूरा प्रकरण मे, दीप्तिक जे मनोभाव; उक्ति आ क्रिया सोझाँ अबैत अछि ताहि सँ विवाहक मैथिल लोकाचारक अतिक्रमण क' सकबाक कोनो टा तत्त्वक संकेत ओकर चरित्र मे नहि भेटैत अछि। ओ विरोध-प्रतिरोध, प्रतिक्रिया जे किछु करैत अछि से एकर परिधिये मे रहिक'। दोसर बात कथा सँ ई बहराइत अछि जे धखछुट्टू रहितो ओ गम्भीर, संयत, मर्यादित आ सम्भ्रमपूर्ण चरित्रवाली अछि। एहि पृष्ठभूमि मे तुरत दिवाकरक प्रति ओकर दुर्निवार आकर्षण, विवाहक मादे ओकरा सँ सीधा संवाद, विवाहक तुरत स्थित हएब आ परिवार द्वारा स्वीकृत हएब जँचैत नहि अछि, तर्कसंगत नहि लगैत अछि। सभ किछु जेना चटपट होइत अछि से यथार्थपरक आ विश्वसनीय नहि लगैत अछि। हड़बड़ी मे किसुनजी सरलीकृत समाधान आरोपित क' दैत छथि। हुनका मैथिल स्त्रीक स्वतंत्र सत्ता केँ स्थापित करबाक चिन्ता छनि आ ताहि लेल ओ दीप्तिक स्वतंत्र पसिन्न आ निर्णय केँ सोझाँ आनि दैत छथि। चूँकि कथा मे एहि लेल अपेक्षित संवेदना-भूमि तैयार नहि भेल अछि तँ ई मिथ्या लगैत अछि। यदि दीप्तिक संवेदना मे एहि लेल अपेक्षित संक्रमणक प्रक्रिया भेल रहैत तँ ई कथाक सत्य बनि सकैत छल।

'प्रतिशोधक सन्तोष' लेल उत्फाल भेल काली कएक तरहें दीप्ति सँ आगूक चरित्र हेबाक सम्भावना रखैत अछि। ओ दीप्तिक तुलना मे सामान्य मैथिल स्त्रीक बेसी लगीचो अछि। मैथिल स्त्रीक जीवन-स्थितिक अंतर्विरोधक जटिलता केँ ओ प्रखरता सँ जगजगार करैत अछि। 'आधुनिक युगबोध सँ दीक्षा पौने' स्त्रीक चेतनाक अपन संस्कारक संग निरन्तर आ प्रचण्ड द्वंद्व ओकरा मे विस्फोटक रूपें प्रकट होइत अछि। अपन दुर्गति सँ निस्तार पेबा मे मैथिल स्त्रीक भीतरक आ बाहरक बाधा सभक सूझ-बूझ ओकर चरित्र सँ भेटैत अछि। स्त्रीक देह केँ खाली भोगैत आ घर मे सदति जोतने रहैत आ ओकर अस्तित्वक आन सभ आयामक धज्जी उड़बैत पुरुषक प्रति उत्पन्न प्रतिशोधक भावना ओकरा प्रति सशक्त आ सकारात्मक प्रतिरोधक सम्भावनाक सृष्टि करैत अछि; प्रतिशोधक भावनाक ऊर्जा प्रत्यक्ष

प्रतिरोधक सम्भावनाक ऊर्जा मे बदलैत अछि। कालीक चरित्र केँ सम्हरि क' विकसित कएल गेल अछि आ ओ सजीव आ विश्वसनीय भ' उठल अछि। एकाध ठाम संयम सँ विचलन, एकाध ठाम अस्पष्टता आ एकाध ठाम विसंगति केँ छोड़ि क' चरित्रक सृष्टि दोष रहित अछि।

दीन, निरीह आ प्रचण्ड रौद मे लहकान भेल रोगाह रिक्शाबलाक प्रति कालीक मनोभाव मे जे ओकर हिंसक विक्षोभ आ प्रतिशोधक भावना केँ निष्कृति भेटैत छैक से कनेक विकृत लगैत अछि, अमानवीय तक बुझाइत अछि। ओना ओकर तात्कालिक मनोदशा केँ देखैत, निर्घिन मुस्कीक संग रिक्शाबलाक ओकरा दिस तकबाक तथा ओहि स्थिति मे कालीक संवेदना मे ओकर पुरुष जातिक प्रतीक हेबाक बात केँ ध्यान मे रखैत, ई कोनो से अनर्गल नहि लगैत अछि। तइयो पहिने कनेक संयम रखला सँ ई प्रसंग कालीक मूल उद्वेगक अनुरूप स्वस्थ आ मानवीय भ' सकैत छल।

स्टेशन पर काली केँ अचानक 'एक टा झटका जकाँ बुझना गेलैक आ कहि नहि भीतर मे की एक बेर पुन: झनझना क' टूटि गेलैक आ ओकर आँखि भरि अयलैक', आ ओ ओतए सँ चलि दैत अछि। एहि सँ पहिने तखन एना देह झनझना उठल छलैक 'जेना भीतर मे किछु टूटि-फूटि रहल होइक' जखन अपन पति केँ कुकूर बुझने छल जे 'जखन तखन राति मे कुकूरे जकाँ नाँगरि हिलबैत देह चाटि क' अपन भूखक निवृत्ति क' लैत अछि आ फेर एक निरर्थक वस्तु जकाँ काली पर भूक' आ झपट' लगैत अछि', आ ओकर 'मोन कनेक कोना दन' भ' गेल छलैक मुदा ओ 'मिथिलाक माटिपानिक एहि संस्कार केँ बलपूर्वक दबा' देने छल। तँ एहि टूटब केँ की ओहि संस्कार सभक टूटब बुझल जाए जे ओकर अपन दुर्गंजनक प्रतिरोध नहि करए दैत छैक? तखन फेर ओकर आँखि किएक भरि अबैत छैक? अपन मुक्ति दिस बढ़ि सकबाक शक्ति पेबाक हर्ष सँ? आ कि कतहु कोनो ठाहर नहि हेबाक आ ताहि सँ उत्पन्न अपन निरूपायताक चलते फेर ओही पुरुष लग घुरि जेबाक घोर अपमानजनक विवशता सँ? आ कि संस्कारजनित भावुकता सँ उत्पन्न अपन पतिक प्रति मात्सर्य-ममत्वक कारण? ओकरा प्रति घोर हिंसक आक्रोशक मनोदशा मे जखन ओकरा लेल ओ पैताबा, गमकौआ तेल आ गुलाब-शर्बत किनैत अछि तखन तँ ममत्व-मात्सर्य बला बात सोझाँ अबैत लगैत अछि। तँ कथा मे यदि ई बात कनेक खरियारल रहैत तँ कालीक चरित्रक कएक टा महत्त्वपूर्ण तन्तु देखार भ' सकैत छल। किएक तँ कथा मे कालीक स्टेशन पर सँ विदा हेबाक क्षणक मनोवेग आ डेरा घुरि ऐबाक क्षण तकक ओकर मानसिक-आन्तरिक आ शारीरिक गतिविधि कथाक अर्थ सृष्टिक लेल निर्णायक अछि।

एक टा बात आर। झमान आ निहारुन भेल अपन पति केँ देखिक' काली केँ 'तृप्ति' होइत छैक आ ओकरा लगैत छैक जे ओहि घर मे ओकरे 'शासन' आ 'राज' चलैत छैक। एहि सँ पहिने जखन ओ अपन दु:स्थिति सँ लड़बाक लेल अपना भीतर शक्ति जगबैत अछि तखनहुँ ओ 'आधिपत्य करत' से संकल्प करैत अछि। 'आधुनिक युगबोध सँ दीक्षा पौने' स्त्रीक लेल पुरुष-स्त्री संबंध मे एक दोसरक स्वतंत्र सत्ताक स्वीकृतिक आधार पर परस्पर पूरक समानता आ आत्मिक सामंजस्य केँ अपन संघर्षक अभीष्ट नहि बना क' 'शासन', 'राज' आ 'आधिपत्य' केँ अभीष्ट बनाएब कतेक संगतिपूर्ण से विचारणीय अछि। ई तँ विकृतिक एक छोर पर सँ केवल दोसर छोर पर जाएब भेल। कथाक शीर्षक सेहो कथाक अंतत: सृजित निहितार्थ केँ ठीक-ठीक व्यंजित नहि करैत अछि।

'सुभद्राक डायरी' विवाह सँ पूर्व मैथिल स्त्रीक यन्त्रणाक मार्मिक दस्तावेज अछि। ई कथा निर्विकल्प रूपें विचलित करैत अछि। कलात्मक दृष्टियें ई पहिल दुनू कथा सँ बेसी निर्दोष, सशक्त आ सफल अछि। एहि मे कुमारि कन्याक अंतर्लोकक समस्त वेदना जाहि निविड़ प्रामाणिकता आ नितान्त सान्द्रताक संग व्यक्त भेल अछि से पाठक केँ झमारैत अछि; ओकरा भीतर तक गहवरित आ अशान्त करैत अछि। ई कथा विवाहक, यातनाप्रद प्रतीक्षा करैत कन्याक ठमकल अस्तित्वक भीतर ल' जा क' आँखिक बीझ छोड़बैत देखबैत अछि जे कोना 'ई जरलाहा समाज-व्यवस्था कुमारि कन्या सभक हृदय केँ खुक्ख आ दग्ध बना देलकैक अछि; जे कोना युवावस्था रहितो अपन घर-आँगनक तथा टोल-पड़ोसक वातावरण आ माय-बापक चिन्ता-निराशा एवं घोर दुख ओ अपमानक कारणें कन्या अपन जीवन सँ अपने अकच्छ भ' जाइत अछि...बिनु बयसेक बूढ़ि माउगि भ' जाइत अछि।' एहि कथाक वितान सँ ई बात बेकछा क' सोझाँ अबैत अछि जे एहि स्थितिक निरन्तर आ विकट संघात सँ कुमारि कन्याक जीवन एना खियाइत आ खन्हियाइत चलि जाइत अछि जे एक दिन ओ अपनहि अपन जीवन केँ खारिज करबा पर उतारू भ' जाइत अछि : '...भेल जे कोनो तेहन चमत्कार होइत जे हम बेटी सँ बेटा भ' जइतहुँ तँ भगवानक बड़ गुण मानितियनि। धरती फाटि जाइ आ हम ओहि मे समा जाइ से इच्छा होमय लागल। ...आब तँ सभ बात सुनैत-सुनैत होइत अछि जे कोनो पोखरि-झाँखुर मे डूबि जाइ तखने निस्तार भ' सकैत अछि। 'हमरा बियाहक हेतु ततेक उत्कण्ठा नहि अछि जतेक एहि बातक हर्ष जे बाबूजीक चिन्ता समाप्त भ' रहल छनि। हमर अंतर्यामी जनैत छथि जे हमरा एक्को मिसिया कौतूहल कोनो गप्प बुझबाक हो। से मनोभाव रहल कहाँ? सौंसे जीवन दुखक ज्वाला मे दग्ध भ' जाय तँ क्षति नहि। तकर कोनो चिन्ता एखन नहि अछि। केवल एतबे होइत अछि जे कहुना बाबूजीक माथ परक

भार धरि कम होइन। से कथा पटि गेलनि इएह हमरा लेल पर्याप्त थिक...हमर रोम-रोम एहि आनन्दे प्रफुल्लित अछि जे बाबूजीक बड़ पैघ मनोरथ सफल भ' रहल छनि। ...बाबूजी मंगलपुर जयबाक काल हमरा दिस जाहि नजरियें तकलनि से हमरा करेज केँ दू खण्ड क' देलक अछि। होइत अछि जे कतहु साँप डसि लितय वा कोनो रोगे तेहन भ' जइतय जे बाबूजीक एहि निराशाक अथाह मोनि मे डूबल नजरि सँ बचि जइतहुँ।'

आ जखन गतात सँ आदर्शवादी युवक चन्द्रकिशोरक संग बिना टाकाक स्थिर भेल विवाह हुनकर जेठ भाइक टाकाक लेल अड़ि गेला पर टुटि जाइ अछि तँ सुभद्राक पिता ओकरा दिस जाहि नजरियें तकैत छथिन '...ताहि मे एके ठाम गहन विषाद, तीव्र असन्तोष, हिंस्र क्रोध आ करुण निराशा भरल छलनि।' आ एकर परिणाम ई होइत अछि जे '...हमर रोम-रोम काँपि उठल। मोन घूम' लागल आ चीत्कार करैत-करैत कोनहुना अपना केँ रोकि सकलहुँ। हे देव, आब की करू? पुरुष रहितहुँ तँ आजन्म कुमार रहबाक निश्चय क' लितहुँ... आब हम जीबि क' की करब...हमरा लेल आब यमराजे शरण।'

अररा क' खसैत सुभद्राक हाहाकार हिंसक श्राप बनि क' बहराइत अछि: 'होइत अछि जे एहि पुरुष समाज पर एक्के बेर किएक ने भयंकर वज्र खसि पड़ैत छैक जे स्त्रीगणक ई दुर्गंजन क' रहल अछि। जँ हमरा बुते होइत तँ हम भयंकर अभिशाप द' क' एहेन क्रूर आ वधिक पुरुष जातिक, जकर पितृसत्ताक समाज की-की ने अनर्थ क' रहल अछि, सौंसे पृथ्वी पर सँ सर्वनाश क' दितियैक!'

सुभद्रा जरि मरैत अछि मुदा अपन आर्त्त गोहारि 'हे देव, के हमर पीड़ा बुझत? ...हे दैव, आब की करू? ...आब हम जीबि क' की करब?' चिनगीक रूप मे हमरा अहाँक संवेदना मे छोड़ने जाइत अछि। ई देखबाक थिक जे एही चिनगी सँ निकलल धाह आ इजोत हम काली आ दीप्ति मे पबैत छी। एहि समाज-व्यवस्था पर जे हिंसक आक्रमण सुभद्रा श्रापक रूप मे भावनात्मक स्तरे टा पर क' क' रहि जाइत अछि सएह फेर काली आ दीप्ति मे सीधा प्रतिशोध आ प्रतिरोधक रूप मे प्रकट होइत अछि।

डायरीक युक्ति एहि कथाक लेल सर्वथा उपयुक्त अछि। एहि सँ एकरा मे अंतरंग प्रामाणिकता आएल अछि। यदि गाम मे रहनिहारि सामान्य पढ़लि-लिखलि कन्याक डायरी लिखबाक सम्भाव्यता आ विश्वसनीयता केँ कात कइयो देल जाय, तँ जतेक प्रौढ़ विवेचन आ परिमार्जनक संग डायरी प्रस्तुत कएल गेल से कनेक अखरैत अछि। यदि चरित्रक मानसिक-भाषिक स्तरक अनुरूप डायरीक प्रस्तुति रहैत तँ बेसी प्रभावोत्पादक होइत। चन्द्रकिशोर जखन परिवार सँ विद्रोह क' क' सुभद्राक

ओहिठाम विवाह करबाक लेल पहुँचैत छथि तँ ओकर जरि मरबाक दुर्घटना भ' गेल रहैत अछि। कथावाचकक देल एहि सूचना सँ उत्पन्न बिडम्बना कथाक त्रासदी केँ तीव्र करैत अछि। फेर सुभद्राक कोनो चेन्ह मँगला पर ओकर डायरी देल गेला सँ ओकरा मदतिये परिवार केँ एहि दुष्काण्ड सँ ओ कानूनी स्तर पर बरी करैत छथि, एहि सूचना सँ कथा यथार्थपरक बनैत अछि। मुदा बाद मे न्यायिक दण्डाधिकारी भ' क' अविवाहित रहैत काटरक विरोध तथा अंतर्जातीय विवाहक प्रचार-प्रसार करबाक बात कनेक आदर्शवाद सँ रंजित तँ लगिते अछि, कथा मे बाहर सँ जोड़ल गेल 'नैतिक सन्देश' जकाँ सेहो लगैत अछि। ई कदाचित कथाक कलात्मकताक ह्रासे करैत अछि। कथाक मूल प्रयोजन तँ पहिनहि काफी सशक्त ढंग सँ सिद्ध भ' चुकल रहैत अछि।

पत्राचारक माध्यम सँ कहल गेल कथा 'पुरान पत्र आ टटका बात' मे काटरक प्रति विद्रोह देखाओल गेल अछि। कथा मे अनुभवक ताप अछि। आदर्शवादी युवक सुधीरक विद्रोह वास्तविक लगैत अछि। पत्राचारक युक्ति मुदा कएक तरहें उकड़ू भ' गेल अछि। कएक टा प्रसंगक समावेश मे असौकर्य भेल अछि आ कलात्मक अन्विति मे बाधा भेल अछि। तइयो ई मोटामोटी नीक कथा अछि।

कथ्यक दृष्टियें एक टा उल्लेखनीय कथा अछि 'आत्मदंशक वेदना'। एहि मे समगोत्री भ' जेबाक कारण युवक-युवतीक पारस्परिक अनुरक्तिक परिणति विवाह मे नहि भ' पबैत अछि आ एहि विडम्बना सँ उत्पन्न वेदना मे युवक उबडुब करैत रहि जाइत अछि। मैथिल ब्राह्मणक सामयिक संगठन सँ जुड़ल वैवाहिक लोकाचारक नियम पुरुष-स्त्रीक रागात्मक संबंधक स्वाभाविक परिणति केँ कोना बाधित करैत छैक से देखेबाक प्रयास एहि कथा मे कएल गेल अछि। मैथिल संदर्भ मे ई एक टा सार्थक विषय अछि।

विफल प्रेम सँ उत्पन्न उन्माद, अराजक यौनाचार आ अंततः विक्षिप्तिक कथा अछि 'इन्टरव्यू'। कथा तीरल आ छिड़ियाएल अछि। छुच्छ सूचनाक स्तर पर बेसी प्रसंग आएल अछि; बहुत कम प्रसंग घटित आ प्रत्यक्ष भेल अछि।

मुदा विफल वैवाहिक जीवन सँ उत्पन्न विक्षिप्ति आ विरक्तिक कथा 'मुक्ति' मे ई सभ दोष कम अछि। एहि मे वैवाहिक जीवनक बहुविध अंतर्विरोधक जटिलताक साक्षात्कारक प्रयास अछि। मातृत्व आ पत्नीत्वक द्वंद्व एकर केन्द्रीय तत्त्व अछि जे एकरा महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि। मातृत्व केँ अपन वैवाहिक जीवनक एकमात्र सार्थकता मानि अपन 'पत्नीत्व'क, अपन स्त्रीत्वक आन सभ पक्षक, निषेध क' देलाक बादो स्त्री 'सतमाय' हेबाक, माने मातृत्वहीन हेबाक, कलंकक दंश भोगैत अछि आ फेर मातृत्वक आधार खतम भ' गेला पर विक्षिप्त भ' जाइत अछि। पुरुष

अपन अस्तित्वक दुर्निवार खगता केँ सोझेसोझ आ साफ-साफ नहि सकारैत अछि, आत्म-छलना आ मिथ्या मे जिबैत अछि। निग्रहक घोर प्रयासक अछैतो, वस्तुत: पत्नीक चाहना रखैत, ओ मातृहीन अबोध बेटाक लेल माए आनि देबाक निर्विकल्प अनिवार्यताक व्याजें दोसर विवाह करैत अछि। आ पत्नीक पत्नी नहि वास्तव मे पूर्णत: बेटाक माए भ' जेबाक कारण, ओ क्रमश: एतेक कुण्ठित भेल चल जाइत अछि, जे बेटा ओकरा दाम्पत्य सुख मे एकमात्र बाधक बुझा पड़य लगैत छैक। आ ओकर पितृ-स्नेहक क्षरण होइत-होइत लोप भ' जाइत छैक। पत्नीक विक्षिप्त भ' गेलाक बाद ओ विरक्त भ' जाइत अछि। ककर कथी सँ मुक्ति से स्पष्ट नहि भ' पबैत अछि। (अस्तित्वक असलियतक निषेध सँ उत्पन्न यन्त्रणा सँ मुक्ति?) ओना कथा मे किछु सरलीकरण अछि, जेना मातृत्वक आगाँ पत्नीत्वक निषेध मुदा तइयो ई वैवाहिक जीवनक सत्य केँ अन्वेषित करबाक उल्लेखनीय प्रयास करैत अछि।

बहरिया तेसर सँ संबंधक संशयक कारण दाम्पत्य जीवन पर पड़ैत जरब केँ ल'क' लिखल गेल कथा अछि 'अन्हार इजोत' तथा 'एक टा मन:स्थिति'। एहि दुनू मे पहिने संशय उत्पन्न होइत देखाओल जाइत अछि, फेर एकान्त समर्पण आ निष्ठाक 'प्रमाण' जुटा क' संशय दूर होइत देखाओल जाइत अछि। आत्मिक-रागात्मक आ शारीरिक स्तर पर व्यक्तिक किछु आग्रह एहेन भ' सकैत छैक जे दाम्पत्य संबंधक भीतर पूर नहि भ' सकए, तकर खोधबेध एहि कथा सभ मे नहि अछि। एहेन स्थिति सभ एहि दुनू कथा मे अबैत तँ अछि मुदा ओकर यथार्थक साहसपूर्ण स्वीकार आ विश्लेषण नहि कएल जाइत अछि। वैवाहिक संबंधक पारम्परिक नैतिकताक रक्षा आग्रह आ ओहि सँ उत्पन्न अंतर्निषेधक कारण स्थितिक सरलीकृत समाधान प्रस्तुत क' देल जाइत अछि।

'संकल्पक आधार' आ 'तृप्ति बोध' सुखी आ भरल-पुरल वैवाहिक जीवनक चित्र उपस्थित करैत अछि। प्रतिकूल स्थिति सँ उत्पन्न उकटापैंची आ कलहक त'ह मे सिनेह, पारस्परिक चिन्ता आ हेलमेलक माधुर्यक सोह कोना चलैत रहैत छैक से एहि दुनू कथा सँ सोझाँ अबैत अछि। ई दुनू कथा वैवाहिक जीवन मे आस्था जगेबाक तथा जीवन-राग केँ गाढ़ करबाक प्रयास करैत अछि। ओना 'संकल्पक आधार' मे जेना ममियौतक विवाह नहि करबाक संकल्प पिसियौतक वैवाहिक जीवनक असलियतक झलकी पाबिक' तुरत विवाह करबाक संकल्प मे बदलि जाइत छैक से अवास्तविक लगैत अछि।

संस्कारजनित मान्यता आ भावबोधक कारण मैथिल स्त्रीक जीवन महानगरक परिवेश मे कोना अवग्रह मे पड़ि जाइत छैक से 'संस्कारक मोह' मे देखल जा सकैत अछि। पाश्चात्य नवीन शैलीक अंध उत्थर अनुकरण तथा दैन्य सँ उत्पन्न उन्मुक्त

आ उच्छृंखल पुरुष-स्त्री संबंध ओकरा सदति असहज बनौने रहैत छैक। अपन पारिवारिक जीवन दूषित भ' जेबाक तथा अपन जीवनशैलीक पारंपरिक शुचिता नष्ट भ' जेबाक दुश्चिंता ओकरा पछाड़ने रहैत छैक। मुदा एहि परिवेश सँ सामंजस्य नहि बनेला सँ जीबा मे घोर असौकर्य होइत रहैत छैक। फेर ऊपरी चमक-दमक आ तेजी-तुर्शीक भीतर गम्भीर पारिवारिक दायित्व बोध, निर्मल-निश्छल उन्मुक्तता आ मानवीय ऊष्माक झलक भेटला पर ओ अपन पतिये जकाँ परिवेशक प्रति कनेक आश्वस्त होइत अछि। आ एहि तरहें 'संस्कारक मोह' टुटबाक, सांस्कृतिक चेतनाक व्यापक आ समावेशी हेबाक तथा आधुनिक परिवेश सँ सामंजस्य स्थापित करबाक प्रक्रिया ओकरा जीवन मे शुरू होइत छैक।

एहि तरहें मैथिल स्त्रीक चरित्र मे विस्तार आन' बला दू टा कथा अछि 'प्रेम नित्य थिक' तथा 'एक अंक : तीन दृश्य'। पहिल मे विस्तार स्वस्थ अछि, दोसर मे विकृत। पहिल मे मित्रक बहिनक संग कथावाचक भाइ-बहिनक गम्भीर मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित होइत अछि आ दुनूक बीच प्रेम एहन वर्जित विषय पर, ओकर प्रकृति पर, तर्क-वितर्क होइत अछि। मैथिल सन्दर्भ मे एहि तरहक संबंध केँ विकसित होइत देखाएब उल्लेखनीय अछि। दोसर कथाक मूल कथ्य ओना सामाजिक-आर्थिक विसंगति अछि, मुदा जाहि चरित्र केँ केन्द्र मे राखि क' ओकरा प्रस्तुत कएल जाइत अछि, से गाम सँ शहर आबि क' ओतुका सामाजिक-राजनीतिक जीवन मे आगू बढ़बाक लेल हाथ-पैर मारनिहारि महत्वाकांक्षी मैथिल स्त्री अछि। ओ नगर निगमक चुनाव जितबाक लेल सार्वजनिक जीवनक विकृति केँ निर्विकार भ' क' अंगेजैत अछि।

वर्तमान जीवन-स्थितिक निरंतर झमार सँ टुटल आ निहारुन भेल पुरुष अपना केँ सभ किछु सँ वियोजित अनुभव करैत अछि। ओकरा अपना भीतर अवसाद, वितृष्णा, मिथ्या तथा व्यर्थता आ एकाकीपनक बोधक अलावा आर किछु नहि भेटैत छैक। चारूकात व्याप्त रुक्षता आ इतरपन सँ आक्रान्त भ' क' ओ पहिने शुद्ध प्रेमक लेल विकल भ'क' अपन पत्नी लग जाइत अछि जे ओकरा जीवन मे अर्थ आ स्फूर्तिक संचार क' सकए। मुदा ओकरा पत्नी सेहो अनठिया लगैत छैक, ओकरा मे वितृष्णे टा भरैत छैक। एहन भ' गेल अछि 'स्थिति आजुक जिनगीक'। तथाकथित अस्तित्ववादी कथालेखनक फैशनक दबाब मे लिखल बुझाइत एहि कथा मे मिथ्याक घटाटोपक भीतर स्त्रीक देहक प्रति पुरुषक कुत्सित भोग लिप्सा प्रकट भेल अछि। कथा मे स्त्रीक संग आत्मिक संवादक कोनो प्रयासक बिना, खाली ओकर देहे टा केँ निरारि क' देखैत, पुरुष ओकरा सँ वियोजित अनुभव करैत अछि।

एही तरहें हम देखैत छी जे स्त्रीक स्थिति आ पुरुष-स्त्री संबंधक अनेक आयाम

केँ किसुनजी बुझबाक-बेकछयबाक प्रयास केलनि अछि। स्त्री केँ दुर्गति सँ उबारबाक लेल तथा पुरुष-स्त्रीक संबंध केँ विवेकपूर्ण आ सार्थक बनेबाक लेल ओ गम्भीर प्रयास केलनि अछि। एतए एक टा बात रेखांकित करबा जोगरक ई अछि जे स्त्रीक विषय मे लिखबा काल किसुनजी 'धाह' उत्पन्न करबाक बदला मे इजोत छिटकबैत छथि। जेना कि हुनका समयक कथालेखन मे चलन छल जे कथाकार लोकनि स्त्रीक निष्कवच, निरुपाय आ संकटापन्न स्थिति पर लिखबाक व्याजें ओकर देह मे विकृत रस लैत छलाह, तकर हुनका मे छुतियो नहि अछि। ओ सात्विक आ निर्वैयक्तिक शुद्धताक संग स्त्रीक स्थिति केँ प्रकाशित करैत छथि आ ओकर जीवनगति मे विवेकपूर्ण उन्मुक्तता अनबाक लेल प्रयास करैत छथि। मैथिली कथा-साहित्य मे ई हुनकर महत्त्वपूर्ण योगदान अछि।

आन कथा सभ मे कथ्यक दृष्टियें महत्त्वपूर्ण आ मोटा-मोटी नीक कथा अछि 'कंडोलेंस'। भौतिक स्तर पर सभ तरहें ऊपर उठैत समाजक ऊँचका खाढ़ी पर चलि गेला सँ लोक कोना अपन जड़ि-मूल सँ कटि जाइत अछि, अपन निर्माण-भूमि सँ उपटि जाइत अछि, संयुक्त परिवारक नैतिक मूल्य केँ त्यागि दैत अछि, मानवीय संबंधक नैतिक विवेक केँ तिलांजलि द' दैत अछि, स्वजनक प्रति निपट संवेदनहीन भ' जाइत अछि आ उच्छृंखल भोगवाद मे लिप्त भ' जाइत अछि—से एहि कथा मे नीक जकाँ देखाओल गेल अछि। एखन ई सभ बात काफी जोर पकड़ने जा रहल अछि आ तेँ ई कथा बहुत प्रासंगिक अछि।

कथ्यक दृष्टियें एक टा आर उल्लेखनीय कथा अछि 'जयपराजय'। पुत्रक सत्ता स्वतंत्र रूप मे पिता लग प्रकट होइत अछि आ से हुनका लेल असह्य भ' जाइत छनि। इंजीनियरिंग मे पढ़ैत युवक अपन विवाहक निर्णय अपनहि लैत अछि आ पिता केँ अपनहि सूचित करैत अछि। पारंपरिक दृष्टि मे ई घोर अबंडपन भेल। एहि सँ पिताक सत्ता पर, हुनकर अखंड वर्चस्व पर, निर्विरोध एकाधिकार पर जरब पड़ैत छनि। ओ पहिने तामसे बताह होइत छथि, मुदा फेर पुत्रक निर्णय केँ स्वीकार करैत छथि किएक तँ ओ पुत्र सँ हारि नहि मानए चाहैत छथि। पुत्रक आदर्शवादी निर्णय केँ ओ उचित, प्रशंसनीय आ सम्मानीय मानि क' नहि, अपितु अपना अहम् केँ प्रस्थापित करबाक लेल स्वीकार करैत छथि। पिता पुत्र संबंध मे विवेक नहि 'जयपराजय'क बात निर्णायक भ' क' रहि जाइत अछि। यदि एहि कथा मे पिता आ पुत्रक बीच घात प्रतिघात केँ आर खरियारल गेल रहैत तँ ई दुनूक बीच विवेकपूर्ण संबंध विकसित हेबा मे अबैत बाधा सभ केँ आर सूक्ष्मता सँ देखार क' सकैत छल।

नौकरिहारा निम्न मध्यम वर्गक अभावग्रस्तताक कारण मासक अंत मे एक दोसरा सँ पैंचक लेल खेखनियाँ आ कपट 'मासान्त' मे प्रकट होइत अछि। निम्न

वर्गक विकट दैन्य पर लिखल गेल कथा सभ 'जीवनक मूल्य' आ 'जीवनक असौकर्य' कथा कम रेखाचित्र बेसी अछि। पहिल मे हाट पर पान लैत काल चरम दैन्यक एक टा स्थिति कथावाचकक संवेदना सँ टकराइत अछि आ एकर विडम्बना सँ जीवनक मूल्यक मादे ओ क्षुब्ध होइत अछि। दोसर मे विभाजनक फलस्वरूप शरणार्थी सभक जीवनक चरम असौकर्य सोझाँ अबैत अछि। एक तँ भिखमँगनी सभ कोनहुना परिवार केँ जिया क' रखबाक लेल रने बने छिछिया क' दतखिस्टी केने फिरैत अछि आ ताहि पर सँ देहक धंधा करबाक सन्देहक दंश सेहो भोगैत अछि। असम्भाव्य स्थिति सँ आरम्भ होइत, दार्शनिक टिप्पणी सभ सँ टाँकल आ अनेरे नमारल गेल कथा 'ताँगाबाला' मे ई देखाओल गेल अछि जे मनुष्य मे नैतिक विवेक मरल नहि छैक, ओ केवल दबि टा जाइत छैक जे आन्तरिक दबाव सँ फेर जगैत छैक आ व्यवहार मे प्रकट होइत छैक।

'रहस्य' मे संकट सँ उबरबाक रहस्यमय अनुभव तथा लोकदेवता सलहेस मे लोकक आस्था व्यक्त भेल अछि। एहि कथाक खास बात ई अछि जे मिथिलाक निसर्ग लोक तथा एकर संस्कृतिक एक टा प्रमुख तत्व तीर्थयात्राक जीवन्त अनुभव सँ ई पाठक केँ सम्पन्न करैत अछि।

एहि तरहें किसुनजीक प्रतिनिधि कथा-संग्रह 'स्वयंवर' मैथिल जीवनक सूझ बूझ बढ़बैत अछि आ मैथिली मे सार्थक कथाकर्मक उर्वर सम्भावना-भूमि तैयार करैत अछि। हुनकर सीमा आ शक्ति, विफलता आ उपलब्धि दुनू समकालीन कथालेखनक लेल उपयोगी अछि। अपन कथाकर्मक आरम्भे मे ओ चरम दैन्य सँ व्यथित भ' क' जीवनक मूल्यक मादे क्षुब्ध भेल छलाह। आइ स्थिति आर बेसी विकट अछि आ हुनकर कथा सभ एखनुक कथाकार सभ केँ ओहि मादे चिन्तित आ उन्मथित हेबाक हाक दैत अछि।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक कथा

शिवशंकर श्रीनिवास

स्वतंत्र भारत मे सभ केँ समान अधिकार संविधान द्वारा प्राप्त भेलैक। किंतु ओ अधिकार वास्तविक रूप मे प्राप्त भेलैक? सामाजिक ओ आर्थिक विसंगति जाहि रूपें समाज केँ विकल कयने छल ओ भयानक रूपें दुखद छल वा कहू एखन तक अछि। वैदेही : सितम्बर 1954 मे प्रकाशित कथाकार रामकृष्ण झा 'किसुन'क कथा 'जीवनक मूल्य' एहि बात केँ खुलासा करैत अछि। एहि कथा मे कथाकार एक टा हाटक जाहि सहज रूपें वर्णन करैत छथि ओ वर्णन अपन कथ्य रूप मे स्पष्ट करैत अछि जे जाहि भूमिक धीया-पूता भूखे सन्तप्त काहि कटैए ओहि भूमिक जीवन मूल्यक दशा दुखद अछि। की जीवन यैह थिक जाहि मे विकासक कोन कथा भूख सँ विकल एहि ठामक संतान तड़पैत रहय? उक्त कथाक विशेषता अछि जे तत्कालिक वर्णन मे कथानक संग स्पष्ट कथ्य दैत अछि। एहन कथा लिखब कठिन छैक, किंतु किसुनजी एकरा सहज करैत छथि जे हुनक विशेषता थिक।

किसुन जीक कथाक संख्या 22 टा अछि जे 'स्वयंवर' कथा-संग्रह मे संग्रहीत अछि, भ' सकैए हुनक आरो कथा हैत किंतु ओ सभ हमरा समक्ष नहि आयल अछि।

हिनक कथा जीवनक विभिन्न पक्ष पर विचार करैत देश-कालक स्थिति केँ सेहो समक्ष अनैत मानवीय चेतना केँ जीवन प्रकाश दैत कथाक विकास केँ सेहो गति प्रदान कयलक अछि जे महत्त्वपूर्ण अछि।

मनुष्यक जीवन मे बहुतो एहन घटना होइत अछि जकरा विषय मे ओ भरि जीवन जिज्ञासु बनल रहि जाइत अछि, ओना कहल गेल अछि जे मनुष्यक जीवन केँ जिज्ञासे जीवंत बना क' रखै छै किन्तु किछु एहन बात होइ छै जे रहस्यपूर्ण भ' क' रहि जाइ छै, मनुष्यक तर्क अपन ओट ल' लै छै। रहस्य अपना आप मे दुर्बोध्य थिक आ ई स्थिति जीवन मे क्वचिते मुदा घटैत रहै छै। हिनक कथा 'रहस्य' मे यैह बात कहल गेल अछि।

उक्त कथा मे दुर्गम पहाड़ पर रस्ता देखौनिहार ओ वंशीवादक के छलाह ओ कथावाचक लेल रहस्य रूप मे रहि जाइत अछि किंतु कहबाक मूल उद्देश्य हमरा जनैत ई अछि जे जीवनक क्रम केँ पूर्ण रूपें बूझब दुर्बोध्य अछि, वस्तुत, कथा सैह कहैत अछि।

प्रेमक व्याख्या अनेक विधा मे विद्वान रचनाकार लोकनि कयलनि अछि। विद्यापति कहैत छथि जे प्रेम केँ बूझब कठिन अछि कारण ई क्षण-क्षण नूतन अर्थात् नव रूप मे समक्ष अबैत अछि, ओ कहैत छथि अतृप्ति स्थितिक प्राप्तिक पहिल प्रेम थिक। कबीर दास प्रेम केँ बुझिनिहारे केँ पंडित माललनि अछि। अपन कथा 'प्रेम नित्य थिक' मे किसुन जी प्रेम केँ 'नित्य' अर्थात् अक्षर रूप मे शाश्वत मानलनि अछि। एहि कथा मे ओ कहैत छथि भले अहाँ केँ होइत हो जे जकरा सँ अहाँ केँ प्रेम छल ओ भ्रम छल से बुझी, किंतु भले ओकरा द्वारा ढकल जाइ वा ओकरा सँ अहाँक संपर्क टुटि जाय किंतु अहाँक हृदय मे उपजल ओ प्रेम सदा अक्षुण्ण रहत ओ भले अन्यत्र किएक ने फलीभूत होअय किंतु ओ विनष्ट नहि भ' सकैत अछि। दाम्पत्य जीवनक मधुरता केँ आंकब कठिन अछि। साधारणतया लोक पति-पत्नीक संभाषण सँ ओकर बीचक मधुरता केँ बुझ' चाहैए किंतु ई प्रयास सार्थक नहि अछि। 'संकल्पक आधार' कथा पति-पत्नी झगड़ा ओ पुनः अनुराग बुझि देबूक विवाह नहि करबाक संकल्पक आधार डगमगा उठैत अछि।

वस्तुतः किसुनजीक 'संकल्प आधार' दाम्पत्य-प्रेमक मधुर कथा अछि जे अनुराग पाठकक हृदय केँ गुदगुदा दैत अछि।

भारत केँ स्वतंत्रता भेटलैक, किंतु देशक दू फाँक भ' गेलै, एहि काल मे पाकिस्तान सँ बहुतो एहन शरणार्थी सभ आयल जकर जीवनक कठिनता चरम सीमा पर छलैक, एहन लोक कोना भीख माँगि दयनीयता मे जीबैत रहय वा एखनो अछि तकर कथा किसुन जी अपन कथा 'जीवनक असौकर्य' मे कहलनि अछि। एहि कथाकारक ई विशेषता रहल अछि जे ई देश काल ओ ओहि अवधि मे समाजक बीच जे विभिन्न विसंगति अछि, ओकरा ई एना उठौलनि अछि जे मानवीय चेतनाक दृष्टि केँ खोलैत सजगता प्रदान करैत ओहि दिशा मे एक टा डेग ल' किछु करबाक प्रेरणा दैत अछि।

दहेज प्रथाक विरुद्ध हिनक कथा 'पुरान पत्र आ टटका बात' ओ 'सुभद्राक डायरी' अछि।

'पुरान पत्र आ टटका बात' कथा ओ दू पत्रक माध्यम सँ पूरा करैत छथि। जे पत्र सुधीर (नायक) अपन मित्र विनय केँ देने छैक। सुधीर एहि पत्र मे नमिताक प्रति अपन आकर्षण ओ अपन अभिभावक द्वारा बिना दहेज केँ विवाह नहि करेबाक

बात सँ अपन विद्रोह प्रकट कयने अछि। कथा कहैत अछि जे आब समय आबि गेल अछि जे युवक लोकनि केँ अपन परिवार सँ विरोध क' बिना दहेज केँ विवाह करबाक हेतु आगू अयबाक चाही।

'सुभद्राक डायरी' मे सुभद्रा अपन पिताक उदास मनःस्थिति देखि एतेक विकल होइत छथि जे ओ अपन शरीर मे आगि लगा जरि जाइत छथि। दहेजप्रथाक विरोध मे ठाढ़ भ' चंद्रकिशोर जखन सुभद्रा सँ विवाह कर' जाइत छथि त' ओहि सँ पहिने सुभद्रा मृत्यु केँ स्वीकारि लेने रहै छै। फलतः चंद्रकिशोर आजन्म कुमार रहि समाजक सेवा मे लागि जाइत अछि। अंततः कथा देखबैत अछि कोना उक्त दहेज प्रथा समाज बीच कोनो जीवन केँ मृत्युक घाट पहुँचा दैत अछि।

एहि समाज मे सामाजिक परिपाटी केँ समाप्त करक हेतु अनेक व्यक्ति भाषण दैत छथि, एहन परिपाटी जे विभिन्न रूप मे सामाजिक विकास केँ बाधित करैत अछि, किंतु ओ व्यक्ति अपना बेर मे अपन भाषण बिसरि जाइत छथि। कथनी आ करनी मे अंतर रखनिहार एहन व्यक्ति सँ सावधान करैत अछि किसुन जीक कथा 'एक अंक तीन दृश्य।' एहि कथा मे देवीक चरित्र देखा कथाकार कहैत छथि जे कोना कथनी ओ करनी मे एके व्यक्ति अंतर रखैत अछि। देवी जी पहिने गाम मे रहैत छलीह, पतिक मृत्युक बाद शहर चल अयलीह आ एत' ओ सभ तरहें अपन विकास मे लागि गेलीह। ओ अपन व्यक्तित्व एना बना लेलनि जे कोनो सांस्कृतिक ओ सामाजिक वा राजनैतिक कार्यक्रम हो, ओ सभ मे अनिवार्य भ' गेल छलीह। ओ राष्ट्रीय बचत संस्थाक लोक छलीह। बचत पर सारगर्भित भाषण दैत छलीह। देश मे कोना अन्न केँ बचाओल जाय ताहि पर भाषण दैत छलीह। भोज मे कोना कोना भोज्य-पदार्थ दूरि होइत छल, ओहि पर प्रकाश दैत छलीह, किंतु ओ अपने की छलीह ? तकरा देखबैत उक्त कथा एहि देशक जनताक हाल देखबैत हुनक स्थिति केँ स्पष्ट करैत अछि जाहि लेल तीन टा दृश्य आयल अछि—पहिल जे एक टा भिखमंगा एक टा होटल मे किछु खेनाइ माँग' जाइत अछि किंतु भूखातुर भिखमंगा केँ भगा देल जाइत छैक, ओ भगैए तँ ट्रक ओकरा थकुचि निकलि जाइत छैक आ ओकर खून भ' जाइ छै आ दोसर, जाहि रिक्शा पर कथावाचक जाइ छथि ओ रिक्शावला कोना उतरि अपन 'सिलबरिया बाटी मे' चारि आनाक भात आ एक आनाक माछक झोर ल' खाक' कहुना मोन मना लैत अछि।

आ तेसर दृश्य जे स्वयं बचत करबाक भाषण दैत छथि ओ अपन राजनीतिक उद्देश्यें बेटीक जन्मोत्सव पर भोज करैत छथि जाहि मे नोथारी सभ केँ आग्रह-पर-आग्रह क' भोजन सामग्री छुतबैत छथि, नष्ट करैत छथि।

कथा कएक टा बात कहैत अछि। ओ ई जे एक दिस लोक भुखे मरि रहलए,

श्रमिक केँ भरि पेट अन्न नहि भेटै छै। आ पुनः एहन व्यक्ति जे स्वयं बचत पर भाषण दैत अछि ओकरे द्वारा होइत साहखर्ची भोजन सामग्री केँ नष्ट क' रहलए। कथा समाजक वास्तविक स्थिति देखबैत समाज केँ सचेत करैत अछि।

मासान्त कोनो मासक अंत थिक। परंपरा मे प्रत्येक मासक संक्रांति सँ पूर्व मासान्त होइत अछि, जाहि दिन शुभ कार्यक करबाक परिपाटी नहि अछि। किंतु एहि कथाकारक 'मासान्त' कथा ओहि भाव मासान्तक कथा नहि थिक। ई थिक नोकरी कयनिहार हेतु मासक अंतिम भागक समयक कथा। उक्त कथा 10 सितंबर 1961 ई. मे मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल। ओ एहन समय छल जाहि समय मे नोकरी लोक करै छल किंतु दरमहा कम छलै। एहन स्थिति मे मास बीतैत-बीतैत आर्थिक तंगी आबि जाइत छलैक, ओहि आर्थिक तंगी मे केहन-केहन हीत-मीतक बीच रहि जीवन बीतब' पड़ै छलैक तकर बात कथा कहैत अछि। जाहि सँ व्यक्तिक चरित्र ओ स्वभाव सभ समक्ष अबैत छलैक।

'ताँगावाला' चारित्रिक कथा थिक। कोना एक टा तंगावाला मनक चंचलता मे आबि एक टा सुहृदय व्यक्तिक पत्नीक इयरिंग राखि बेचैत छल, ओ इयरिंग घुरबैत सेहो हुनक संगी केँ अपन मन पड़ल पापानुभव बोझ केँ हटबैत अछि, ओकर अपूर्व कथा अछि। ओहि ताँगावालाक नाम कन्हाइ छलै। कथावाचक माध्यम सँ कथा कहैत अछि एक व्यक्ति मे जखन ओकरा लोभ ग्रसित करै छै तखन ओ कलियुगक लोक भ' जाइत अछि आ जखन ओ लोभ सँ मुक्त भ' जाइत अछि तँ सत्ययुगक भ' जाइत अछि। जेना कन्हाइ भेल अर्थात् प्रत्येक युग सभ युग मे रहैत अछि जे व्यक्तिक चरित्र सँ प्रकट होइत अछि।

'अन्हार आ इजोत' दुख ओ सुखक प्रतीक थिक। भ्रम अर्थात् अज्ञानता अन्हारक अर्थ मे अछि आ इजोत ज्ञानक प्रकाश थिक जाहि मे विषय-वस्तु स्पष्ट होइत अछि।

एहि कथा मे अनुराधा (पत्नी केँ) पति पर संदेह होइत छनि आ सुधीर (पति)केँ अनुराधा पर। आ आगू जखन स्थिति स्पष्ट होइत अछि तँ दुनू अन्हार सँ इजोत मे आबि जाइत छथि, कथा अपन प्रसंग सँ जेना कहैत हो जे ककरो बिना बुझेने ने कोनो बात सँ दुखी होबक चाही आ ने खुशी।

एहि रूपें किसुनजीक कथा जीवनक विभिन्न परत केँ खोलैत स्नेहमयी जीवनक अनुरागीक रूप मे समक्ष अबैत अछि।

हिनक कथा 'स्वयंवर', जे हिनक संग्रहक सेहो नाम थिक, मिथिला मिहिर मे 15 सितंबर 1962 ई. केँ प्रकाशित भेल। ओहि कथा मे नारी अपन पति चुनबाक अधिकार स्वयं लैत अछि जाहि मे ओकर पिताक सहयोग रहैत अछि, ओ युगानुसार

अद्‌भुत अछि। आइ एकैसमी शताब्दी मे सभ नारी केँ पुरुष सदृश्य अधिकार भेटैक तकर प्रयास करैत छथि। एहन स्थिति मे बीसम शताब्दीक सातम दशकक प्रारंभ मे नारी आगू बढ़ि अपन पतिक चुनाव स्वयं करैत छथि। उक्त बात नारी चेतनाक दृष्टि सँ ओ कथा विकासक दृष्टि सँ महत्त्वपूर्ण रूपें रेखांकित कर'वला विषय अछि।

धनंजय बाबूक पुत्री दीप्ति ई नहि स्वीकार करैत अछि जे ओ कन्या थिक तँ कोनो पुरुष सँ हीन अछि। ओ राजीवक अनर्गल प्रश्नक मुँहतोड़ जवाब दैत अछि आ हुनक संग आयल प्रो. दिवाकर जे अत्यंत विनयशील छथि जे अपन भूमि जो नारीक महत्त्व केँ बुझैत छथि, अपन पतिक रूपहु मे चुनैत अछि। जकरा धनंजय बाबू सेहो स्वीकार करैत छथि। उक्त कथा जाहि सहजता संग संपूर्ण बात कहैत नारी चेतना केँ आगू अनैत अछि ओ कथाक कला कौशलक अपूर्व विशेषताक परिचय दैत मैथिली कथा केँ नारी चेतनाक संदर्भ से विकसित करैत अछि। कथा विकास केँ आगू बढ़बैत अछि।

'कंडोलेन्स' मे संवेदनहीनता कोना आदमी केँ स्वार्थी बना अपना मे समेटि लेलक अछि तकर दारुण कथा अछि। मिस्टर मल्लिक जिनक पिताक मृत्युक पछाति पित्ती स्वयं दुख उठबैत पढ़ौलनि-लिखौलनि आ ई बड़का ओहदा पर गेला ओ पित्तीक मृत्युक तार पढ़ि एक टा कंडोलेन्स पंक्ति लिखि गाम पठा दैत अपन कर्त्तव्यक इतिश्री बुझि लैत छथि। उक्त कथा कहैत अछि जे कृषि युगक समाप्तिक बाद एहि देश मे औद्योगिक युगक आरंभ भेल। एहि ठामक लोक आधुनिक शिक्षा ल' गाम सँ दूर नोकरी-चाकरी मे गेल। पैघ-पैघ पद प्राप्त कयलक किंतु परिवार ओ गाम सँ जे व्यक्ति उच्च पद प्राप्त कयलक ओहि सँ ओकर परिवार ओ गाम केँ कोनो लाभ नहि भेटलैक। कहबाक तात्पर्य जे औद्योगिक विकास देश केँ समग्र रूप मे आगू नहि बढ़ा सकल। एहि देशक गामक आगू पीढ़ी गाम केँ उपेक्षित छोड़ि अपन विकास मे लागि गेल आ गाम पछुआ गेल। जहिना कृषि-संस्कृति मे संपूर्ण गामक समाज मे सामाजिक अनुराग छल ओ अनुराग औद्योगिक जीवन मे, परिवारो लेल, अपन अनुराग केँ अपन आनंद ओ विकास मे तेना लोक रमा देलक, नहि रहल।

'मुक्ति' कठिन अछि, तथापि लोक मुक्तिक प्रयास करैत अछि, गोपाल बाबू पहिल पत्नीक बाद जीवन केँ दाम्पत्य-सुख सँ मुक्तिक प्रयास कयलनि। आ अपन एक मात्र पुत्रक नीक सँ पालन करै मे लागि गेलाह किंतु जखन वैह पुत्र नवकी माय आनि देबाक जिद्द कयलकनि तँ दोसर विवाह कयलनि। ओ गौरी माय भ' क' अयलीह, कनियाँ भ' क' नहि। गौरी द्विरागमन मे अयलीह त' गोपाल बाबूक पहिल पत्नीक एक मात्र पुत्र रमेश केँ लए क' गोसाओन केँ प्रणाम कयलनि। ओ कोना रमेशक नीक माय भ' क' रहतीह, कोना रमेश प्रसन्न रहत ताही मे लागि गेलीह

किंतु किछु दिनक बाद रमेश टाइफाइड ज्वर सँ पीड़ित भ' मरि गेल। गौरी 'स्तब्ध, पाषाण, भावशून्य' भ' गेलीह। ओ जकर माय भ' क' आयल छलीह सैह नहि रहल। ओ अपन आयब केँ इति बुझलनि आ गोपाल बाबू सँ कहि नैहर चल गेलीह। गोपाल बाबू सेहो बियाहि क' पत्नी नहि रमेशक माय अनने छलाह। ओहो गौरीक नैहर गेलाक बाद अपन पूर्व पत्नीक फोटो फेर टाङि 'वीत-राग' मे रमि गेला, मन सँ नव दायित्व सँ 'मुक्ति' पाबि लेलनि। 'मुक्ति' कथा कहैत अछि जँ यदि जीवन निमित्त लेल नियत भ' जाइत अछि तँ निर्मित्तक मूल लक्ष्यक बाद ओ अपन इति ल' लैत अछि। यैह कारण भेल जे गौरी नैहर चल गेलीह, हुनका अपन प्रयोजन सँ मुक्ति भेट गेलनि यदि ओ रमेशक माय संग गोपाल बाबूक पत्नी भ' क' आयल रहितथि तँ एना नहि होइत, ओहिना गोपाल बाबू दोसर पत्नी नहि अपन पुत्रक लेल माय अनने छलाह, पुत्रे नहि तँ मायक कोन काज? ओहो रमेशक नवकी मायक प्रयोजन सँ मुक्तिक बोध मे लागि गेलाह।

'प्रतिशोधक संतोष' अद्‌भुत मनोवैज्ञानिक कथा अछि। मनोविज्ञान कहैत अछि यदि अहाँक मन मे कोनो विकार होइत अछि ओ जावत प्रकट नहि हैत तावत अहाँ केँ ओ विकार बेचैन केने रहत आ अहाँ यदि ओकरा अपन मन मे जाँतब तँ ओ अहाँ केँ आंतरिक आघात देत।

कांचीनाथ झा 'किरण'क प्रसिद्ध कथा 'मधुरमनि'क मधुरमनि केँ मलिकानि बजै छै तँ ओ अपन मनक खौंझ (विकार) केँ अपन पति पर झाड़ैत अछि जे स्वयं मधुरमनि अपन पति सँ कहैत अछि आ ओकर पति मोचन जखन घर पर जाय लगै छै तँ ओकर विकार पानि भ' जाइ छै। किंतु एहि कथाक स्थिति दोसर अछि, कालीक पति जीवकांत कोनो-ने-कोनो बात ल' क' काली केँ बजै छै। ओहि दिन जीवकांत एक टा कप फुटि गेलाक कारणे बाजल रहै। मधुरमनि जेना मलिकानि केँ किछु नहि कहि सकलि तहिना काली पति केँ किछु नहि कहि ओ अपन पति जीवकांतक बात ओ जूता फेकि लागल चोट सँ विकल भ' गेलि। ओकरा मन मे उग्र प्रतिक्रिया भेलैक। ओ एक बेर जीवन समाप्त कर' चाहलक मुदा स्वयं ओकरा ओ अधलाह लगलैक। ओकरा समाचार पत्र सभ सँ बहुतो एहन घटना बुझल छलैक कोना कोनो पत्नी अपन पति केँ झुका क' रखैत अछि किंतु ओहू दिशा मे ओ किछु नहि कयलक। आ एक टा कागत पर 'हमरा ताकब निरर्थक' लिखि, टेबुल पर राखि ट्रेन पकड़' विदा होइत अछि। मुदा ट्रेन छुटि जाइ छै। आब ओ रिक्शावला जे एक टा पुरुष छल ओ ओकरा तेज चलबाक लेल निरुद्देश्य ततेक हरान करैए जे ओ रिक्शावला लहालोट भ' जाइछ। ओ पति (पुरुष) परक प्रतिशोधक विकार सँ शांतिक अनुभव करैत अपन डेरा पहुँचैत अछि। ओत' ओ देखैत अछि जे ओकर पति जीवकांत निन्न भेल पड़ल

अछि। 'काली केँ भेलैक जेना जीवकांत निन्नो मे कानल हो।' ओ कागत ओकरा हाथ मे छलैक। काली पति पर उठल प्रतिशोध (विकार) केँ रिक्शावला पर झाड़ि चुकल छलि। आब, ओकरा पूरा घर अपन बुझैलै। अपन घर अपन शासन। एहि रूपें कथा ओहि मनोविज्ञान कें सिद्ध करैछ जे प्रत्येक क्रियाक प्रतिकूल प्रतिक्रिया होइत छैक। आ से कोनो रूप मे अपन जगह पाबि स्थिर होइत अछि।

'जय-पराजय' कथा एक टा पिताक कथा थिक किंतु कथा पितृत्वक बात नहि कहैत अछि, कहैत अछि जे कोनो स्थिति पर जय-पराजय व्यक्तिक आगू उपक्रम पर निर्भर करैत अछि। जीवन मे कतेको एहन स्थिति अबैत अछि जे स्थिति कोनो व्यक्तिक पराजयक स्थितिक बोध करबैत अछि किंतु किछु व्यक्ति मे एहन कला-कौशल होइत अछि जे ओहि स्थिति केँ अपन जय मे बदलि लैत छथि। रामदेव बाबू, निरंजनक (पुत्रक) अपन पसिन्नक विवाह केँ ओ स्वयं करौताह, कहि अपन जय क स्थिति ल' अनैत छथि। उक्त कथा विपरीत स्थिति केँ अनुकूलताक संदेश दैत अछि, जे महत्त्वपूर्ण अछि।

कोनो मन: स्थिति कोनो कारण सँ बनैत छैक ओ कारण कखनो काल कोनो भ्रम सँ सेहो उत्पन्न होइत छैक। 'एक टा मन: स्थिति' कथा मे सैह कहल गेल अछि। हेमा सुंदरि अछि। ओकर अपन कॉलेज जीवन सँ ल' क' माय-बाप सर-समाज मे सभक आँखि सैह एकरा कहलकै। हेमा केँ अपनो होइत छैक जे ओ सुंदरि अछि, तखन ओकर पति अचला सन, स्त्रीक प्रति किएक आकर्षित होइत छैक? हेमाक मन मे उठल ई भ्रम ततेक विस्तार लैत छैक जे ओहो दोसर पुरुष पर प्रतिक्रिया स्वरूप आकर्षित होइत अछि, किंतु तत्क्षणे अपन पति मित्रक द्वारा लिखल पतिक पत्र पढ़ि भ्रम निवारण होइ छै ओ ई बुझि जे ओकर पति ओकरा एतेक प्रेम करैत छथिन ओ कान' लगैत अछि।

कोनो व्यक्ति केँ अपन संस्कार सँ लड़ब कठिन छै, चाहे ओ संस्कार ओकर जेहन होइ। संस्कार जीवनक सोच केँ अपना अनुसार संचारित करैत छै आ केओ ओही अनुसार चलि अपन स्वाभाविक स्थिति बुझैत अछि अर्थात संस्कारेक अनुकूल वातावरण सहज आ अपन बुझाइ छै। किंतु आइ-काल्हि जेना लोक गाम सँ शहर जाइत अछि, ओहिठाम वातावरण दोसर रहैत छैक जे 'संस्कारक मोह' कथाक सुलोचना केँ नहि अरघै छनि। ओ जाहि ठाम डेरा लेलनि ओहिठाम वातावरण देखि होइ छनि जे एकर असरि हुनका धीया-पूता पर अधलाह पड़तनि आ ओ पति सँ डेरा बदल' कहै छथि किंतु दोसरो ठाम वैह स्थिति अछि। कथा कहैत अछि जे आजुक समय मे आवश्यक अछि अहाँ अपन संस्कारक मोह सँ ठमकि नहि जाइ; संस्कारक ओतेक विस्तार आवश्यक अछि जाहि सँ अहाँ कतहु टिकि सकी।

'तृप्ति-बोध' कथा दाम्पत्य जीवनक अनुरागक कथा थिक। कथा कहैत अछि कोनो स्त्री जावत मात्र पत्नी रहैत अछि, ताहि समयक दाम्पत्य बीचक प्रीतिक गति संतान भेलाक बाद बदलि जाइत छैक जे उक्त कथा मे कमला ओ महेशक बीच देखाइत अछि। पहिने कमला अपन पति महेश सँ बेसी काल रूसै छलि ओहि रूसब मे प्रीतिक रंग जेहन गाढ़ छलै ओ बेटी भेलाक बाद थोड़े पनिसोह भ' गेलै, कारण कमला पत्नी संग-संग ककरो माय भ' गेलि ओ मातृत्व ओकर पत्नीत्वक रंग केँ देखार रूप मे पनिसोह क' देलकै किंतु रंग भीतर मे ओहिना गाढ़ छलै से स्पष्ट होइत छैक धुर्वा सँ राँची तक घुरबा मे जे कमला ओ महेश दुनू बोध करैए। दुनू केँ अपन दाम्पत्य प्रेम तृप्ति नहि तृप्ति बोध दैत छैक। हमरा जनैत तृप्ति प्रेमक अंतिम सोपान थिक जे संभव नहि छैक आ तृप्तिक बोध तत्कालिक अपन प्रेमक प्रति विश्वासक आभास थिक खास क' के एहि कथा मे। जे देखबैत उक्त कथा दाम्पत्य-प्रेम केँ परिभाषित करैत अछि।

'इंटरव्यू' एक टा भेंटक बात करैत कथावाचक द्वारा एक टा पागलक अस्पताल मे भर्ती अनेक बताह सँ परिचय करबैत अछि। कथा कहैत अछि जे केओ जँ मानसिक रोगी होइत अछि तँ ओकर जिम्मेदार ओकर परिवार आ समाज अछि। कथावाचक एहि बात केँ पुष्ट करैत अपन संगी रतीश सँ भेंट करबैत छथि जकर आग्रहें उक्त कथा अछि। रतीश संयोगिता सँ प्रेम करैत छल आ रतीश ओकर प्रेम मे रमल छलाह। किंतु ओकर गरीब पिता दहेज सँ बचबा लेल ओ संयोगिताक विवाह रतीशक पित्ती सँ करा देलक जे ओकील छलाह आ ओ अपन धुर्तइ सँ रतीश केँ पागलखाना पठा देलनि। वैह रतीशक वेदनाक ई कथा थिक जे कहैत अछि जे बतहपनी वस्तुत: कोनो वेदना रूप मे मानसिक विकार थिक।

आत्मदंश एहेन आघात थिक जे मन केँ अव्यवस्थित क' दैत अछि। ई कखनो-कखनो वैचारिक स्तर पर नहि मात्र संवेदनाक स्तर पर होइत अछि। तकरे कथा थिक आत्मदंशक वेदना। काशी विश्वविद्यालय मे पढ़ैत युवक केँ महालक्ष्मीक प्रति आकर्षण एहन होइत छैक से एतेक जे ओ ओकरा सँ विवाह कर' चाहैत छल। महालक्ष्मी सेहो चाहैत छलि। दुनूक अभिभावक बुझलथिन आ ओहो सभ मन मना लेलनि किंतु किछु दिनक बाद युवक बुझलक सेहो भौजीक पुत्र सँ दुनूक गोत्र एक रहबाक कारणे विवाह नहि भ' सकतै। एहन स्थिति मे ओहि पत्रक समाचार युवक केँ भयानक रूप सँ व्यथित कएलकै, ओकरे व्यथा कथा कहैत उक्त कथा कोनो स्थिति सँ एकाएक टूटबाक स्थिति सँ होइत मनोदशाक बात कहैत अछि, असल मे कथा कोनो स्थिति ल' क' बनल मनोदशा सँ उबरब कतेक पीड़ादायक होइत अछि, एहि बात केँ रखैत अछि।

आजुक जीवन मे संघर्ष अछि, ओहि संघर्ष मे प्रेम केँ तहदर राखब कठिन अछि। तकरे कथा थिक स्थिति आजुक जिनगी। खास क' एहन मे जखन अहाँ केँ ककरो प्रेम प्राप्त अछि। अप्राप्य अधिक ऊष्मापूर्ण होइत अछि प्राप्ति सँ, एही बात केँ सिद्ध करैत समक्ष अबैत अछि उक्त कथा।

एहि कथा मे मनोज केँ विमलकांतक पत्नी पर आसक्ति होइत छै। ओ आसक्ति-ताकक मोन लेने अपन डेरा पर आबि अपन पत्नी सँ प्रेम कर' चाहैए। ओकरा चुंबन करैए जखन कि ओकर पत्नी (मीनाक्षी) सूतलि अछि। किंतु मनोज ई सभ टा करबाक हेतु, पत्नी मे रमबाक हेतु मन केँ धकेलैत अछि। कारण ओकर मनक भीतर जे परस्त्रीक प्रति आकर्षण जागल छलै आ जे मूलत: अप्राप्य छलै ओ ओकरा सहज नहि रह' देने छलैक। एहि रूपें उक्त कथा सँ कथाकार मनक प्रभाव केँ जीवनक गति मानैत छथि।

एहि रूपें किसुनजी जीवनक विभिन्न आयाम केँ समय संग अपन कथा सँ समक्ष अनैत परिभाषित करैत छथि जे मानवीय चेतना जगबैत विकासक मार्ग पर आलोक पसारैत देखाइत अछि। आ, एही ठाम हिनक कथा मैथिली कथा केँ विस्तार दैत अछि, महत्त्वपूर्ण भ' जाइत अछि।

'किसुन' : गद्यकारक रूप मे

भीमनाथ झा

रामकृष्ण झा 'किसुन' कवि थिकाह—ई सर्वमान्य तथ्य थिक। केहन-की—एहि मे जे कनेमने संवादी-विवादी स्वर उभरय! ई कथाकार थिकाह—इहो निर्विवाद थिक। स्तर आ स्वरक प्रसंग सभक विचार एक रंग चलय वा संग-संग नहि चलय! निबंधकार 'किसुन' छथि? सभ कहब—अवश्य, ताहि मे कोन सन्देह?

ताहि मे कोनो सन्देह हमरो नहि अछि। तखन, एहन प्रश्न किएक? प्रश्नवाचक चिह्न किएक? —भनहि प्रश्न हमहीं बनौने होइ। 'किसुन' कवि थिकाह आ कथाकार थिकाह, ई प्रश्न हम नहि बनौलहुँ तँ 'ई निबंधकार थिकाह'—से प्रश्ने किएक बनौलहुँ हम? —थिकाहे।

ई प्रश्न हम अनका लेल नहि बनौलहुँ अछि। ई प्रश्न हम स्वयं सँ पुछलहुँ अछि। एकर उत्तर जे हम देलहुँ अछि—'थिकाहे'—से एहन उत्तर थिक जे हठात् सभ क्यो द' देब। मुदा, प्रश्न जेना दू तरहक होइत छैक, तहिना उत्तरो दू तरहक होयबाक चाही। एक प्रश्न अनका सँ। एक प्रश्न अपना सँ। 'अपना सँ' जे प्रश्न कयल जाइछ, तकर उत्तर 'अनका सँ'क उत्तर जकाँ हठात् नहि होयबाक चाही। से जँ भेल, तखन प्रश्नक औचित्ये नष्ट भ' गेल। आ उत्तर जँ मिलि गेल (अनको सँ प्रश्नक आ अपनो सँ प्रश्नक), तखन बुझू ओ ब्रह्मलेख भ' गेल।

हम प्रश्न बनौलहुँ अछि—निबंधकार। एकरा गद्यकार सेहो कहि सकैत छलहुँ, अपितु कहैत छी। मुदा, गद्य मे कथा केँ बारिक'। जँ केवल निबंधकार कहब तँ हिनक समीक्षा छुटि जायत, संस्मरण छुटि जायत, भूमिका छुटि जायत आ एकांकी छुटि जायत। ई सभ छोड़िक', केवल हिनक विशुद्ध निबंध पर सेहो विचार क' सकैत छी, मुदा एहि सभ केँ लयो लेबा मे कोनो क्षति नहि बुझैत छी, अपितु उचित बुझैत छी, कारण जे तखन हिनक गद्यकारक छवि आर कटगर भ' जायत, चित्र अधिक फरिच्छ भ' क' सोझाँ आओत।

एक कारण आर अछि। कथा केँ छोड़ि, हिनक सभ कोटिक गद्य एकेठाम संकलित

अछि 'वैचारिकी' मे। एहि मे केवल अन्तिम प्रविष्टि 'उदना रे मोर कतय गेला' एकांकी टा बेछप अछि। मुदा, संकलनकर्ता केँ दोसर उपाइयो नहि छलनि। एक टा नौ पेजक एकांकी लेल रचनावलीक फराक खण्ड तँ नहि कयल जा सकैत छल।

'किसुन'क उपलब्ध गद्य, कथा सँ भिन्न, बेसी नहि छनि। एकांकी ल' क' तीस गोट मात्र। शेष उनतिस मे तीन टा भूमिका अछि, दू टा संस्मरण अछि। बचल चौबीस। एहि मे चारि गोट साहित्येतर विषयक निबंध अछि। बीस मे छौ टा काव्यशास्त्रीय निबंध, पाँच टा साहित्यशास्त्र सँ सम्बद्ध आ तीन टा समालोचना अछि। बाँकी छौ मे तीन टा साहित्येतिहास विषयक अछि आ तीन टा अछि नव लेखन आ नव कविताक स्थापना-सम्बन्धी।

कोनो साहित्यकार केँ कोनो विधा मे स्थापित करबा लेल एतबो सामग्री कम नहि थिक, यद्यपि बहुत सेहो नहि थिक। स्थापनाक सम्बन्ध मे तीन टा स्थिति बनैत छैक। पहिल तँ ई जे लेखक ओही टा विधाक लेखक हो। दोसर ई जे लेखक एकाधिक विधा मे समान रुचिएँ, समान गतिएँ लिखैत हो। तेसर ई जे लेखकक मुख्य विधा कोनो दोसर हो आ आनो विधा मे लिखि लैत हो। एहन लेखक, मुख्य विधा मे प्रतिष्ठित भ' गेला पर, आन कोनो विधा मे किछुओ लिखैत अछि तँ ओ पढ़ल जाइत छैक आ ओकर मोजर होइत छैक, ओकरा ओहू विधाक स्थापित हस्ताक्षर मानि लेल जाइत छैक। जतेक ऊपर ओ अपन मुख्य विधा मे रहल, ततबे कम श्रमे आनो विधाक स्थापित रचनाकार समूह मे प्रवेश क' जाइत अछि। प्रतिष्ठिते लेखक केँ ई 'वेटेज' भेटैत छैक, से भेटैत छैक।

प्रतिष्ठा-प्राप्त कवि-कथाकार 'किसुन' वेटेज प्राप्त गद्यकार छथि। 'जँ-तँ' मे गप्प करब श्रेयस्कर नहि थिक, मुदा जखन हम अपना सँ गप्प करैत छी तँ एहि बिन्दु पर सेहो ध्यान चले जाइत अछि जे जँ 'किसुन' एतेक पहुँचल कवि आ कथाकार नहि रहितथि तँ एहन आ एतबा सामग्री पर गद्यकारक रूप मे हिनका ई प्रतिष्ठा प्राप्त होइतनि, जेहन एखन छनि?

समाधान-लेल हिनक गद्यक संरचना-विधान ओ विषय-चयन एवं लेखकक चिन्तन पर सन्धान अपेक्षित अछि।

हिनक छौ गोट निबंध (काव्य साधना, काव्यक प्रयोजन लक्ष्य ओ आदर्श, साहित्य आ सौन्दर्य बोध, काव्य मे दोष, काव्येषु नाटकं रम्यम्, साहित्य मे शब्द आ अर्थक महिमा) संस्कृत काव्यशास्त्र पर आधारित अछि। 'किसुन' संस्कृतक विद्वान छलाह, अनेक आचार्य-प्रणीत काव्यशास्त्रक गाढ़ अध्ययन कयने छलाह। ई विषय ततेक व्यापक अछि आ संस्कृत मे एहि पर विचार ततेक गंभीरता सँ आ सूक्ष्मता सँ भेल छैक जे हिनका सन विद्वान् चाहैत तँ ओकर विभिन्न पक्ष पर पोथा लिखि दैत। विषये ई तेहन थिकैक जे एहि मे लेखकक मौलिकता तकने विषयक

प्रकृति सँ अपन अनभिज्ञता मानल जायत। लेखकक क्षमता एहि सँ आँकल जा सकैछ जे एहन गूढ़ विषय केँ ओ कतेक सहज आ रोचक बना क' कतबा साफ क' सकल अछि। एहि कसौटी पर 'किसुन', हमरा जनैत, सफल छथि। काव्यक प्रयोजन, सौन्दर्यबोध, शब्दशक्ति आदि तेहन विषय थिक जे बेर-बेर बुझौलो उत्तर हमरा सन छात्र केँ पूर्णतः हृदयंगम भ' जायब कठिन। कतेक निबंध तँ एहन भेटैत अछि जे सूर्यक टीका भानु नहि, भानुक टीका भास्कर रहैत अछि। 'किसुन' विषय केँ बुझबा मे 'पण्डित' छलाह, बुझयबा मे साहित्यिक। हिनक एक निबंध मे काव्यक दोषक प्रकार तँ जे कहल गेल छैक सैह छैक, मुदा ओकर मैथिली उदाहरण हिनक अपन सूझि थिकनि, जे सभ टा सटीक छनि, एहन सटीक जेहन दोसर ठाम नहि भेटल अछि। एत' दृष्टान्त एहि लेल नहि देब जे ओ सभ टा कविते मे छैक। ई सभ ठाम भानुक टीका सूर्य कयने छथि। एहन शास्त्रीय विषयक निबंधक आधार पर केकरो विद्वान, व्युत्पन्न जतेक मुक्तकंठ सँ कहब ततेक मुक्तकंठ सँ गद्यकार कहबा मे हमरा असौकर्य अछि। कोनो-कोनो क्लास-नोट तेहन भेटैत अछि जे वाह-वाह! —जेहने भाषा, तेहने विषयक उपस्थापन आ तेहने नापल-जोखल उत्तर! मुदा, ओहि लेखक केँ ओही टा बल पर श्रेष्ठ गद्यकारक पाँती मे कोना बैसा देबैक?

साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार, साहित्यक स्थायित्व आ राजनीति, कालिदासक उपमा-सौन्दर्य, साहित्यक मूल उत्स सौन्दर्य तथा संस्कृत साहित्यक : किछु सौन्दर्य दर्शन, ई पाँचो टा निबंध एही कोटि मे अबैत अछि। एकरा संकुचित अर्थ मे काव्य शास्त्रीय नहियों कही तँ साहित्य शास्त्रीय निबंध ई अवश्य थिक। एहू मे निबंधकारक मौलिक चिन्तनक अवकाश बड़ थोड़ रहैत छैक। से, जत' छैक तत' 'किसुन' देखौलनि अछि। 'साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार' मे साहित्य पर अर्थक प्रभाव केँ रेखांकित कयलनि अछि तँ 'साहित्यक स्थायित्व आ राजनीति' मे राजनीति केँ श्रेष्ठ साहित्यक बाधक नहि, साधक मानलनि अछि। शर्त एतबे जे रचनाकार वादबद्ध नहि हो आ सामर्थ्यवान हो। एहि पाँचो निबंध मे लेखकक परिपक्वता अवश्य प्रकट होइत अछि, किन्तु ई लेखक केँ गद्यकारक रूप मे सिद्धता स्यात् प्रदान नहि क' सकैत अछि।

साहित्येतर निबंधक संख्या चारि अछि। ओ चारू थिक—स्वामी विवेकानन्द आ हुनक सन्देश, भारतक सम्बन्ध मे पाकिस्तानक दुर्नीति, जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या-विस्फोट। चारू लेख अपन-अपन उद्देश्य मे सफल भेल अछि। किन्तु, एकर साहित्यिक महत्त्व की छैक, से स्पष्टे अछि। ई लेखसभ अपन लेखक केँ चिन्हार नहि करैत अछि।

समालोचना आ मैथिली साहित्य, शेक्सपियर आ कालिदास, मिर्जा गालिब आ हुनक कृतित्व—ई तीन टा समीक्षा थिक। गालिब आ शेक्सपियर अपन-अपन भाषा-साहित्यक शीर्षस्थ हस्ती थिकाह। तत्तत् भाषाक पण्डित नहियों भ' क' हुनकालोकनिक

विषय मे एतेक जानकारी प्राप्त क' लेब गम्भीर अधीतीक लक्षण थिक। 'किसुन' अधीती रहथि आ खूब रहथि। जे पढ़थि तकरा पचबथि आ ओकर उपयोग करथि। समालोचना विषयक अपन लेख मे मोटामोटी मैथिली समालोचनाक स्थिति पर प्रकाश देने छथि। ई एक मात्र निबंध अछि जे लेखकक निधनक बाद प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन गन्थ मे 1983 ई. मे प्रकाशित भेल। किन्तु, एकर रचना-काल मध्य '70 सँ बादक होयबाक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि। आइ पचीस वर्षक बाद ई लेख छुछुन्न लगैत अछि, किन्तु जहिया तकक अछि से ठीके अछि। लेखकक अभीष्ट प्राय: सूचना देब सैह रहलनि अछि। एहि प्रकारक लेख मे गद्यक कलाकारिताक अपेक्षे करब अनुचित थिक।

ठीक यैह बात हिनक साहित्येतिहास सँ सम्बद्ध तीनू निबंध (भारतीय नाट्यसाहित्यक विकास-परम्परा, पहिल—पौराणिक काल धरि, दोसर—सोलहम शताब्दी धरि, सहरसा जिला ओ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य-सेवा) पर सेहो लागू होइछ। नाट्यविषयक एके निबंध दू काल-खण्ड मे बँटल अछि। विषय केँ सविस्तार ओ सटीक स्पष्ट कयल गेल अछि। सहरसा जिला मे मैथिली सेवी-सन सूचनात्मक लेख इतिहासक सामग्री प्रस्तुत करैछ। निबंधक प्रकृतिक आधार पर एकरा लेखकक अनुसंधान-दृष्टि ततेक नहि जतेक जागरूकता कहब। एहि प्रकारक भूमि-भक्ति प्रत्येक क्षेत्रक जागरूक लेखक देखबथि तँ मैथिली इतिहासक अनेक अनुद्घाटित तथ्य समक्ष आओत तथा साहित्य समृद्ध बनत।

'किसुन' नव कविताक प्रवक्ता मानल जाइत छथि। नव कविताक परिभाषा, लक्षण, प्रयोजनक संक्षिप्त व्याख्या करैत ओ उदाहरण दैत ई दू गोट निबंध लिखलनि—मैथिली साहित्य मे नव कविता एवं मैथिली कविताक नवीन दिशा। एहि प्रसंग दू ठाम आर गप्प कयने छथि—अपन 'आत्मनेपद'क भूमिका मे तथा सम्पादित पोथी 'मैथिलीक नव कविता'क भूमिका मे। एकर अतिरिक्त, 'नवलेखन किछु विचार' शीर्षक निबंध मे नवलेखनक पक्ष मे आक्रामक तेवर अपनौने छथि तथा 'प्रचोदयात्'क भूमिका मे कथाक उत्स पर विचार करैत आधुनिक कथाक सामान्य दृष्टिकोण प्रस्तुत कयने छथि।

दू टा स्वतन्त्र निबंध आ दू टा भूमिका ओहि चारू रचना मे ई नव कविता केँ एक प्रकारेँ स्थापित कयने छथि, ओकरा परिभाषित कयने छथि, ओकर महत्त्व केँ प्रतिपादित कयने छथि एवं ओकालति कयने छथि। जहिया ई लेखसभ लिखल गेल, तहिया नव कविताक चलनि तँ भ' गेल छलैक, मैथिली मे ओकर साहित्य नहि छलैक। छलैक मे छलैक राजकमलक 'स्वरगंधा'क छोटछीन भूमिका। राजकमलक लेख किछु बाद मे आयल। आर ककरो दू-एक टा लेख छल हो तँ हो। 'किसुन' 'दल बदलि' क' ओहि दल मे गेल छलाह, तें कने बेसिए मुखर छलाह। मुखरे टा नहि छलाह आक्रामको छलाह, मुदा शालीनताक संग। संस्कृतक पाण्डित्य हिनका एहि मे सहायक भेलनि कि बाधक, ताहि पर विचार करब एत' अप्रासंगिक होयत, मुदा व्याख्या करबाक ढंग आधार अवश्य संस्कृत पण्डितक शास्त्रार्थी मुद्रा केँ मन पाड़ि दैत अछि। गद्य, एहन ठाम, हमरा जनैत, बेसी चमकल अछि। 'नवलेखन किछु विचार' मे तँ ई धार आर तेज अछि। किन्तु, सभ सँ पैघ बात ई अछि जे कतहु खोंझ नहि अछि, ओहू स्थान पर नहि जत' तर्क कमजोर अछि।

कतहु-कतहु वाक्य सूत्रात्मक सेहो भ' गेल अछि आ अस्पष्ट सेहो। 'नव-लेखन किछु विचार'क ई अंश द्रष्टव्य थिक—'सत्य केँ सत्य कहबाक सामर्थ्य जखन साहित्यकार त्यागि दैत अछि तँ ई काज नवलेखन केँ कर' पड़ैत छैक। कृत्रिम अभिव्यक्ति आ आरोपित भावनाक कल्पित चाकचिक्य सँ फराक भ' जीवनक प्रत्यक्ष दैनंदिन सहजता केँ प्रकट करब (मिथ्या प्रतिष्ठाक लोभे) असमर्थता वा अनठा देबाक प्रवृत्ति अथवा रूढ़िग्रस्त सामाजिकताक कारणें नहि प्रकट क' सकबाक क्लीव-अक्षमता, एही सभक खण्ड तथा विरोध मे आ उक्त पृष्ठभूमिक मान्यताक भंजन मे आरम्भ भेल अछि नवलेखन।' एहि मे पहिल वाक्य सूत्रात्मक अछि, दोसर दीर्घ वाक्य अस्पष्ट। तकर एक कारण एकर पण्डिताम भ' गेनाइ सेहो थिक। पण्डित तँ ई छलाहे। बेसी ठाम हिनक पण्डिताइ गद्य केँ सुरेबे बनौने अछि। अपवाद केँ टारि दी।

हमरा हिनक सभ सँ आकर्षक आ विलक्षण गद्य भेटैत अछि दुनू संस्मरण मे—अमरजी आ राजकमल चौधरीक प्रसंग संस्मरण-निबंध मे। एहि ठाम गद्यकार कथाकार भ' गेल छथि।

उत्कृष्ट गद्यक प्रमाण की ? हम तँ यैह कहब जे गद्यभाषाक कारणें, हँ केवल भाषाक कारणें, विषयक कारणें नहि, विचारोक कारणें नहि, केवल गद्यभाषाक कारणें, लेख शुरू कयलाक बाद बीच मे अहाँ छोड़ि नहि सकी आ सम्पन्न भेला पर लागय जे किएक सम्पन्न भ' गेलैक, तँ यैह सभ सँ बड़का प्रमाण थिक उत्कृष्ट गद्यक। यैह कसौटियो थिक। एहि कसौटी पर हिनक उक्त दुनू संस्मरण, हमरा जनैत, विशुद्ध उतरल अछि। विशुद्ध गद्यकार वैह थिक जकर गद्य पाँती-पाँती मे ओकर नाम बजैक। निबंधक ऊपर वा नीचाँ लेखकक नाम तकबाक काज नहि पड़ैक। जीबैत रहितथि तँ कहितियनि—अपने बेसी सँ बेसी संस्मरण लिखल जाय, जाहि सँ हमरा लोकनि केँ नीक सँ नीक गद्यक खजाना भेटि सकय।

'जँ-तँ' मे गप्पक कोनो अर्थ नहि होइत अछि। जतबे-जे अछि से माजल अछि, शोधल अछि आ 'किसुन' केँ अपन पीढ़ीक गद्यकारक बीच उच्चासन पर आसीन करैत अछि!

हम अपन मन सँ प्रश्नवाचक चिह्न केँ हटा लैत छी।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुन पर विचार करैत

भीमनाथ झा

रचनाकार किसुन

रामकृष्ण झा 'किसुन' (जन्म 1 जनवरी 1923, निधन 15 जून 1970)क मैथिली मे पहिल कविता प्रकाशित भेलनि 31 मार्च 1945 केँ तथा ई अन्तिम कविता लिखलनि 21 मइ 1970 केँ । अतः हिनक रचनाक अवधि भेल पचीस वर्ष। पचीस वर्ष मे लिक्खार लेखक रहय तँ लिखिक' टाल लगा दैत, किसुन लिक्खार लेखक रहथि ताहि मे तँ सन्देह नहि, मुदा ई लिखिक' टाल नहि लगौलनि। 1982 मे हिनक रचनावलीक प्रकाशन भेल अछि। भेल तँ अछि तीन खण्ड मे, मुदा कोनो खण्ड बृहदाकार नहि अछि। 'रचनावली' सँ ग्रन्थक जे विशालता आ स्थूलताक चित्र मन मे उतरैत छैक, से तीनू खण्ड केँ मिला देलो उत्तर ओहि पर उत्फुल्लताक रंग खूब चढ़ैत नहि छैक। पहिल खण्ड अछि 180 पृष्ठक कविताक, दोसर अछि 144 पृष्ठक कथाक तथा तेसर 199 पृष्ठक निबंधादिक। तीनू मिलाक' 523 पृष्ठ होइत अछि डिमाइ आकार मे। पचीस वर्षक लेखनक परिणति 523 पृष्ठ, अर्थात् प्रति वर्ष 21 पृष्ठक औन-पौन। एकर अतिरिक्त, दू-चारि गोट आर कविता पत्र-पत्रिका मे देखबा मे आयल अछि, सैह। तें, परिमाणक दृष्टिएँ विपुल नहि अछि किसुन-साहित्य।

किन्तु खाली बेसी लिखिक' बेसी महत्त्वपूर्ण नहि बनल जा सकैछ लेखन मे। आधुनिको काल मे, यात्री, राजकमल, ललित, जे प्रायः हिनका सँ बेसी महत्त्वपूर्ण छथि, हिनका सँ कमे लिखने छथि। हुनकालोकनिक मैथिली रचनावली प्रायः पाँचो सय पृष्ठक नहि पुरतनि।

किसुनक रचनाक स्वादक सूक्ष्म परख-हेतु यात्री-राजकमल-ललितक संगहि हिनक रचना केँ चिख' पड़त, जखन कि किसुनक चूल्हि छलनि गाड़ल मधुप-सुमन-अमरक भनसाघर मे।

किसुन सँ यात्री बारह वर्षक जेठ छथि, राजकमल सात वर्षक आ ललित तँ नौ वर्ष सँ अधिके छोट रहथि।

यात्री आदिए मे भिन्न भ' गेलाह। अपन चूल्हि फराक क' लेलनि। पढ़लनि तँ ओहो संस्कृते, मुदा ओकर कठोर आचारक अनुशासन मे अपना केँ बान्हि नहि सकलाह आ विदा भेलाह। सौंसे देश घूमि गेलाह आ विदेशो। क्यो हुनका आचारभ्रष्ट कहलकनि तँ क्यो विकासक अग्रदूत मानलकनि। ओ हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, पंजाबी, अंगरेजी आदि कतोक भाषा सिखलनि। मैथिलीयो हुनका संगे बहुत दूरक यात्रा कयलक, बहुत-किछु अपना संगे अनलक।

राजकमल आ ललित संस्कृत नहि पढ़लनि। संस्कृत नहि पढ़बाक हुनका लोकनि केँ अफसोचो नहि छलनि प्रायः। ओ लोकनि पढ़लनि अंगरेजी आ ओकरे लट्टू भ' गेलाह। बौअयला राजकमल खूब। ओहो लोकनि अपन चूल्हि आरंभे मे दोसर घर मे गाड़ि लेलनि।

किसुन सुच्चा संस्कृतक पण्डित रहथि। ई ने यात्री जकाँ आचारक अनुशासन केँ कहियो भंग कयलनि आ ने ललित-राजकमल जकाँ अंगरेजीक लट्टू भेलाह। मुदा झुकाव धरि हिनक रहलनि ओही दिस। ललचाथि धरि हुनके लोकनिक बनाओल पकमान पर। ओहन पकमान बनयबाक चेष्टो करथि। चेष्टा बहुत अंश मे सफलो होइनि, मुदा चूल्हि हिनक रहलनि संस्कृतेक भनसाघर मे, सभ दिन।

यात्री, राजकमल आ ललित ओहि प्रकारक रचना लिखबाक लेल अपन-अपन बाट पहिनहि फुटा लेलनि, चूल्हि आरंभे मे दोसर घर मे गाड़लनि, भिन्न भेलाक बादे ओ सभ अपन रुचिक रचनाक विरचना मे जुटलाह।

किसुन रहलाह सभ दिन अपन कौलिके परिवार मे, चूल्हि रखलनि अपन पहिले भनसाघर मे, मुदा अपन रचना-पकमान धरि तैयार कयलनि ओहि प्रकारक, जेना यात्री-राजकमलक भनसाघर मे बनैत छलनि।

ई बेसी कठिन आ चुनौतीपूर्ण काज छल। खतरनाक सेहो। किसुन एकरा अपन रुचिए स्वीकार कयलनि आ तकर अपना भरि नीक जकाँ निर्वाहो कयलनि, अपन मर्यादा केँ रखैत।

ई मर्यादा किसुनक व्यक्तित्व केँ दुनू दिस सँ तनने रहलनि, उठौने रहलनि, मुदा हिनक रचना केँ दुनू दिस सँ किछु झुका देलकनि। स्वाभाविके छल।

यात्री-राजकमल जकाँ अपन कौलिक घर मे किसुन केँ गारि नहि सून' पड़लनि, गरदनियाँ नहि भेटलनि, अपितु अन्त धरि स्नेह आ आदर प्राप्त होइत रहलनि। तें, प्रायः नवका घर मे हिनक स्वागत तँ भेलनि, मुदा यात्री, राजकमल जकाँ कान्ह पर उठाक' हिनक जयजयकार नहि कयल गेलनि, हिनक हाथ मे झंडा तँ देल गेलनि, मुदा हिनका झंडा नहि बूझल गेलनि।

एहने परिस्थिति मे साधारण लेखक बौआ जाइत अछि, ने एहि दिस भ'क' रहैत अछि, ने ओहि दिस। किसुन अन्त धरि साझी रहलाह, एहू दिस अपन भ'क' रहलाह आ ओहू दिस। हिनक महत्ता आ विलक्षणता हमरा एही बिन्दु पर भेटैत अछि।

कहि ने, जे लोकनि अपन भनसाघर पहिने फूट क' लेलनि से जँ नहि क' सकितथि आ किसुने जकाँ साझी रहितथि, तखन ओ ओत' रहि सकितथि जत' किसुन एखन छथि? हमरा तँ सन्देह अछि। यैह सन्देह किसुनक व्यक्तित्व केँ, हमर दृष्टि मे, हुनकालोकनि सँ बीस बनबैत छनि।

एहि सँ हिनक साहित्यिक प्रतिभाक पकड़ कतेक ठीक सँ भ' सकत से तँ नहि जनैत छी, मुदा ताहि संभावना पर विचार करैत छी, जे भ' नहि सकल।

किसुन संस्कृत पढ़लनि आ ओही परिवार मे अन्त धरि रहि गेलाह। अपन काव्य-प्रतिभा केँ सर्वांशतः मनोयोगपूर्वक जँ ओही शैलीक रचना मे लगा दितथि तँ ई आइ कत' रहितथि? हिनक समकालीन आ प्रगाढ़ मित्र 'अमर' सँ, जे अपना केँ ओही शैलीक रचना मे लगा देने छथि, ऊपर रहितथि की नीचाँ? अमर मे जे हास्य-प्रवृत्ति छनि, युगचक्र मे जे व्यंग्यक तीक्ष्ण धार छनि, से किसुन मे रहितनि, तकर आभास नहि भेटैत अछि। काव्यशिल्प आ पदलालित्य मे अमर बीस पड़ितथि। मुदा समस्याक सूक्ष्म पकड़ आ कथ्यक कलात्मक आ मार्मिक अभिव्यक्ति मे किसुन कदाचित टपि जैतथि, ई धारणा हिनक दृष्टिबोध सँ बनैत अछि। ठीक हिनकालोकनिक अग्रज पीढ़ीक प्रतिभा सँ जँ तुलना करी आ रुचिविशेष केँ कात क' दी तँ हम कहब (भनहिं बहुत गोटे चौंकब) जे अमर ईशनाथझा रहितथि आ किसुन तंत्रनाथझा। (ओना, स्वतंत्र रूपें अमर आ ईशनाथझाक तुलना हम कखनहुँ ने कर' चाहब। सहरसा-परिसर मे मैथिलीक अलख जगयबा मे किसुनक योगदानक तुलना हम एखनहुँ किरण सँ कर' चाहब।)

एकर विपरीत, अपन पुरना परिवारक खिधांस करैत ओकरा अछोप बुझैत जँ सोरहो आना नवका परिवार मे मिलि जैतथि, अंगरेजी कने नीक जकाँ पढ़ि लितथि आ देश-भ्रमण क' अबितथि तँ आइ ई कत' रहितथि? अपन समकालीन-परवर्ती राजकमल सँ ऊपर रहितथि की नीचाँ? राजकमल मे, विशेषतः हुनक किछु कथा मे, जे अतिशय शृंगारक दोंक छैक (क्यो ओकरा वासना कहैत अछि) से किसुन मे नहि भेटैत। भाषाक आभिजात्य राजकमल सँ बेसिए किसुन मे रहैत। कथ्यक सूक्ष्म पकड़ मे जँ राजकमल बीस पड़ितथि तँ ओकरा संप्रेषित करबा मे किसुन आगाँ भ' जैतथि। राजकमल मे भावनाक हिलकोरक गर्जन आ तड़पन बेसी अछि तँ किसुन मे चिन्तनक रेखा मस्तिष्क पर देखार होइछ अधिक काल धरि। यात्री ने राजकमल भ' सकलाह ने किसुन भ' सकितथि। तखन, यात्रीक बादक कविता राजकमल

लिखलनि आ किसुनो लिखितथि।

मुदा, किसुन ने एहि दिस अमरक समकक्ष भ' सकलाह ने ओहि दिस यात्रीक बादक कविता लिखि सकलाह। किन्तु, ई ओतेक महत्त्वपूर्ण बात नहि भेल। अमरक समकक्ष कवि होयब आ यात्रीक बादक कविता लिखब कालक लेल ततेक दुर्लभ नहि अछि जतेक किसुन-सन आधुनिक दृष्टिसम्पन्न नवीनताक वेगवती धारा मे अपना केँ छोड़ि देनिहार पण्डित-कवि केँ फेर सँ प्राप्त करब अछि।

विमर्श

प्रेरणा-पुरुष किसुनजी

मोहन भारद्वाज

रामकृष्ण झा 'किसुन' ओहि परंपराक लोक छलाह जे मैथिल समाज, मैथिल भाषा आ मैथिली साहित्यक स्तर पर समानान्तर रूपें संघर्षशील रहलाह अछि। ई तीनू क्षेत्र अंतरंगता मे परस्पर संबंध रहितो ऊपर सँ त्रिपक्षीय देखाइत अछि। तें समाज सुधारक, भाषिक आंदोलकर्त्ता तथा साहित्यकारक कार्यक्षेत्र विशेषज्ञक सभा मे बन्हा जाइत अछि। किसुनजी मुदा एहि सीमा केँ तोड़ि देने छलाह। हुनक कर्तृत्व समाज एवं साहित्यक दुनू स्तर पर मुखर छल। प्रभावकारी छल। हुनक अवदान तें बहुआयामी अछि। अमिट आ अनुकरण योग्य अछि।

किसुनजीक कर्मभूमि मुख्यत: हुनक जन्मभूमि छल-कोसीक कछेर मे बसल सहरसा जिलाक कस्बानुमा गाम सुपौल। दाहीक मारल लोक। झूर झमान भेल देह। थकुचल मोन। हेरायल अस्तित्व। इएह परिवेश छल जाहि मे किसुनजी जन्म लेलनि। पंडितक परिवार छलनि। संस्कृत पढ़बाक कौलिक परंपरा छलनि। किसुनजी संस्कृत पढ़लनि आ सैह हुनका सुपौलक विलियम्स हाइस्कूल मे शिक्षक बना देलकनि।

किसुनजी सुपौलक एक टा हाइस्कूलक शिक्षक नहि छलाह। ओ छलाह ओहि परिसरक सामाजिक सांस्कृतिक जागरणक पुरोधा। ओ मिलनसार छलाह, मृदुभाषी छलाह मुदा अपन मान्यताक पालन मे अत्यंत कठोर। समाज हो वा साहित्य—अपन सिद्धांतक निर्वाह मे ओ कहियो समझौता नहि कयलनि। मध्यवर्गीय परिवारक आर्थिक झटका हुनका कहियो विचलित नहि क' सकलनि। दीन-हीनक पक्षधरता, मनोबलक दृढ़ता आ अक्षय कर्मठता हुनका एक टा एहन व्यक्तित्व देलकनि जे स्वत: आदर्श बनि गेल। किसुनजी ओहि क्षेत्रक सामाजिक एवं साहित्यिक कार्यकलापक सूत्रधार बनि गेलाह। कतेक केँ प्रोत्साहन एवं संरक्षण देलनि। हस्तलिखित तथा मुद्रित अनेक पत्र-पत्रिकाक संपादन-प्रकाशन कयलनि। मिथिला पुस्तकालयक स्थापना द्वारा सुपौलक व्यावसायिक जीवन-पद्धति केँ साहित्यिक मोड़ देलनि। राष्ट्रीय

सार्वजनिक मेला, सुपौल सँ मैथिलीक नव कविताक प्रकाशन ओहि ठामक जन-जीवन पर किसुनजीक वर्चस्व प्रमाणित करैत अछि। सुपौल मे भेल साहित्यिक सेमिनार मैथिली साहित्यक गतिविधिक इतिहास मे महत्त्वपूर्ण अछि। किसुनजीक कार्यकलाप सँ कोसीक पूर्वांचल जागि उठल। मैथिली भाषा आ साहित्यक लेल लोकक हृदय मे ममता आ आदर उपजलैक। भाषिक आंदोलनक प्रति उत्साह एवं समर्पण भाव जगलैक। मैथिलि साहित्य केँ कतेक सर्जनात्मक प्रतिभा भेटलैक। ई सभ टा किसुनजीक व्यक्तित्वक प्रभाव छल। किसुन जी मानैत छलाह जे व्यक्तित्वहीन व्यक्ति मनुष्याभास थिक। 'अकाल' शीर्षक कविता मे ओ कहैत छथि—

महगी मे नहि रहलै
स्वप्नो धरि सस्त
व्यक्तित्वक खंडहर मे
जीवन अछि त्रस्त

अन्न बेत्रें छटपटाइत लोकक एहि यथार्थ सँ किसुनजी कनेक बाद मे परिचित भेलाह। मैथिली मे कविता लेखन दिस ओ मधुपजीक प्रेरणा सँ प्रवृत्त भेल छलाह, आ तें हुनक प्रारंभिक रचना मे रूढ़िग्रस्त कलाप्रियता देखबा मे अबैत अछि। परंच आधुनिक जीवनक त्रासद स्थितिक साक्षात्कार हुनका शीघ्रे भ' गेलनि आ यथार्थवादी साहित्यक रचना करब शुरू क' देलनि। सामाजिक कुरीति आ पाखंड पर समधानल चोट करैत 'इज्जति कोन पदार्थ' सन व्यंग्य कविता लिखलनि। ओ देखलनि जे सौंसे समाज दू फाँक भ' गेल अछि। एक दिस बुद्धक पितरिया प्रतिमा, चिनियाँ माटिक गांधी तथा मोमक ईसामसीह केँ सजावटिक उपादान बना देल गेल अछि आ दोसर दिस समस्त नवतुरिया दल जीविकाक अभाव मे तिनमहला छत' सँ कुदबाक आत्मघाती मुद्रा मे ठाढ़ अछि। पीढ़ीक एहि शीतयुद्ध मे किसुनजी नवतुरियाक पक्षधर बनलाह। खुटेसल रहब हुनका स्वीकार नहि छलनि। ओ शीतयुद्ध धरि सीमित नहि रहय चाहैत छलाह। ओ चाहैत छलाह जे फरिछाक' बात कयल जाय—

नहि चाही हमरा
हफीमी निन्दक अमृत
मार्फियाक शांति
फुसियाहा स्वप्नलोक
कर्जखोर आश्वासन
बनावटी इजोत
आ बनावटी बसात

नहि चाही हमरा
कोनो बनावटी बात

किसुनजीक कविता मे जीवनक विश्रृंखलता, निराशा, आतंक तथा टूटैत मानव-मूल्यक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। सामाजिक यथार्थक उपस्थापना, प्रतिगामी तत्व सँ संघर्ष आ जयलिप्सा—कवि किसुनक यैह काव्य परिधि थिक। अन्तिमेत्थम, कालघोष, बलात्कार, प्रतिवादक स्वर आदि कविता मे किसुनजीक अहं प्रखर अछि अवश्य मुदा ओ मिथ्या, कुंठाग्रस्त आ पतनोन्मुख अहंवाद नहि थिक। ओहि मे उदात्त चेतनाक स्वर अछि। आत्मविश्वासक निष्कलुष इजोत अछि। स्वाभाविक विकासपथक प्रति आस्थावान रहबाक एकांत संकल्प अछि। ओ जनैत छथि जे मिथिलाक बेटीक सिऊँथक सिनूर कलकत्ता, बम्बइ आ दिल्ली मे पिसाइत अछि, लोक अपने देश मे निर्वासित भ' गेल अछि, मुदा ओ इहो जनैत छथि जे आगि लागि चुकल छैक आ कहियो नहि मिझाइत छैक भट्ठी केर आगि। तें कवि विचलित आ हतोत्साह नहि होइत छथि। वर्त्तमान युगक यंत्रणा हुनका लेल नवयुगक प्रसव पीड़ा थिक। असफलताक प्रत्येक श्वास मे दीपित जीवन आस्था ल' क' चलनिहार कविए ई कहि सकैत अछि जे—

हमर स्वर केवल
हमरे नहि थिक
ई थिक समस्त
विक्षुब्ध विश्वक
आक्रामक स्वर।

किसुनजीक वैचारिकता एकदम साफ छलनि। जे कहबाक छलनि से सोझ-साझ भाषा मे बिना कोनो लटर-पटर कें कहैत छलाह। कथ्यक प्रबलता काव्य माधुर्यक व्यवधान नहि बनल। मुदा, ई बात हुनका कथा पर ओतेक दुरूस्त नहि अछि। कथ्यक झोंकल कथाक निर्वाह मे बाधक भ' गेल छनि। 'संकल्पक आधार' सन किछु कथा कें छोड़िक' अन्य कथा मे शिल्पक कमजोरी स्पष्ट अछि। इएह कारण थिक जे किसुनजी कथाकारक अपेक्षा कविक रूप मे बेसी जानल-मानल जाइत अछि।

सर्जनात्मक साहित्यकारक रूप मे किसुनजीक जे देन छनि ताहि सँ कनेको कम महत्त्वपूर्ण हुनक निबंधकार नहि अछि। किसुनजी ओहि कालखंडक साहित्यकार छथि, जखन सुमन, मधुप, अमर तथा यात्री-राजकमल चौधरीक काव्य-संसार मे वैचारिक द्वंद्व चलि रहल छल। पारंपरिक भाववादी आ यथार्थवादी विचार-पद्धतिक एहि मतभेद मे किसुनजी यथार्थवादी साहित्यक प्रवक्ता छलाह ओ नवलेखन आ

ओकर मान्यता कें स्पष्ट कयलनि। यथार्थवादी काव्यक अर्थ-गौरव कें फड़िछौलनि। आ से सर्वथा सरल रूप मे। स्पष्टता एवं दृढ़ताक संग। नव कविताक समर्थन मे लिखित 'कालध्वनि' आ 'सीमान्त'क भूमिका अनेक विवादक जन्म देलक, मुदा किसुनजीक निबंध स्पष्ट वैचारिक तथा अकृत्रिम अभिव्यक्तिक कारणें मार्ग निर्देशन कयलक। गपशप, सभा सम्मेलन, कविता-कथा, निबंध-भाषण जखन जे माध्यम किसुनजी कें भेटलनि, ओ प्रगतिशील मान्यताक समर्थन कयलनि। ओ नवचेतनाक संवादक साहित्यकार छलाह। सुपौलक बलुआह माटि हो वा राँचीक बज्जर भूमि मे, मैथिलीक नव कविताक संपादन द्वारा हो अथवा नवतुरिया गोष्ठीक गठन द्वारा—किसुन जी प्रगतिशील तत्वक अभिभावक छलाह। हुनक दाय साहित्य सँ ल' क' साहित्यकार धरि अछि।

दैनिक मिथिला मिहिर : 1 जनवरी 1985

रामकृष्ण झा 'किसुन'क साहित्य-चिंतन

मोहन भारद्वाज

रामकृष्ण झा 'किसुन'क पहिल रचना भने 1945 ई. मे छपल हो, हुनक लेखनक उत्कर्षकाल शुरू होइत अछि 1960 ई.सँ। मुदा, 1970 ई. मे हुनक असामयिक निधन भ' गेलनि, आ तें केवल दस वर्षक लेखन हुनक साहित्यिक अवदानक आधार अछि। एहि अवधि मे ओ कविता-कथा बेसी नहि लिखलनि; साहित्यिक निबंध, पोथीक भूमिका सहित, तँ आओर कम। किन्तु, जैह लिखलनि से अपन सार्थकता मे कालजयी अछि।

जहिना रामकृष्ण झा 'किसुन'क जीवन मे तहिना मैथिली साहित्यक जीवन मे सेहो वर्तमान शताब्दीक सातम दशक ऐतिहासिक महत्त्व रखैत अछि। मैथिली साहित्यक इतिहास पर ध्यान देला सँ पता चलैत अछि जे ओकर जीवन-यात्रा शुरू भेलैक भाववादी बाट पर। सैकड़ो वर्ष धरि ओ ओही पथ पर चलैत रहल। ओहि मे मोड़ अनलनि यात्रीजी। यद्यपि यात्रीजी जे रस्ता धयलनि ताहि दिशा मे सीताराम झा सन किछु साहित्यकार अंगुल्यानिर्देश क' चुकल छलाह, मुदा मैथिलीक पाठकक रस्ता बदलि गेल से तखने बुझलक जखन 'चित्रा' छपल। 'चित्रा' भाववादी नहि, मार्क्सवादी मार्ग पर चलबाक आग्रह करैत अछि। यात्रीक परवर्ती रचनाकार मे बहुत गोटे चित्राक आग्रह कें मानबाक उत्साह देखबैत छथि। ई भिन्न बात थिक जे ओहि मे सँ केओ यात्री जकाँ मार्क्सवादी जीवन-दृष्टि कें अपनयबाक घोषणा नहि करैत छथि, आ तें ओ सभ अन्ततः मार्क्सवादी नहि, यात्रीवादी बनि क' रहि जाइत छथि। किन्तु, मार्क्सवादी भेने बिना यात्रीवादियो बनबाक एतेक प्रभाव तँ पड़िते अछि जे हुनका लोकनिक रचना भाववादी मानसिकता सँ सर्वथा फराक भ' जाइत छनि। कहबाक तात्पर्य ई जे 'चित्रा'क प्रकाशनक बाद मैथिली साहित्य दू दिशा मे अग्रसर भेल—भाववादी आ वस्तुवादी। किन्तु, परिस्थितिवश इहो दुनू मार्ग लगले कंटकाकीर्ण भ' जाइत अछि। रचनाकारलोकनि लेल ओहि बाट पर चलब सम्भव नहि रहि जाइत अछि।

असल मे स्वाधीन भारतक पहिल दस वर्ष मे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न स्तर पर एतेक परिवर्तन होइत अछि जे साहित्योक भाव-भंगिमा मे परिवर्तन अपरिहार्य भ' जाइत अछि। वस्तुगत आधार बदलला सँ साहित्य बदलब स्वाभाविक थिक। ई परिवर्तन छठमे दशक मे प्रारम्भ भ' जाइत अछि, मुदा प्रभावकारी स्तर पर देखार होइत अछि सातम दशक मे। एहि दशक मे मैथिली साहित्यक युगान्तरकारी रूप स्थापित होइत अछि। एकर झलक ओहि कालक रचना सँ भेटैत अछि। ओहि अवधि मे प्रकाशित कविताक पोथी मे आत्मनेपद (रामकृष्ण झा 'किसुन', 1963), दिशान्तर (मायानन्द मिश्र, 1965), कालध्वनि (सोमदेव, 1965), पत्रहीन नग्न गाछ (यात्री, 1967), सीमान्त (कीर्तिनारायण मिश्र, 1967), त्रिधारा (भीमनाथ झा, 1968), हम एक मिथ्या परिचय (गंगेश गुजन, 1968), अन्ततः (रमानन्द रेणु, 1969) आदि प्रमुख अछि। कथापुस्तक मे आगि, मोम आ पाथर (मायानन्द मिश्र, 1960), प्रतिनिधि (ललित, 1964), नव घर उठय पुरान घर खसय (प्रभास कुमार चौधरी, 1964), अन्हार-इजोत (गंगेश गुंजन, 1664), एक आदि एक अन्त (राजमोहन झा, 1965), एक खीरा तीन फाँक तथा मनुक सन्तान (रामदेव झा, 1965 आ 1966), कचोट (रमानन्द रेणु, 1966) आदि उल्लेखनीय अछि। एहिना उपन्यास मे सेहो बिहाड़ि पात आ पाथर (मायानन्द मिश्र, 1960), पृथ्वीपुत्र (ललित, 1965), भोरुकवा (धीरेन्द्र, 1965), दूध-फूल (रमानन्द रेणु, 1967), दू कुहेसक बाट (जीवकान्त, 1968) सदृश पोथी एही कालक थिक। एकर अतिरिक्त पत्र-पत्रिका मे सैकड़ो एहन रचना प्रकाशित भेल जे चर्चा-परिचर्चाक विषय बनल। 'मिथिला-मिहिर' मे प्रकाशित उपन्यासेक उल्लेख करी तँ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक तर पट्टा उपर पट्टा (31 मई, 1961 सँ 22 अंक मे), सोमदेवक ब्रह्मपिशाच (13 सितम्बर, 1964 सँ 10 अंक मे), मायानन्द मिश्रक खोंता आ चिड़ै (7 मार्च, 1965 सँ 28 अंक मे), जीवकान्तक पनिपत तथा अगिनवान (24 सितम्बर, 1967 सँ 11 अंक तथा 26 सितम्बर, 1968 सँ 8 अंक मे), धीरेन्द्रक कादो आ कोइला (24 नवम्बर, 1968स 8 अंक मे), मणिपद्मक राजा सलहेस (2 फरवरी, 1969स 14 अंक मे) आदि महत्त्वपूर्ण अछि। ई कोनो संयोग नहि छल जे पाँच पत्र, मधुरमनि, अगुरवान तथा परम प्रिये निरमोही बालम हमर प्रानपती सन कथाक प्रकाशन एही काल मे भेल। ई सभ कृति ताहि अर्थ मे ने भाववादी छल आ ने वस्तुवादी। मुदा प्रभाव मे युगान्तरकारी छल से धरि निश्चित। राजकमल चौधरी कविताक प्रसंग विचार करैत जे कहैत छथि से सम्पूर्ण साहित्य लेल उपयुक्त अछि —'1960क उपरान्त आधुनिक कविता मानवजीवन आ मानवक अन्तर्प्रदेशक एक टा 'नव' क्षेत्र मे प्रवेश कयने अछि। ...चित्राक समय समाप्त भ' गेल, स्वरगन्धाक

समय समाप्त भेल जा रहल अछि। मुदा, हमसभ समाप्त नहि भेल छी। हमसभ जन्म ल' चुकल छी 1960क उपरान्त। बंगालक नव पीढ़ीक संग हिन्दी आ अन्य प्रमुख भारतीय भाषाक नव पीढ़ीक संग हमसभ, हुनका सँ दृष्टि दृश्य आ दशा मे अलग आ अप्रभावित रहितो एक टा नवीन भारतीय काव्यधाराक प्रवाह-निर्माण क' रहल छी।'

एक टा नवीन भारतीय साहित्यधाराक प्रवाह-निर्माणक मैथिल संस्करण सातम दशक मे तैयार छल आ आवश्यकता छलैक ओकरा बुझबाक। मुदा, ताहि दिशा मे कोनो प्रयास नहि भ' रहल छल। एहिठाम साहित्यिक कृतिक कनेक पैघे सूची केवल एहि लेल हम देलहुँ अछि जे परिवर्तित साहित्य-संसारक आधार परिचय भेटि सकय। लक्ष्य-साहित्य अपन गुणवत्ताक संग-संग व्यापकता मे सेहो नव लक्षण-साहित्यक माँग क' रहल छल से हम जानि सकी। मुदा, एहि माँगक पूर्ति नहि भ' रहल छल। नव जीवन-दृष्टि आ मूल्य-बोधक संग जतेक प्रचुर साहित्य आयल छल ततबे बेसी आवश्यकता छलैक नव आलोचना-दृष्टिक। किन्तु, ओकर अभाव ततबे दुखद छल। रमानाथ झा 'पृथ्वीपुत्र' आ 'ललका पागक भूमिका लिखियो क' साहित्यक नव प्रवृत्ति आ चित्तवृत्ति केँ प्रस्तुत नहि क' रहल छलाह। सोमदेव आ कीर्त्तिनारायण मिश्र साहित्य-अखाढ़ाक एहन पहलवान छलाह जे विरोधी केँ हरदा बजयबाक लेल कुश्ती लड़ब सँ बेसी जोर अपन दाव-पेंचक घोषणा पर दैत छलाह।

यैह ओ चौबटिया थिक जत' रामकृष्ण झा 'किसुन'क साहित्यकार-मूर्त्ति स्थापित अछि। 'चित्रा'क परवर्ती साहित्यक कथ्य आ कथन-भंगिमा केँ जाहि आलोचकीय मुद्रा मे, आचार्यक दायित्व आ मर्यादाक संग, किसुनजी विश्लेषित कयलनि से दोसर केओ नहि क' सकलाह। तें किसुनजी नवीन साहित्यिक वृत्ति प्रवृत्तिक व्याख्याकार कहयलाह आ से उचिते।

किसुनजी आलोचक नहि छलाह। किन्तु, हुनक दृष्टि आलोचनात्मक छलनि। ओ कोनो साहित्यिक कृतिक समीक्षा नहि कयलनि, मुदा साहित्य केँ बुझबाक अवगति अवश्य देलनि। आजुक आलोचना-दृष्टिक माटि तैयार कयलनि। ओकर न्यों रखलनि। ओ संस्कृत काव्यशास्त्रक अप्रासंगिक मापदण्ड केँ अस्वीकारलनि आ संगहि मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्रक मूल केँ पकड़बाक चेष्टा सेहो कयलनि। 'मैथिली साहित्य मे नव कविता' शीर्षक निबंध मे ओ स्पष्ट कहैत छथि—'मानव-चेतनाक विकासक संग-संग रसबोधक पद्धतियो मे परिवर्तन होइत गेल अछि। तें नव कविताक वैशिष्ट्य-परीक्षण पूर्व प्रचलित निकष वा प्राचीन रसवादक नियम-लक्षणक आधार पर नहि भ' सकैत अछि।' 'आत्मनेपद'क भूमिका सहित एकाधिक निबंध मे ओ साहित्यक इति अपन अवधारणा केँ एहि रूपें रखैत छथि—'सामाजिक

यथार्थ केँ बूझब आ ओकरा प्रतिबिम्बित करब यैह थिक कवि-कर्म। फलतः सामाजिक स्थिति अर्थात् अर्थ-व्यवस्था, प्रशासनक पद्धति, उद्योग उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, जटिलता, संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवन पर प्रभाव, ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत-बदलैत रहैत अछि, तहिना-तहिना सामाजिक यथार्थ मूलतः स्थिर रहितो रूपतः परिवर्त्तित होइत रहैत अछि, आ तें तकरा आत्मसात् क', अभिव्यक्त करबाक शिल्प शैली मे सेहो परिवर्त्तित होइत अछि।' 'प्रचोदयात'क भूमिका मे ओ लिखैत छथि—'वस्तुतः आधुनिकता केँ एक टा प्रक्रियाक रूप मे स्वीकारब आब अनिवार्य अछि आ तथ्य ई थिक जे मैथिलीक कथा समकालीन आन-आन कथा जकाँ अपन कायाकल्प क' रहल अछि। ई परिवर्तन स्पष्ट आ साधारण अछि, एकरा अस्वीकारब कोनो अबोधहिक बुतें सम्भव। वास्तव मे जीवनक बदलैत परिवेश आ आयाम कथाविधा केँ एकदम बदलने जा रहल अछि।'

हमर कहबाक अभिप्राय ई नहि जे किसुनजी मार्क्सवादी विचारधाराक छलाह। एहि प्रकारक धारणा अनर्गल थिक। किन्तु, साहित्यक सम्बन्ध मे व्यक्त हुनक उपरोक्त अवधारणा भारतीय भाववादक समर्थक-पोषक नहि थिक सेहो धरि स्पष्टे अछि। यथार्थ बुझी तँ ई वैह दृष्टि थिक जे 'चित्रा'क परवर्ती साहित्यकारक प्रेरक शक्ति छल। किसुन जी तत्कालीन सर्जनात्मक साहित्य आ आलोचनात्मक-दृष्टि मे तालमेल बैसयबाक प्रयास कयलनि। एहि तथ्य केँ एक टा उदाहरण सँ फरिछा क' बूझल जा सकैत अछि। सातम दशकक साहित्य पर, विशेषतः कविता पर, दुरूहताक आरोप लगाओल गेल छल। किसुनजी एहि प्रसंग अपन विचार प्रकट करैत छथि जे आधुनिक कविता मे दुरूहता रहैत नहि अछि, मुदा ओकरा दुरूह अवश्य बूझल जाइत अछि। तकर कारण नवीन कविता मे प्रयुक्त बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि सँ जनसामान्यक अपरिचिति थिक। एकरा बाद ओ कहैत छथि—'मुदा, एकरा बूझब मात्र आवश्यके टा नहि, हमरासभक सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरालोकनि पछड़ले रहि जायब आ इतिहास मे अपराधी मानल जायब।'

कहबाक प्रयोजन नहि जे साहित्यक समाजशास्त्रक प्रसंग किसुनजीक दृष्टिकोण साफ छलनि। ओ दुविधाहीन छलाह। आजुक वस्तुवादी आलोचक केँ हुनक कथन मे खोंटो भेटि सकैत छनि, मुदा अपन साहित्य-दृष्टि केँ जाहि स्पष्टता आ दृढ़ताक संग ओ प्रस्तुत कयलनि से आधुनिक साहित्य केँ तँ सहजहि, सम्पूर्ण साहित्य केँ बुझबाक आँखि दैत अछि। काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य ओ आदर्श, साहित्यक शाश्वत सत्ताक आधार, साहित्य आ सौन्दर्य बोध आदि निबंध एहि दृष्टिकोण सँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। हुनक एक टा लेख छनि—साहित्यक स्थायित्व आ राजनीति।

राजनीति आ साहित्यक परस्पर-सम्बन्ध विषयक भ्रांत धारणा केँ खंडित करैत अन्त मे ओ कहैत छथि—'वाल्मीकिक राजनीति प्रभावित रामायण जे रावणवादक विरोधी तथा रामवादक पोषक थिक तथा व्यासक राजनीतिक रचना महाभारत, जे कौरववादक विरोधी तथा पाण्डववादक समर्थक थिक, आइयो अपन राजनीतिक दृष्टिकोण रखितो साहित्यक एक श्रेष्ठ विभूतिक रूप मे समस्त भारतीय वांगमय केँ अनुप्राणित, आलोकित आ उद्भासित कयने अछि।' एहिठाम ध्यान देबाक बात एतबे नहि थिक जे किसुनजी रामायण आ महाभारत केँ धार्मिक नहि, राजनीतिक दृष्टिकोण सँ देखैत छथि; महत्त्वपूर्ण ई थिक जे ओ साहित्य मे राजनीतिक विचारधाराक हस्तक्षेप केँ तखनहि श्रेयस्कर मानैत छथि जखन ओ आत्मसात भ' क' आबय। साहित्य पहिने साहित्य थिक। कोनो बात-विचार ओकर मूल प्रकृति केँ विकृत करय से उचित नहि। तें जीवनदर्शन साहित्य मे जखन पचल रहैत अछि तखने मार्गदर्शक बनैत अछि।

किसुनजी साहित्य आ समाजक, जीवन आ जगतक गतिशील चेतना केँ जाहि रूप मे उपस्थित कयलनि ताहि पर गंभीरतापूर्वक विचार होयबाक चाही। ई हमर सभक सामाजिक दायित्व थिक, अन्यथा हमसभ इतिहास मे अपराधी बूझल जायब।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक 'वैचारिकी'

अशोक कुमार ठाकुर

किसुनजी मूलतः संस्कृतक अध्येता ओ अध्यापक रहथि, तें ओहि महान साहित्यक नीक-नीक वस्तु सभ जे सभ मैथिलीक लेल उपयोगी आ मार्गदर्शक छल ताहू सभ सँ मैथिलीक अध्येता लोकनि केँ अवगत करौलानि, संगहि नव दृष्टि निर्माणक लेल सेहो लोक केँ उत्प्रेरित करैत रहलाह। हुनक अध्ययनक विशाल क्षेत्र छल हिन्दी, ओना हिन्दी केँ अपन आलेख सभ मे उद्धृत कर' सँ बचक प्रयास कयने छथि। हिन्दी पत्र-पत्रिका सभ मे प्रकाशित लेख रचना सभ केँ ओ आत्मसात क' लेने रहथि, ओ ओही गम्भीर अध्ययन सँ फूटल छल रचनाक प्रति नव-दृष्टि। एहन दृष्टि जाहि मे प्राचीन ओ नवताक समन्वय छलैक। पुरान बात सभ केँ नव बात तक आबक लेल ओ सीढ़ी मानैत रहथि। बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म संवेदनात्मकता, युगानुरूप अन्तः संघर्ष, परिवर्तित मूल्य, यथार्थ परिस्थिति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत नव शैली—सैह सभ छल नव कविता ओ नव लेखनक आधार। एहि सभ बात केँ हृदयंगम क' सत्य केँ तकबाक प्रयास ओ अपन रचना सभ मे कयलनि आ संगहि एहन दृष्टिवला एक गोट पैघ पाँति रचनाकारक सेहो तैयार कयलनि अपन एहि प्रयासें।

मैथिली साहित्यक जे परिदृश्य साठिक दशक मे छल से एहि पोथीक विषय क्रम देखले पर साफ भ' जाइत अछि। ता धरि मैथिली पर संस्कृतक पूर्ण प्रभाव छल आ मैथिली मे स्थान बनयबाक लेल संस्कृतक आधार आवश्यक छल। किसुनजी सेहो साहित्यक मूल-भूत तत्त्व सभ केँ बुझयबाक लेल कालिदास आ अन्य संस्कृतक महान रचनाकार लोकनि केँ बेर-बेर उद्धृत कयलनि अछि। काव्यक प्रसंग, नाटकक प्रसंग एते तक जे कथाक प्रसंग जे किछु ओ कहलनि अछि ताहि सभ मे संस्कृत-झाँव लगले अछि, जे वैचारिकीक आधा सँ अधिक लेख सभ मे अछि।

नव कविता—नव लेखन आदि आलेख सभ मे ओ अपना केँ खोलि क' रखलनि

अछि। किसुनजी युगानुभूति, जन-साधारणक सुख-दुख, आशा-अकांक्षा केँ अपन रचना सभ मे प्रमुख स्थान देलनि, संगहि जे लेखक-कवि लोकनि एहि दृष्टिकोणक रहथि हुनको लोकनि केँ प्रोत्साहित कयलनि। निबंधक लेल ओहि सभ तरहक विषयक चयन कयलनि जे सभ हुनका आन्दोलित कयलकनि जाहि सँ ओ उद्वेलित भेलाह। जनसंख्या-विस्फोट सन विषय पर दू गोट सारगर्भित आलेख छनि जाहि मे परिवार छोट आ सीमित राखक आवश्यकता ओ तरीका सभक उल्लेख अछि। भारतक पड़ोसी देश पाकिस्तान द्वारा अपनाओल जा रहल दुर्नीतिक चर्चा सेहो कयने छथि जे आइयो ओहिना अछि, पंजाब समस्याक रूप मे तँ काश्मीर समस्याक रूप मे। कथाक मादे एक्के टा भूमिका—प्रचोदयात—भेटैत अछि जे वैदिक संदर्भ सँ जोड़लो उत्तर आइयो प्रासंगिक अछि। सुन्दर सुगठित भाषा तँ अछिए, जे निबंधक सभ सँ पैघ दोष प्रलाप होइत छैक ताहू सँ बचल अछि।

तीन गोट महान रचनाकार—कालीदास, शेक्सपियर ओ मिर्जा गालिब, जे तीन भिन्न युग, भिन्न प्रदेश ओ भिन्न भाषाक प्रतिनिधि छथि, हुनका लोकनिक रचना दृष्टिक साम्य केँ ताकि पाठकक सोझाँ मे रखलनि अछि। कोनो युग होउक, कोनो देश होउक आ कोनो भाषा होउक—मनुक्ख आ ओकर सुख-दुख एके रहैत छैक, ओकर संघर्ष गाथा एके रहैत छैक जे एहि तीन महान रचनाकारक माध्यमे ओ बुझौलनि अछि।

स्वामी विवेकानन्दक सन्देश जे भारते टा नहि सौंसे मानव जातिक लेल छल, ताहि मे सँ अति महत्त्वपूर्ण ज्ञानयोग-कर्मयोग आ भक्तियोगक सरल व्याख्या क' सुबोध बना पाठकक लेल उपलब्ध करौलनि। राजकमलक अंतरंग परिचय सेहो भेटैत अछि। एक गोट नव राजकमल—जे उग्रतारा माइक सेवा मे जीवनक शेष भाग बितयबाक कामना रखैत छलाह—अपन अग्रज केँ सम्मान दैत छलाह आ रचना सभ मे अपना केँ भावनाक मायाजाल सँ बचबैत छलाह। अपमान आ सम्मान दुहू स्थिति जिनका लेल समान रूपें दुखदायी छल। कते आरोप छल हुनका पर मुदा किसुनजीक सहृदयता ओहि सभ आरोप केँ निराधार सिद्ध क' एक गोट एहन राजकमल सँ परिचय करबैत अछि जे हमरे सभ सन, हमरे सभक बीचक आ हमरे सभक फूलबाबू रहथि।

एहि संकलन मे दू गोट विशिष्ट निबंध अछि—दुनू मैथिलीक महान सेवक लोकनिक अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित। प्रो. हरिमोहन झाक अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित हुनक—समालोचना आ मैथिली साहित्य ताहि काल धरिक समालोचना विषयक कुल आलेखक 'इंडेक्स' थिक। समालोचनाक लेल शास्त्रीय सिद्धान्त सँ ल' व्यावहारिक दृष्टिक वर्णन ओहि मे अछि। रमानाथ बाबूक अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित सहरसा जिला ओ तकरा परिसर मे मैथिली साहित्य सेवा तँ हमरा जनतबे

मैथिलीक अनुपम वस्तु थिक। कते मातृभाषानुरागी लोकनिक परिचय, हुनका लोकनिक सेवा सँ लोक परिचित भेल अछि। आवश्यकता अछि जे ओहि अप्रकाशित रचना सभ केँ प्रकाश मे आनल जाय आ पुनः हुनका लोकनि केँ सक्रिय बनाओल जाय। मिथिलाक केन्द्र मे अवस्थित सहरसा—आब तीन गोट जिला—मधेपुरा, सहरसा ओ सुपौल मे मैथिलीक ज्योति केँ पुनः ओहिना प्रतिभासित कयल जाय।

एक गोट एकांकी अछि—उदना रे मोर कतय गेला—बुझले-सुनले कथा पर आधारित मुदा नाटकीयता सँ परिपूर्ण आ तें मंच पर एते सफल भेल। एक गोट संस्मरण—भेट भेलाह अमरजी—संस्मरण सँ अधिक एकांकी थिक। कते नाटकीय आ कते वास्तविक—हमरा लोकनिक मनोवृत्ति केँ देखार करक लेल उपयुक्त, आडम्बर पर व्यंग मुदा नाटकीय।

कने निराशा होइत छैक पाठक केँ, जे कोसीक हाहाकारक बीच रहितहुँ किसुनजीक कोसीक मादे एक्को टा आलेख नहि अछि। ओ कते प्रामाणिक होइत? निबंध विधा एहि लेल सर्वथा उपयुक्त छल। कोसीक शाप हुनका भोगल छलनि, देखल छलनि आ सुनल छलनि तें कते जीवन्त होइतैक ओ अनुमान कयल जा सकैत अछि।

आरंभ : 7 (जून, 1995)

किसुनजीक आलोचना-दृष्टि

तारानन्द वियोगी

एक तथ्य मोन रखबाक थिक जे किसुनजी मूलतः आलोचक नहि थिकाह। एहि विषय मे बेसी विवाद सेहो नहि अछि। ओ मूलतः कवि छथि। हुनक लेख सभ अधिकांश कविता पर केन्द्रित अछि, किंवा कविधर्म पर अथवा कविताक नव-नव आयाम पर।

किसुनजीक आलोचना-दृष्टि मूलतः भारतीय काव्यशास्त्रीय आलोचना-दृष्टि थिक। परम्परागत रूप सँ ओ संस्कृत विद्याक अध्ययन कयने छलाह। संस्कृत काव्यशास्त्र हुनक रुचिक विषय छलनि। कविहृदय होयबाक कारण काव्यशास्त्रीय स्थापना सभ मे ओ गँहीर धंसलाह आ विभिन्न सूत्र सभक तात्पर्य पकड़लनि।

भारतीय काव्यशास्त्रक संग एक टा दुर्भाग्य ई रहल अछि जे ई पंडितराज जगन्नाथक बाद आगाँ नहि बढ़ल। एहन नहि अछि जे एकर बाद काव्यशास्त्र लिखले नहि गेल। खूब लिखल गेल। एहि लेखनक अधिकांश ज्ञान किसुनजी केँ छनि आ ओ ठाम-ठाम तकर चर्चा कयलनि अछि। मुदा, दुर्भाग्य ई रहल जे नव प्रतिमान तकबाक बदला पुरने स्थापना सभक व्याख्या-पुनर्व्याख्या होइत रहल। कतेक बेर तँ पुनर्कथन मात्र भेल। भारतीय काव्यशास्त्रक इतिहास मे एहि युग केँ टीका युग कहल गेल अछि।

बीसम शताब्दी मे आबिक' भारतीय काव्यशास्त्रक नव प्रतिमान तकबाक प्रयास भेल। अनेक ठाम ई प्रतिमान एकभगाह सिद्ध भेल। रामचंद्र शुक्ल सन किछु आलोचक 'लोक-मंगल' सन व्याप्ति मे भारतीय काव्यशास्त्रक नवीन दिशा तकबाक सार्थक चेष्टा कयलनि। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी सामाजिक दिशा-बोध मे काव्यक परम प्रयोजन निर्दिष्ट करबाक दृष्टि रखलनि। डॉ. शंकरदेव अवतरे वृहत्तर काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे अलंकार आ अलंकार्यक मध्य सीमारेखा देखौलनि, जे भारतीय काव्यशास्त्र केँ नव ढंग सँ व्याख्यायित करबाक दिशा देलक। डॉ. नगेन्द्रक

योगदान किछु कम नहि अछि, मुदा ओ किछु ठाम हुसलाह। जेना, ओ बेर-बेर उद्घोषित करैत रहलाह जे नव कविताक समीक्षा रस-सैद्धान्तिक आधार पर सम्यक् रीति सँ कयल जा सकैछ। ओ से कइयो क' देखौलनि, मुदा तैयो ओ हुसलाह। कारण, विशुद्ध भारतीय होयबाक हुनक दर्प समकालीन साहित्यक अखिल वैश्विक आलोचना-पद्धति केँ नकारलक। पश्चिम सँ जे आयल अछि, जे नव अछि, जे भारतीय काव्यशास्त्रक व्यावहारिक आलोचना केँ नव परिप्रेक्ष्य द' सकैत अछि, तकरा सर्वथा नकारल नहि जा सकैछ। तकरा नकारने दूरी बढ़त। एकदम नव आ एकदम पुरानक जे झमेल अनेक समकालीन भारतीय आलोचना मे उठल, तकर मूल मे किछु एहने-एहने स्थापना रहल। एहीठाम आबि क' हमरा किसुनजी मोन पड़ैत छथि।

एक टा आलोचकक रूप मे किसुनजी आद्यन्त समन्वयवादी छथि। हुनक समन्वय दू तरहक अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक विकास छओ सम्प्रदायक रूप मे भेल अछि। ई सम्प्रदाय सभ थिक—रस-सम्प्रदाय, ध्वनि-सम्प्रदाय, अलंकार-सम्प्रदाय, रीति-सम्प्रदाय, वक्रोक्ति-सम्प्रदाय आ औचित्य-सम्प्रदाय। भारतीय काव्यशास्त्रक ई विलक्षणता थिक जे एहि मे सँ प्रत्येक सम्प्रदाय केँ अपन-अपन विकसित आ सम्पूर्ण आलोचना-दृष्टि छैक। एक दिस जँ ई आन सभ साम्प्रदायिक तथ्य केँ अपना मे मिला क' अपन अंग बना क' नव सन्दर्भ मे तकर व्याख्या कयलक अछि तँ दोसर दिस एहि सभ सम्प्रदायक मध्य एक टा विकासात्मक एकसूत्रता सेहो छैक। अलंकार सम्प्रदाय सँ जे काव्यशास्त्रीय यात्रा प्रारम्भ भेल छल, से ध्वनि सम्प्रदाय लग आबि क' निस्सन आ परिपूर्ण भ' जाइत अछि। बहुत कम दृष्टि-वैभिन्य रहलाक अछैत मम्मट आ विश्वनाथक मतान्तर जगजाहिर अछि।

किसुनजीक समन्वय-वृत्तिक पहिल प्रकार एही प्रसंग सँ सन्दर्भित अछि। ओ एहि छवो सम्प्रदायक मान्यता केँ गहराइ सँ परखलनि अछि आ सभक मूल स्थापना केँ अंगीकृत कयलनि अछि। ने तँ हुनक स्वर मे कतहु विरोध छनि आ ने ओ एहन परिप्रेक्ष्य उठौलनि अछि, जत' आबि क' ई छवो सम्प्रदाय परस्पर विरोधी लागय। अपन लेख 'काव्य-साधना' मे ओ स्पष्टतः लिखलनि—'रसे काव्यक आत्मा थिक' आ सिद्ध कयलनि जे कविक वैयक्तिक प्रतिभा जखन बाह्य-जगतक सौन्दर्य केँ आत्मसात् क' लैत अछि तँ कविक समस्त अनुभूति रसक रूप ग्रहण क' लैत अछि। ध्यान देबाक थिक जे किसुनजी रस केँ काव्यक आत्मा मानैत छथि, जे रस-सम्प्रदायक स्थापना थिक, मुदा अपन कथन केँ प्रमाणित करबाक जे तरीका ओ चुनलनि, से ध्वनि सम्प्रदायक विवेचन-पद्धति थिक। ओना ध्वनिवादी लोकनि सेहो

वस्तु-ध्वनि, रस-ध्वनि आ अलंकार-ध्वनिक जे भेद-विभाजन कयलनि, ताहि मे रस कें केन्द्रीयता भेटलैक, मुदा तकर स्थापना-पद्धति थोड़ेक भिन्न छल।

तहिना अपन एक लेख 'साहित्य मे शब्द आ अर्थक महिमा' मे ओ शब्दक विविध अवस्थाक विवेचन मे स्फोटवादी पद्धति अपनौलनि। स्फोटवाद व्याकरण-दर्शनक सिद्धान्त थिक, जे ध्वनि-सम्प्रदायक आलोचना-पद्धतिक प्रसंग मे साहित्य मे आयल। शब्दार्थ-विवेचनक किसुनजीक पद्धति विशुद्ध ध्वनिवादी पद्धति थिकनि, जखन कि एही लेख मे आगाँ चलि क' ओ कविक अभिव्यक्ति-भाषाक विवेचन करैत विशुद्ध अंलकारवादी पद्धति अंगीकृत क' लैत छथि।

तहिना, अपन एक टा लेख 'काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य ओ आदर्श' मे ओ औचित्य-सम्प्रदायक प्रवक्ता भेल दृष्टिगोचर होइत छथि, जखन ओ क्षेमेन्द्र रचित 'औचित्य विचार चर्चा'क पंक्ति कें कोट करैत लिखैत छथि—

'यद्यपि अभिव्यक्ति हेतु कविक हृदय पूर्ण स्वतंत्र अछि, तथापि कविहृदयक ई स्वातंत्र्य समुद्रक ओहि स्वातंत्र्य जकाँ होमक चाही, जाहि मे समुद्र अपन तटीय मर्यादाक अन्तर्गत लहरिक वेग कें रखैत अछि। मर्यादा तथा संयमक सौन्दर्य उच्छृंखलता एवं असंयमक अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ होइत अछि।'

एहिठाम आबिक' किसुनजी जँ काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे विशुद्ध भारतीय दृष्टिगत होइत छथि, तँ अपन अनेक समकालीन सँ फराक सेहो लगैत छथि।

आधुनिक भारतीय साहित्यक आलोचना हेतु कोनहु एक सम्प्रदाय यथेष्ट नहि भ' सकैछ, कारण साहित्य-मूल्यक जटिलता बढ़ि गेल अछि आ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे आधुनिक भारतीय साहित्य प्राचीन साहित्य सँ कैक धाप आगू बढ़ि गेल अछि। तें सम्यक् आलोचना हेतु सभ सम्प्रदायक मूल स्थापना कें पकड़' पड़त, सभक बीच सँ एक टा मार्गक अन्वेषण कर' पड़त, ई थिक किसुनजीक समन्वय-दृष्टि। हुनक एहि दृष्टि मे आधुनिकता आ वैज्ञानिकता अछि। रूढ़िक प्रति व्यामोह सँ ओ मुक्त छथि, जे सामान्यत: पंडितक हेतु असंभव बात थिक।

हुनक दोसर समन्वय-दृष्टि नव कवितापरक लेख सभ मे दृष्टिगत होइत अछि। किसुनजी कें नव कविताक प्रवक्ता मानल गेल। ओ युग कैक अर्थ मे मैथिली साहित्य मे आंदोलन आ क्रांतिक युग छल। साहित्य मे जे नव मान-मूल्य उद्घाटित भ' रहल छल, तकरा पचा पयबाक सामर्थ्य नीक पाचनशक्ति बला धरि मे नहि छल। ओहि काल मे, जखन कि नव कविताक स्वरूप, प्रणाली आ गुण-दोष धरि नीक जकाँ निर्णीत नहि भ' सकल छल, तखन ओ नव कविताक पक्ष लेलनि आ एक टा अनचिन्हार काव्य दिशा कें लोकोन्मुख बनयबाक समर्थ चेष्टा कयलनि। मैथिलीक नव कविता पर लिखल हुनक लेख सभ मे जे उपस्थापना-विधि अछि, जे तर्कसम्मत

आग्रहशीलता अछि, से हमर बात कें पुष्ट करत। स्वयं किसुनजी लिखैत छथि जे ओहि काल मे नव कविता कतेक अनचिन्हार-सन छल—

'ई स्पष्ट क' देबा मे हम अप्रासंगिकता नहि बुझैत छी जे मैथिली साहित्य मे नव कविताक सम्बन्ध मे पर्याप्त आ स्पष्ट चिंतन-मनन एखन नहि भेल अछि आ ने तकर स्थितिये सरल भ' सकल अछि, कारण जे एक तँ पाठकक मन मे पुरान आग्रह बद्ध-मूल अछि आ दोसर एखन धरि नव कविताक सम्पूर्ण चित्र सम्मुख तथा स्पष्टो नहि भ' पौलक अछि।'

आन कोनो भारतीय भाषा जकाँ मैथिली मे सेहो नव कविता पाश्चात्य प्रभाव सँ आयल। एकर मूल प्रेरणा-स्रोत अंग्रेजी साहित्य रहल। प्रारंभ मे नव कविता अनुकरणक रूप मे आयल। ई छंदहीन छल। स्वयं किसुनजीक कथनानुसार नव कविताक विषय-वस्तु छल—सभ्यता आ संस्कृतिक टुटैत मानव-मूल्य आ व्यापक कुंठाक अभिव्यक्ति। ई कोनहु टा बात परम्परागत भारतीय काव्यशास्त्र सँ मेल नहि खाइत छल। ने स्वरूप आ ने विषय-वस्तु। भारतीय काव्यशास्त्रक पंडित लोकनिक लेल एतबहि टा बात नव कविताक विरोधी बना देबाक लेल पर्याप्त छल। बहुत विरोधी भेबो कयलाह। सामान्य रूपें किसुन जी कें सेहो नव कविताक विरोधी होयबाक चाहैत छलनि। मुदा, तटस्थ रहब तँ दूर, ओ एकर प्रवक्ता भेलाह। एक टा चिंतनशील बुद्धिजीवीक रूप मे समय-सत्यक एतेक पैघ स्वीकार किसुनजी कें महान बना दैत छनि।

संस्कृत पढ़ल-लिखल लोक अतीतजीवी होइत अछि, एहि रूढ़ि कें तोड़' बला मैथिली लेखक किसुनजी भेलाह। हिन्दी मे सेहो ओहि युग मे एहन तीक्ष्ण विवेक बला लेखक बहुत कम छलाह। मैथिली मे तँ एखनो कम छथि। किसुनजीक महत्त्व हम सभ आब बूझि सकैत छी, कारण नव कविता आब अस्पष्ट आ अनचिन्हार नहि अछि। हम सब आब इहो विचारि सकैत छी जे नव कविता आब अस्पष्ट आ अनचिन्हार नहि अछि, तँ से किएक? ताहि मे ककर की योगदान?

एक टा आलोचकक रूप मे किसुन जी हमरा कोनहु अत्युच्च पर्वत-शिखर पर बैसल ओहि तीक्ष्ण-चक्षु व्यक्ति जकाँ लगैत छथि, जे ई. पू. 500 सँ ल' क' बीसम शताब्दीक सातम दशक धरि कें खूब स्पष्ट आकृति मे देखि रहल अछि। मुदा, जकर रुचि, स्नेह आ सद्भावना वर्तमान मे छैक आ जे देखैत अछि अतीत कें, भोगैत अछि वर्तमान कें, मुदा जकर चिंतन मे भविष्य छैक आ मस्तिष्कक सम्पूर्ण ऊर्जा भविष्यक आकृति बनयबा मे लागल छैक।

किसुनजीक आलोचनात्मक लेखनक अधिकांश पारम्परिक भारतीय काव्यशास्त्र अथवा संस्कृत काव्य पर छनि। नव कविता अथवा नवलेखन पर ओ अपेक्षाकृत

कम लिखलनि, मुदा हुनक रचनाकार सभ सँ बेसी एही लेख सभ मे अभिव्यक्ति पौलक अछि। हुनक मोन सेहो एही लेख सभ मे रमलनि अछि। मैथिली नव कविताक एक प्रमुख कविक रूप से किसुनजी स्थापित छथि, हुनक कवि-धर्मक दायित्व-बोध आ चिंतन-मनन सेहो एही लेख सभ मे प्रकट होइत अछि।

अपन चर्चित निबंध 'नवलेखन: किछु विचार' मे ओ ओहि समस्त कारण सभक खोज करैत दृष्टिगत होइत छथि, जे मैथिली साहित्य कैँ नवीन दिशा देबा लेल महत्त्वपूर्ण अछि। ओ सभ ठाम नवीन सौन्दर्यानुभूति, नवीन सामाजिक चेतना तथा नवीन संस्कारक ओकालति करैत छथि। ओ स्पष्टत: स्वीकार करैत छथि जे प्राचीन रूढ़ि आ रूढ़िग्रस्त रचनाकारक वमन कयल भाव-सामग्री आधुनिक साहित्यक हेतु प्रेरक नहि भ' सकैछ, आ ने एना भेने युग-धर्मक स्वीकारे सम्भव छैक।

ओ पश्चिम तथा पूर्वक संपृक्ति कैँ स्वाभाविक आ अनिवार्य मानैत छथि। ओ लिखैत छथि—'मानव मात्रक एहि सुविकसित ओ उदार एवं पारिवारिक स्थितिक परिवेश मे अपन-अपन विशिष्ट रूप-आकृतिक अछैतो, चिंतन साम्य आ साहित्यिक मूल्यमानक सर्वमान्य एकरूपता कैँ अनिवार्यत: मानहि पड़त। तें नवलेखन मे एहि सभ संक्रमित एवं समेकित अनुभूतिक रहब स्वाभाविक थिक।'

भारतीय स्वतन्त्रता-प्राप्तिक उपरान्त भारतीय जनताक मोहभंगक विस्तृत विवेचन ओ अपन लेख 'नवलेखन : किछु विचार' मे कयलनि अछि आ तकरा नवलेखनक प्रेरक स्थिति मानलनि अछि। मुदा, हुनक दृष्टि मे जे सभ सँ आह्लादक आ महत्त्वपूर्ण बात थिक, से थिक—भविष्यक प्रति सोझरायल स्थापना। ओ नवलेखन मे सभ सँ उदात्त स्वर जे पबैत छथि, से थिक—संघर्ष। संघर्ष कैँ ओ मोटामोटी दू भाग मे रूपायित कयलनि—जीविका-संघर्ष तथा जीवन-संघर्ष। आर्थिक मारि, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक कठोरता, परम्पराक अरगड़ा (सभ हुनकहि शब्द) आ अभाव, गुण्डागर्दी, बेकारी, बेगारी, फासिज्म, धक्कमधुक्की, ग्लानि, आक्रोश कैँ ओ संघर्षक विविध कारण मानलनि! मुदा, नवलेखनक मूल स्वर ओ जिजीविषा तथा विद्रोह कैँ मानलनि।

रचनाकार हेतु एक नवीन सोच, नवीन प्रकारक दायित्व-बोध तथा सौन्दर्यानुभूतिक नवीन दृष्टिकोणक आवश्यकता कैँ अनुभव कयलनि। ओ इहो अनुभव कयलनि—'एकरा बूझब आवश्यके नहि, सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरा लोकनि पछड़ले रहि जायब तथा इतिहास मे अपराधी मानल जायब।'

इतिहास मे अपराधी मानल जयबाक जे भय किसुनजी मे छनि, से निश्चित रूप सँ सोझरायल भविष्य-दृष्टि सँ उद्भूत अछि।

एक ठाम आर ओ लिखैत छथि—

'ओकरा पर (नवलेखन पर) दायित्व छैक युगसत्य कैँ मूर्त करबाक, नीक जकाँ प्रस्तुत आ प्रसारित करबाक, संगे पाठक-वर्ग कैँ उद्योगी बनयबाक।'

युगसत्यक मूर्तीकरण, ओकर सम्यक् प्रस्तुति आ प्रसारण मे किसुन जी कैँ नवलेखनक सभ सँ पैघ दायित्व लगैत छनि, तें तकर पाछाँ संघर्ष (जीविका-संघर्ष तथा जीवन-संघर्ष) कैँ गति तथा व्याप्ति प्रदान करब सैह मूल उद्देश्य थिक। पाठक वर्ग कैँ उद्योगी बनयबाक हुनक चिंता हुनका बहुत प्रासंगिक बनबैत छनि। एहि पाछाँ हुनक ईहो दृष्टिकोण छनि जे अपन रचनाक द्वारा लेखक नांगर व्यवस्था मे सार्थक हस्तक्षेप क' सकैत अछि।

नव कविता पर विचार करैत किसुनजी अनेक तथ्य कैँ पहिल बेर सोझाँ अनलनि। नव कविताक प्रादुर्भावक कारण पर जँ ओ विस्तार सँ लिखलनि, तँ नव आ पुरान कविताक मध्य पार्थक्य सेहो स्पष्ट कयलनि। नव कविताक विषय-क्षेत्र, एकर शिल्प तथा नव कविताक सौन्दर्यशास्त्र कैँ सेहो ओ गम्भीरता सँ पकड़लनि। सम्प्रेषणीयताक जे समस्या नव कविताक संग जुड़ल अछि, ताहू पर हुनक विचार आ समाधान हमरा लोकनि कैँ प्राप्त अछि। संगहि, नव कविताक नाम पर जे ऊल-जुलूल लिखल जाइत रहल, जकर मूल मे कतहु सँ कोनो सुचिन्तित दृष्टि-बोध नहि छल, तकर विरोध सेहो ओ कैक ठाम कयलनि।

अपन लेख 'मैथिली साहित्य मे नव कविता' तथा 'मैथिली कविताक नवीन दिशा' एवं 'आत्मनेपद', 'मैथिलीक नव कविता' तथा 'प्रचोदयात' केर भूमिका मे ओ नव कविताक प्रवृत्ति सभ कैँ पकड़बाक चेष्टा कयलनि। हुनक पहिल लेख 1963 ई. मे छपल छल, दोसर 1967 ई. मे। 1963 मे मैथिली मे नव कविता अनचिन्हार तथा अनठीया छल, 67 धरि अबैत-अबैत थोड़-बहुत चिन्हार भेल। 'मैथिलीक नव कविता'क भूमिका ओ 1970 ई. मे लिखलनि। एहि सभ लेख मे एक टा ऐतिहासिक विकास-क्रमक रूपरेखा स्पष्ट झलकैत अछि।

अपन एहि सभ रचना मे किसुनजी नव कविताक वस्तुस्थिति तथा प्रवृत्ति पर विचार कयलनि अछि। ओना, हुनक ई विचार सभ सूत्रबद्ध तथा सुगुम्फित नहि छनि, मुदा कथ्य तथा शिल्पक दृष्टिकोण सँ हुनक स्थापना सभ कैँ एहि तरहें देखल जा सकैछ।

(1) नव कविताक कथ्य :

1. विषयक प्रति नवीन दृष्टिकोण
2. उदात्त चेतनाक स्वर
3. आत्मविश्वासक संगहि आत्मनिष्ठाक निष्कलुष इजोत

4. स्वाभाविक विकास-पथक प्रति आस्थावान रहबाक निष्ठा
5. अपन समग्रता मे अपना अतीतो केँ पुनर्मूल्यांकन करबाक चेष्टा
6. परम्परागत गतानुगतिकता वा रूढ़िक दुर्लंघ्य सीमारेखा सँ मुक्ति
7. जीर्ण आ संकीर्ण बंधन सँ उन्मुक्ति
8. सर्वांगीण अनुभूतिक क्षेत्र मे, चिंतनक व्यापक परिवेश मे सहज रूपें व्याप्त दुविधा तथा अवरोध सँ मुक्ति
9. जीवन-संघर्षक नवीन उपलब्धिक व्याख्या करबाक सांकेतिक प्रणाली
10. अपन लघु परिवेश मे छोट-छोट क्षण आ ओकर लघु सत्यक प्रति आस्था, जकरा आइ धरि महत्त्वहीन बूझल जाइत छल
11. रूढ़िग्रस्त कलाप्रियताक अपेक्षा ओहि सत्य केँ बेसी श्रेयस्कर बूझब, जे महान नहि होइतो मानवीय होइछ।

तथा

(2) नव कविताक शिल्प—

1. मूर्त चित्र सभक योजना
2. नवीन बिम्ब-योजना
3. शब्दयोजनाक सम्बन्ध मे मितव्ययिता
4. लयक सार्थक प्रयोग
5. शब्द आ भावक तारतम्यताक निर्वाह

ई आवश्यक अछि जे व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य मे, नव कविता सँ सम्बद्ध किसुनजीक उपर्युक्त स्थापना सभक विश्लेषण आ मूल्यांकन होअय।

नव कविताक समीक्षाक सन्दर्भ मे किसुनजी सभ सँ आवश्यक जाहि तत्त्व केँ पकड़ब बुझलनि, से थिक—बिम्ब-प्रणाली।

नव कविताक समीक्षाक क्रम मे किसुनजी अनेकानेक पारिभाषिक शब्द सभक व्यवहार कयलनि अछि, जे हुनक अन्तर्दृष्टि केँ रूपायित करैत अछि। एहन शब्द सभक विस्तृत विश्लेषण कयल जयबाक चाही। अपन एक टा लेख मे ओ 'रागात्मक अनुबंध' केँ कविताक प्रसंग मे व्याख्यायित कयलनि अछि, तँ दोसर दिस 'जीवित क्षण' केँ नव कविताक उपादानक रूप मे देखबाक स्थापना देलनि अछि। 'स्वयं साक्षात्कार कयल यथार्थ' आ 'भुक्त वेदना'क सम्बन्ध मे हुनक विवेचन विचारणीय अछि।

किसुनजीक आलोचनात्मक लेखन केँ देखबाक क्रम मे हमरा हुनक आलोचकीय सीमा सँ सेहो परिचित होयबाक अवसर भेटल। हमरा ईहो लागल जे किसुनजी किछु ठाम अनिर्णयक स्थिति मे सेहो पड़लाह अछि। किछु स्थान पर हुनक वैचारिक

पक्षधरता रहस्यमय-सन भ' गेलनि अछि। मुदा तैयो, एहन स्थान बहुत कम अछि आ जे किछु अछियो, तकर मूलतः दू गोट कारण थिक—(1) परम्परागत रूप सँ संस्कृत वाङ्मयक अध्येता होयबाक कारण ओ किछु ठाम आधुनिक साहित्य-मूल्यक ओझराहटि केँ सोझरयबा मे हुसलाह अछि। (2) भारतीय साहित्य मे साठोत्तरी पीढ़ीक आगाँ जे संत्रास, कुंठा, भय, अस्तित्वरक्षाक आवरण छल, तकर प्रभाव सेहो हुनक किछु निष्कर्ष पर पड़लनि अछि आ ओ दुविधाग्रस्त भेलाह अछि। एकाध उदाहरण निवेदित अछि—

अपन निबंध 'मैथिली कविताक नवीन दिशा' मे किसुनजी जीवनक यथार्थ केँ अभिव्यक्ति देब तथा सामाजिक यथार्थ केँ बूझब—एहि दुनू स्थिति केँ एक्के मानैत छथि। एखन आब हम सभ बुझि सकैत छी जे वैयक्तिक यथार्थ आ सामाजिक यथार्थ—यथार्थक दू गोट भिन्न धरातल थिक, जे साहित्य मे फराक-फराक घटना-स्थिति मे विश्लेषित होइत अछि। ई निश्चित अछि जे सामाजिक यथार्थक इकाइ व्यक्तिगत यथार्थ थिक, मुदा साहित्य रचना-प्रक्रिया मे वैयक्तिको यथार्थ केँ सामाजिकता देबाक क्रम मे अनेक सूक्ष्म प्रयोजन-विधि सँ गुजर' पड़ैत छैक। दोसर बात, आइ हम सभ देखि रहल छी जे साहित्यक जे मूल उद्देश्य छैक, तकर आलोक मे वैह वैयक्तिक यथार्थ उपयोगी आ उल्लेख्य अछि, जे सामाजिक यथार्थ केँ, आंशिके रूप सँ सही, प्रतिबिम्बित करबा मे सफल अछि।

तहिना, अपन लेख 'काव्यक प्रयोजन, लक्ष्य ओ आदर्श' मे ओ कहलनि अछि जे काव्यक सृष्टि मूलतः स्वान्तःसुखाय होइत अछि। तात्पर्य बुझबैत किसुनजी लिखैत छथि—कविक अभिव्यक्ति अनुभूतिक रसास्वादन वैयक्तिक परिधि सँ टपिक' सामूहिक विस्तार मे शाश्वत रूपें कयल जा सकय से स्वान्तःसुखाय काव्यक रचनाक इष्ट थिक।

एहिठाम, किसुनजी थोड़ेक ओझरयलाह अछि। काव्य-सृष्टि केँ स्वान्तःसुखाय मानबाक जे परम्परागत भारतीय सिद्धान्त अछि तकर निरूपण पद्धति सँ फराक भ' क' ओ एकरा व्याख्यायित कयलनि आ अपन समकालीन काव्यमूल्य केँ सेहो एहि मे प्रासंगिक मानबाक चेष्टा कयलनि। मुदा, जें कि दुनू परस्पर विरोधी स्थिति थिक, हुनक तथ्य स्पष्ट नहि भ' पौलनि अछि।

किसुनजीक लेख सभ केँ पढ़ैत काल एक टा आर वस्तु जे ध्यान आकर्षित करैत अछि से थिक—हुनक भाषा। बहुत निस्सन मुदा बहुत व्यावहारिक भाषाक प्रयोग ओ अपन लेख सभ मे कयलनि अछि। भाषाक ओझराहटि हुनका मे नहि छनि। भावक अनुकूल भाषा केँ तकबाक कला ओ जनैत छथि। प्राध्यापकीय भाषाक जाहि गछाड़ मे मैथिली आलोचना पड़ल, तकरा प्रसंग मे जँ किसुनजीक भाषाक

विश्लेषण करी तँ ओ बहुत महत्त्वपूर्ण लगैत छथि।

हुनक लेख सभ पढ़ैत काल बेर-बेर लगैत अछि जे, जे किछु हुनका कहबाक छनि, तकर सर्वांगीण स्वरूप हुनक मस्तिष्क मे पहिनहि सँ बनल छनि। तें एक तरहक धैर्य तथा निश्चिन्तता हुनक शैली मे छनि। उपस्थापन-रीतिक कलात्मकताक सेहो यैह कारण थिक।

किसुनजी अधिकतर कोनहु सैद्धान्तिक निरूपण सँ अपन लेख प्रारम्भ करैत छथि आ ओकर भीतर प्रवेश करबाक गति सतत मद्धिम रखैत छथि। कैक ठाम एहनो लगैत अछि जे कोनहु रहस्य केँ प्रकट करबाक हेतु ओ प्राण-पण सँ प्रयत्नशील छथि आ बहुत भारी वस्तु केँ हल्लुक करबाक चेष्टा मे लागल छथि। एहन स्थान पर हुनक भाषा थोड़ेक शास्त्रीय अबस्स होइत छनि, मुदा बोझिल किन्नहु नहि। एक टा उदाहरण द्रष्टव्य—

'ई अवस्स जे नव कविता पाश्चात्य प्रभाव सँ अभिभूत अछि, मुदा ओकर सम्बन्ध प्राचीन काव्य परम्परा सँ सेहो अविभक्त अछि। ओहि परम्परागत भावुकता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म संवेदनात्मकता आ युगानुरूप अन्त:संघर्ष, जीवनक परिवर्तित मूल्य आ परिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत शैली, काव्यसत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन बिम्ब-योजना, यैह थिक नवीन काव्य प्रवृत्ति।'

किछु ठाम ओ बहुत आफियत सँ विषय निरूपण करैत लौकिक उदाहरण सभ दैत, अपन बात कहैत छथि। एहन स्थान पर हुनक भाषा बहुत सरल मुदा अलंकृत होइत छनि—

'नवलेखन तौला मे सिद्ध होइत भात तँ नहि थिक जे देखि क' हल्ला कयल जाय आ थपड़ी पाड़ल जाय।'

किछु ठाम तँ किसुनजी बहुत स्पष्ट आ 'लाउड' भ' जाइत छथि आ आलोचकीय कलात्मक संयम धरिक 'रिस्क' लैत दृष्टिगत होइत छथि—

'एहि दायित्व सँ भागिक' अपना केँ कर्मवृत्ति मे राखब कहिया धरि सम्भव भ' सकत?...एना कटिक' अपना केँ ठगि फुसिया क' वा परतारि-बहटारि क' कहिया धरि शुतुरमुर्ग जकाँ बालु मे मुँह घोसियौने रहब?'

•••

विश्लेषण करी तँ ओ बहुत महत्त्वपूर्ण लगैत छथि।

हुनक लेख सभ पढ़ैत काल बेर-बेर लगैत अछि जे, जे किछु हुनका कहबाक छनि, तकर सर्वांगीण स्वरूप हुनक मस्तिष्क मे पहिनहि सँ बनल छनि। तें एक तरहक धैर्य तथा निश्चिन्तता हुनक शैली मे छनि। उपस्थापन-रीतिक कलात्मकताक सेहो यैह कारण थिक।

किसुनजी अधिकतर कोनहु सैद्धान्तिक निरूपण सँ अपन लेख प्रारम्भ करैत छथि आ ओकर भीतर प्रवेश करबाक गति सतत मद्धिम रखैत छथि। कैक ठाम एहनो लगैत अछि जे कोनहु रहस्य केँ प्रकट करबाक हेतु ओ प्राण-पण सँ प्रयत्नशील छथि आ बहुत भारी वस्तु केँ हल्लुक करबाक चेष्टा मे लागल छथि। एहन स्थान पर हुनक भाषा थोड़ेक शास्त्रीय अबस्स होइत छनि, मुदा बोझिल किन्नहु नहि। एक टा उदाहरण द्रष्टव्य—

'ई अवस्स जे नव कविता पाश्चात्य प्रभाव सँ अभिभूत अछि, मुदा ओकर सम्बन्ध प्राचीन काव्य परम्परा सँ सेहो अविभक्त अछि। ओहि परम्परागत भावुकता, बौद्धिकता, कल्पनाशीलता, आध्यात्मिक संस्पर्श, सूक्ष्म संवेदनात्मकता आ युगानुरूप अन्त:संघर्ष, जीवनक परिवर्तित मूल्य आ परिस्थितिक यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण, काव्यगत शैली, काव्यसत्य आ सघनतम संवेदनाक अभिव्यक्तिक हेतु सम्प्रेषणक नवीन बिम्ब-योजना, यैह थिक नवीन काव्य प्रवृत्ति।'

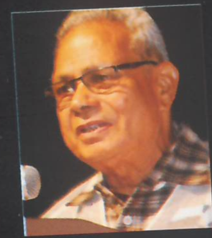
किछु ठाम ओ बहुत आफियत सँ विषय निरूपण करैत लौकिक उदाहरण सभ दैत, अपन बात कहैत छथि। एहन स्थान पर हुनक भाषा बहुत सरल मुदा अलंकृत होइत छनि—

'नवलेखन तौला मे सिद्ध होइत भात तँ नहि थिक जे देखि क' हल्ला कयल जाय आ थपड़ी पाड़ल जाय।'

किछु ठाम तँ किसुनजी बहुत स्पष्ट आ 'लाउड' भ' जाइत छथि आ आलोचकीय कलात्मक संयम धरिक 'रिस्क' लैत दृष्टिगत होइत छथि—

'एहि दायित्व सँ भागिक' अपना केँ कर्मवृत्ति मे राखब कहिया धरि सम्भव भ' सकत?...एना कटिक' अपना केँ ठगि फुसिया क' वा परतारि-बहटारि क' कहिया धरि शुतुरमुर्ग जकाँ बालु मे मुँह घोसियौने रहब?'

•••



महेन्द्र

जन्म : 06 जनवरी 1947

शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), पीएच.डी. (पटना विश्वविद्यालय)

कृति : शैलेन्द्र मोहन झा, राजेश्वर झा (मोनोग्राफ), साहित्य अकादेमी, दिल्ली। मेटायल पता पर अबैत चिट्ठी (कविता संग्रह), दिक्पाल, धात्री पात सन गाम (संस्मरण)। पाठांतर (समीक्षात्मक निबंध)। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे कथा, गीत-गजल-कविता आ संस्मरणादिक प्रकाशन। बांग्ला-हिंदी मे किछु कविता-कथा अनूदित।

संपर्क : मिशन कम्पाउण्ड, पूरब बाजार, सहरसा-852201

ई-मेल : drmahendra2k@gmail.com



केदार कानन

जन्म : 10 जुलाइ, 1959 सुपौल, बिहार।

शिक्षा : एम.ए (मैथिली हिंदी)

कृति : 'आकार लैत शब 'व्योम मे शब्द' (कवि संग्रह), 'अक्ष पर न (जीवकांत पर केंद्रित)।

महत्त्वपूर्ण मैथिली पत्रिका 'संकल्प' 'भारती मंडन'क संपादक।

सम्प्रति : प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्य सुखासन, मधेपुरा सँ प्राचार्य पद सँ सेवा-निवृ बाद स्वतंत्र लेखन आ संपादन मे व्यस्त।

संपर्क : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131 (बिहार)

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 790/-

ISBN 978-81-951827-9-4
9788195182794